ध्येय IAS
most trusted since 2003

परफेक्ट 7

मासिक करेंट अफेयर्स पत्रिका

फरवरी 2025
वर्ष : 07 | अंक : 02
मूल्य : ₹140

वित्तीय परिदृश्य 2025

आर्थिक सर्वेक्षण और बजट का विश्लेषण

मुख्य विशेषताएं

- पावर पैक्ड न्यूज
- वन लाइनर
- यूपीएससी प्री बेस्ड एमसीक्यूस

पहला पन्ना

एक सही अभिक्षमता वाला सिविल सेवक ही वह सेवक है जिसकी देश अपेक्षा करता है। सही अभिक्षमता का अभिप्राय यह नहीं कि व्यक्ति के पास असीमित ज्ञान हो, बल्कि उसमें सही मात्रा का ज्ञान और उस ज्ञान का उचित निष्पादन करने की क्षमता हो।

बात जब यूपीएससी या पीसीएस परीक्षा की हो तो सार सिर्फ ज्ञान का संचय नहीं, बल्कि उसकी सही अभिव्यक्ति और किसी भी स्थिति में उसका सही क्रियान्वयन है। यह यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा की तैयारी से लेकर देश के महत्त्वपूर्ण मुद्दे सँभालने तक, कुछ भी हो सकती है। यह यात्रा चुनौतीपूर्ण तो जरूर है परंतु सार्थक है।

परफेक्ट 7 पत्रिका कई आईएएस और पीसीएस परीक्षाओं में चयनित सिविल सेवकों की राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समझ विकसित करने का अभिन्न अंग रही है। यह पत्रिका खुद भी, बदलते पाठ्यक्रम के साथ ही बदलावों और सुधारों के निरंतर उतार चढ़ाव से गुजरी है।

अब, यह पत्रिका आपके समक्ष मासिक स्वरूप में प्रस्तुत है, मैं आशा करता हूँ कि यह आपकी तैयारी की एक परफेक्ट साथी बनकर, सिविल सेवा परीक्षा की इस रोमांचक यात्रा में आपका निरंतर मार्गदर्शन करती रहेगी।

शुभकामनाओं के साथ,

विनय सिंह
संस्थापक
ध्येय IAS

टीम परफेक्ट 7

संस्थापक	:	विनय सिंह
प्रबंध संपादक	:	विजय सिंह
संपादक	:	आशुतोष मिश्र
उप-संपादक	:	भानू प्रताप
	:	ऋषिका तिवारी
डिजाइनिंग	:	अरूण मिश्र
आवरण सज्जा	:	सोनल तिवारी

-: साभार :-

PIB, PRS, AIR, ORF, प्रसार भारती, योजना, कुरूक्षेत्र, द हिन्दू, डाउन टू अर्थ, इंडियन एक्सप्रेस, इंडिया टुडे, WION, BBC, Deccan Herald, हिन्दुस्तान टाइम्स, इकोनॉमिक्स टाइम्स, टाइम्स ऑफ इंडिया, दैनिक जागरण, दैनिक भाष्कर, जनसत्ता व अन्य

-: For any feedback Contact us :-
+91 9369227134
perfect7magazine@gmail.com

ध्येय IAS
most trusted since 2003

परफेक्ट

मासिक समसामायिकी पत्रिका

इस अंक में ...

1. भारतीय समाज व कला एवं संस्कृति 05-22

- ASER 2024: भारत के आधारभूत शिक्षण परिदृश्य का व्यापक विश्लेषण
- जनजातीय समुदायों के विकास और स्वास्थ्य सेवाएं: चुनौतियों का समाधान और भविष्य की दिशा
- शिक्षा, बाजार और रोजगार के परिप्रेक्ष्य में वैश्विक सूचकांकों में भारत का प्रदर्शन
- किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर अध्ययन
- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना का एक दशक
- भारत में विमुक्त, अर्ध-घुमंतु और घुमंतु जनजातियां
- जल्लिकट्टू
- माघी महोत्सव
- महाकुंभ मेला 2025
- ट्रांसजेंडर आरक्षण
- पंजाब में पीएम-यशस्वी योजना के तहत लांच हुआ छात्रवृत्ति पोर्टल
- सिंधु घाटी सभ्यता
- मैया सम्मान योजना
- अकेलेपन पर नया अध्ययन
- प्रवासी भारतीय दिवस

2. राजव्यवस्था एवं शासन 23-35

- भारत में डिजिटल गवर्नेंस: चुनौतियां, अवसर और सिफारिशें
- तदर्थ न्यायाधीश: भारत के न्यायिक लंबित मामलों के लिए समाधान या एक अस्थायी उपाय
- एक राष्ट्र, एक विधायी मंच
- आरजी कर रेप केस पर निर्णय
- पीएमएलए के तहत जमानत
- श्रीलंका तमिल शरणार्थी मामला
- आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोपों पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला
- समलैंगिक विवाह
- सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस उपचार योजना
- अरुणाचल प्रदेश में 1978 का
- धर्मांतरण विरोधी कानून बहाल
- डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण नियम 2025 मसौदा

3. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध 36-52

- भारत-इंडोनेशिया संबंध: ऐतिहासिक और रणनीतिक अवलोकन
- ट्रम्प 2.0 के तहत भारत-अमेरिका संबंध : चुनौतियां, अवसर और रणनीतिक पुनर्गठन
- भारत-तालिबान संबंध: अफगान भू-राजनीति में भारत
- जन्मसिद्ध नागरिकता पर बहस
- भारत-फ्रांस होराइजन 2047 रोडमैप
- भारत और यूरोपीय संघ के बीच व्यापार वार्ता
- ब्रिक्स ब्लॉक
- रूस और ईरान ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी संधि पर हस्ताक्षर किए
- इंडोनेशिया ब्रिक्स समूह में शामिल
- भारत और अफगानिस्तान के बीच पहली उच्च-स्तरीय राजनयिक वार्ता
- भारत-अमेरिका सोनोबॉय सह-निर्माण साझेदारी
- पहली भारत-मलेशिया सुरक्षा वार्ता
- भारतीय विदेश मंत्री की अमेरिकी एनएसए से मुलाकात
- भारत-मालदीव संबंध

4. पर्यावरण 53-63

- वैश्विक और भारतीय तापमान रुझान: जलवायु परिवर्तन और भारत की संवेदनशीलता के निहितार्थ
- वेटलैंड सिटी मान्यता
- भारतीय ग्रे वुल्फ

- ओलिव रिडली कछुए
- मिशन मौसम
- अमेरिका में ध्रुवीय भंवर
- वैश्विक जल मॉनिटर रिपोर्ट
- गतिशील भूजल संसाधन मूल्यांकन रिपोर्ट
- वायनाड भूस्खलनः राष्ट्रीय आपदा घोषित
- राष्ट्रीय क्रिटिकल मिनरल्स मिशन
- खनन धूल का वनस्पति पर प्रभाव

5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 64-79

- स्पैडेक्स डॉकिंग मिशनः भारत की अंतरिक्ष अन्वेषण यात्रा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि
- गिलियन-बैरे सिंड्रोम
- पैराक्वाट
- रोडामिन बी
- जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ने LID- 568 नामक ब्लैक होल की खोज
- भारत अंतरिक्ष डॉकिंग में चौथा देश बना
- त्रिकोफाइटन इंडोटिनिया
- जंगल की आग को बुझाने में गुलाबी अग्निशमन द्रव्य का उपयोग
- एनीमियाफोन
- जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट
- नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में नई विधि
- CROPS मिशन
- एचएमपीवी प्रकोप
- एच. पाइलोरी
- डीपसीक एआई
- NVS-02 उपग्रह
- नैनो-सूत्रीकरणः पार्किंसन रोग के सुरक्षित उपचार के लिए

6. आर्थिकी 80-97

- आर्थिक सर्वेक्षण 2024.25: एक व्यापक विश्लेषण
- केंद्रीय बजट 2025-26
- आठवां वेतन आयोगः उद्देश्यों, प्रभाव और निहितार्थों का अवलोकन
- नीति आयोग का राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक
- कच्चे जूट के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि
- डायमंड इम्प्रेस्ट ऑथोराइजेशन योजना
- भारतः विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था
- 'सैशेटाइजेशन' योजना
- जेड-मोर्ह सुरंग (Z-Morh Tunne)
- विश्व आर्थिक स्थिति और संभावनाएं 2025 रिपोर्ट
- वित्त वर्ष 2025-26 के लिए जीडीपी वृद्धि का पूर्वानुमान
- वित्त वर्ष 2024 में ग्रामीण गरीबी में कमी आईः एसबीआई
- थोक मूल्य सूचकांक के आधार वर्ष में संशोधन हेतु कार्य समूह गठित
- डीएपी विशेष पैकेज और फसल बीमा योजनाओं की अवधि बढ़ी
- वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट
- एमएसएमई के लिए क्रेडिट गारंटी योजना

7. आंतरिक सुरक्षा 98-103

- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में महाद्वीपीय और समुद्री सुरक्षा हितों को संतुलित करने में भारत की रणनीतिक चुनौतियां
- आईएनएस सूरत, नीलगिरी और वाघशीर को किया गया शामिल
- भारतपोल पोर्टल
- रक्षा उत्पादन में वृद्धि
- 2024 में इंटरनेट शटडाउन में कमी

पावर पैक्ड न्यूज 104-119

वन लाइनर्स 120-122

समसामयिकी आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न 123-131

1 भारतीय समाज व कला एवं संस्कृति

ASER 2024: भारत के आधारभूत शिक्षण परिदृश्य का व्यापक विश्लेषण

सन्दर्भ:

शिक्षा को अक्सर राष्ट्र की प्रगति की नींव के रूप में देखा जाता है और भारत जैसे विविधतापूर्ण और अत्यधिक जनसंख्या वाले देश के लिए, सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती बन गई है। प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन द्वारा 28 जनवरी को जारी की गई वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (ASER) 2024, ग्रामीण भारत में शिक्षा की स्थिति पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। यह सर्वेक्षण 605 जिलों के 17,997 गांवों में किया गया था, जिसमें कुल 649,491 बच्चों को शामिल किया गया। इसमें बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN), क्षेत्रीय असमानताओं और शिक्षा में डिजिटल विभाजन के बारे में हुई प्रगति पर विशेष ध्यान दिया गया है।

- महामारी के कारण पढ़ाई में हुई कमी में सुधार के संकेत तो मिल रहे हैं, लेकिन कई गंभीर चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं, विशेषकर गणितीय दक्षता, लैंगिक आधारित पढ़ाई में अंतर और डिजिटल पहुंच के संदर्भ में। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और निपुण भारत मिशन जैसी नीति-संचालित पहलों के कारण सरकारी स्कूलों ने पढ़ाई में सुधार के मामले में निजी स्कूलों को पीछे छोड़ते हुए महत्वपूर्ण प्रगति दिखाई है। हालांकि, सरकारी स्कूलों में नामांकन में गिरावट, डिजिटल साक्षरता में लैंगिक असमानता और समग्र रूप से पढ़ाई में कमी जैसे मुद्दे यह दर्शाते हैं कि अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

एएसईआर के बारे में:

- वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) एक राष्ट्रव्यापी, नागरिक-नेतृत्व वाला घरेलू सर्वेक्षण है जो ग्रामीण भारत में स्कूली शिक्षा और सीखने के परिणामों का व्यापक मूल्यांकन प्रदान करता है। हिंदी में 'असर' शब्द का अर्थ 'प्रभाव' होता है।
- यह 3 से 16 वर्ष की आयु के स्कूल जाने वाले और स्कूल न जाने वाले बच्चों से डेटा एकत्र करता है और 5 से 16 वर्ष की आयु के बच्चों के पढ़ने और अंकगणित कौशल का आकलन करता है।
- प्रथम नेटवर्क द्वारा संचालित एएसईआर केंद्र इस सर्वेक्षण का समन्वय करता है।
- एएसईआर की शुरुआत पहली बार 2005 में हुई थी और इसे 2014 तक प्रत्येक वर्ष आयोजित किया गया। इसके बाद इसे वैकल्पिक वर्ष मॉडल में परिवर्तित कर दिया गया:
  - » **बेसिक एएसईआर सर्वेक्षण (प्रत्येक दूसरे वर्ष):** आधारभूत शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - » **गैप ईयर्स:** विशिष्ट विषयों या आयु समूहों पर ध्यान केंद्रित करता है (उदाहरण के लिए, एएसईआर 2017 ने 14-18 वर्ष की आयु के युवाओं पर ध्यान केंद्रित किया, एएसईआर 2019 ने प्रारंभिक बचपन की शिक्षा का मूल्यांकन किया)।
  - » एएसईआर 2024 ने अपने पारंपरिक 'बेसिक' सर्वेक्षण प्रारूप को पुन: अपनाया, जिसमें अधिकांश ग्रामीण जिलों को शामिल किया गया।

ASER 2024 के मुख्य निष्कर्ष:

- **महामारी के बाद शिक्षा में सुधार:** एएसईआर 2024 से सबसे उत्साहजनक निष्कर्ष कोविड-19 के कारण हुए सीखने के नुकसान से उबरने का है। महामारी के दौरान, लंबे समय तक स्कूल बंद रहने के कारण बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) में महत्वपूर्ण गिरावट आई थी, खासकर छोटे कक्षाओं में। हालांकि, 2024 की रिपोर्ट बताती है कि ग्रामीण भारत में सीखने का स्तर न केवल ठीक हो गया है, बल्कि कुछ मामलों में महामारी से पहले के स्तर से

भी आगे निकल गया है।

- » सरकारी स्कूलों में कक्षा 3 के ऐसे बच्चों का अनुपात, जो कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं, 2022 में 16.3% से बढ़कर 2024 में 23.4% हो गया जो 2005 में एएसईआर की स्थापना के बाद से दर्ज किया गया उच्चतम स्तर है।
- » कक्षा 5 के ऐसे छात्रों की हिस्सेदारी, जो कक्षा 2 के स्तर पर पढ़ सकते हैं, 2022 में 38.5% से बढ़कर 2024 में 44.8% हो गया, जो 2018 के स्तर (44.2%) के करीब होगी।
- » कक्षा 8 में पढ़ने की क्षमता में मामूली सुधार देखा गया, जो 2022 में 66.2% से बढ़कर 2024 में 67.5% हो गया।

- अंकगणित में भी सुधार:
  - » घटाव की समस्या हल करने में सक्षम कक्षा 3 के छात्रों का अनुपात 2022 में 25.9% से बढ़कर 2024 में 33. 7% हो गया।
  - » कक्षा 5 के उन विद्यार्थियों का अनुपात जो भाग का प्रश्न हल कर सकते थे, 2022 में 25.6% से बढ़कर 2024 में 30.7% हो गया।
- यद्यपि पठन कौशल और अंकगणित में सुधार हुआ है, फिर भी सीखने में अंतराल बना हुआ है, विशेष रूप से सभी कक्षाओं में संख्यात्मक कौशल के क्षेत्र में।

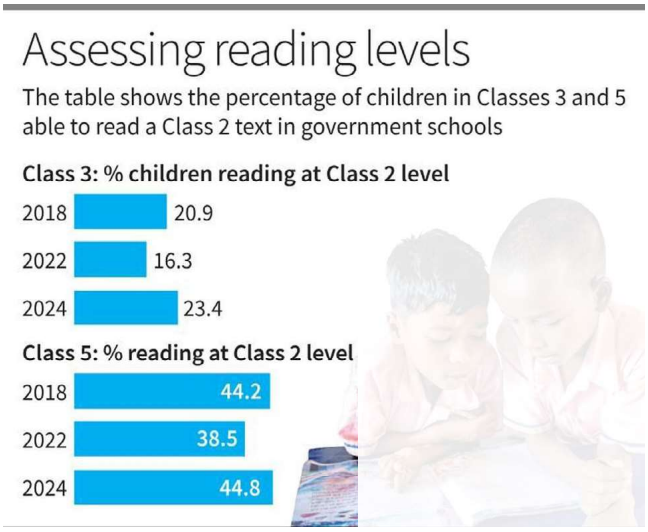

सरकारी स्कूल बनाम निजी स्कूल:

- एएसईआर 2024 में एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति यह है कि निजी स्कूलों की तुलना में सरकारी स्कूलों में सीखने की क्षमता में सुधार अधिक है। ऐतिहासिक रूप से, निजी स्कूलों ने सरकारी स्कूलों से बेहतर प्रदर्शन किया है, लेकिन नवीनतम निष्कर्षों से पता चलता है कि स्थिति में बदलाव आया है:
  - » कक्षा 3 में, कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ने वाले सरकारी स्कूल के छात्रों का अनुपात 7.1 प्रतिशत अंक (2022 में 16.3% से 2024 में 23.4%) बढ़ा। हालाँकि, निजी स्कूलों में, यह वृद्धि केवल 1.7 प्रतिशत अंक (41.8% से 43.5%) थी।
  - » कक्षा 5 में, सीखने की क्षमता में सरकारी स्कूल के छात्रों का अनुपात 2022 में 38.5% से बढ़कर 2024 में 44.8% (6.3 प्रतिशत अंकों की वृद्धि) हो गया, जबकि निजी स्कूल के छात्रों में केवल 2.5 प्रतिशत अंकों की वृद्धि (56.8% से बढ़कर 59.3%) देखी गई।
- अंकगणित दक्षता में भी ऐसी ही प्रवृत्ति देखी गई है, जहां सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों ने सुधार दर के मामले में निजी स्कूल के विद्यार्थियों को पीछे छोड़ दिया है।
- इस बदलाव का श्रेय मुख्य रूप से एनईपी 2020 और निपुण भारत मिशन को जाता है, जो शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और संरचित स्कूल-तैयारी पहलों के साथ-साथ बुनियादी शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं।

सीखने और डिजिटल साक्षरता में लैंगिक असमानताएँ:

- एएसईआर 2024 लिंग आधारित शिक्षण अंतराल, विशेष रूप से गणित और डिजिटल साक्षरता पर प्रकाश डालता है।
  - » कक्षा 3 में 29.4% लड़के घटाव का प्रश्न हल कर सकते थे, जबकि केवल 25.8% लड़कियां ऐसा कर पाई।
  - » कक्षा 5 में 33.1% लड़के भाग का प्रश्न सही ढंग से हल कर सके, जबकि केवल 27.9% लड़कियां ऐसा कर पाई।
  - » यह अंतर कक्षा 8 तक बना रहता है, जहां 47.2% लड़के अंकगणित में दक्षता प्रदर्शित करते हैं, जबकि 44.1% लड़कियां ऐसा कर पाती हैं।
- ये असमानताएँ गहरे सामाजिक पूर्वाग्रहों को दर्शाती हैं, जो लड़कियों को अंकगणित से संबंधित कौशल हासिल करने से हतोत्साहित करती हैं। कई ग्रामीण परिवारों में लड़कियों की साक्षरता पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, जबकि गणितीय शिक्षा को अनदेखा किया जाता है, जिससे लड़कियों के लिए भविष्य में STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, गणित) के अवसर सीमित हो जाते हैं।
- डिजिटल साक्षरता में, लड़कों के पास लड़कियों की तुलना में स्मार्टफोन तक अधिक पहुंच और डिजिटल जागरूकता है:
  - » 36.2% लड़कों के पास निजी स्मार्टफोन है, जबकि 26. 9% लड़कियों के पास है।
  - » 62% लड़के डिजिटल सुरक्षा सुविधाओं का उपयोग करना जानते हैं, जबकि 48% लड़कियां ऐसा करती हैं।
- इस अंतर को पाटने के लिए लैंगिक-संवेदनशील पाठ्यक्रम, सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम और समावेशी डिजिटल शिक्षा पहल जैसे लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

सरकारी स्कूलों में नामांकन में गिरावट:

- सरकारी स्कूलों में सीखने के नतीजों में सुधार तो हुआ है, लेकिन उनका कुल नामांकन घट रहा है। सरकारी स्कूलों में बच्चों का अनुपात 2022 में 72.9% से घटकर 2024 में 66.8% हो गया है। संभावित कारणों में ये शामिल हैं:
  - **निजी स्कूलों के बारे में धारणा:** अभिभावकों का मानना है कि निजी स्कूल बेहतर अनुशासन, मजबूत अंग्रेजी शिक्षा और अधिक जवाबदेही प्रदान करते हैं।
  - **शिक्षकों की कमी:** कई सरकारी स्कूलों में, विशेषकर मिडिल स्कूल कक्षाओं में, विषय-विशिष्ट शिक्षकों की कमी है।
  - **माता-पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार:** महामारी के बाद जैसे-जैसे आय स्थिर हो रही है, वैसे-वैसे वे परिवार, जो पहले वित्तीय बाधाओं के कारण अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में भेजते थे, अब निजी स्कूलों में वापस लौट रहे हैं।
- इस प्रवृत्ति को कम करने के लिए, सरकारी स्कूलों को गुणवत्ता में सुधार करने, पर्याप्त स्टाफ सुनिश्चित करने और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की आवश्यकता है।

शिक्षा में डिजिटल विभाजन:

- ग्रामीण भारत में स्मार्टफोन की बढ़ती पहुंच के बावजूद डिजिटल शिक्षा सीमित बनी हुई है।
- 89% किशोरों (14-16 वर्ष) ने बताया कि उनके घर में स्मार्टफोन हैं, लेकिन केवल 57% ही इसका उपयोग शिक्षा के लिए करते हैं।
- 31.4% के पास व्यक्तिगत स्मार्टफोन है, जिसका मतलब है कि अधिकांश लोग साझा पारिवारिक डिवाइस पर निर्भर हैं, जिससे डिजिटल शिक्षा तक उनकी पहुंच सीमित हो जाती है।
- शहरी-ग्रामीण कनेक्टिविटी अंतर और खराब बुनियादी ढांचा डिजिटल शिक्षा की प्रभावशीलता को बाधित करते हैं।
- डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए बेहतर बुनियादी ढांचे, स्थानीयकृत शिक्षा-तकनीक समाधान और उत्पादक डिजिटल शिक्षण आदतों के बारे में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

आगे की राह:

- एएसईआर 2024 सुधार और लचीलेपन की कहानी प्रस्तुत करता है, लेकिन चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। एनईपी 2020 और निपुण भारत मिशन ने सरकारी स्कूलों पर सकारात्मक प्रभाव डाला है, फिर भी संख्यात्मकता, लैंगिक असमानता और डिजिटल पहुँच में अंतर पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।
  - एफएलएन कार्यक्रमों को मजबूत करना, विशेषकर लक्षित गणितीय हस्तक्षेपों के साथ।
  - STEM शिक्षा के लिए लिंग-समावेशी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करना।
  - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सुधार के लिए शिक्षक प्रशिक्षण और भर्ती में वृद्धि करना।
  - ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना का विकास करना।
- लगातार नीति कार्यान्वयन और क्षेत्रीय हस्तक्षेप के साथ, भारत सार्वभौमिक, उच्च-गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने के और करीब पहुँच सकता है।

जनजातीय समुदायों के विकास और स्वास्थ्य सेवाएं: चुनौतियों का समाधान और भविष्य की दिशा

सन्दर्भ:

भारत के जनजातीय समुदाय, जिन्हें "आदिवासी" के रूप में जाना जाता है, भारतीय समाज के सबसे प्राचीन और अभिन्न वर्गों में से एक का प्रतिनिधित्व करते हैं। अनूठी परंपराओं, संस्कृतियों और जीवन शैली के साथ, वे देश के जनसांख्यिकीय ताने-बाने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। अपनी समृद्ध विरासत के बावजूद, आदिवासी समुदायों को सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, सीमित स्वास्थ्य सेवा पहुँच और उनकी सांस्कृतिक पहचान के लिए खतरों सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य सम्मेलन 2025 ने इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य किया, जिसमें धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत समग्र स्वास्थ्य सेवा समाधानों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

जनजातीय समुदायों का परिचय:

- भारत में जनजातीय समुदायों की एक अलग सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान है, जो मुख्यधारा के समाज से उनके अलगाव और अद्वितीय रीति-रिवाजों और परंपराओं से चिह्नित है। इन्हें सबसे पुराने नृवंशविज्ञान समूहों (Ethnographic Groups) में से एक माना जाता है और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा इन्हें 'स्वदेशी' (Indigenous) के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है।

भारत में जनजातियाँ:

- **जनसंख्या और वितरण:**

» भारत में विश्व स्तर पर दूसरी सबसे बड़ी जनजातीय आबादी है, जिसमें लगभग 100 मिलियन लोग या देश की कुल आबादी का लगभग 8.9% (जनगणना 2011) शामिल है।
» पूर्वोत्तर राज्यों में अलग-अलग जातीयता वाली जनजातियाँ पाई जाती हैं, जबकि मध्य और दक्षिणी क्षेत्र 80% से अधिक जनजातीय आबादी का घर हैं।

- **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व:**
  » जनजातियाँ प्राचीन काल से भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग रही हैं, जिनका उल्लेख रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में मिलता है।
  » गोंड महारानी वीर दुर्गावती, रानी कमलापति और भीलों जैसे आदिवासी नायकों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  » खासी-गारो, मिजो और कोल जैसे आदिवासी आंदोलन भारत के इतिहास के महत्वपूर्ण अध्याय हैं।
- **सरकारी मान्यता:**
  » आदिवासी समुदायों के योगदान का सम्मान करने के लिए, 15 नवंबर को आदिवासी नेता और स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में, साल 2021 में जनजातीय गौरव दिवस घोषित किया गया।

आदिवासी समुदायों के सामने चुनौतियाँ:

अपनी समृद्ध विरासत के बावजूद, आदिवासी समुदायों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके विकास में बाधा डालती हैं:

- **सामाजिक-आर्थिक कमजोरियाँ:**
  » गरीबी, बेरोजगारी और शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच व्यापक रूप से फैली हुई हैं।
  » आदिवासी क्षेत्रों में अक्सर बुनियादी ढाँचे की कमी होती है और ये अपर्याप्त आर्थिक अवसरों से जूझते हैं।
- **स्वास्थ्य सेवा असमानताएँ:**
  » भौगोलिक अलगाव और सांस्कृतिक बाधाएँ गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को सीमित करती हैं।
  » सिकल सेल एनीमिया जैसी बीमारियाँ सामान्य हैं, जिनसे निपटने के लिए विशेष हस्तक्षेप की आवश्यकता है।
- **पारंपरिक ज्ञान और संसाधनों का नुकसान:**
  » प्राकृतिक संसाधनों के तेजी से आधुनिकीकरण और दोहन ने पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं को कमजोर किया है।
  » निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सीमित प्रतिनिधित्व के कारण, कई जनजातियाँ अपनी भूमि और संसाधनों की रक्षा के लिए संघर्ष करती हैं।
- **सांस्कृतिक हाशिए पर:**
  » मुख्यधारा के समाज से भेदभाव और बहिष्कार उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण को खतरे में डालते हैं।

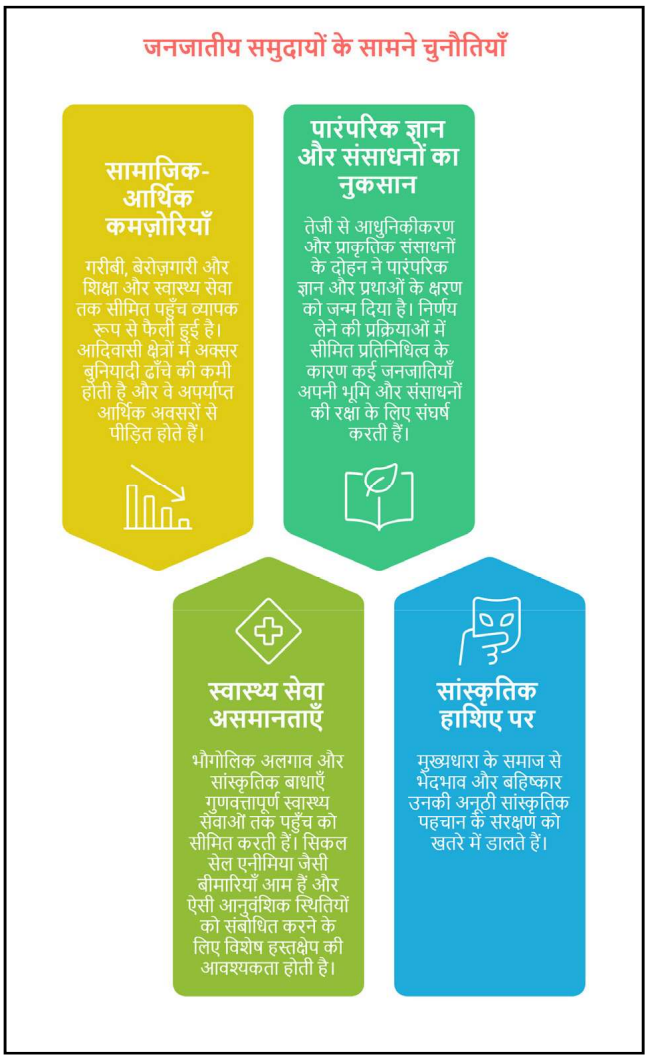

आदिवासी विकास के लिए सरकारी पहल:

भारत सरकार ने आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली सामाजिक-आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का समाधान करने के लिए कई पहल शुरू की हैं:

- **स्वास्थ्य सेवा और कल्याण कार्यक्रम:**
  » **राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य सम्मेलन 2025:** MoTA (जनजातीय मामलों का मंत्रालय) और MoH-FW (स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय) द्वारा आयोजित, यह सम्मेलन नीति हस्तक्षेप के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने और आदिवासी क्षेत्रों के लिए स्थायी स्वास्थ्य सेवा समाधान तैयार करने पर केंद्रित है।
  » **राष्ट्रीय सिकल सेल उन्मूलन मिशन:** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया यह मिशन, 2047 तक सिकल सेल एनीमिया को समाप्त करने का लक्ष्य रखता है।

- **भगवान बिरसा मुंडा आदिवासी स्वास्थ्य और रक्त विज्ञान पीठः** एम्स दिल्ली में स्थापित, यह पहल आदिवासी स्वास्थ्य मुद्दों पर अनुसंधान और डेटा संग्रह को बढ़ावा देती है।
- **सक्षमता केंद्र (CoE):** सिकल सेल एनीमिया के उन्नत निदान और उपचार के लिए 14 राज्यों में 15 ब्वम स्थापित किए गए हैं।

- **आर्थिक और अवसंरचना विकासः**
  - **ट्राइफेड (भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ लिमिटेड):** जनजातीय मामलों के मंत्रालय के तहत 1987 में स्थापित, ट्राइफेड जनजातीय समुदायों को उनके उत्पादों को बढ़ावा देकर और उनके आर्थिक अवसरों को बढ़ाकर समर्थन देता है।
  - **प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना (पीएमएएजीवाई):** यह योजना महत्वपूर्ण जनजातीय आबादी वाले गांवों में बुनियादी ढांचा प्रदान करने पर केंद्रित है।
  - **प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महा अभियान (पीएम जनमन):** 2023 में शुरू की गई इस पहल का उद्देश्य विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG) की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार करना है।
- **संवैधानिक प्रावधानः** भारतीय संविधान में जनजातीय समुदायों की सुरक्षा के लिए विशेष प्रावधान शामिल हैं:
  - **अनुच्छेद 275 (1):** राज्यों को जनजातीय कल्याण और विकास के लिए धन प्रदान करता है।
  - **संविधान की पाँचवीं और छठी अनुसूचियाँ:** ये अनुसूचियाँ जनजातीय भूमि अधिकारों और स्वशासन को मान्यता देती हैं और उनकी रक्षा करती हैं।

राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य सम्मेलन 2025: मुख्य बिंदु

राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य सम्मेलन 2025 ने स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय, शिक्षा, और गैर-सरकारी संगठनों सहित विभिन्न क्षेत्रों के हितधारकों को एक मंच पर लाया। चर्चाएँ निम्नलिखित मुख्य विषयों पर केंद्रित थीं:

- **स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों को मजबूत करनाः** दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच में सुधार के लिए टेलीमेडिसिन, मोबाइल मेडिकल यूनिट, और क्षमता निर्माण को प्रमुख रणनीतियों के रूप में पहचाना गया।
- **स्वदेशी ज्ञान को एकीकृत करनाः** पारंपरिक उपचार प्रथाओं को मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों में शामिल करने के प्रयास किए गए।
- **पोषण और किशोर स्वास्थ्यः** सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त हस्तक्षेपों के माध्यम से कुपोषण से निपटने और प्रजनन स्वास्थ्य में सुधार पर जोर दिया गया।
- **रोग-विशिष्ट चुनौतियों का समाधानः** सिकल सेल रोग, व्यसन, और मानसिक स्वास्थ्य जैसी चुनौतियों के लिए लक्षित हस्तक्षेपों को प्राथमिकता दी गई।
- **स्वास्थ्य सेवा वितरण में सांस्कृतिक संवेदनशीलताः** आधुनिक स्वास्थ्य परिणामों के साथ पारंपरिक जीवन शैली को संतुलित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

जनजातीय समुदायों के लिए सतत विकासः

आदिवासी समुदायों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए, निम्नलिखित उपायों को अपनाया जाना चाहिए:

- **नीति सुधारः** सरकारी नीतियों को जनजातीय समुदायों द्वारा सामना की जाने वाली अनूठी चुनौतियों का समाधान करना चाहिए, जिनमें स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच, आर्थिक अवसर, और सांस्कृतिक संरक्षण शामिल हैं।
- **सामुदायिक जुड़ावः** जनजातीय समुदायों को उनकी भूमि, संसाधनों, और विकास से संबंधित निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए।
- **अनुसंधान और नवाचारः** जनजातीय स्वास्थ्य और अभिनव स्वास्थ्य सेवा वितरण मॉडल पर कार्रवाई-उन्मुख अनुसंधान उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए आवश्यक है।
- **शिक्षा और कौशल विकासः** शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक पहुँच बढ़ाने से जनजातीय युवाओं को सशक्त बनाया जा सकता है और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है।
- **सांस्कृतिक विरासत का संरक्षणः** जनजातीय समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं की रक्षा और संवर्धन के प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि उनकी पहचान से समझौता किए बिना उन्हें राष्ट्रीय मुख्यधारा में एकीकृत किया जा सके।

निष्कर्षः

आदिवासी समुदाय भारत की सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय विविधता का एक अभिन्न अंग हैं। हालाँकि, उनकी सामाजिक-आर्थिक और स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी चुनौतियों पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य सम्मेलन 2025 जैसी पहल और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत कार्यक्रम इन समुदायों को सशक्त बनाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं। सहयोग, नवाचार, और समावेशिता को बढ़ावा देकर, भारत अपनी आदिवासी आबादी के लिए सतत विकास सुनिश्चित कर सकता है, जबकि उनकी अनूठी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर सकता है। केंद्रित नीतियों और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से, आदिवासी क्षेत्र समान विकास प्राप्त कर सकते हैं और राष्ट्र की प्रगति में सार्थक योगदान दे सकते हैं।

शिक्षा, बाजार और रोजगार के परिप्रेक्ष्य में वैश्विक सूचकांकों में भारत का प्रदर्शन

सन्दर्भः

भारत का वैश्विक सूचकांकों में प्रदर्शन देश की शैक्षिक और आर्थिक प्रणालियों की शक्ति और कमजोरियों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। क्वाक्वेरेली साइमंड्स (QS) वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स 2025 में ओवरऑल रैंकिंग 25 है। भविष्य के रोजगार बाजार की मांगों को पूरा करने की दिशा में भारत का दूसरा स्थान, देश की बढ़ती क्षमता को दर्शाता है। यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और हरित कौशल जैसे उभरते हुए क्षेत्रों में भारत की प्रगति को रेखांकित करता है। हालांकि, सूचकांक यह भी दर्शाता है कि कार्यबल की तत्परता और आर्थिक परिवर्तन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अभी भी काफी सुधार की आवश्यकता है। यह स्पष्ट करता है कि भारत को तेजी से बदलते रोजगार बाजार के साथ अपनी शिक्षा प्रणाली को संरेखित करने में कई चुनौतियों का सामना करना है।

मुख्य संकेतक और भारत की रैंकिंगः

- क्यूएस वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स चार प्रमुख संकेतकों के आधार पर देशों का मूल्यांकन करता है:
  - कौशल अनुकूलता (Skills Fit)
  - अकादमिक तत्परता (Academic Readiness)
  - भविष्य का काम (Future of Work)
  - आर्थिक परिवर्तन (Economic Transformation)
- ये पैरामीटर इस बात का आकलन करते हैं कि राष्ट्र प्रौद्योगिकी और स्थिरता से तेजी से प्रभावित वैश्विक कार्यबल की मांगों को कितनी अच्छी तरह पूरा करने के लिए सुसज्जित हैं।
- **भविष्य का कार्य (रैंक 2):** 'भविष्य का कार्य' श्रेणी में भारत की उच्च रैंकिंग, देश की तकनीकी तत्परता, विशेषकर डिजिटल दक्षता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) क्षमताओं और हरित प्रौद्योगिकियों पर मजबूत जोर को दर्शाती है। यह उभरते हुए क्षेत्रों के लिए कुशल कार्यबल तैयार करने में भारत की प्रगति का प्रमाण है। देश का बढ़ता हुआ तकनीकी उद्योग, स्थिरता पर ध्यान केंद्रित और एआई तथा संबंधित क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि इस सकारात्मक परिणाम में महत्वपूर्ण योगदान देती है। हालांकि, भारत इन क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए भी, व्यापक कार्यबल चुनौतियों का सामना कर रहा है।
- **कौशल अनुकूलता (रैंक 30):** 'कौशल फिट' में भारत का 30वां स्थान इस बात का संकेत देता है कि देश के स्नातकों के पास नियोक्ताओं द्वारा मांगे जाने वाले विशिष्ट कौशल का अभाव है। यह भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली और तेजी से बदलते रोजगार बाजार के बीच एक बड़ा अंतर दर्शाता है। जैसे-जैसे उद्योग विकसित होते हैं और नई प्रौद्योगिकियां उभरती हैं, शिक्षा प्रणाली छात्रों को आवश्यक कौशलों से लैस करने में नाकाम रहती है।
- **अकादमिक तत्परता (रैंक 26):** 'शैक्षणिक तैयारी' में भारत का प्रदर्शन बताता है कि हालांकि इसके शैक्षणिक संस्थानों में क्षमता है, लेकिन वे भविष्य की नौकरियों के लिए आवश्यक कौशल वाले स्नातकों का उत्पादन करने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित नहीं हैं। बड़ी संख्या में स्नातकों के बावजूद, भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में रचनात्मकता, समस्या-समाधान और उद्यमशीलता सोच जैसे महत्वपूर्ण कौशलों को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने की कमी है। यह छात्रों को तेजी से बदलते रोजगार बाजार की मांगों के लिए तैयार करने में बाधा डालता है।
- **आर्थिक परिवर्तन (रैंक 40):** 'आर्थिक परिवर्तन' में भारत का 40वां स्थान भविष्य की वृद्धि और नवाचार प्रतिमानों के अनुकूल होने में चुनौतियों का संकेत देता है। हालांकि भारत में मजबूत आर्थिक क्षमता है, लेकिन यह भविष्य-उन्मुख नवाचार और स्थिरता को बढ़ावा देने में संघर्ष करता है। भारत हरित प्रौद्योगिकियों और टिकाऊ प्रथाओं पर केंद्रित उद्योगों का समर्थन करने में पिछड़ रहा है। अपनी स्थिति में सुधार के लिए, भारत को नवाचार में निवेश बढ़ाने और स्थायी विकास का समर्थन करने वाले बुनियादी ढांचे का निर्माण करने की आवश्यकता है।

शिक्षा प्रणाली को रोजगार बाजार के साथ जोड़ने की चुनौतियाँः

- **कार्यबल अंतरालः** भारत के सामने एक महत्वपूर्ण चुनौती तेजी से बदलते उद्योगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए मौजूदा कार्यबल की अपर्याप्त तैयारी है। नियोक्ताओं को अक्सर उद्यमशीलता और नवाचार जैसे क्षेत्रों में आवश्यक कौशल वाले उम्मीदवारों को खोजने में कठिनाई होती है। डिजिटल परिवर्तन, ऑटोमेशन और एआई की बढ़ती गति के अनुसार कार्यबल को अधिक तेजी से अनुकूलित करने की आवश्यकता है।
- **उच्च शिक्षा की सीमाएँः** भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली अपने पाठ्यक्रम को नौकरी के बाजार की उभरती जरूरतों के साथ

जोड़ने के लिए संघर्ष करती है। जबकि भारत में बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय और संस्थान हैं, उनके पाठ्यक्रम अक्सर रचनात्मकता, समस्या-समाधान और उद्यमशीलता की सोच जैसे आवश्यक वास्तविक दुनिया के कौशल को एकीकृत करने में विफल रहते हैं। ये कौशल स्नातकों को उन उद्योगों के लिए तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण हैं जोकि डिजिटलीकरण, एआई और स्थिरता पर तेजी से ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इन दक्षताओं के बिना, स्नातक खुद को तेजी से बदलते नौकरी के बाजार की चुनौतियों के लिए तैयार नहीं पा सकते हैं।

- **स्थिरता और नवाचार:** 'आर्थिक परिवर्तन' श्रेणी में भारत का कम प्रदर्शन स्थिरता और नवाचार को बढ़ावा देने के साथ इसके संघर्ष को उजागर करता है। हालाँकि भारत की आर्थिक क्षमता मजबूत है, लेकिन यह उद्योगों में हरित प्रौद्योगिकियों और संधारणीय प्रथाओं का समर्थन करने में पीछे रह जाता है। अन्य क्षेत्रों, जैसे कि जी7 और एशिया-प्रशांत देशों की तुलना में, भारत नवाचार और संधारणीय प्रौद्योगिकियों में निवेश जैसे महत्वपूर्ण उप-संकेतकों में पिछड़ जाता है। दीर्घकालिक आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए, भारत को ऐसे उद्योगों की ओर रुख करना चाहिए जो स्थिरता और हरित प्रौद्योगिकियों के साथ संरेखित हों।
- **नीति और सीखने की सतत प्रक्रिया:** तकनीकी विकास और स्वचालन के कारण उद्योगों में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। इस परिवर्तन के साथ, आजीवन सीखने और कौशल विकास की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। एक हालिया रिपोर्ट में इस बात पर जोर दिया गया है कि कर्मचारियों के कौशल को बढ़ावा देने वाली नीतियां ही एक बदलते रोजगार बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहने का एकमात्र तरीका हैं। भारत को भी तेजी से बदलते हुए तकनीकी परिदृश्य के अनुकूल होने के लिए मजबूत कौशल विकास कार्यक्रमों को लागू करना चाहिए।

अंतराल को पाटने के लिए सिफारिशें:

- **पाठ्यक्रम सुधार:** कौशल अंतराल को पाटने के लिए, विश्वविद्यालयों को अपने पाठ्यक्रम में समस्या-समाधान, रचनात्मकता और उद्यमशीलता जैसे आवश्यक भविष्य-उन्मुख कौशल को शामिल करने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। शैक्षणिक संस्थानों को उद्योग के साथ सहयोग बढ़ाकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शैक्षणिक कार्यक्रम बाजार की मांगों के अनुरूप हों। इस प्रकार, स्नातक न केवल नियोक्ताओं की अपेक्षाओं को पूरा कर पाएंगे, बल्कि एआई और हरित प्रौद्योगिकियों जैसे उभरते क्षेत्रों में भी सफल होंगे।
- **सतत स्थिरता:** भारत को आर्थिक मोर्चे पर अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए भविष्य-उन्मुख नवाचारों और स्थायित्व पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसमें हरित प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना और टिकाऊ औद्योगिक विकास के लिए बुनियादी ढांचा विकसित करना शामिल है। स्थिरता पर केंद्रित उद्योगों को बढ़ावा देने से भारत इन क्षेत्रों में वैश्विक नेतृत्व का प्रदर्शन कर सकता है।
- **कौशल विकास हेतु पहल:** नीति निर्माताओं और शैक्षणिक संस्थानों को सीखने और पुनः कौशल कार्यक्रमों को लागू करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। ये पहल श्रमिकों को नौकरी बाजार की उभरती मांगों को पूरा करने के लिए अपने कौशल को लगातार उन्नत करने में मदद करेगी। जैसे-जैसे उद्योग बदलते हैं और नई तकनीकें उभरती हैं, निरंतर सीखने के अवसर यह सुनिश्चित करेंगे कि श्रमिक प्रतिस्पर्धी और अनुकूलनीय बने रहें।
- **उद्योग सहयोग:** कौशल अंतराल को दूर करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्नातक नियोक्ता की अपेक्षाओं को पूरा करते हैं, शिक्षाविदों और उद्योग के बीच मजबूत सहयोग आवश्यक है। उद्योग साझेदारी नौकरी बाजार में आवश्यक विशिष्ट कौशल में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है, जिससे शैक्षणिक संस्थानों को ऐसे पाठ्यक्रम तैयार करने में मदद मिलती है जोकि वर्तमान उद्योग की जरूरतों के साथ अधिक संरेखित होते हैं। ये सहयोग नवाचार और अनुसंधान को भी सुविधाजनक बना सकते हैं, जिससे शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई को और पाटा जा सकता है।

निष्कर्ष:

क्यूएस वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स 2025 में भारत का प्रदर्शन भविष्योन्मुखी कौशल, विशेष रूप से प्रौद्योगिकी और स्थिरता के क्षेत्रों में अग्रणी के रूप में देश की क्षमता को उजागर करता है। हालाँकि, इस क्षमता का उपयोग करने के लिए शिक्षा को नियोक्ता की जरूरतों के साथ जोड़ने, नवाचार को बढ़ावा देने और स्थिरता को संबोधित करने की चुनौतियों का समाधान किया जाना चाहिए। उच्च शिक्षा में सुधार, नवाचार में निवेश और आजीवन सीखने को बढ़ावा देकर, भारत 'भविष्य के कौशल प्रतियोगी' के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत कर सकता है और भविष्य के कौशल के क्षेत्र में वैश्विक नेता बनने के करीब पहुँच सकता है। इन प्रयासों के माध्यम से, भारत अपनी मौजूदा चुनौतियों पर काबू पा सकता है और तेजी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था की माँगों के लिए तैयार कार्यबल का निर्माण कर सकता है।

किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर अध्ययन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में सैपियन लैब्स की एक रिपोर्ट, 'द यूथ माइंड: राइजिंग एग्रेशन एंड एंगर' शीर्षक से, स्मार्टफोन के उपयोग और किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के मध्य नकारात्मक संबंधों पर प्रकाश डालती है। 2024 में आयोजित इस सर्वेक्षण में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका में 13-17 वर्ष की आयु के 10,000 से अधिक किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य का परीक्षण किया गया, जिसमें शुरुआती स्मार्टफोन उपयोग से जुड़े एक चिंताजनक रुझान का पता चला।

प्रमुख निष्कर्ष:

- रिपोर्ट ने भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों में इंटरनेट का प्रयोग करने वाले किशोरों की प्रतिक्रियाओं को दर्ज किया गया, जिसमें नकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य लक्षणों, विशेष रूप से आक्रामकता, क्रोध, चिड़चिड़ापन और यहां तक कि मतिभ्रम में वृद्धि को उजागर किया गया।
- रिपोर्ट का एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि वह किशोर जो कम उम्र में स्मार्टफोन का उपयोग शुरू करते हैं उनके मानसिक स्वास्थ्य में अधिक गिरावट देखने को मिलती है।
- रिपोर्ट में यह भी दर्शाया दिया गया है कि 2008 के आसपास स्मार्टफोन की शुरुआत युवा पीढ़ियों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि के साथ हुई।
- रिपोर्ट में किशोरों की मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों, जैसे वास्तविकता से दूर, अलगाव की भावना, नकारात्मक विचारों और अकेलेपन की बढ़ती भावना को दर्शाया गया है।

यू.एस. और भारत के बीच तुलना:

- अध्ययन में पाया गया कि अमेरिका और भारत दोनों के किशोरों पर स्मार्टफोन के उपयोग का बढ़ता प्रभाव देखने को मिल रहा है। मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट अमेरिकी किशोरों में अधिक स्पष्ट है। भारत में, विशेषकर पुरुषों में, मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट उतनी तेज नहीं हुई है।
- हालांकि, भारतीय महिलाओं, विशेषकर कम उम्र में स्मार्टफोन का उपयोग शुरू करने वाली महिलाओं में, समग्र मानसिक स्वास्थ्य में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। इन महिलाओं में लंबे समय तक नींद और स्वास्थ्य समस्याओं का अनुभव होने की अधिक संभावना है।
- दूसरी ओर, भारतीय पुरुषों ने मानसिक स्वास्थ्य में कम गिरावट का प्रदर्शन किया है और कुछ क्षेत्रों में तो सुधार भी देखा गया है।

संभावित समाधान:

- रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि किशोरों के लिए स्मार्टफोन की पहुंच को सीमित करना एक संभावित समाधान हो सकता है। माता-पिता के नियंत्रण वाले ऐप्स, जो उपयोगकर्ता द्वारा देखी जाने वाली सामग्री को सीमित करते हैं, इस दिशा में कदम हो सकते हैं। इन ऐप्स के माध्यम से, किशोर शैक्षिक पोर्टलों या संदेश सेवा प्लेटफॉर्म तक पहुंच बनाए रखते हुए, हानिकारक सामग्री से दूर रह सकते हैं।

- इसके अलावा, प्रारंभिक शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी (एड-टेक) की भूमिका पर भी चर्चा हो रही है।
- नियंत्रित स्मार्टफोन पहुंच के समर्थक मानते हैं कि स्क्रीन समय और सामग्री को प्रबंधित करने के लिए डिजाइन किए गए ऐप्स, स्मार्टफोन के अत्यधिक उपयोग से जुड़े कुछ नकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य प्रभावों को कम कर सकते हैं।

निष्कर्षों का महत्व:

- यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि डिजिटल युग में किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर नजर रखना और उनकी समस्याओं का समाधान करना कितना महत्वपूर्ण है। स्मार्टफोन आजकल हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा बन गए हैं, ऐसे में यह समझना जरूरी है कि वे किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करते हैं। माता-पिता, शिक्षक और नीति निर्माताओं सभी को इस मुद्दे पर ध्यान देने की जरूरत है।
- जैसा कि इस विषय पर बहस जारी है, यह स्पष्ट है कि शुरुआती

हस्तक्षेप, जिसमें स्मार्टफोन के उपयोग को नियंत्रित करना शामिल है, आने वाली पीढ़ियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना का एक दशक

चर्चा में क्यों?

हाल ही में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत में बालिकाओं की सुरक्षा, शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए चलायी जा रही बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (बीबीबीपी) योजना की दसवीं वर्षगांठ मना रहा है। इस अवसर पर 8 मार्च, 2025 तक राज्य और जिला स्तर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे जिनमें रैलियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सम्मान समारोह और जागरूकता अभियान शामिल हैं।

योजना के बारे में:

- 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई, बीबीबीपी योजना को बाल लिंगानुपात (सीएसआर) में गिरावट से निपटने, लिंग-पक्षपाती लिंग-चयनात्मक प्रथाओं को रोकने और बालिकाओं के जीवित रहने, सुरक्षा और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए तैयार किया गया था।

मुख्य उद्देश्य:

- बीबीबीपी योजना निम्नलिखित प्राथमिक उद्देश्यों द्वारा निर्देशित है:
  - » लिंगानुपात में सालाना कम से कम दो अंकों का सुधार कर बालिकाओं के जन्म दर में वृद्धि करना।
  - » संस्थागत प्रसव दर को 95% या अधिक बनाए रखकर मातृ मृत्यु दर को कम करना।
  - » प्रसव पूर्व देखभाल (एएनसी) पंजीकरण में प्रति वर्ष 1% की वृद्धि कर मातृ और शिशु स्वास्थ्य में सुधार करना।
  - » माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा में बालिकाओं के नामांकन को बढ़ावा देकर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।
  - » सुरक्षित मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन (एमएचएम) के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
  - » माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की ड्रॉपआउट दरों को कम करना।

मुख्य उपलब्धियां:

पिछले एक दशक में, बीबीबीपी योजना ने महत्वपूर्ण प्रगति की है:

- **जन्म के समय लिंगानुपात:** पिछले दस वर्षों में लड़कियों की जन्मदर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2014-15 में जहां हर 1000 लड़कों पर 918 लड़कियां होती थीं, वहीं 2023-24 में यह संख्या बढ़कर 930 हो गई है।
- **माध्यमिक शिक्षा:** 2014-15 में 75.51% की तुलना में 2023-24 में माध्यमिक स्तर पर लड़कियों का नामांकन बढ़कर 78% हो गया है।
- **संस्थागत प्रसव:** अब अधिकतर महिलाएं अस्पतालों में सुरक्षित प्रसव कर रही हैं। 2014-15 में यह संख्या 61% थी, जो अब बढ़कर 97.3% हो गई है।
- **प्रसव पूर्व देखभाल:** गर्भावस्था के दौरान महिलाओं द्वारा डॉक्टर के पास जाने की संख्या में भी वृद्धि हुई है। 2014-15 में यह संख्या 61% थी, जो अब बढ़कर 80.5% हो गई है।

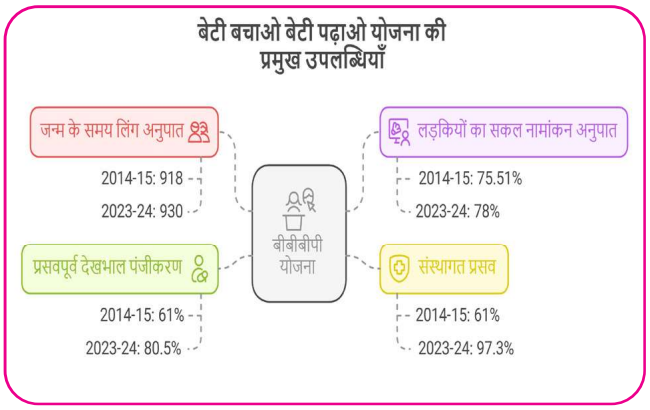

महिला सशक्तिकरण में योगदान:

- बीबीबीपी महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है:
  - » लैंगिक समानता और बालिकाओं की सुरक्षा के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
  - » लड़कियों और महिलाओं के लिए शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों को बढ़ावा देना।
  - » कौशल निर्माण और रोजगार की संभावनाओं को सक्षम करके आर्थिक भागीदारी को सुगम बनाना।
  - » बेहतर स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच सुनिश्चित करना, जिसमें संस्थागत प्रसव और समय पर प्रसव पूर्व देखभाल में वृद्धि शामिल है।
- बीबीबीपी योजना ने लैंगिक समानता को बढ़ावा देकर और बालिकाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करके महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। योजना ने शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों को बढ़ाकर महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को बढ़ावा दिया है। स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित करके, विशेषकर संस्थागत प्रसव और प्रसव पूर्व देखभाल के क्षेत्र में, बीबीबीपी ने मातृ और शिशु स्वास्थ्य में सुधार किया है। बीबीबीपी योजना ने समाज में महिलाओं के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत में विमुक्त, अर्ध-घुमंतु और घुमंतु जनजातियां

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (एएनएसआई) और जनजातीय अनुसंधान संस्थानों ने एक व्यापक अध्ययन पूरा किया है जिसमें देश की 268 विमुक्त, अर्ध-घुमंतु और घुमंतु जनजातियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। नीति आयोग के निर्देशन में यह अध्ययन फरवरी 2020 से अगस्त 2022 तक किया गया।

अध्ययन के बारे में :

- भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के नेतृत्व में, ओडिशा, गुजरात और अरुणाचल प्रदेश जैसे राज्यों में जनजातीय अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से, यह अध्ययन तीन वर्षों तक चला।
- इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इन जनजातियों की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को समझना और दस्तावेज करना था, जो सदियों से हाशिए पर रहने और अपनी घुमंतू जीवनशैली के कारण कई चुनौतियों का सामना कर रही हैं।
- अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि सर्वेक्षण किए गए 268 समुदायों में से अधिकांश को पहले से ही राज्य या केंद्र सरकार की सूचियों में शामिल किया गया था।
- अध्ययन में पाया गया कि 63 समुदायों के बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं थी, संभवत: ये समुदाय बड़े समुदायों में मिल गए हों, या इनका नाम बदल गया हो, या ये अन्य क्षेत्रों में चले गए हों। शोधकर्ताओं को इन समुदायों का पता लगाने में काफी मुश्किलें आईं।
- अध्ययन में यह भी सिफारिश की गई है कि 26 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में रहने वाले 179 समुदायों को अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति या अन्य पिछड़ा वर्ग की श्रेणी में शामिल किया जाए। इनमें से 85 समुदायों को पहली बार इस सूची में शामिल किया जाएगा।

एससी, एसटी, ओबीसी समावेश के लिए सिफारिशें:

- अध्ययन में कई समुदायों को अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) की श्रेणी में शामिल करने की सिफारिश की गई है। इनमें से:
  - 46 समुदायों को ओबीसी श्रेणी में शामिल करने का प्रस्ताव है।
  - 29 समुदायों को एससी श्रेणी में शामिल करने का प्रस्ताव है।
  - 10 समुदायों को एसटी श्रेणी में शामिल करने का प्रस्ताव है।
- उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक 19 समुदायों को इस सूची में शामिल करने का सुझाव दिया गया है। इसके अलावा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों में भी कई समुदायों को शामिल करने की सिफारिश की गई है।
- अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति की सटीक समझ के आधार पर नौ समुदायों के मौजूदा वर्गीकरण को परिष्कृत करने का भी सुझाव दिया गया, जिससे अधिक उपयुक्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।

विमुक्त जनजातियां के बारे में:

- विमुक्त जनजातियां (डीएनटी) उन समुदायों को संदर्भित करती हैं जिन्हें ऐतिहासिक रूप से 1871 के ब्रिटिश औपनिवेशिक आपराधिक जनजाति अधिनियम के तहत 'जन्मजात अपराधी' के रूप में चिन्हित किया गया था, जिसे 1952 में निरस्त कर दिया गया था।
- इसके बावजूद, भेदभाव जारी रहा और इन समुदायों को अब विमुक्त जनजातियों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। घुमंतु और अर्ध-घुमंतु जनजातियां इन विमुक्त समूहों का हिस्सा हैं।

घुमंतु जनजातियां:

- घुमंतु जनजातियाँ ऐसी जनजातियाँ होती हैं जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमती रहती हैं। वे पशुपालन, शिकार, या व्यापार जैसी गतिविधियों से अपना जीवन यापन करते हैं। ये जनजातियां अक्सर पशुपालन, शिकार, संग्रह या व्यापार जैसे गतिविधियों में संलग्न होती हैं। भारत में घुमंतु जनजातियों के कुछ उदाहरण हैं:
  - **वन गुज्जर:** मुख्य रूप से पशुपालक
  - **लांबाड़ी:** व्यापार में लगे हुए
  - **गुज्जर-बकरवाल:** मुख्य रूप से चरवाहे

अर्ध-घुमंतु जनजातियां:

- अर्ध-घुमंतु जनजातियाँ ऐसी होती हैं जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करती हैं, लेकिन पूरी तरह से घुमंतू नहीं होतीं। वे खेती और पशुपालन दोनों करती हैं और मौसम के अनुसार अपना निवास स्थान बदलती रहती हैं। अर्ध-घुमंतु जनजातियों के कुछ उदाहरणों में शामिल हैं:
  - **रैकास:** मुख्य रूप से पशुपालक लेकिन कृषि का भी अभ्यास करते हैं
  - **बंजारे:** मुख्यत: व्यापार में संलग्न हैं, कृषि के लिए अस्थायी रूप से बसते हैं।
- यह व्यापक अध्ययन न केवल इन समुदायों के सामने आने वाली ऐतिहासिक और वर्तमान चुनौतियों पर प्रकाश डालता है, बल्कि उपयुक्त वर्गीकरण और राज्य और केंद्रीय सूचियों में शामिल करने की सिफारिश करके उनके सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए एक रोडमैप भी प्रदान करता है।

जल्लिकट्टू

चर्चा में क्यों?

हाल ही में तमिलनाडु में कानूम पोंगल के दिन आयोजित किए गए

जल्लिकट्टू और मंजुविरट्टू कार्यक्रमों में सात लोगों की मृत्यु हो गई। पोंगल फसल उत्सव का हिस्सा होने वाले इन पारंपरिक बैल कार्यक्रमों ने सुरक्षा और पशु कल्याण के संबंध में गंभीर चिंताएं पैदा की हैं।

जल्लिकट्टू के बारे में:

- **जल्लिकट्टू:** जल्लिकट्टू तमिलनाडु का एक पारंपरिक खेल है जिसमें प्रतिभागी एक परिभाषित क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से दौड़ते हुए बैलों को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं।
- **स्थान:** यह खेल आमतौर पर पोंगल उत्सव के दौरान, विशेषकर मदुरै, पुदुकोट्टै और करूर जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित किया जाता है।
- **उद्देश्य और प्रक्रिया:** नियंत्रणकर्ता बैल के कूबड़ को पकड़ने और उसे नियंत्रण में करने का प्रयास करते हैं, जबकि बैल भागने की कोशिश करता है। सफल होने पर वशकर्ता को पुरस्कार मिलता है।
- **सांस्कृतिक संबंध:** यह खेल मनुष्यों और जानवरों के बीच के संबंध को मनाता है और कृषि में उनके योगदान का सम्मान करता है, इस प्रकार तमिल संस्कृति से गहराई से जुड़ा हुआ है।

ऐतिहासिक महत्व:

- **प्राचीन जड़ें:** मोहनजोदड़ो सभ्यता (2500-1800 ईसा पूर्व) के समय से ही भारत में बैल वश में करने की परंपरा रही है।
- **तमिल साहित्य:** संगम युग के तमिल महाकाव्य 'शिल्लापदिकारम' में जल्लिकट्टू का उल्लेख है, जोकि इसके लंबे सांस्कृतिक इतिहास का संकेत देता है।

पशु और सांस्कृतिक संरक्षण से संबंधित संवैधानिक प्रावधान:

- **अनुच्छेद 48A:** राज्य को पशु कल्याण में सुधार करने और वन्य जीवन की रक्षा करने के लिए काम करना चाहिए।
- **अनुच्छेद 51A(g):** नागरिकों को पशुओं के प्रति करुणा दिखानी चाहिए और वन्य जीवन की रक्षा करनी चाहिए।
- **अनुच्छेद 21:** जीवन का अधिकार जानवरों पर भी लागू होता है, जोकि उनकी गरिमा और निष्पक्ष उपचार पर जोर देता है।
- **अनुच्छेद 29(1):** सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा करता है, जिसमें जल्लिकट्टू जैसी पारंपरिक प्रथाएं भी शामिल हैं।
- **सूची III की प्रविष्टि 17:** केंद्र और राज्य सरकारों को पशु कल्याण के संबंध में कानून बनाने की अनुमति देता है।

हालिया कानूनी विकास:

- तमिलनाडु सरकार ने 2014 से 2016 तक प्रतिबंधित किए जाने के बाद पशु क्रूरता निवारण अधिनियम में संशोधन करके जल्लिकट्टू को बहाल किया।
- **सर्वोच्च न्यायालय का फैसला (2023):** सर्वोच्च न्यायालय ने जल्लिकट्टू की अनुमति देने वाले तमिलनाडु के कानून को बरकरार रखा, इसकी सांस्कृतिक महत्व को मान्यता दी।

जल्लिकट्टू के पक्ष और विपक्ष में तर्क:

पक्ष में तर्क

- **सांस्कृतिक विरासत:** जल्लिकट्टू तमिलनाडु की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसे पोंगल के दौरान मनाया जाता है।
- **समुदाय की भागीदारी:** यह आयोजन ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक भावना को बढ़ावा देता है और स्थानीय परंपराओं को मजबूत करता है।
- **आर्थिक लाभ:** यह खेल पुलिकुलम जैसी देशी पशु प्रजातियों का समर्थन करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है।
- **नस्ल संरक्षण:** यह देशी पशु प्रजातियों के संरक्षण में मदद करता है जोकि कृषि और ग्रामीण आजीविका के लिए महत्वपूर्ण हैं।

विपक्ष में तर्क:

- **पशु क्रूरता:** आलोचकों का तर्क है कि इस खेल में बैलों को अनावश्यक दर्द, पीड़ा और तनाव का सामना करना पड़ता है, जोकि पशु कल्याण कानूनों का उल्लंघन करता है।
- **सुरक्षा जोखिम:** इस आयोजन में मानव प्रतिभागियों और दर्शकों के लिए सुरक्षा की चिंता।
- **नैतिक चिंताएं:** पशु अधिकार कार्यकर्ता मनोरंजन और खेल के लिए बैलों के शोषण का विरोध करते हैं, गरिमा और अधिकारों के उल्लंघन का हवाला देते हैं।

जानवरों को शामिल करने वाले अन्य पारंपरिक त्योहार:

- **कांबला (कर्नाटक):** फसल उत्सवों के दौरान पानी से भरे खेतों में आयोजित भैंस की दौड़।
- **बैलगाड़ी दौड़ (महाराष्ट्र, पंजाब):** ग्रामीण मेलों के दौरान बैलगाड़ी की पारंपरिक दौड़।
- **मुर्गा लड़ाई (आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु):** संक्रांति त्योहारों के दौरान आयोजित मुर्गा लड़ाई।
- **ऊंट दौड़ (राजस्थान):** पुष्कर मेले में अक्सर आयोजित की जाने वाली ऊंट दौड़, जिसमें गति का प्रदर्शन किया जाता है।
- **धीरियो (गोवा):** ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित पारंपरिक बैलगाड़ी खेल।

माघी महोत्सव

चर्चा में क्यों?

नेपाल के पूर्वी भाग स्थित सुन्दरहरैचा नगरपालिका में 14 जनवरी से 20 जनवरी, 2025 तक मनाया गया माघी पर्व, थारू समुदाय का एक प्रमुख त्योहार है। यह उत्सव न केवल थारू संस्कृति की समृद्धि का प्रतीक है बल्कि भारत और नेपाल के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान

का एक महत्वपूर्ण उदाहरण भी है।

- यह उत्सव थारू संस्कृति, परंपराओं, व्यंजनों और कलाओं को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाता है।
- इस आयोजन में थारू समुदाय के अनूठे शिल्प, खाद्य पदार्थों और सांस्कृतिक प्रथाओं को प्रदर्शित किया जाता है, जोकि पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करता है।

महोत्सव का महत्वः

- नेपाली महीने माघ के पहले दिन मनाया जाने वाला माघी, थारू समुदाय का एक प्रमुख त्योहार है। यह त्योहार थारू लोगों के लिए अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और भूमि के साथ गहरे संबंधों को मनाने और सम्मान करने का अवसर है।
- माघी थारू समुदाय के लिए एकता और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है। परिवार और समुदाय के सदस्य एक साथ आकर भोजन करते हैं, संगीत और नृत्य का आनंद लेते हैं और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते हैं।
- आधुनिक जीवन शैली के बीच यह त्योहार थारू समुदाय की पहचान और प्रथाओं को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- माघी आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है। यह त्योहार बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। थारू हस्तशिल्प, पारंपरिक व्यंजन और स्थानीय उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए यह एक मंच प्रदान करता है।
- इसके अतिरिक्त, यह त्योहार युवा पीढ़ी को अपने पूर्वजों के रीति-रिवाजों और परंपराओं से जुड़ने और उन्हें अपनी विरासत को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है।

थारू जनजातिः

- थारू एक आदिवासी जनजाति हैं जोकि मुख्य रूप से नेपाल के तराई क्षेत्र और भारत में उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों में निवास करते हैं।
- नेपाल में, 2021 की नवीनतम जनगणना के अनुसार, थारू आबादी का अनुमान 1.7 मिलियन है। भारत में, वे मुख्य रूप से उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों में रहते हैं।
- थारू समुदाय कृषि, हस्तशिल्प और सांस्कृतिक प्रथाओं में अपनी गहरी जड़ों के लिए जाना जाता है। उनकी अनूठी जीवन शैली और रीति-रिवाज, जैसे संयुक्त परिवार प्रणाली, पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाएं और विशिष्ट विवाह संस्कार, ने उन्हें एक सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समूह बना दिया है, जोकि आधुनिक चुनौतियों के बावजूद अपनी पहचान बनाए रखने में सफल रहा है।
- व्यंजन, वस्त्र और नृत्य रूप उनकी जीवंत सांस्कृतिक जीवन के प्रमुख पहलू हैं, जो सभी माघी उत्सव के दौरान प्रमुखता से प्रदर्शित होते हैं।

ऐतिहासिक मान्यता और भाषाः

- 1967 में, भारत सरकार द्वारा थारू जनजाति को आधिकारिक रूप से अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता दी गई थी, जिसने उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को मान्यता दी।
- थारू समुदाय थारूहाटी भाषा का प्रयोग करता हैं, जोकि इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार के इंडो-आर्यन उपसमूह से संबंधित एक भाषा है।

महाकुंभ मेला 2025

चर्चा में क्यों?

महाकुंभ मेला, विश्व के सबसे बड़े धार्मिक समागमों में से एक है, जिसका आरंभ 13 जनवरी, 2025 से भारत के पवित्र शहर प्रयागराज में हुआ। यह पवित्र त्योहार हर बारह वर्षों में आयोजित किया जाता है और इस बार यह 45 दिनों तक चलेगा। यह पवित्र मेला पौष पूर्णिमा के पावन स्नान के साथ शुरू होगा और 26 फरवरी, 2025 को समाप्त होगा।

कुंभ मेला की पौराणिक उत्पत्तिः

- कुंभ शब्द का अर्थ संस्कृत में 'घड़ा' होता है। यह शब्द इस महान धार्मिक उत्सव का केंद्रबिंदु है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवताओं और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था। इस मंथन से अमृत निकला था। जब यह अमृत कलश में रखा गया था, तब कुछ बूंदें अमृत की इस धरती पर चार स्थानों पर गिर गई थीं: हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक। यह स्थान प्रत्येक बारह वर्ष में आयोजित होने वाले कुंभ मेले की मेजबानी करते हैं। यह मेला देवताओं द्वारा समुद्र मंथन के बारह दिवसीय काल को चिह्नित करता है।

कुंभ मेला का ऐतिहासिक विकासः

- कुंभ मेले का उल्लेख प्राचीन भारतीय ग्रंथों, विशेषकर वेदों में मिलती हैं। समुद्र मंथन की पौराणिक कथा इसके मूल में निहित है। हालांकि, 12वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य के योगदान से कुंभ मेले को एक दार्शनिक आधार मिला और इसे एक संगठित रूप दिया गया।
- भक्ति आंदोलन के उदय के साथ, कुंभ मेला एक जन-आंदोलन में परिवर्तित हो गया। साधु-संतों ने इस मेले में सक्रिय रूप से भाग लिया और लोगों को धर्म के प्रति जागरूक किया।

चार पवित्र शहरः

- **हरिद्वारः** जब बृहस्पति कुंभ राशि में प्रवेश करता है, तो तीर्थयात्री पवित्र गंगा नदी में स्नान करते हैं।
- **प्रयागराजः** गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम के लिए जाना जाता है, यह हर 12 वर्षों में महाकुंभ की मेजबानी करता है।
- **उज्जैनः** जब बृहस्पति सिंह राशि में होता है, तो क्षिप्रा नदी मेले की मेजबानी करती है।

- **नासिक-त्र्यंबकेश्वर:** जब बृहस्पति सिंह राशि में होता है, तो गोदावरी नदी मेले की मेजबानी करती है।

कुंभ मेला का महत्व:

- **आध्यात्मिक प्रासंगिकता:** कुंभ मेला आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर अनुष्ठानिक स्नान। तीर्थयात्रियों का मानना है कि गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम में यह डुबकी उनके पापों को शुद्ध करती है और मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति) प्रदान करती है।
- **सांस्कृतिक प्रदर्शन:** कुंभ मेला भारतीय संस्कृति का भी उत्सव है, जिसमें भक्तिमय कीर्तन, भजन और कथक, भरतनाट्यम और कुचिपुड़ी जैसे शास्त्रीय नृत्य शामिल हैं। ये प्रदर्शन आध्यात्मिक एकता और दिव्य भक्ति को उजागर करते हैं।
- **ज्योतिषीय समय:** यह आयोजन सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति के संरेखण के अनुसार समयबद्ध होता है, जोकि त्योहार की आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ाता है। यह ज्योतिषीय संबंध मेला के पवित्र महत्व को बढ़ाता है, जिससे यह आध्यात्मिक गतिविधियों के लिए एक सकरात्मक ऊर्जा का समय बन जाता है।
- **सिंहस्थ कुंभ:** जब बृहस्पति ग्रह सिंह राशि में होता है, तब नासिक और उज्जैन में आयोजित कुंभ मेले को सिंहस्थ कुंभ कहा जाता है। यह खगोलीय संयोग मेले के आध्यात्मिक महत्व को और अधिक बढ़ा देता है, जिसके परिणामस्वरूप इसमें बड़ी संख्या में तीर्थयात्री शामिल होते हैं।

कुंभ मेला: राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक:

- कुंभ मेला राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन करता है। 2017 में, यूनेस्को ने इसे मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी और पीढ़ियों के बीच आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने में इसके स्थायी प्राचीन परंपराओं और इसके महत्व को स्वीकार किया।

ट्रांसजेंडर आरक्षण

चर्चा में क्यों?

हाल ही में क्षैतिज आरक्षण का समर्थन करने वाले एक ट्रांसजेंडर कार्यकर्ता ने एक कार्यकर्ता पर जातिवादी और ट्रांसफोबिक व्यवहार का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराई है, जिसमें अपमानजनक भाषा का उपयोग करना शामिल है। शिकायत के जवाब में, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग (एनसीएससी) ने स्थानीय जिला प्रशासन और पुलिस को नोटिस जारी कर आरोपों की जांच करने और 17 जनवरी तक कार्रवाई रिपोर्ट देने का निर्देश दिया है।

क्षैतिज बनाम ऊर्ध्वाधर आरक्षण के बारे में:

क्षैतिज आरक्षण (Horizontal Reservation):

- **परिभाषा:** एक बड़ी श्रेणी के भीतर एक विशिष्ट समूह के लिए आरक्षण (जैसे, एससी के भीतर विकलांग लोग)। लक्ष्य समूह: एक बड़ी श्रेणी या वर्ग के लाभार्थी (जैसे, एससी, एसटी, ओबीसी के भीतर ट्रांसजेंडर व्यक्ति)।
- **उदाहरण:** एससी या ओबीसी समूहों के भीतर महिलाओं के लिए आरक्षण।
- हाशिए पर पड़ी जातियों जैसे कि ट्रांसजेंडर व्यक्तियों द्वारा सामना किए जाने वाले स्तरित भेदभाव को संबोधित करने के लिए आरक्षित श्रेणी के भीतर उप-श्रेणियों को संबोधित करता है।

ऊर्ध्वाधर आरक्षण (Vertical Reservation):

- **परिभाषा:** जाति, वर्ग आदि जैसी विशिष्ट श्रेणियों के लिए आरक्षण।
- **लक्षित समूह:** संपूर्ण श्रेणियाँ

उदाहरण: सामान्य रूप से एससी, एसटी और ओबीसी श्रेणियों के लिए आरक्षण।

विशिष्ट जातियों या समुदायों को आरक्षण प्रदान करता है, लेकिन ट्रांसजेंडर व्यक्तियों द्वारा सामना किए जाने वाले स्तरित भेदभाव को संबोधित नहीं करता है।

कानूनी और सामाजिक निहितार्थ:

- सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्ग (एसईबीसी) के रूप में मान्यता दी थी, लेकिन इस श्रेणी में उन्हें कैसे शामिल किया जाए, इस पर स्पष्ट दिशानिर्देश नहीं दिए। परिणामस्वरूप, विभिन्न राज्यों ने इस मुद्दे को अलग-अलग तरीकों से संबोधित किया है।उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को ओबीसी श्रेणी में शामिल किया है, जबकि तमिलनाडु जैसे अन्य राज्य क्षैतिज आरक्षण के पक्ष में हैं। इस विरोधाभासी व्याख्या के कारण, सुप्रीम कोर्ट ने मार्च 2023 में इस मामले में आगे स्पष्टीकरण देने से इनकार कर दिया।

भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए पहल:

भारत ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को सशक्त बनाने और समर्थन देने के लिए कई प्रमुख पहलों को लागू किया है, जिनमें उनके अधिकारों और कल्याण पर ध्यान केंद्रित किया गया है:

- **ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019:** इस कानून का उद्देश्य शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवा में भेदभाव को समाप्त करना है, जबकि ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के स्व-अनुभूत लिंग पहचान के अधिकार को मान्यता देना है।
- **ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) नियम, 2020:** ये नियम 2019 अधिनियम के प्रावधानों को लागू करते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि ट्रांसजेंडर व्यक्ति कानूनी सहायता और कल्याणकारी उपायों तक पहुंच बना सकें।
- **ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय परिषद:** 2019 अधिनियम के तहत स्थापित, यह परिषद ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के कल्याण में सुधार के उद्देश्य से नीतियों, कार्यक्रमों और कानून पर सरकार को सलाह देती है।
- **ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए आरक्षण:** केंद्र सरकार ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर पड़े ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की समस्या को दूर करने के लिए सरकारी नौकरियों में ओबीसी श्रेणी के तहत उन्हें आरक्षण प्रदान करने पर काम कर रही है।
- **ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पोर्टल:** यह प्लेटफॉर्म ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को प्रमाण पत्र और पहचान पत्र के लिए ऑनलाइन आवेदन करने की अनुमति देता है, जिससे पारदर्शी और सुलभ आवेदन प्रक्रिया सुनिश्चित होती है।
- **गरिमा गृह:** एक आश्रय योजना जो ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए बुनियादी सुविधाएं, चिकित्सा देखभाल और कौशल विकास प्रदान करती है, जिससे उन्हें सम्मान के साथ रहने और समाज में एकीकृत होने में सक्षम बनाया जा सके।

आगे की राह:

यह मुद्दा ट्रांसजेंडर व्यक्तियों, विशेष रूप से हाशिए पर रही जातियों के लोगों द्वारा सामना किए जाने वाले अंतर-विभाजन भेदभाव को रेखांकित करता है, जो लिंग और जाति-आधारित पूर्वाग्रह का शिकार होते हैं। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति भेदभाव के इन दोहरे रूपों को संबोधित करने के लिए क्षैतिज आरक्षण महत्वपूर्ण हैं।

पंजाब में पीएम-यशस्वी योजना के तहत लांच हुआ छात्रवृत्ति पोर्टल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में पंजाब सरकार ने सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के द्वारा शुरू की गयी प्रधानमंत्री युवा उपलब्धि छात्रवृत्ति पुरस्कार योजना (पीएम-यशस्वी) के तहत अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईबीसी) और विमुक्त जाति (डीएनटी) श्रेणी के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति पोर्टल लॉन्च किया है। इस पहल का उद्देश्य आर्थिक रूप से पिछड़े और वंचित वर्गों के छात्रों को शैक्षिक सशक्तिकरण प्रदान करना है।

योजना का उद्देश्य:

- प्रधानमंत्री यशस्वी योजना का प्राथमिक उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है ताकि उन्हें अपनी शिक्षा में आने वाली बाधाओं को दूर करने और उच्च शिक्षा प्राप्त करने में मदद मिल सके। योजना का लक्ष्य शिक्षा के माध्यम से इन छात्रों को सशक्त बनाकर उनका बेहतर भविष्य सुनिश्चित करना है।

चयन प्रक्रिया:

- योजना के तहत, छात्रों का चयन यशस्वी प्रवेश परीक्षा (वाईईटी) के माध्यम से किया जाता है, जिसका आयोजन राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) द्वारा किया जाता है। यह प्रवेश परीक्षा छात्रवृत्ति के लिए पात्र छात्रों का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पात्रता मानदंड:

- यह योजना निम्नलिखित श्रेणियों के छात्रों के लिए उपलब्ध है:
  - » अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी)
  - » आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईबीसी)
  - » विमुक्त जाति (डीएनटी)
- इसके अतिरिक्त, योजना के लिए पात्र होने के लिए परिवार की कुल वार्षिक आय 2.5 लाख रुपये से कम होनी चाहिए।

शामिल योजनाएं:

- पीएम-यशस्वी योजना में डॉ. अंबेडकर पोस्ट-मैट्रिक और प्री-मैट्रिक छात्रवृत्तियों जैसी पुरानी योजनाओं को भी शामिल किया गया है, इस प्रकार वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए शैक्षिक सहायता के लिए एक अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया गया है।

उप-योजनाएं:

- **प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति (कक्षा 9-10):** जिन छात्रों की परिवार की आय 2.5 लाख रुपये से कम है, उन्हें 4,000 रुपये की छात्रवृत्ति दी जाएगी।
- **पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति (उच्च शिक्षा):** छात्र द्वारा किए जा रहे पाठ्यक्रम के आधार पर 5,000 से 20,000 रुपये तक की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।

अतिरिक्त सुविधाएं:

- योजना स्कूलों और कॉलेजों में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करेगी, साथ ही ओबीसी श्रेणी के छात्रों के लिए छात्रावासों का निर्माण भी करेगी। इन अतिरिक्त सुविधाओं का उद्देश्य एक बेहतर शैक्षिक वातावरण प्रदान करना है, यह सुनिश्चित करना कि छात्र

बिना किसी बाधा के अपनी पढ़ाई जारी रख सकें।

निष्कर्ष:

पीएम-यशस्वी योजना पंजाब में वंचित वर्गों के छात्रों के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। वित्तीय बाधाओं को कम करके, यह छात्रों को शैक्षणिक रूप से उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करेगा और उनके लिए एक उज्जवल भविष्य सुनिश्चित करेगा।

सिंधु घाटी सभ्यता

चर्चा में क्यों?

हाल ही में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने सिंधु घाटी सभ्यता (आईवीसी) लिपि को सफलतापूर्वक समझने वालों के लिए 1 मिलियन डॉलर के पुरस्कार की घोषणा की है, जिससे संभवत: प्राचीन और रहस्यमय लेखन प्रणाली के बारे में जानकारी मिल सकेगी।

लिपि का समझने में असफलता के कारण:

- **बहुभाषी शिलालेखों का अभाव:** हड़प्पा काल में कोई भी द्विभाषी या बहुभाषी शिलालेख नहीं मिला, जिससे प्रतीकों की ज्ञात भाषाओं से तुलना करना कठिन हो गया।
- **अज्ञात भाषा:** हड़प्पा लिपि एक अपठित भाषा का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे ध्वन्यात्मक मूल्यों का निर्धारण करना जटिल हो जाता है।
- **सीमित भौतिक साक्ष्य:** केवल 3,500 मुहरें और संक्षिप्त शिलालेख, पैटर्न की पहचान करने की क्षमता को सीमित करते हैं। कई संभावित कलाकृतियाँ दबी हुई और अज्ञात हैं।
- **सांस्कृतिक संदर्भ का अभाव:** हड़प्पा समाज के बारे में बहुत कम जानकारी है, जिससे सभ्यता की संस्कृति और संरचनाओं को समझे बिना लिपि की व्याख्या करना चुनौतीपूर्ण है।
- **सैद्धांतिक असहमति:** लिपि की भाषा के बारे में प्रतिस्पर्धी सिद्धांत (जैसे, प्रोटो-द्रविड़ियन, इंडो-यूरोपियन) व्याप्त हैं साथ ही इसके अर्थ पर कोई आम सहमति नहीं हैं।

सिंधु घाटी लिपि के बारे में:

- सिंधु लिपि प्राचीन भारत के इतिहास में एक रहस्यमयी विषय रही है। यह लिपि सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों द्वारा उपयोग की जाती थी, जो लगभग 2600 से 1900 ईसा पूर्व के बीच उपयोग में लाई जाती थी। इस सभ्यता ने अपनी उन्नत नगर योजना, जल प्रबंधन और व्यापार के लिए दुनिया भर में ख्याति प्राप्त की है।

सिंधु लिपि की प्रमुख विशेषताएँ:

- **सामग्री का उपयोग:** इसे मुहरों, मिट्टी के बर्तनों, औजारों और स्टीटाइट, हड्डी और तांबे जैसी सामग्रियों से बनी पट्टियों पर उत्कीर्ण किया गया।
- **बौस्ट्रोफेडॉन शैली:** दाएं से बाएं और बाएं से दाएं बारी-बारी से लिखना।
- **संकेत प्रकार:** इसमें लोगो-सिलेबिक संकेत शामिल हैं, जो पूरे शब्दों और ध्वन्यात्मक ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **अंक:** इसमें दशमलव प्रणाली का उपयोग किया जाता है, जिसमें इकाइयों के लिए नीचे की ओर तीर तथा दहाई के लिए अर्धवृत्त का उपयोग किया जाता है।
- **विकास:** चिह्नों से विकसित होकर एक पूर्ण लेखन प्रणाली बन गई।

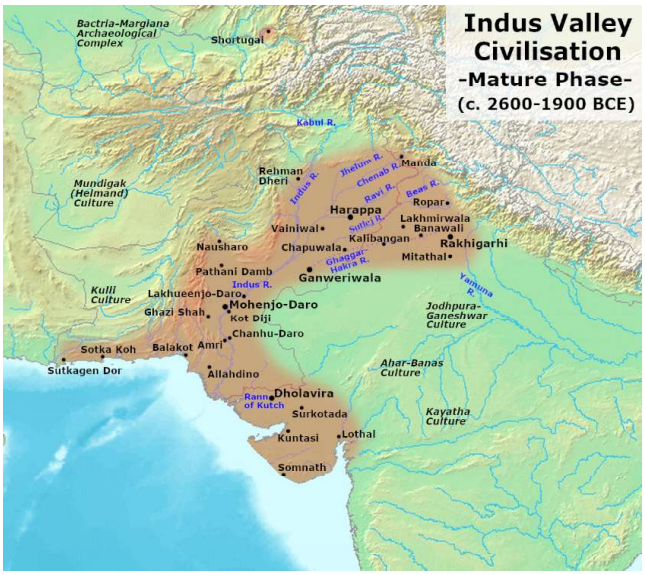

अनुवाद सम्बन्धी चुनौतियाँ:

- **द्विभाषी अभिलेखों का अभाव:** तुलनात्मक ग्रंथों का अभाव होने के कारण अनुवाद करना बेहद कठिन हो गया है।
- **संक्षिप्त पाठ:** अधिकांश शिलालेख संक्षिप्त हैं, जिससे पैटर्न की पहचान करना जटिल हो जाता है।
- **अनिश्चित भाषाई संबंध:** भाषा अज्ञात बनी हुई है। विभिन्न सिद्धांतों के अनुसार यह द्रविड़, इंडो-यूरोपीय या अन्य भाषाओं से संबंधित हो सकती है।

सिंधु लिपि का पतन:

- यह लिपि 1800 ईसा पूर्व के आसपास लुप्त हो गई, जो सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के साथ मेल खाती है। बाद की सभ्यताओं ने इसे नहीं अपनाया, जिससे अंतत: इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।

मैया सम्मान योजना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने रांची में आयोजित एक कार्यक्रम में 'मैया सम्मान योजना' के तहत पात्र महिलाओं को

2500 रुपये की पहली बढ़ी हुई किस्त वितरित की।

योजना का मुख्य विवरण:

- **वित्तीय सहायता में वृद्धि:** मैया सम्मान योजना के नये प्रावधानों के अंतर्गत महिलाओं को दी जाने वाली मासिक वित्तीय सहायता राशि 1,000 रुपये से बढ़ाकर 2,500 रुपये कर दी गई है। इस कदम का उद्देश्य राज्य में महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है।
- **प्रारंभ तिथि:** लाभार्थियों को दिसंबर 2024 से बढ़ी हुई राशि मिलनी शुरू हुई।
- **लाभार्थी:** इस योजना से वर्तमान में झारखंड में लगभग 50 लाख महिलाएँ लाभान्वित हो रही हैं, जिनमें से सभी 18 वर्ष से अधिक आयु की हैं। संशोधित राशि के साथ, राज्य सरकार पर सालाना 9,000 करोड़ रुपये का वित्तीय बोझ बढ़ने का अनुमान है।

मैया सम्मान योजना: एक विस्तृत विश्लेषण:

- **प्रारंभ:** मैया सम्मान योजना को झारखंड सरकार ने अगस्त 2024 में प्रारंभ किया था। इसने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की पहल के तहत शुरुआत में 18 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं को 1,000 रुपये प्रति माह प्रदान किए।
- **उद्देश्य:** यह योजना महिलाओं को अपने घरेलू खर्चों के प्रबंधन में सहायता करने तथा वित्तीय स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए तैयार की गई है, विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए जिनके पास नियमित आय नहीं है।

सार्वभौमिक बुनियादी आय (यूबीआई):

- यूनिवर्सल बेसिक इनकम (UBI) सभी नागरिकों को दिया जाने वाला एक नियमित, बिना शर्त नकद हस्तांतरण है, चाहे उनकी आय या सामाजिक-आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। इसका लक्ष्य वित्तीय सुरक्षा प्रदान करके और लोगों को काम चुनने में अधिक स्वतंत्रता देकर गरीबी और असमानता को कम करना है।
- **अनुच्छेद 41:** बेरोजगारी, वृद्धावस्था, बीमारी, विकलांगता और अन्य अवांछनीय अभाव की स्थिति में काम, शिक्षा और सार्वजनिक सहायता के अधिकार की गारंटी देता है।
- **लाभ:**
  - » आर्थिक स्वतंत्रता
  - » भ्रष्टाचार में कमी
  - » धन का न्यायसंगत वितरण
- हालाँकि, इसमें कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जैसे:
  - » उच्च राजकोषीय लागत
  - » मुद्रास्फीति जोखिम
  - » कार्यबल भागीदारी में संभावित कमी
- आर्थिक सर्वेक्षण 2016-17 में भारत में यूबीआई को अधिक व्यवहार्य बनाने के लिए महिलाओं या कमजोर समूहों को लक्षित करने जैसे विकल्प सुझाए गए हैं।

अकेलेपन पर नया अध्ययन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में किए गए एक अध्ययन में अकेलेपन और सामाजिक अलगाव को शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं, विशेष रूप से बीमारियों और मृत्यु दर से जोड़ा गया है। नेचर ह्यूमन बिहेवियर में प्रकाशित इस अध्ययन का शीर्षक 'सामाजिक अलगाव और अकेलेपन से जुड़े प्लाज्मा प्रोटीन के संकेतक, बीमारियों एवं मृत्युदर से जुड़े होते है' है।

- अध्ययन से पता चलता है कि अकेलापन और सामाजिक अलगाव रक्त में कुछ प्रोटीन के स्तर को प्रभावित करते हैं, जो कई गंभीर स्वास्थ्य स्थितियों से जुड़े हैं। यह अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि सामाजिक अलगाव केवल एक मनोवैज्ञानिक मुद्दा नहीं है, बल्कि इसके जैविक प्रभाव भी हैं जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष:

- **रक्त के नमूनों का विश्लेषण:** शोधकर्ताओं ने यूके बायोबैंक से 40-69 वर्ष की आयु के 42,000 से अधिक वयस्कों के रक्त के नमूनों का विश्लेषण किया। उन्होंने अकेलेपन या सामाजिक अलगाव की रिपोर्ट करने वाले व्यक्तियों के रक्त में प्रोटीन के स्तर की तुलना उन लोगों से की जोकि इन स्थितियों की रिपोर्ट नहीं करते हैं।
- **सामाजिक अलगाव और अकेलेपन का प्रोटीन स्तर पर प्रभाव:** अध्ययन में पाया गया कि 9.3% प्रतिभागियों ने सामाजिक अलगाव की बात कही, जबकि 6.4% ने अकेलेपन की बात कही। इन व्यक्तियों ने अलग-अलग प्रोटीन प्रोफाइल प्रदर्शित किए, जिनमें से लगभग 85% प्रोटीन अकेलेपन से जुड़े थे।
- **स्वास्थ्य जोखिम से जुड़े प्रोटीन:** अकेलेपन या सामाजिक अलगाव का अनुभव करने वाले लोगों में प्रोटीन का उच्च स्तर पाया गया। ये प्रोटीन सूजन, वायरल संक्रमण, प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया, हृदय संबंधी बीमारियों, टाइप 2 मधुमेह और यहां तक कि समय से पहले मृत्यु से भी जुड़े हैं।
- **पहचाने गए प्रमुख प्रोटीन:**
  - » **एडीएम (एड्रेनोमेडुलिन):** अकेले व्यक्तियों में एडीएम का स्तर बढ़ा हुआ पाया जाता है। एडीएम एक तनाव हार्मोन है और यह 'लव हार्मोन' ऑक्सीटोसिन को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह तनाव कम करने और मूड बेहतर बनाने में मदद करता है।
  - » **एएसजीआर1:** अकेले व्यक्तियों में एएसजीआर1 (एशियलोग्लाइकोप्रोटीन 1) का स्तर उच्च होता है। उच्च स्तर का एएसजीआर1 उच्च कोलेस्ट्रॉल और हृदय रोग के बढ़ते जोखिम से जुड़ा हुआ है।
  - » **अन्य प्रोटीन:** अध्ययन में अन्य प्रोटीनों की भी पहचान की गई है जो इंसुलिन प्रतिरोध, कैंसर की प्रगति और अन्य स्वास्थ्य स्थितियों में योगदान करते हैं।

- **सूजन और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया की भूमिका:** शरीर में कुछ खास तरह के प्रोटीन होते हैं जोकि सूजन पैदा करते हैं। जब यह सूजन लंबे समय तक रहती है, तो यह हमारे शरीर को नुकसान पहुंचा सकती है और हमें कई गंभीर बीमारियां हो सकती हैं, जैसे कि दिल की बीमारी और स्ट्रोक।

अकेलेपन के स्वास्थ्य पर प्रभाव:

- **हृदय संबंधी जोखिम:** एशियलोग्लाइकोप्रोटीन 1 (Asialoglycoprotein Receptor) का बढ़ा हुआ स्तर हृदय संबंधी रोगों के जोखिम को बढ़ाता है, जिससे अलग-थलग रहने वाले व्यक्ति हृदय संबंधी समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।
- **मानसिक और शारीरिक तनाव:** एडीएम जैसे प्रोटीन संकेत देते हैं कि अकेलापन तनाव प्रबंधन को कमजोर करता है, जोकि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ा सकता है।
- **दीर्घकालिक स्थितियां:** प्रोटीन का बढ़ा हुआ स्तर टाइप 2 मधुमेह और कैंसर जैसी स्थितियों से जुड़ा हुआ है, जोकि दर्शाता है कि सामाजिक अलगाव किस प्रकार रोगों की प्रगति को तेज करता है।

आगे की राह:

- **जागरूकता बढ़ाना:** अकेलेपन से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में जागरूकता बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता है। मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पेशेवरों को अपनी देखभाल के हिस्से के रूप में सामाजिक अलगाव को संबोधित करना चाहिए।
- **नीति और सामुदायिक कार्रवाई:** सरकारों को विशेष रूप से बुजुर्गों और कमजोर आबादी के बीच अलगाव को कम करने के लिए समावेशी समुदायों और सामाजिक पहल को बढ़ावा देना चाहिए।
- **समग्र स्वास्थ्य देखभाल पर ध्यान केन्द्रित करना:** स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को दीर्घकालिक रोगों के निदान और उपचार के समय अकेलेपन सहित सामाजिक कारकों पर विचार करना चाहिए तथा उपचार प्रक्रिया के भाग के रूप में सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- **तकनीकी समाधान:** एआई और प्रोटिओमिक्स जैसी उन्नत तकनीकों से सामाजिक अलगाव को विशिष्ट बीमारियों से जोड़ने वाले बायोमार्करों की पहचान की जा सकती है। इससे अकेलेपन से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याओं को समझने और उनके उपचार के तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव आ सकता है।

प्रवासी भारतीय दिवस

चर्चा में क्यों?

प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) भारत के विकास और समृद्धि में प्रवासी भारतीय समुदाय के महत्वपूर्ण योगदान का जश्न मनाने वाला एक प्रतिष्ठित आयोजन है। वर्ष 2025 में पीबीडी का 18वां संस्करण 8 से 10 जनवरी तक ओडिशा के भुवनेश्वर में आयोजित किया गया। इस वर्ष का विषय 'विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान' प्रवासी भारतीयों द्वारा भारत के विकास में निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है।

प्रवासी का इतिहास भारतीय दिवस:

- प्रवासी भारतीय दिवस पहली बार 9 जनवरी, 2003 को मनाया गया था, ताकि प्रवासी भारतीयों के अमूल्य योगदान को मान्यता दी जा सके। यह दिन महात्मा गांधी के वर्ष 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने की याद दिलाता है, जोकि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐतिहासिक क्षण था।
- यह दिन सबसे महान प्रवासी (विदेशी भारतीय) के रूप में उनकी भूमिका को मान्यता देता है। वर्ष 2015 से, इसके प्रारूप को संशोधित (पहले एक वर्षीय) किया गया है, ताकि हर दो साल में एक बार प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जा सके और इस बीच की अवधि में प्रवासी विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं और हितधारकों की भागीदारी के साथ थीम आधारित प्रवासी भारतीय सम्मेलन आयोजित किए जा सकें।
- समय के साथ, यह प्रवासी भारतीयों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने और भारत के विकास में उनकी निरंतर भागीदारी को प्रोत्साहित करने का एक प्रमुख मंच बन गया है।

आयोजन का महत्व:

- **सांस्कृतिक महत्व:** प्रवासी भारतीय दिवस भारत और उसके वैश्विक प्रवासी समुदाय के बीच गहरे सांस्कृतिक संबंधों का उत्सव है। यह कार्यक्रम प्रवासी भारतीयों को अपनी विरासत और संस्कृति से फिर से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। यह भारत और उन देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है जहाँ ये प्रवासी समुदाय रहते हैं, जिससे परंपराओं, कला और मूल्यों को साझा करने में मदद मिलती है। यह आदान-प्रदान भारत और उसके प्रवासी लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करता है और आपसी समझ को बढ़ाता है।
- **आर्थिक महत्व:** प्रवासी भारतीय भारत की अर्थव्यवस्था में धन प्रेषण के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जोकि पूरे भारत में परिवारों और समुदायों को महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, प्रवासी भारतीय दिवस प्रवासी भारतीयों को भारत में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे देश की आर्थिक वृद्धि और विकास को बढ़ावा मिलता है। यह कार्यक्रम भारत और उन देशों, जहाँ प्रवासी रहते हैं, दोनों को लाभ पहुँचाने वाले व्यावसायिक अवसरों, उद्यमशीलता और नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।
- **सामाजिक महत्व:** प्रवासी भारतीय दिवस प्रवासी भारतीयों

के बीच सामुदायिक भावना का निर्माण करने में मदद करता है, नेटवर्किंग और सहयोग को सुविधाजनक बनाता है। प्रवासी समुदाय के कई सदस्य भारत में सामाजिक कार्यों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और गरीबी उन्मूलन में योगदान देते हैं। उनकी धर्मार्थ गतिविधियाँ और निवेश लाखों भारतीयों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करते हैं और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने में मदद करते हैं।

- **कूटनीतिक महत्वः** प्रवासी भारतीय दिवस उन देशों के साथ भारत के कूटनीतिक संबंधों को मजबूत करता है, जहां बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय रहते हैं। यह प्रवासी कूटनीति के प्रति एक पहल है, जहां भारत अपने राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा देने के लिए अपने प्रवासियों के साथ जुड़ता है। यह आयोजन वैश्विक मंच पर भारत के प्रभाव को बढ़ाने में भी मदद करता है, जिससे विदेशी सरकारों और अंतरराष्ट्रीय समुदायों के साथ सद्भावना का निर्माण होता है।
- **व्यक्तिगत महत्वः** प्रवासी भारतीयों के लिए, प्रवासी भारतीय दिवस अपनी विरासत के प्रति अपनेपन और गर्व की भावना प्रदान करता है। यह कार्यक्रम उन्हें भारत के विकास में सक्रिय रूप से योगदान करने के लिए प्रेरित करता है, चाहे वह निवेश, सामाजिक कार्य या व्यावसायिक उपक्रमों के माध्यम से हो। यह प्रवासी भारतीयों को भारत से जुड़ाव महसूस करने में मदद करता है और राष्ट्र की प्रगति में उनकी निरंतर भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।

2 राजव्यवस्था एवं शासन

भारत में डिजिटल गवर्नेंसः चुनौतियां, अवसर और सिफारिशें

सन्दर्भः

हाल के वर्षों में, भारत ने डिजिटल शासन की दिशा में एक महत्वाकांक्षी यात्रा शुरू की है, जिसका उद्देश्य नागरिक सेवाओं को बढ़ाना और सरकारी कर्मचारियों की दक्षता में सुधार करना है। यह परिवर्तन एक महत्वपूर्ण वास्तविकता को रेखांकित करता है। सार्वजनिक सेवा वितरण की सफलता स्वाभाविक रूप से इसके पीछे कार्यबल के कौशल और क्षमताओं से जुड़ी हुई है। महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद यह प्रमुख प्रश्न बना हुआ है कि इस डिजिटल बदलाव की क्षमता को पूरी तरह से साकार करने के लिए और क्या किया जा सकता है?

डिजिटल गवर्नेंस की नींवः

- शासन एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें सरकार, गैर-सरकारी संगठन, स्थानीय समुदाय और नागरिक सहित विभिन्न हितधारक भागीदार होते हैं। चाणक्य के अर्थशास्त्र में प्रतिपादित शासन सिद्धांतों ने दक्षिण एशियाई शासन पर गहरा प्रभाव छोड़ा है, जिसमें शासन कला, आर्थिक नीति और नैतिक नेतृत्व पर विशेष बल दिया गया है।
- आधुनिक युग में, सभी स्तरों पर शासन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए डिजिटल तकनीकों का उपयोग अनिवार्य हो गया है। शासन में शामिल सभी पक्षों के लिए इन तकनीकों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने हेतु क्षमता निर्माण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डिजिटल शासन में क्षमता निर्माणः

- डिजिटल शासन व्यवस्था ने सरकारी कार्यप्रणाली में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। प्रौद्योगिकी के एकीकरण से न केवल संचार और निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक कुशल बनी है, बल्कि पारदर्शिता भी बढ़ी है।
- इससे बिचौलियों की भूमिका में कमी आई है और जनता को सीधे सेवाएं मिलने लगी हैं। बदलते समय के साथ जनता की अपेक्षाएं भी बढ़ रही हैं, जिसके लिए शासन में कार्यरत लोगों को नए कौशल विकसित करने की आवश्यकता है।

प्रमुख पहलः

- **iGOT कर्मयोगी प्लेटफॉर्मः** 2020 में शुरू किया गया यह ऑनलाइन प्रशिक्षण मंच सरकारी अधिकारियों को डेटा विश्लेषण, लोक प्रशासन और डिजिटल तकनीकों से संबंधित आवश्यक कौशल प्रदान करता है। व्यक्तिगतकृत शिक्षण पथों के माध्यम से निरंतर सीखने को प्रोत्साहित किया जाता है, जो कि तेजी से बदलते परिवेश में सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- **ई-ऑफिस पहलः** यह पहल सरकारी कार्यप्रवाह को डिजिटल बनाती है, जिससे कागजी कार्रवाई पर निर्भरता काफी कम हो जाती है और परिचालन दक्षता बढ़ जाती है। फाइल प्रबंधन, कार्यप्रवाह और शिकायत निवारण में स्वचालन वास्तविक समय संचार और पारदर्शिता को बढ़ावा देता है।
- **सरकारी ई-मार्केटप्लेस (जीईएम):** जीईएम जैसे प्लेटफॉर्मों के माध्यम से सरकारी खरीद प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण, दक्षता बढ़ाता है और जवाबदेही सुनिश्चित करता है।
- **डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमः** विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों का उद्देश्य कर्मचारियों को ई-गवर्नेंस टूल, साइबर सुरक्षा और डिजिटल संचार से परिचित कराना है।

डिजिटल शासन में चुनौतियाँः

इन प्रगतियों के बावजूद, भारत में ई-गवर्नेंस के सफल कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ बाधा डालती हैं। इन्हें निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता हैः

- **डिजिटल अवसंरचनाः**
  - » **सीमित ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटीः** कई ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में अभी भी हाई-स्पीड इंटरनेट की सुविधा नहीं है, जिससे ई-गवर्नेंस सेवाएं प्रभावित हो रही हैं।
  - » **विद्युत आपूर्ति संबंधी समस्याएंः** ग्रामीण क्षेत्रों में बार-बार बिजली गुल होना और बिजली की अविश्वसनीयता डिजिटल बुनियादी ढांचे की कार्यक्षमता को बाधित करती है।
- **अंतरसंचालनीयताः**
  - » **खंडित प्रणालियाँः** विभिन्न सरकारी विभाग ऐसी

प्रणालियों का उपयोग करते हैं जोकि हमेशा संगत नहीं होती हैं, जिससे निर्बाध डेटा साझाकरण और समन्वय में बाधा उत्पन्न होती है।

» **प्रणालियों के साथ एकीकरण:** पुरानी प्रणालियों को आधुनिक प्रौद्योगिकियों के साथ उन्नत करना और एकीकृत करना जटिल और महंगा दोनों है।

- **डेटा सुरक्षा और गोपनीयता:**
  - » **साइबर सुरक्षा खतरे:** डिजिटलीकरण बढ़ने से साइबर हमलों और डेटा उल्लंघनों का जोखिम बढ़ जाता है। इसलिए साइबर सुरक्षा उपाय आवश्यक हैं।
  - » **डेटा गोपनीयता संबंधी चिंताएं:** व्यापक डेटा संरक्षण कानून का अभाव व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा के बारे में महत्वपूर्ण चिंताएं पैदा करता है।
- **डिजिटल साक्षरता:**
  - » **कम साक्षरता दर और डिजिटल डिवाइड:**
    - ➢ एनएसएसओ डेटा से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 24% घरों में इंटरनेट की सुविधा है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 66% है। एनएफएचएस-5 के अनुसार ग्रामीण पुरुषों में इंटरनेट का उपयोग करने की संभावना महिलाओं की तुलना में लगभग दोगुनी है (49% बनाम 25%)।
    - ➢ जीएसएमए मोबाइल जेंडर गैप रिपोर्ट 2024 में बताया गया है कि भारत में महिलाओं के पास मोबाइल फोन होने की संभावना 11% कम है और इंटरनेट का उपयोग करने की संभावना 40% कम है तथा केवल 33% महिलाएं ही मोबाइल इंटरनेट के बारे में जानती हैं।
  - » **प्रशिक्षित सरकारी कर्मचारियों की कमी:** यह सुनिश्चित करना कि सभी सरकारी कर्मचारी ई-गवर्नेंस प्लेटफार्मों के प्रबंधन में कुशल हों, एक सतत चुनौती है।
- **तकनीकी सहायता और रखरखाव:**
  - » **अपर्याप्त तकनीकी सहायता:** कई क्षेत्रों में ई-गवर्नेंस प्रणालियों के रखरखाव और समस्या निवारण के लिए कुशल कर्मियों की कमी है।
  - » **मापनीयता संबंधी मुद्दे:** अगर कोई सिस्टम मापनीय नहीं है तो जैसे-जैसे उसका उपयोग बढ़ता है, उसका प्रदर्शन खराब होने लगता है। जैसे कि एक वेबसाइट धीमी हो जाती है या एक ऐप क्रैश हो जाता है।
- **लागत और वित्तपोषण:**
  - » **उच्च कार्यान्वयन लागत:** डिजिटल बुनियादी ढांचे की स्थापना, प्रणालियों को बनाए रखने और कर्मियों को प्रशिक्षित करने के लिए पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होती है।
  - » **उन्नत प्रौद्योगिकियों की लागत:** एआई और ब्लॉकचेन जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को बड़े पैमाने पर लागू करना महंगा है।
- **उपयोगकर्ता पहुंच और समावेशिता:**
  - » **भाषाई बाधाएँ:** भारत की भाषाई विविधता के कारण बहु-भाषाओं में ई-गवर्नेंस सेवाओं की आवश्यकता है।
  - » **दिव्यांग व्यक्तियों के लिए सुगम्यता:** दिव्यांग उपयोगकर्ताओं के लिए समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त तकनीकी विचारों की आवश्यकता होती है।

चुनौतियों से निपटने के लिए सिफारिशें:

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (एआरसी) ने इन चुनौतियों से निपटने के लिए प्रमुख सिफारिशें की हैं:

- **अनुकूल वातावरण का निर्माण:**
  - » सरकार के भीतर परिवर्तन के लिए इच्छाशक्ति पैदा करना।
  - » उच्चतम स्तर पर राजनीतिक समर्थन प्रदान करना।
  - » ई-गवर्नेंस पहल को प्रोत्साहित करना।
  - » परिवर्तन की मांग उत्पन्न करने के लिए जन जागरूकता बढ़ाना।
- **व्यवसाय प्रक्रिया की पुन: अभियांत्रिकी:** प्रक्रियागत, संस्थागत और कानूनी परिवर्तनों द्वारा समर्थित, ई-गवर्नेंस आवश्यकताओं के साथ संरेखित करने के लिए सरकारी प्रक्रियाओं और संरचनाओं को पुन: डिजाइन करना।
- **तकनीकी समाधान विकसित करना:** डिजिटल गवर्नेंस ढांचे को मानकीकृत और अनुकूलित करने के लिए एक राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस उद्यम वास्तुकला का निर्माण करना।
- **निगरानी एवं मूल्यांकन:** कार्यान्वयन संगठनों द्वारा ई-गवर्नेंस परियोजनाओं की निरंतर निगरानी सुनिश्चित करना।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी):** ई-गवर्नेंस परियोजनाओं के विभिन्न घटकों के लिए पीपीपी मोड का लाभ उठाना।
- **महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना की सुरक्षा:** महत्वपूर्ण अवसंरचना को सुरक्षित करने के लिए रणनीति विकसित करना, जिसमें बेहतर विश्लेषण और सूचना साझाकरण शामिल है।
- **क्षमता निर्माण और ज्ञान प्रबंधन:** शासन पहल को मजबूत करने के लिए ज्ञान प्रबंधन और कौशल विकास के लिए प्रणालियां स्थापित करना।

आगे की राह:

भारत की डिजिटल गवर्नेंस पहल ने एक मजबूत आधार तैयार किया है, लेकिन इस परिवर्तन की पूरी क्षमता का दोहन करने के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। प्रमुख अनुशंसाएँ इस प्रकार हैं:

- **अवसंरचना विकास:** डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना को मजबूत करना।
- **गतिशील प्रशिक्षण कार्यक्रम:** तकनीकी प्रगति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए अनुकूली प्रशिक्षण मॉड्यूल डिजाइन करना।
- **प्रोत्साहन:** नवाचार को बढ़ावा देने और डिजिटल उपकरणों को

प्रभावी ढंग से अपनाने वाले व्यक्तियों/संस्थानों को पुरस्कृत करने के लिए एक व्यवस्था बनाना।

- **समावेशी नीतियाँ:** दिव्यांगों और भाषायी रूप से विविध आबादी सहित सभी नागरिकों के लिए पहुँच सुनिश्चित करना।

मजबूत बुनियादी ढांचे, निरंतर क्षमता निर्माण और समावेशी नीतियों के साथ, भारत डिजिटल शासन के लिए एक वैश्विक मानदंड स्थापित कर सकता है और एक ऐसा मॉडल प्राप्त कर सकता है जो सभी के लिए जवाबदेह, पारदर्शी और समावेशी हो।

तदर्थ न्यायाधीश: भारत के न्यायिक लंबित मामलों के लिए समाधान या एक अस्थायी उपाय

भारतीय न्यायपालिका वर्षों से लंबित मामलों की भारी समस्या से जूझ रही है। वर्तमान में, विभिन्न स्तरों की अदालतों में 50 मिलियन से अधिक मामले लंबित हैं, जिससे न्याय में देरी अपवाद के बजाय एक सामान्य स्थिति बन गई है। इस संकट के गंभीर निहितार्थ हैं जनता का न्यायिक प्रणाली में विश्वास कमजोर होना, कानून के शासन का ह्रास और न्याय की समयबद्ध प्राप्ति की अपेक्षा रखने वाले वादियों (Plaintiffs) की पीड़ा में वृद्धि। मामलों के शीघ्र निपटान को सुनिश्चित करने और न्यायिक विशेषज्ञता को बनाए रखने के प्रयास में, तदर्थ (Ad Hoc) न्यायाधीशों की नियुक्ति को एक संभावित समाधान के रूप में देखा जा रहा है। हालाँकि, प्रमुख प्रश्न यह है कि क्या यह न्यायिक सुधार के लिए एक स्थायी और समग्र दृष्टिकोण है या केवल एक अस्थायी समाधान, जोकि प्रणालीगत अक्षमताओं को दूर करने में विफल रहता है?

न्यायिक विलंबता संकट (The Judicial Pendency Crisis):

- भारत की न्यायपालिका में लंबित मामलों की संख्या अत्यधिक है, जो न्यायिक व्यवस्था के सभी स्तरों को प्रभावित कर रही है। राष्ट्रीय न्यायिक डेटा ग्रिड (NJDG) के अनुसार, स्थिति अत्यंत चिंताजनक है:
  - » सर्वोच्च न्यायालय में 71,000 से अधिक मामले लंबित हैं।
  - » उच्च न्यायालयों पर लगभग 6 मिलियन मामलों का बोझ है।
  - » अधीनस्थ न्यायालयों को सबसे गंभीर संकट का सामना करना पड़ रहा है, जहाँ 41 मिलियन से अधिक मामले निर्णय की प्रतीक्षा में हैं।
- इस संकट में कई कारक योगदान करते हैं, जिनमें प्रक्रियागत देरी, अत्यधिक स्थगन (Frequent Adjournments), और कानूनी विवादों की बढ़ती जटिलता शामिल हैं। हालाँकि, सबसे गंभीर समस्या न्यायाधीशों की भारी कमी है। भारत के विधि आयोग के अनुसार, देश में प्रति मिलियन जनसंख्या पर मात्र 21 न्यायाधीश उपलब्ध हैं, जो विकसित देशों की तुलना में अत्यंत कम है।
- विभिन्न सरकारों ने न्यायिक रिक्तियों को समय पर भरने के लिए संघर्ष किया है, जिससे न्याय प्रक्रिया बाधित हुई है। इस संदर्भ में, तदर्थ (Ad Hoc) न्यायाधीशों की नियुक्ति को न्यायिक संकट को कम करने के लिए एक व्यावहारिक समाधान के रूप में देखा जा रहा है।

तदर्थ न्यायाधीश: संवैधानिक समर्थन और नियुक्ति प्रक्रिया:

- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 224A तदर्थ न्यायाधीशों की नियुक्ति का प्रावधान करता है। यह अनुच्छेद सेवानिवृत्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को अस्थायी रूप से सेवा देने की अनुमति देता है, जिससे न्यायिक लंबित मामलों को निपटाने में सहायता मिलती है। हालाँकि, इन न्यायाधीशों की भूमिका स्थायी न होकर पूरक होती है, फिर भी वे वर्षों से लंबित मामलों के शीघ्र समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। नियुक्ति की प्रक्रिया कई स्तरों में होती है:
  - » उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश (CJHC) लंबित मामलों की तात्कालिकता के आधार पर एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की सिफारिश करते हैं।
  - » राज्य सरकार (मुख्यमंत्री और राज्यपाल) प्रस्ताव की समीक्षा करती है और उसे आगे बढ़ाती है।
  - » केंद्रीय कानून मंत्रालय, प्रस्ताव को प्रधानमंत्री के समक्ष प्रस्तुत करने से पहले भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) से परामर्श करता है।
  - » भारत के राष्ट्रपति अंतिम स्वीकृति प्रदान करते हैं।
  - » राजपत्र अधिसूचना (Gazette Notification) के माध्यम से नियुक्ति को औपचारिक रूप से पुष्टि की जाती है।
- हालाँकि यह प्रक्रिया नियुक्तियों की पारदर्शिता और निगरानी सुनिश्चित करती है तथा मनमाने चयन को रोकती है, लेकिन इसमें नौकरशाही की देरी भी शामिल होती है। न्यायिक संकट की तात्कालिकता को देखते हुए, तदर्थ न्यायाधीशों की नियुक्ति को अधिक प्रभावी बनाने के लिए एक सुव्यवस्थित और त्वरित तंत्र की आवश्यकता है।

तदर्थ नियुक्तियों पर सुप्रीम कोर्ट का बदलता रुख:

- सर्वोच्च न्यायालय ने तदर्थ न्यायाधीशों की नियुक्ति को विनियमित करने और उनकी प्रभावशीलता सुनिश्चित करने में सक्रिय भूमिका निभाई है। लोक प्रहरी बनाम भारत संघ (2021) मामले में, न्यायालय ने तदर्थ नियुक्तियों के लिए स्पष्ट 'ट्रिगर पॉइंट' निर्धारित किए:

- » यदि रिक्तियां स्वीकृत संख्या के 20% से अधिक हों।
- » यदि 10% से अधिक मामले पांच वर्ष से अधिक समय से लंबित हों।
- » यदि मामलों के निपटान की दर, दाखिल किए जाने की दर से कम हो।

- हालाँकि, जनवरी 2025 में, सुप्रीम कोर्ट ने आपराधिक मामलों की बढ़ती संख्या को देखते हुए इन शर्तों में संशोधन किया। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली पीठ ने नए निर्देश प्रस्तुत किए:
  - » तदर्थ न्यायाधीश मुख्य रूप से आपराधिक अपीलों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।
  - » वे न्यायिक निगरानी सुनिश्चित करने के लिए स्थायी न्यायाधीशों के साथ बैठेंगे।
  - » 20% रिक्ति की सीमा में ढील दी गई, जिससे अधिक व्यापक नियुक्तियां संभव हो सकीं।
  - » तदर्थ न्यायाधीशों की संख्या उच्च न्यायालय की स्वीकृत संख्या के 10% तक सीमित होगी।
- ये संशोधन न्यायपालिका द्वारा कार्यकुशलता और संस्थागत अखंडता बनाए रखने के बीच संतुलन स्थापित करने के प्रयास को दर्शाते हैं।

तदर्थ न्यायाधीशों की भूमिका, लाभ और व्यावहारिक पहलू:

तदर्थ न्यायाधीशों की नियुक्ति के कई लाभ हैं, जो उन्हें न्यायिक संकट के समाधान के लिए एक व्यवहार्य अल्पकालिक उपाय बनाते हैं:

- **विशेषज्ञता और दक्षता:** सेवानिवृत्त न्यायाधीशों के पास व्यापक कानूनी अनुभव होता है, जिससे वे जटिल मामलों को अधिक दक्षता और त्वरित निर्णय क्षमता के साथ निपटाने में सक्षम होते हैं।
- **लागत-प्रभावशीलता:** नए न्यायाधीशों की भर्ती और प्रशिक्षण की लंबी प्रक्रिया के विपरीत, तदर्थ नियुक्तियाँ समय और वित्तीय संसाधनों दोनों की बचत करती हैं।
- **लंबित मामलों में तत्काल कमी:** लंबे समय से लंबित मामलों पर ध्यान केंद्रित करके, तदर्थ न्यायाधीश अत्यधिक बोझ से दबी न्यायपालिका को तात्कालिक राहत प्रदान करते हैं।
- **लचीली तैनाती:** यह प्रणाली सेवानिवृत्त न्यायाधीशों को आवश्यकतानुसार बुलाने की अनुमति देती है, जिससे न्यायिक पदों के स्थायी विस्तार की आवश्यकता कम हो जाती है।

अस्थायी राहत या दीर्घकालिक निर्भरता:

अपने लाभों के बावजूद, तदर्थ न्यायाधीशों की नियुक्ति कोई स्थायी समाधान नहीं है। इससे जुड़ी कुछ प्रमुख चिंताएँ इस प्रकार हैं:

- **न्यायिक स्वतंत्रता पर खतरा:** चूँकि तदर्थ न्यायाधीशों की नियुक्ति में कार्यपालिका की भूमिका होती है, इसलिए राजनीतिक हस्तक्षेप की संभावना बनी रहती है।
- **निरंतरता संबंधी मुद्दे:** अस्थायी न्यायाधीश पूरे मुकदमे की देखरेख नहीं कर पाते, जिससे निर्णयों में असंगति (Inconsistency) आ सकती है।
- **संरचनात्मक सुधारों में देरी:** तदर्थ न्यायाधीशों पर अत्यधिक निर्भरता सरकार पर स्थायी न्यायिक रिक्तियों को भरने के दबाव को कम कर सकती है।
- **संसाधन संबंधी बाधाएँ:** तदर्थ न्यायाधीशों के लिए आवश्यक अतिरिक्त भत्ते और प्रशासनिक सहायता, दीर्घकालिक न्यायिक अवसंरचना के विकास के लिए आवंटित धन को प्रभावित कर सकते हैं।

आगे की राह:

तदर्थ नियुक्तियों को वास्तव में प्रभावी बनाने के लिए, उन्हें व्यापक न्यायिक सुधार रणनीति में एकीकृत किये जाने की आवश्यकता है। कुछ प्रमुख अनुशंसाएँ इस प्रकार हैं:

- **तदर्थ न्यायाधीशों के लिए ढांचे को मजबूत करना**
  - » नियुक्तियों की निगरानी के लिए एक स्वतंत्र समीक्षा बोर्ड की स्थापना करना।
  - » प्रदर्शन के आधार पर निश्चित अवधि (2-3 वर्ष) लागू करना।
  - » मामलों के सही तरीके से हस्तांतरण (case transition) को सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट नियम बनाना।
- **न्यायिक दक्षता के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना**
  - » वास्तविक समय में प्रगति की निगरानी के लिए डिजिटल केस ट्रैकिंग सिस्टम लागू करना।
  - » वर्चुअल सुनवाई का विस्तार करना, खासकर आपराधिक और वाणिज्यिक मामलों में।
  - » मामले की समीक्षा में तेजी लाने के लिए न्यायाधीशों की सहायता हेतु एआई-आधारित कानूनी अनुसंधान उपकरणों का उपयोग करना।
- **न्यायिक क्षमता बढ़ाना:**
  - » तत्काल तैनाती के लिए सेवानिवृत्त न्यायाधीशों का एक आरक्षित पैनल बनाए रखना।
  - » ऐसे मेंटरशिप कार्यक्रम स्थापित करें जहां न्यायिक व्याख्या में एकरूपता बनाए रखने के लिए तदर्थ न्यायाधीश स्थायी न्यायाधीशों के साथ मिलकर काम करें।
  - » बढ़ते मुकदमों के बोझ को पूरा करने के लिए उच्च न्यायालयों और अधीनस्थ न्यायालयों में न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या में वृद्धि करना।
- **न्यायिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना:**
  - » तदर्थ न्यायाधीशों के चयन में कार्यपालिका के हस्तक्षेप को रोकने के लिए न्यायिक नियुक्ति आयोग का गठन किया जाना चाहिए।
  - » न्यायिक निष्ठा और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से निष्पादन समीक्षा आयोजित करना।
- **नीति एकीकरण और सतत वित्तपोषण:**
  - » समग्र न्यायिक दक्षता बढ़ाने के लिए तदर्थ नियुक्तियों को

» व्यापक विधायी और नीति सुधारों के साथ संरेखित करना।
» न्यायिक वेतन, बुनियादी ढांचे के विस्तार और तकनीकी प्रगति को संतुलित करने के लिए स्थायी वित्तपोषण सुरक्षित करना।

निष्कर्ष:

तदर्थ न्यायाधीशों की नियुक्ति भारत के न्यायिक बैकलॉग (Judicial Backlog) का एक व्यावहारिक लेकिन अस्थायी समाधान है। हालाँकि उनकी विशेषज्ञता और दक्षता उन्हें मूल्यवान बनाती है, वे न्यायपालिका में आवश्यक प्रणालीगत सुधारों का विकल्प नहीं हो सकते। इसलिए, न्यायिक सुधारों के व्यापक दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है। न्यायिक रिक्तियों को प्राथमिकता के साथ भरा जाना चाहिए ताकि स्थायी न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाई जा सके। डिजिटल बुनियादी ढाँचे को मजबूत किया जाए, जिससे न्यायिक प्रक्रियाओं को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाया जा सके। न्यायिक स्वतंत्रता की रक्षा की जाए, ताकि कार्यपालिका का अनुचित हस्तक्षेप न हो और न्यायिक निर्णय स्वतंत्र रूप से लिए जा सकें। इसके लिए न्यायपालिका को सावधानी से कदम उठाने चाहिए। तदर्थ नियुक्तियाँ न्यायिक दक्षता के लिए दीर्घकालिक रणनीतियों का पूरक होनी चाहिए, न कि उनका विकल्प। यदि भारत लंबित मामलों के मूल कारणों को संबोधित करने में विफल रहता है, तो राष्ट्र एक अस्थायी उपाय को स्थायी सहारे में बदलने का जोखिम उठाता है, जिससे विलंबित न्याय का संकट और गहरा हो सकता है।

संक्षिप्त मुद्दे

एक राष्ट्र, एक विधायी मंच

चर्चा में क्यों?

हाल ही में पटना, बिहार में आयोजित 85वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन (AIPOC) में भारत के विधायी निकायों के कामकाज में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया गया। सम्मेलन का एक प्रमुख उद्घोषणा 'एक राष्ट्र, एक विधायी मंच' थी, जो भारत के सभी विधायी निकायों को एक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एकीकृत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस पहल का उद्देश्य केवल विधायी प्रक्रियाओं को आधुनिक और सुगम बनाना नहीं, बल्कि शासन में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना भी है।

एक राष्ट्र, एक विधायी मंच के बारे में:

- एक राष्ट्र, एक विधायी मंच भारत की संसद, राज्य विधानसभाओं और स्थानीय निकायों को एक सुसंगत डिजिटल ढांचे में एकीकृत करने के लिए डिजाइन की गई एक अग्रणी पहल है।
- इस मंच का उद्देश्य वास्तविक समय में डेटा साझा करने, पारदर्शिता को बढ़ावा देने और विधायी प्रक्रियाओं में अधिक से अधिक सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करके विधायी संचालन को सुव्यवस्थित करना है।

मंच के मुख्य उद्देश्य:

- **वास्तविक समय में विधायी डेटा साझा करना:** यह मंच विधायी कार्यवाही, विधेयकों और बहसों को निर्बाध रूप से साझा करने की अनुमति देगा, विभिन्न निकायों में महत्वपूर्ण विधायी डेटा तक तत्काल पहुँच प्रदान करेगा, यह सुनिश्चित करेगा कि नागरिक और कानून निर्माताओं को अच्छी तरह से सूचना प्राप्त हो।
- **बेहतर पारदर्शिता और जवाबदेही:** विधायी गतिविधियों पर रियल टाइम अपडेट के साथ, प्लेटफॉर्म विधायी कार्य की पारदर्शिता में सुधार करेगा, जिससे जनता बहस और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की निगरानी कर सकेगी, जिससे अधिक जवाबदेही होगी।
- **सार्वजनिक भागीदारी:** विधायी जानकारी को अधिक सुलभ बनाकर, प्लेटफॉर्म नागरिकों को शासन में अधिक सीधे तौर पर शामिल करेगा। यह बढ़ी हुई पहुँच लोकतांत्रिक गतिविधियों में सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करती है, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ मजबूत होती हैं।
- **AI और प्रौद्योगिकी एकीकरण:** प्लेटफॉर्म विधायी कार्यों को अनुकूलित करने, डेटा का विश्लेषण करने और निर्णय लेने को कारगर बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करेगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि विधायी प्रक्रियाएँ अधिक कुशल और डेटा-संचालित हों।
- **कागज रहित विधानमंडल:** प्लेटफॉर्म विधायी रिकॉर्ड को डिजिटल करेगा, भौतिक दस्तावेजीकरण पर निर्भरता को कम करेगा और पर्यावरण के अनुकूल, कागज रहित संचालन के माध्यम से स्थिरता को बढ़ावा देगा।

अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन (AIPOC) के बारे में:

- 1921 में स्थापित, AIPOC भारत के विधायी निकायों के पीठासीन अधिकारियों को एक मंच पर साथ लाता है।
- इस वर्ष का सम्मेलन विधायी शिष्टाचार में सुधार, भारतीय संविधान की 75वीं वर्षगांठ मनाने और डिजिटलीकरण पहल को आगे बढ़ाने पर केंद्रित था।

आरजी कर रेप केस पर निर्णय

चर्चा में क्यों?

हाल ही में कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में एक डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या के मामले में दोषी संजय रॉय को सत्र अदालत ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। सीबीआई द्वारा मौत की सजा की मांग और जनता के विरोध के बावजूद, अदालत ने सर्वोच्च न्यायालय के उस सिद्धांत का पालन किया कि मौत की सजा केवल 'दुर्लभ से दुर्लभतम' (rarest of rare) मामलों में ही दी जा सकती है।

'दुर्लभ से दुर्लभतम' (rarest of rare) सिद्धांत:

- 1980 के बच्चन सिंह मामले ने दुर्लभतम दुर्लभ सिद्धांत की स्थापना की, जोकि मौत की सजा के आवेदन को सीमित करता है। इसे केवल तभी लगाया जा सकता है जब:
  - » अपराध समाज की सामूहिक चेतना को झकझोर दे।
  - » अपराधी सुधार के लायक न हो और समाज के लिए खतरा बना हुआ है।
- मौत की सजा के लिए कुछ अन्य परिस्थितियां भी हो सकती हैं, जैसे:
  - » **पूर्व नियोजित और क्रूरता:** यदि हत्या पूर्व नियोजित और अत्यधिक क्रूरतापूर्ण थी।
  - » **असाधारण दुष्टता:** यदि अपराध असाधारण क्रूरता प्रदर्शित करता है।
  - » **सार्वजनिक सेवकों की हत्या:** यदि हत्या में किसी सार्वजनिक सेवक, पुलिस अधिकारी या कर्तव्य पर तैनात सशस्त्र बल के सदस्य शामिल थे।

मौत की सजा को कमजोर करने वाले कारक:

- **मानसिक या भावनात्मक विकार:** अपराधी अत्यधिक मानसिक या भावनात्मक तनाव में था।
- **आरोपी की आयु:** युवा या बुजुर्ग अपराधियों में सुधार की अधिक संभावना हो सकती है।
- **किसी व्यक्ति के निर्देशन में अपराध:** यदि अपराधी किसी के निर्देशन में कार्य करता है या नैतिक औचित्य था।
- **मानसिक दुर्बलता:** अपराधी मानसिक बीमारी के कारण अपने कार्यों की आपराधिकता को समझने में असमर्थ था।

कानूनी उदाहरणों का क्रम:

- **युवा अपराधियों में सुधार की संभावना:** रामनरेश बनाम छत्तीसगढ़ राज्य (2012) जैसे मामलों में युवा अपराधियों को सुधार की अधिक संभावना के रूप में मान्यता दी गई।
- **आयु पर असमान विचार:** विधि आयोग की 262वीं रिपोर्ट (2015) में कहा गया है कि सजा देते समय आयु को एक समान मानदंड के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- **समान अपराधों की तुलना:** शंकर किसनराव खाड़े बनाम महाराष्ट्र राज्य (2013) के मामले में, सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि समान अपराधों के लिए सजा भी समान होनी चाहिए, ताकि न्यायपालिका में एकरूपता बनी रहे।

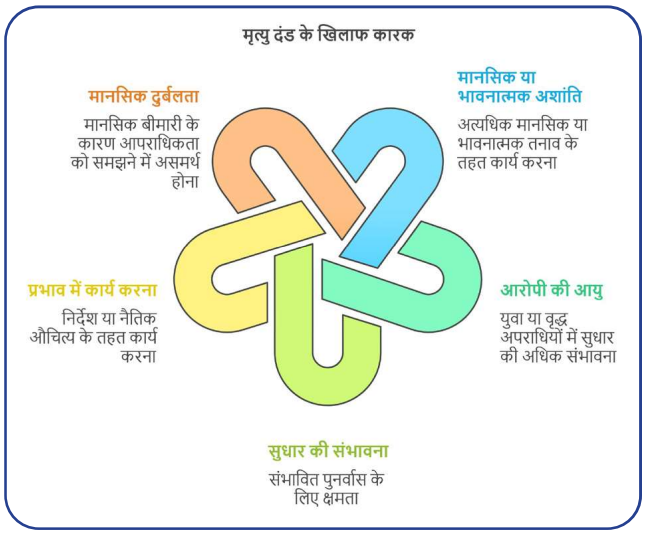

सजा में चुनौतियाँ और असंगतियाँ:

बच्चन सिंह दिशानिर्देशों के बावजूद, मौत की सजा का आवेदन असंगत बना हुआ है:

- **निवारक (Mitigating) कारकों में असंतुलन:** अपराध के समय की गई कार्रवाइयों को अधिक महत्व दिया जाता है, जबकि अपराधी के व्यक्तित्व और परिस्थितियों (शमनकारी कारक) को कम महत्व दिया जाता है।
- **सजा सुनाने से पूर्व मुद्दा:** दत्तात्रय बनाम महाराष्ट्र राज्य (2020) के मामले में, क्योंकि दोषी को सजा सुनाने से पहले पर्याप्त सुनवाई का मौका नहीं दिया गया था, इसलिए अदालत ने मौत की सजा को घटाकर आजीवन कारावास कर दिया। अदालत ने इस पर सवाल उठाया कि क्या एक ही दिन में सजा सुनाने से न्यायपूर्ण सुनवाई सुनिश्चित होती है।
- **एक समान दिशानिर्देशों की आवश्यकता:** सर्वोच्च न्यायालय ने मौत की सजा के मामलों में निवारक कारकों पर विचार करने के लिए समान दिशानिर्देश स्थापित करने के लिए मामले को एक बड़ी पीठ के समक्ष भेजा है।

निष्कर्ष:

भारत में मौत की सजा एक जटिल कानूनी मुद्दा है। दुर्लभ से दुर्लभतम सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि मौत की सजा केवल अत्यंत गंभीर अपराधों में ही दी जाए। हालाँकि, सजा सुनाते समय अपराध की गंभीरता और अपराधी के व्यक्तिगत हालात पर विचार करने में अक्सर विरोधाभास देखने को मिलते हैं। नतीजतन, न्यायिक प्रक्रिया में निष्पक्षता के सवाल उठते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने मौत की सजा के मामलों में एकरूपता लाने के लिए प्रयास किए हैं, ताकि इस सजा को देने के लिए स्पष्ट मानदंड स्थापित किए जा सकें।

पीएमएलए के तहत जमानत

चर्चा में क्यों?

हाल ही में धन शोधन निरोधक अधिनियम (पीएमएलए) के तहत महिलाओं को जमानत मिलने के मुद्दे पर सर्वोच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। इस फैसले ने धन शोधन के मामलों में महिलाओं के अधिकारों के संरक्षण के संदर्भ में कानून की व्याख्या को नए सिरे से परिभाषित किया है।

मामले के बारे में:

- शशि बाला, जोकि एक सरकारी स्कूल की शिक्षिका है, पर शाइन सिटी ग्रुप के धन शोधन घोटाले में शामिल होने का आरोप लगाया गया था। प्रवर्तन निदेशालय का आरोप था कि उन्हें इस घोटाले से 36 लाख रुपये से अधिक की अवैध धनराशि प्राप्त हुई थी।
- हालांकि, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने सितंबर 2024 में उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी, यह तर्क देते हुए कि वह पीएमएलए की धारा 45 के तहत 'कमजोर महिला' की श्रेणी में नहीं आती हैं।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय:

- 15 जनवरी, 2025 को, सर्वोच्च न्यायालय ने ईडी के इस दावे को खारिज कर दिया कि शशि बाला के मामले में महिलाओं के लिए जमानत का विशेष प्रावधान लागू नहीं होता।
- न्यायालय ने कहा कि जब तक कोई उचित कारण न हो, जैसे कि फरार होने का खतरा या सबूतों से छेड़छाड़ करने की संभावना, तब तक महिलाओं को धारा 45 के तहत जमानत मिलने का अधिकार है।
- अदालत ने शशि बाला को जमानत देते हुए यह सिद्धांत स्पष्ट किया कि महिलाओं को अन्य आरोपियों की तुलना में अधिक कठोर शर्तों के अधीन नहीं रखा जा सकता है, जब तक कि इसके लिए कोई उचित कारण न हो।

पीएमएलए जमानत प्रावधानों का कानूनी ढांचा:

- पीएमएलए की धारा 45 जमानत देने के लिए सख्त मानदंड निर्धारित करती है। आरोपी को यह साबित करना होता है कि उसके खिलाफ कोई प्राइमाफेसी मामला (प्रारंभिक अपराध) नहीं बनता है।
- हालांकि, इस धारा में महिलाओं, नाबालिगों और बीमार लोगों को जमानत देने का प्रावधान है। इस बात पर बहस होती रही है कि क्या यह प्रावधान सभी महिलाओं पर लागू होता है या केवल कुछ विशेष श्रेणी की महिलाओं पर।

महिलाओं और पीएमएलए के तहत जमानत पर प्रमुख कानूनी उदाहरण:

- **प्रीति चंद्रा मामला (2023):** दिल्ली उच्च न्यायालय ने प्रीति चंद्रा को जमानत प्रदान की, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के उस तर्क को खारिज करते हुए जिसमें यह दावा किया गया था कि वह 'गृहणी' नहीं थीं। अदालत ने स्पष्ट किया कि, जब तक अन्य कारक लागू न हों, सभी महिलाएं अपवादों और विशेषाधिकारों की हकदार हैं।
- **कविता मामला (2024):** दिल्ली की एक ट्रायल कोर्ट ने कविता, एक बीआरएस नेता को 'कमजोर' महिला नहीं होने के कारण जमानत देने से इनकार कर दिया था। हालांकि, सर्वोच्च न्यायालय ने बाद में उन्हें जमानत दे दी, इस बात को पुष्ट करते हुए कि अपवाद विशिष्ट अपवादों को छोड़कर सभी महिलाओं पर लागू होता है।

धन शोधन निरोधक अधिनियम, 2002 (पीएमएलए) के बारे में:

- धन शोधन निरोधक अधिनियम (पीएमएलए), 2002, भारत की संसद द्वारा धन शोधन गतिविधियों को रोकने और उनका मुकाबला करने के लिए अधिनियमित किया गया एक कानून है।
- **पीएमएलए के प्रमुख प्रावधान:**
  - **धन शोधन की परिभाषा:** धारा 3 में धन शोधन को अपराधिक आय से जुड़ी किसी भी अवैध गतिविधि में शामिल होना और उसे बेदाग दिखाना।
  - **दंड:** धारा 4 में धन शोधन के अपराध के लिए दंड का उल्लेख किया गया है।
  - धन शोधन के अपराध के लिए तीन वर्ष से सात वर्ष तक के कठोर कारावास की सजा होगी और जुर्माना भी देय होगा।
  - **संपत्ति की कुर्की और जब्ती:** यह धन शोधन में शामिल संपत्ति की कुर्की और जब्ती की अनुमति देता है।
  - यह बैंकों और वित्तीय संस्थानों जैसी संस्थाओं को लेनदेन के रिकॉर्ड बनाए रखने और संदिग्ध लेनदेन की वित्तीय खुफिया इकाई (एफआईयू) को रिपोर्ट करने का आदेश देता है।

श्रीलंका तमिल शरणार्थी मामला

चर्चा में क्यों?

हाल ही में मद्रास उच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए भारतीय गृह मंत्रालय को निर्देश दिया है कि वह 1984 से भारत में शरणार्थी के रूप में रह रही श्रीलंकाई तमिल नागरिक, मैथीन के नागरिकता आवेदन पर पुनर्विचार करे। मैथीन ने 2022 में नागरिकता अधिनियम की धारा 5(1)(ए) के तहत भारतीय नागरिकता के लिए आवेदन किया था, लेकिन उनके आवेदन पर कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। यह फैसला भारत में रह रहे शरणार्थियों, विशेषकर श्रीलंकाई तमिलों, के नागरिकता अधिकारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम

है और यह भी दर्शाता है कि न्यायपालिका शरणार्थियों के मुद्दों को गंभीरता से ले रही है।

पंजीकरण द्वारा नागरिकता के बारे में:

- नागरिकता अधिनियम, 1955 कुछ व्यक्तियों के लिए पंजीकरण द्वारा नागरिकता के प्रावधान प्रदान करता है।
- पंजीकरण के लिए पात्र प्रमुख श्रेणियां हैं:
  - » **भारतीय मूल के व्यक्ति:** आवेदन करने से पहले कम से कम सात वर्षों तक भारत में रहे हों।
  - » **भारतीय नागरिक से विवाहित विदेशी व्यक्ति:** आवेदन करने से पहले सात वर्षों तक भारत में रहे हों।
  - » **वयस्क व्यक्ति:** माता-पिता भारतीय नागरिक होने चाहिए, या आवेदक को पांच वर्षों के लिए ओसीआई कार्डधारक के रूप में पंजीकृत होना चाहिए और आवेदन करने से पहले बारह महीने तक भारत में रहना चाहिए।
  - » **नाबालिग बच्चे:** माता-पिता भारतीय नागरिक होने चाहिए।
- भारतीय नागरिकता प्राप्त करने की प्रक्रिया में व्यक्ति को भारत के प्रति निष्ठा की शपथ लेनी अनिवार्य है। साथ ही, जो व्यक्ति पहले भारतीय नागरिक थे लेकिन किसी कारण वश अपनी नागरिकता खो चुके हैं, वे पुनः नागरिकता के लिए आवेदन नहीं कर सकते हैं।

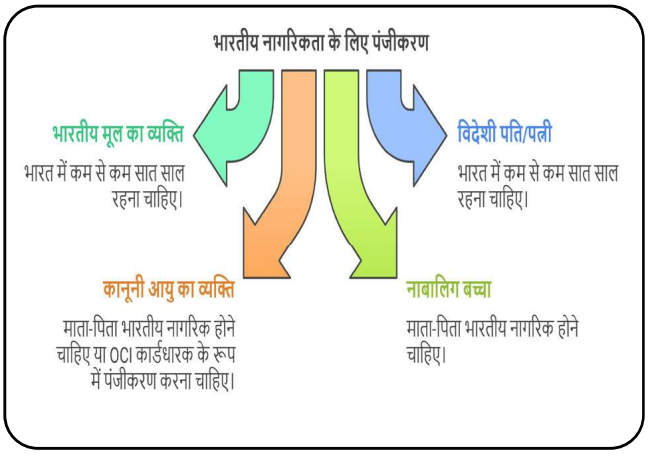

श्रीलंकाई तमिलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- **बागान मजदूरों के रूप में:** 19वीं और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटिशों द्वारा भारतीय मूल के तमिलों को श्रमिकों के रूप में श्रीलंका लाया गया था। भेदभावपूर्ण औपनिवेशिक नीतियों के कारण उन्हें मूल श्रीलंकाई समुदायों से सामाजिक रूप से अलग-थलग कर दिया गया था।
- **नागरिकता से वंचित और निराश्रित आबादी:** 1948 में श्रीलंका की स्वतंत्रता के बाद, बढ़ते सिंहली राष्ट्रवाद के कारण भारतीय मूल के तमिलों का हाशियाकरण हुआ। 1960 तक, लगभग दस लाख तमिल राजनीतिक अधिकारों या मान्यता के बिना निराश्रित हो गए थे।
- **द्विपक्षीय समझौते और नागरिकता का अनुदान:** सीरीमावो-शास्त्री समझौता (1964) और सीरीमावो-गांधी समझौता (1974) ने छह लाख भारतीय मूल के तमिलों को नागरिकता प्रदान की।
- **गृहयुद्ध और शरणार्थी संकट:** श्रीलंकाई गृहयुद्ध के कारण कई तमिलों ने भारत में शरण ली, जिसके कारण 1983 में सरकार द्वारा उस वर्ष के बाद आने वाले शरणार्थियों को नागरिकता देने पर रोक लगा दी गई।
- **सीएए 2003 के तहत अवैध प्रवासियों के रूप में वर्गीकृत:** 1983 के बाद आने वालों को नागरिकता संशोधन अधिनियम (CAA) 2003 के तहत 'अवैध प्रवासी' माना गया, जिससे उनकी निराश्रितता और बढ़ गई।

कानूनी उपाय:

- **निराश्रितता के लिए कानूनी दृष्टिकोण:** हालिया न्यायिक फैसलों ने भारतीय मूल के तमिलों की निराश्रितता की समस्या को समाप्त करने में मार्गदर्शन प्रदान किया है।
- **प्रमुख कानूनी निर्णय:**
  - » **पी. उलगनाथन बनाम भारत सरकार (2019):** मद्रास उच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि लंबे समय तक निराश्रित रहना संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है, जो जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी देता है।
  - » **अबीरमी एस बनाम भारत संघ (2022):** अदालत ने जोर देकर कहा कि निराश्रितता (Deprivation) से बचा जाना चाहिए और श्रीलंकाई तमिल शरणार्थियों के लिए सीएए 2019 के प्रावधानों का विस्तार करने की सिफारिश की।
  - » **सुप्रीम कोर्ट का मामला:** सी.आर. ऑफ सी.ए.पी. बनाम अरुणाचल प्रदेश राज्य (2015): 1964 और 1974 के समझौतों के तहत की गई प्रतिबद्धताओं ने भारतीय मूल के तमिलों में नागरिकता प्राप्त करने की उम्मीद जगाई थी।
- **बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय प्रथागत कानून:** कानूनी तरीके से राज्यविहीन (De jure stateless) व्यक्तियों को अंतरराष्ट्रीय कानून द्वारा मान्यता प्राप्त है, जो देशों को उन व्यक्तियों की समस्याओं का समाधान करने की जिम्मेदारी सौंपता है, जो नीतिगत विफलताओं के कारण नागरिकता से वंचित हो जाते हैं। इस संदर्भ में भारतीय मूल के तमिलों का उदाहरण देखा जा सकता है, जिनकी नागरिकता का मुद्दा नीतिगत असफलताओं के कारण उत्पन्न हुआ।

आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोपों पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला

चर्चा में क्यों?

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए कहा है कि आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोपों को सिर्फ इसलिए नहीं लगाया जाना चाहिए कि कोई परिवार शोक में है। अदालत ने कहा है कि ऐसे मामलों में जांच एजेंसियों और न्यायालयों को बहुत सावधानी से सबूतों का मूल्यांकन करना चाहिए।

मामले की पृष्ठभूमि:

- मध्य प्रदेश के एक बैंक मैनेजर, महेंद्र अवसे पर ऋण पुनर्भुगतान को लेकर उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए आत्महत्या करने वाले रणजीत सिंह ने आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाया गया था।
- अदालत ने स्पष्ट किया कि IPC की धारा 306 लागू होने के लिए आत्महत्या के लिए उकसाने, साजिश रचने या सहायता करने के स्पष्ट सबूत होने चाहिए।
- अदालत ने यह भी कहा कि तनावपूर्ण स्थितियों में होने वाली सामान्य बातचीत को आत्महत्या के लिए उकसाने के रूप में नहीं माना जा सकता है।
- अदालत ने महेंद्र अवसे के खिलाफ आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि सबूत अपर्याप्त थे और एफआईआर देरी से दर्ज की गई थी। अदालत ने यह भी कहा कि ऐसे संवेदनशील मामलों में व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना महत्वपूर्ण है।

फैसले का निहितार्थ:

- इस फैसले ने आत्महत्या के मामलों में अधिक सावधानी और सूझ-बूझ से जांच करने की आवश्यकता पर बल दिया है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप केवल ठोस सबूतों के आधार पर ही लगाया जाए, न कि केवल भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के आधार पर।
- अदालत का यह निर्णय आत्महत्या से संबंधित मामलों में अधिक पारदर्शी और निष्पक्ष कानूनी प्रक्रिया की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।

आत्महत्या की दुष्प्रेरणा (Abetment):

- किसी व्यक्ति को जानबूझकर आत्महत्या करने के लिए उकसाना, उसके साथ साजिश रचना या उसकी सहायता करना आत्महत्या का दुष्प्रेरणा कहलाता है। भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 306 के तहत, यह एक गंभीर अपराध है, जिसके लिए 10 साल तक की कैद और जुर्माना हो सकता है।
- भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 45 में दुष्प्रेरणा को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
  - » किसी को आत्महत्या करने के लिए उकसाना।
  - » ऐसा करने के लिए दूसरों के साथ साजिश रचना।
  - » जानबूझकर इस कार्य में सहायता करना।
  - » सार्वजनिक अपमान के कारण झूठे आरोप लगाना।

आत्महत्या के दुष्प्रेरणा से संबंधित सुप्रीम कोर्ट के महत्वपूर्ण मामले:

- **मोहन बनाम मध्य प्रदेश राज्य (2011):** अदालत ने निर्णय दिया कि आत्महत्या के लिए उकसाने के अपराध में यह साबित करना आवश्यक है कि आरोपी ने पीड़ित को जानबूझकर आत्महत्या करने के लिए उकसाया और पीड़ित के पास कोई अन्य विकल्प नहीं बचा था।
- **उडे सिंह बनाम हरियाणा राज्य (2019):** अदालत ने स्पष्ट किया कि आत्महत्या के लिए उकसाने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पीड़ित को आत्महत्या करने के लिए मजबूर करने का सबूत होना चाहिए।

आत्महत्या रोकथाम के लिए सरकारी पहल:

- **मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम (MHA), 2017:** मानसिक स्वास्थ्य देखभाल और उपचार के लिए एक ढांचा प्रदान करता है।
- **किरण हेल्पलाइन:** मानसिक स्वास्थ्य सहायता के लिए एक टोल-फ्री हेल्पलाइन।
- **मनोदर्पण पहल:** छात्रों और शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करता है।
- **राष्ट्रीय आत्महत्या रोकथाम रणनीति (2022):** भारत में आत्महत्याओं को कम करने और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करने की रणनीति।

समलैंगिक विवाह

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने समलैंगिक विवाहों को कानूनी मान्यता देने संबंधी याचिकाओं को खारिज कर दिया है। न्यायमूर्ति बी आर गवई, सूर्यकांत, बी वी नागरत्न, पी एस नरसिम्हा और दिपांकर दत्ता की पीठ ने न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) एस रवींद्र भट के द्वारा लिखित निर्णय को पूर्णत: समर्थन दिया।

2023 का समलैंगिक विवाह पर फैसला:

- सर्वोच्च न्यायालय ने वर्ष 2023 में दिए गए अपने निर्णय में विशेष विवाह अधिनियम, 1954 में संशोधन करने की याचिका खारिज कर दी थी। अदालत का मानना है कि संविधान में विवाह को एक असीमित अधिकार के रूप में नहीं देखा जा सकता है और समलैंगिक जोड़े विवाह को एक मौलिक अधिकार के रूप में दावा नहीं कर सकते। अत:, अदालत ने समलैंगिक विवाह को वैध बनाने का दायित्व संसद पर छोड़ दिया है।

समलैंगिक विवाह के बारे में:

- समलैंगिक विवाह समान लिंग के व्यक्तियों के बीच विवाह की कानूनी और सामाजिक मान्यता को संदर्भित करता है। इसमें दो समान लिंग के व्यक्ति एक-दूसरे से विवाह करते हैं, ठीक उसी तरह जैसे विपरीत लिंग के जोड़े करते हैं। इस विवाह में दोनों पक्षों को समान कानूनी अधिकार और जिम्मेदारी प्राप्त होती हैं।

भारत में समलैंगिक विवाह की वैधता:

- भारत में, विवाह को संविधान के तहत एक मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता नहीं दी गई है, लेकिन इसे एक वैधानिक अधिकार माना जाता है। इसका अर्थ है कि विवाह के अधिकार को संविधान में स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है, बल्कि यह विभिन्न कानूनों और न्यायिक निर्णयों के माध्यम से विकसित हुआ है।
- हालांकि, विशेष विवाह अधिनियम, 1954, धर्म की परवाह किए बिना नागरिक विवाहों के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करता है, अदालत ने अभी तक इसे समलैंगिक विवाहों तक नहीं बढ़ाया है, इस बात पर जोर देते हुए कि विवाह एक पूर्ण संवैधानिक अधिकार नहीं है।
- समलैंगिक जोड़ों को वर्तमान में समान कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है और यह संसद पर निर्भर करता है कि वह विशेष विवाह अधिनियम जैसे कानूनों में संशोधन करके समलैंगिक संघों को समायोजित करे।
- हालांकि, नवंबर 2018 में, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 377 के कुछ हिस्सों को रद्द करके समलैंगिकता को अपराधमुक्त कर दिया, जोकि वयस्कों के बीच सहमति से होने वाले समलैंगिक कृत्यों को दंडित करता था।
- इस फैसले में माना गया कि इस तरह के प्रावधान LGBTQ समुदाय के मौलिक अधिकारों, विशेष रूप से समानता, गोपनीयता और स्वतंत्रता के अधिकारों का उल्लंघन करते हैं।
- इसने पुष्टि की है कि LGBTQ व्यक्तियों के अधिकार भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 19 और 21 के तहत सुरक्षित हैं, जोकि समानता, गैर-भेदभाव, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी देते हैं।

भारत में समलैंगिक विवाह का भविष्य:

- हालांकि सर्वोच्च न्यायालय ने पुनर्विचार याचिका खारिज कर दी है, फिर भी LGBTQ+ समुदाय और उनके समर्थक लगातार संसद पर दबाव बना रहे हैं कि वह समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने वाला कानून बनाए। अब यह संसद पर निर्भर करता है कि वह मौजूदा कानूनों में संशोधन करके भारत में समलैंगिक संघों को मान्यता देने के लिए आवश्यक कानूनी ढांचा प्रदान करे।

सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस उपचार योजना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए एक नई कैशलेस उपचार योजना शुरू की। यह योजना प्रति घटना 1.5 लाख रुपये तक के उपचार लागत को कवर करती है, बशर्ते पुलिस को दुर्घटना के बारे में 24 घंटे के भीतर सूचित किया जाए। योजना यह सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखती है कि दुर्घटना के बाद महत्वपूर्ण 'गोल्डन आवर' के दौरान पीड़ितों को तत्काल चिकित्सा सहायता प्राप्त हो।

योजना की विशेषताएं:

- यह योजना मोटर वाहनों से जुड़ी सभी सड़क दुर्घटनाओं पर लागू होती है। पीड़ितों का इलाज आयुष्मान भारत योजना के तहत मान्यता प्राप्त अस्पतालों में कराया जाना चाहिए।
- पीड़ितों को सात दिनों तक के उपचार अवधि के लिए स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो सकते हैं। दुर्घटना के 24 घंटे के भीतर पुलिस रिपोर्ट दर्ज करने पर ही उपचार कवर किया जाएगा।
- एनएचए (National Health Authority) पुलिस, अस्पतालों और

राज्य स्वास्थ्य अधिकारियों के सहयोग से योजना के कार्यान्वयन का निरीक्षण करेगा।

- एनएचए एक ऐसी तकनीकी व्यवस्था का प्रबंधन करेगा जोकि सड़क दुर्घटनाओं के मामलों में दावों और इलाज के लिए भुगतान की प्रक्रिया को स्वचालित और सरल बनाएगी। यह व्यवस्था ई-विस्तृत दुर्घटना रिपोर्ट (ईडीएआर) एप्लिकेशन और लेनदेन प्रबंधन प्रणाली को जोड़कर काम करेगी।

योजना के लाभः

- यह योजना सुनिश्चित करती है कि सड़क दुर्घटना पीड़ितों को महत्वपूर्ण 'गोल्डन आवर' के दौरान तत्काल चिकित्सा देखभाल प्राप्त हो, जिससे जीवित रहने की संभावना बढ़ जाती है।
- यह 1.5 लाख रुपये तक के चिकित्सा खर्चों को कवर करके वित्तीय राहत प्रदान करती है, जिससे तत्काल उपचार के लिए वित्तीय बाधा दूर होती है।
- यह राष्ट्रव्यापी लागू है, जो सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में दुर्घटना पीड़ितों के लिए कवरेज और समर्थन प्रदान करती है।
- इस योजना के माध्यम से समय पर चिकित्सा देखभाल सुनिश्चित करके, न केवल सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली मौतों को कम कर सकते हैं बल्कि पीड़ितों के जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार कर सकते हैं।

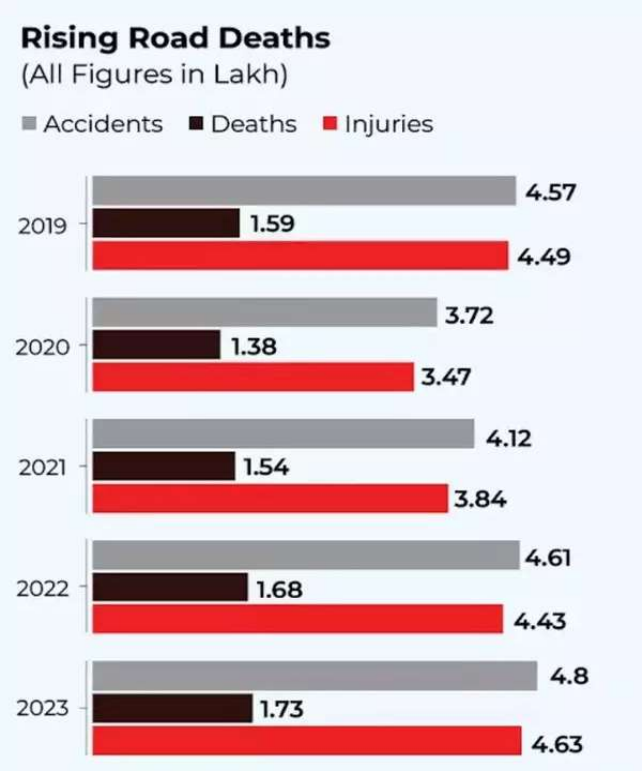

भारत में सड़क सुरक्षा और दुर्घटनाएं (2023):

- **कुल दुर्घटनाएं:** 4.80 लाख सड़क दुर्घटनाएं, 2022 की तुलना में 4.2% की वृद्धि।
- **मृत्यु:** 1.72 लाख से अधिक मौतें, प्रतिदिन 1,317 दुर्घटनाएं और 474 मौतें।
- **सर्वाधिक मृत्यु दर वाला राज्य:** उत्तर प्रदेश में 44,000 दुर्घटनाओं से 23,650 मौतें दर्ज की गई।
- **मृत्यु का प्राथमिक कारण:** 68.1% मौतों के लिए ओवरस्पीडिंग जिम्मेदार है।
- **सुरक्षा उपकरणों के उपयोग में कमी:** हेलमेट न पहनने के कारण 54,000 मौतें, सीट बेल्ट न पहनने के कारण 16,000 मौतें।
- **ड्राइविंग नियमों का उल्लंघन:** बिना लाइसेंस के गाड़ी चलाने से 34,000 से अधिक दुर्घटनाएं, ओवरलोडिंग से 12,000 मौतें।
- **बुनियादी ढांचे के मुद्दे:** गड्ढे, अपर्याप्त क्रॉसिंग और वाहनों की खराब ब्रेकिंग सिस्टम।
- **व्यवहार संबंधी मुद्दे:** लापरवाही से गाड़ी चलाना, तेज रफ्तार और कमजोर यातायात कानून प्रवर्तन।
- **आर्थिक प्रभाव:** सड़क दुर्घटनाओं की वार्षिक लागत भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 5-7% है।
- **समाज पर प्रभाव:** दुर्घटनाओं का वित्तीय बोझ असमान रूप से पड़ता है, विशेषकर गरीबों पर।
- **स्वास्थ्य देखभाल के बोझ में वृद्धि:** अपर्याप्त स्वास्थ्य बीमा के कारण अतिरिक्त होने वाले खर्चों में वृद्धि।

सड़क सुरक्षा पहलः

- राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा नीति (2010)।
- सड़क सुरक्षा पर सर्वोच्च न्यायालय की समिति (SCCoRS)
- मोटर वाहन संशोधन अधिनियम (2019)
- राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह/सप्ताह
- सहायकों की रक्षा के लिए गुड समारिटन कानून

वैश्विक सड़क सुरक्षा लक्ष्यः

- भारत ने ब्राजीलिया घोषणा पर हस्ताक्षर करके और सड़क सुरक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र के कार्रवाई के दशक (2021-2030) में सक्रिय रूप से भाग लेकर वैश्विक सड़क सुरक्षा प्रयासों में अहम भूमिका निभाई है।

आगे की राहः

सड़क सुरक्षा में सुधार हेतु बुनियादी ढांचे में सुधार, यातायात कानूनों को लागू करना, जागरूकता को बढ़ावा देना और एआई-आधारित यातायात प्रबंधन प्रणालियों को एकीकृत करना होगा।

अरुणाचल प्रदेश में 1978 का धर्मांतरण विरोधी कानून बहाल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में अरुणाचल प्रदेश ने वर्ष 1978 के धार्मिक स्वतंत्रता

अधिनियम को लागू करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। यह अधिनियम, हालांकि वर्षों से अस्तित्व में है, लेकिन अभी तक प्रभावी रूप से लागू नहीं किया गया था। राज्य सरकार अब इस अधिनियम को लागू करने के लिए आवश्यक नियमों का निर्माण कर रही है।

- यह अधिनियम स्वदेशी धर्मों की रक्षा करने के उद्देश्य से बनाया गया था जोकि बलपूर्वक या धोखाधड़ी से धर्म परिवर्तन को प्रतिबंधित करता है, हालांकि इसके कार्यान्वयन को लेकर चिंताएं व्यक्त की जा रही हैं। विशेष रूप से, इस अधिनियम के धार्मिक स्वतंत्रता पर पड़ने वाले संभावित प्रभावों और इसकी संवैधानिक वैधता को लेकर बहस छिड़ी हुई है।

अरुणाचल प्रदेश धर्म स्वतंत्रता अधिनियम क्या है?

- 1978 में पारित यह अधिनियम किसी व्यक्ति को बलपूर्वक, प्रलोभन देकर या धोखाधड़ी करके दूसरे धर्म में परिवर्तित करना अवैध बनाता है, जिसके लिए दो साल तक की कैद और 10,000 रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। यह अनिवार्य करता है कि किसी भी धर्म परिवर्तन की सूचना जिले के उपायुक्त को दी जानी चाहिए।
- इस कानून का उद्देश्य अरुणाचल प्रदेश में कई आदिवासी समुदायों द्वारा प्रचलित डोनी-पोलो (प्रकृति पूजा) जैसे स्वदेशी धर्मों की रक्षा करना है। हालाँकि, इसके प्रवर्तन के लिए नियमों की कमी के कारण यह अधिनियम वर्षों से निष्क्रिय पड़ा हुआ है।

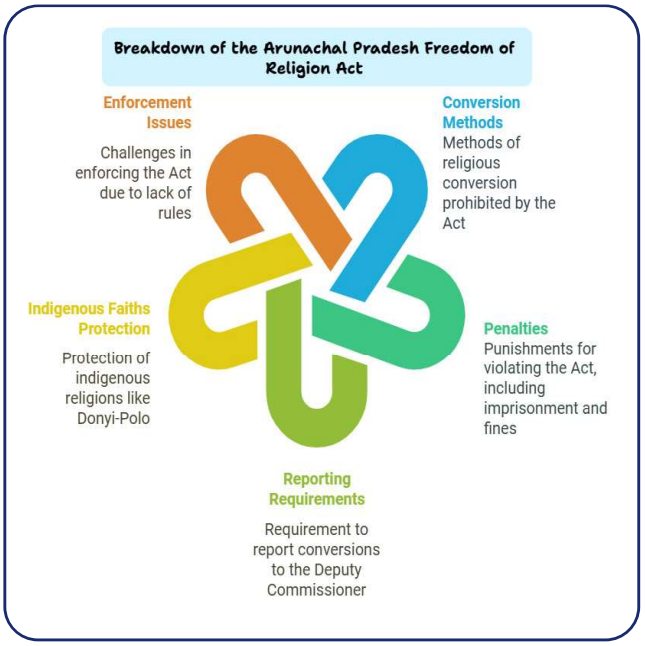

यह अधिनियम क्यों लाया गया?

- अरुणाचल प्रदेश, विभिन्न जातीय और धार्मिक समूहों वाला एक राज्य है, जिसने हाल के वर्षों में धर्मपरिवर्तन, विशेष रूप से ईसाई धर्म में वृद्धि देखी है। 1950 के दशक से पहले, चुनौतीपूर्ण भूगोल और औपनिवेशिक प्रतिबंधों के कारण ईसाई धर्म का प्रभाव सीमित था।
- 1970 के दशक के बाद, ईसाई मिशनरी गतिविधियों में वृद्धि हुई, विशेष रूप से असम के सीमावर्ती क्षेत्रों में, जिसके परिणामस्वरूप आदिवासी समुदायों, जैसे कि आदि, न्याशी और नोक्टेस में ईसाई धर्म का प्रसार हुआ। इस परिवर्तन ने आदिवासी समुदायों में पारंपरिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों के क्षरण की चिंताएं पैदा कीं।

यह अधिनियम निष्क्रिय क्यों रहा?

- इस अधिनियम को विशेष रूप से ईसाई समुदाय से काफी विरोध का सामना करना पड़ा है। इस कानून की आलोचना करते हुए दावा किया कि यह धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव कर सकता है और समुदायों के बीच तनाव को बढ़ा सकता है। नतीजतन, धार्मिक मतभेदों के बढ़ने की आशंका के चलते लगातार राज्य सरकारों ने इस कानून को लागू करने से परहेज किया।

अधिनियम का पुनरुद्धार:

- अधिनियम का पुनरुद्धार 2022 की एक जनहित याचिका के बाद हुआ है, जिसमें सरकार द्वारा कानून को लागू करने में विफलता को उजागर किया गया था। गुवाहाटी उच्च न्यायालय ने राज्य से नियमों को अंतिम रूप देने का निर्देश दिया, जिसकी अपेक्षित समय सीमा छह महीने है।
- अरुणाचल प्रदेश में इस कानून के समर्थकों का तर्क है कि बढ़ते धर्मांतरण के बीच स्वदेशी संस्कृतियों की रक्षा के लिए कानून आवश्यक है, कुछ जिलों में धर्मांतरण दर 90% तक देखी गई है।

चुनौतियां:

- इस कानून के लागू होने से संभावित धार्मिक तनाव की चिंता बढ़ गई है, विशेषकर यह देखते हुए कि राज्य की आबादी में अब ईसाईयों की संख्या करीब 30% है। आलोचकों का तर्क है कि स्थानीय अधिकारियों द्वारा कानून का दुरुपयोग किया जा सकता है, जिससे ईसाईयों को निशाना बनाया जा सकता है और धार्मिक विभाजन और भी बढ़ सकता है, जबकि इस कानून का उद्देश्य स्वदेशी धर्मों की रक्षा करना है, कुछ लोगों को डर है कि यह स्वतंत्र रूप से अपना धर्म चुनने के व्यक्तिगत अधिकारों का उल्लंघन कर सकता है।

डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण नियम 2025 मसौदा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण (DPDP) नियम, 2025 के मसौदे को

जारी किया है। यह अगस्त 2023 में अधिनियमित डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम (DPDPA) को लागू करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मसौदा नियमों की मुख्य विशेषताएं:

- **डेटा फिड्युसरी की जवाबदेही:** डेटा फिड्युसरी (वह संस्था या व्यक्ति है जो व्यक्तिगत डेटा को एकत्रित करता है) को उपयोगकर्ताओं को उनके द्वारा एकत्रित किए जा रहे डेटा, उसके संग्रह के उद्देश्य के बारे में सूचित करना चाहिए और डेटा प्रोसेसिंग के लिए सूचित सहमति देने के तरीके के बारे में स्पष्ट विवरण प्रदान करना चाहिए।
- **सहमति प्रबंधकों का पंजीकरण:** नियम डेटा फिड्युसरी के साथ काम करने के लिए 'सहमति प्रबंधकों' के पंजीकरण की अनुमति देते हैं। ये संस्थाएँ यह सुनिश्चित करने में मदद करेंगी कि व्यक्तिगत डेटा को प्रोसेसिंग करने के लिए उपयोगकर्ता की सहमति एक प्रारूप में एकत्र की जाए।
- **सरकारी उपयोग हेतु नियमों से छूट:** सरकार कुछ मानकों के अधीन सब्सिडी या लाभ प्रदान करने के लिए व्यक्तिगत डेटा एकत्र कर सकती है। 'सांख्यिकीय' उद्देश्यों के लिए एकत्र किए गए डेटा को इन आवश्यकताओं से छूट दी गई है।
- **बेहतर सुरक्षा उपाय:** डेटा फिड्युसरी को व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा के लिए तकनीकी और परिचालन दोनों तरह के उचित सुरक्षा उपाय करने चाहिए। डेटा उल्लंघन की स्थिति में, डेटा प्रोटेक्शन बोर्ड ऑफ इंडिया (DPBI) को 72 घंटों के भीतर सूचित किया जाना चाहिए।
- **निष्क्रिय उपयोगकर्ताओं का डेटा हटाना:** यदि कोई उपयोगकर्ता किसी प्लेटफॉर्म (जैसे ई-कॉमर्स साइट, सोशल मीडिया या ऑनलाइन गेमिंग) पर निष्क्रिय है,तो उनके डेटा को 48 घंटे की नोटिस अवधि के बाद हटा दिया जाना चाहिए।
- **डेटा सुरक्षा अधिकारी से संपर्क हेतु जानकारी:** डेटा फिड्युसरी को अपनी वेबसाइट पर डेटा सुरक्षा अधिकारी से संपर्क हेतु जानकारी प्रदान करनी चाहिए, विशेष रूप से महत्वपूर्ण डेटा फिड्युसरी के लिए जिन्हें समय-समय पर डेटा सुरक्षा प्रभाव आकलन और ऑडिट करने की आवश्यकता होती है।
- **बच्चों का डेटा:** नियम इस बात पर जोर देते हैं कि बच्चों के व्यक्तिगत डेटा को माता-पिता की सहमति के बिना संसाधित (Processing) नहीं किया जाना चाहिए। डिजिटल लॉकर सेवा जैसे किसी विश्वसनीय प्राधिकरण द्वारा प्रदान की गई पहचान और आयु विवरण का उपयोग करके सहमति एकत्र की जा सकती है।
- **विदेश में डेटा प्रोसेसिंग:** नियमों में कहा गया है कि भारत के बाहर डेटा प्रोसेसिंग नियमों के अधीन है, जिसे सरकार आदेशों के माध्यम से लागू कर सकती है।

डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 के बारे में:

- डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 (DPDP अधिनियम) को 11 अगस्त, 2023 को अधिनियमित किया गया था। यह सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 43A और सूचना प्रौद्योगिकी नियम, 2011 का स्थान लेता है। डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम (DPDPA) उस डेटा पर लागू होता है जिसे डिजिटल रूप से संसाधित किया जाता है। इसमें एनालॉग तरीके से संभाले जाने वाले डेटा को शामिल नहीं किया जाता है।
- इसका उद्देश्य संगठनों द्वारा व्यक्तिगत डेटा के जिम्मेदार उपयोग के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हुए व्यक्तियों के गोपनीयता अधिकारों की रक्षा करना है। यह अधिनियम वर्षों की चर्चाओं और संशोधनों के बाद आया, जिसकी शुरुआत 2011 में दिल्ली उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एपी शाह की अध्यक्षता में एक उच्च-स्तरीय विशेषज्ञ समूह द्वारा की गई सिफारिशों से हुई थी।

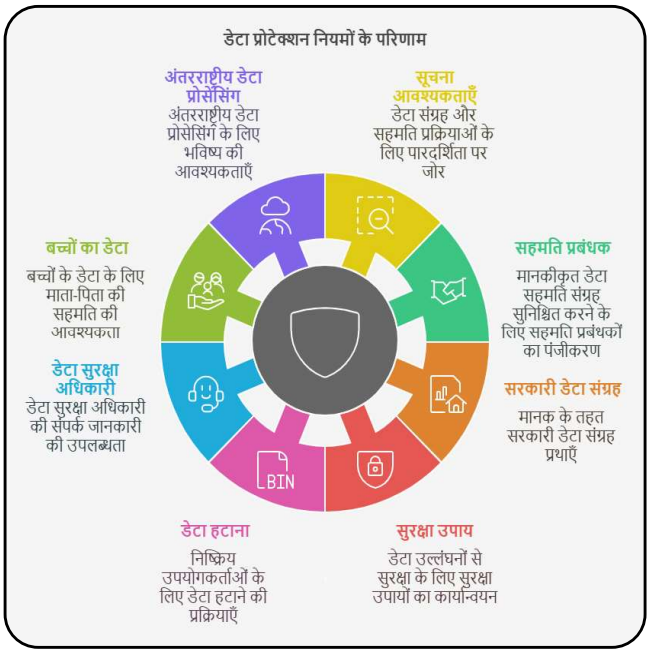

डेटा सुरक्षा का महत्व:

- ये नियम और अधिनियम सर्वोच्च न्यायालय के 2017 के निजता के अधिकार पर दिए गए फैसले के अनुरूप हैं, जिसमें निजता को भारत के संविधान के तहत एक मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है। इन नियमों की शुरूआत के साथ, भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था की अनूठी चुनौतियों का समाधान करते हुए अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप मजबूत डेटा सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है।

3 अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

भारत-इंडोनेशिया संबंधः ऐतिहासिक और रणनीतिक अवलोकन

भारत और इंडोनेशिया के बीच गहरे सांस्कृतिक और भौगोलिक संबंधों ने ऐतिहासिक रूप से दोनों देशों को एक मजबूत द्विपक्षीय संबंध विकसित करने के लिए प्रेरित किया है। हालांकि, सहयोग की संभावनाओं के बावजूद, यह संबंध समय के साथ बदलते भू-राजनीतिक संदर्भों और नेतृत्व प्राथमिकताओं से प्रभावित होकर उतार-चढ़ाव वाला रहा है। जनवरी 2025 में इंडोनेशियाई राष्ट्रपति प्रबोवो सुबिंतो की भारत यात्रा, दोनों देशों के बीच सहयोग को और मजबूत करने के लिए एक नया अध्याय है।

भारत-इंडोनेशिया संबंधों की ऐतिहासिक नींवः

- **औपनिवेशिक विरोधी समर्थनः** प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने डच औपनिवेशिक शक्तियों के खिलाफ इंडोनेशिया के स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन किया। भारत ने डच एयरलाइनों को भारतीय हवाई क्षेत्र से प्रतिबंधित करने और डच शिपिंग का बहिष्कार करने जैसे उपाय किए, और इंडोनेशियाई नेताओं सुतान शाहरीर और मोहम्मद हट्टा को निकालने में भी मदद की।
- **औपचारिक राजनयिक संबंधः** 1950 में, इंडोनेशियाई राष्ट्रपति सुकर्णो की भारत यात्रा के साथ दोनों देशों के बीच औपचारिक राजनयिक संबंध स्थापित हुए। 1951 की मैत्री संधि ने भारत और इंडोनेशिया के बीच शाश्वत शांति और मित्रता के संबंधों को मजबूत किया। दोनों देश गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्रमुख सदस्य थे और 1955 के बांडुंग सम्मेलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था, जिसने एशिया और अफ्रीका के नव स्वतंत्र राष्ट्रों के बीच एकता को मजबूत किया था।

सबंधो में तनाव (1960-1970 दशक):

- **भू-राजनीतिक तनावः** 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद भारत की चीन के प्रति बढ़ती सतर्कता और 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में इंडोनेशिया द्वारा पाकिस्तान का समर्थन करने के कारण भारत-इंडोनेशिया संबंधों में तनाव बढ़ गया था।
- **राजनीतिक तनावः** सुकर्णो की कट्टरपंथी विदेश नीति और जवाहरलाल नेहरू के साथ वैचारिक मतभेदों के कारण दोनों देशों के बीच संबंध तनावपूर्ण हो गए थे। 1961 के बेलग्रेड शिखर सम्मेलन में इस तनाव को कम करने के लिए तीसरे पक्ष की मध्यस्थता की आवश्यकता पड़ी। इंडोनेशिया में राजनीतिक परिवर्तन और जनरल सुहार्तो के सत्ता में आने के बाद, इंडोनेशिया की विदेश नीति में बदलाव आया और भारत के साथ संबंधों में सुधार हुआ।

1990 का दशकः जुड़ाव का एक नया युग

- **भारत की 'लुक ईस्ट' नीतिः** 1990 के दशक में भारत के आर्थिक उदारीकरण और सोवियत संघ के पतन के बाद, भारत ने अपनी 'लुक ईस्ट' नीति को अपनाया जिसका उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ आर्थिक और राजनीतिक संबंधों को मजबूत करना था। आसियान का एक प्रमुख सदस्य, इंडोनेशिया इस नीति का एक महत्वपूर्ण भागीदार बना।
- **'एक्ट ईस्ट' नीतिः** 21वीं सदी की शुरुआत में, भारत ने अपनी लुक ईस्ट नीति का विस्तार करते हुए एक्ट ईस्ट नीति को अपनाया। इस नीति के तहत भारत ने इंडोनेशिया के साथ राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को और मजबूत किया।

समकालीन संबंधः एक व्यापक साझेदारी

- **व्यापार और आर्थिक सहयोगः** भारत और इंडोनेशिया के बीच व्यापार संबंध लगातार मजबूत हो रहे हैं। 2005 में 4.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2023 में यह 38 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है। हालांकि, 2023-24 में व्यापार घाटे को संतुलित करने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिसके लिए व्यापार का अनुमान लगभग 30 बिलियन अमेरिकी डॉलर लगाया गया है।
- **रक्षा और सुरक्षा सहयोगः** दोनों देश हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा और एक नियम-आधारित व्यवस्था को बनाए रखने के लिए संयुक्त रूप से काम कर रहे हैं। बढ़ते चीनी प्रभाव के बीच, दोनों देशों के बीच सैन्य अभ्यास और रक्षा समझौते हुए हैं।
- **सांस्कृतिक और जन-संपर्कः** भारत और इंडोनेशिया के बीच

सांस्कृतिक आदान-प्रदान तेजी से बढ़ रहा है। 2023 में लगभग 700,000 भारतीय पर्यटक इंडोनेशिया गए। दोनों देश 2025 को इंडो-आसियान पर्यटन वर्ष के रूप में मनाने की योजना बना रहे हैं। भारत इंडोनेशिया के प्रसिद्ध मंदिरों, प्रम्बनन और बोरोबुदुर के संरक्षण में भी मदद कर रहा है।

2025 की राजकीय यात्रा व बैठक के मुख्य बिंदु:

- जनवरी 2025 में इंडोनेशियाई राष्ट्रपति प्रबोवो सुबिंतो की राजकीय यात्रा, जहां वे भारत के 76वें गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि थे। रक्षा, व्यापार और क्षेत्रीय सुरक्षा पर उच्च स्तरीय चर्चाएं हुई और पांच समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए, जिसमें समुद्री सुरक्षा सहयोग पर एक समझौता भी शामिल है।
- **साझेदारी को मजबूत करना:** राष्ट्रपति सुबिंतो ने भारतीय नेतृत्व की प्रशंसा की और विशेष रूप से आर्थिक संबंधों और रक्षा सहयोग को गहरा करने पर जोर दिया।

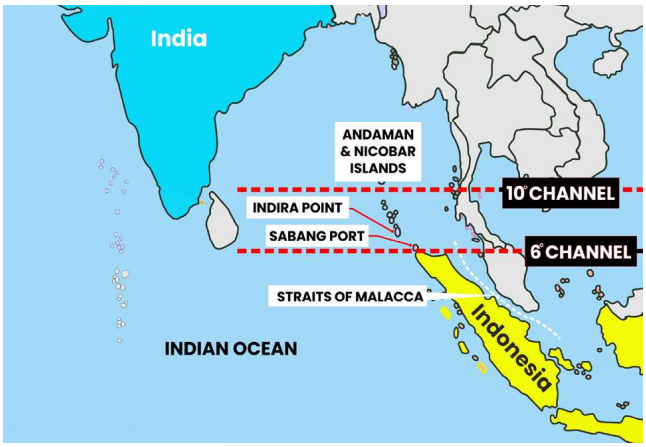

भारत-इंडोनेशिया के मुख्य सहयोग क्षेत्र:

- **रक्षा और सुरक्षा:** हिंद-प्रशांत क्षेत्र दोनों देशों के लिए रणनीतिक महत्व रखता है, जिसके कारण समुद्री सुरक्षा सहयोग का एक प्रमुख क्षेत्र बन गया है। भारत और इंडोनेशिया ने संयुक्त सैन्य अभ्यास किए हैं और अपने रक्षा उद्योग सहयोग को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हालांकि, यात्रा के दौरान ब्रह्मोस मिसाइलों की बिक्री पर कोई समझौता नहीं हुआ, लेकिन दोनों देशों ने आपूर्ति श्रृंखलाओं और तकनीकी सहयोग पर ध्यान केंद्रित करते हुए रक्षा सहयोग पर चर्चा जारी रखने की इच्छा व्यक्त की।
- **आर्थिक सहयोग:** भारत और इंडोनेशिया के बीच आर्थिक संबंध लगातार मजबूत हो रहे हैं। आने वाले वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, दोनों देश व्यापार को सुगम बनाने के लिए नौकरशाही बाधाओं को कम करने और नियमों को सुव्यवस्थित करने के लिए काम कर रहे हैं। जहां भारत का लक्ष्य इंडोनेशिया को निर्यात बढ़ाना है, वहीं इंडोनेशिया ने बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य सेवा और डिजिटल परिवर्तन जैसे क्षेत्रों में भारतीय निवेश में रुचि दिखाई है।
- **सांस्कृतिक और जन-संपर्क:** भारत-इंडोनेशिया संबंधों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 2023 में लगभग 700,000 भारतीय पर्यटक इंडोनेशिया गए, अनुमानों से पता चलता है कि यह संख्या एक मिलियन तक पहुंच सकती है। दोनों देशों ने द्विपक्षीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 2025 को इंडो-आसियान पर्यटन वर्ष के रूप में मनाने पर सहमति व्यक्त की है। इसके अलावा, भारत यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हिंदू प्रम्बनन मंदिर के संरक्षण में इंडोनेशिया की सहायता कर रहा है, साथ ही बौद्ध बोरोबुदुर मंदिर में भी काम जारी है।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** दोनों देश जी-20, आसियान और ब्रिक्स जैसे बहुपक्षीय मंचों के महत्व को मान्यता देते हैं, जहां वे साझी भू-राजनीतिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए सहयोग कर सकते हैं। इस यात्रा ने भारत, इंडोनेशिया और ऑस्ट्रेलिया के बीच बढ़ते त्रिपक्षीय सहयोग को भी रेखांकित किया, जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करना है।

भारत-इंडोनेशिया संबंधों का भविष्य:

- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भू-राजनीतिक परिवर्तनों के मद्देनजर भारत-इंडोनेशिया साझेदारी और मजबूत होती जा रही है। दोनों देश क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। राष्ट्रपति सुबिंतो की यात्रा के दौरान स्थापित ट्रैक 1.5 संवाद तंत्र दोनों देशों के राजनीतिक, व्यावसायिक और अकादमिक नेताओं के बीच गहन बातचीत का एक मंच प्रदान करेगा।
- इस रणनीतिक साझेदारी का भविष्य निरंतर संवाद पर निर्भर करेगा, विशेषकर रक्षा, आर्थिक सहयोग और क्षेत्रीय सुरक्षा के क्षेत्रों में। दोनों देशों को अपने रक्षा उद्योग सहयोग की पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए, जो उनके संबंधों में एक अप्रयुक्त संभावना है।

निष्कर्ष:

भारत और इंडोनेशिया के बीच संबंधों का इतिहास लंबा और बहुआयामी रहा है, जिसमें सहयोग और मतभेद दोनों शामिल रहे हैं। आज, दोनों देश रक्षा, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को मजबूत करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं, जिससे वे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में प्रमुख साझेदार बनकर उभरे हैं। इन संबंधों का रणनीतिक महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्रपति प्रबोवो सुबिंतो की हालिया भारत यात्रा ने दोनों देशों की ओर से द्विपक्षीय सहयोग को गहरा करने की प्रतिबद्धता को स्पष्ट किया है।

ट्रम्प 2.0 के तहत भारत-अमेरिका संबंध : चुनौतियां, अवसर और रणनीतिक पुनर्गठन

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत कर चुके हैं, ऐसे में 'सामान्य ज्ञान की क्रांति' (Revolution Of Common Sense) की उनकी साहसिक दृष्टि अमेरिका की घरेलू और विदेश नीतियों को नया आकार देने का वादा करती है। 'उदारवादी उग्रवाद' (Liberal Extremism) का मुकाबला करने और अमेरिकी संप्रभुता को मजबूत करने के उद्देश्य से इस परिवर्तनकारी एजेंडे का भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच रणनीतिक साझेदारी सहित वैश्विक संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। भारत, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सहयोगी और एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार के रूप में, ट्रंप की नीतियों से उत्पन्न अवसरों और चुनौतियों को सावधानीपूर्वक समझना चाहिए।

भारत-अमेरिका संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:

- भारत और अमेरिका के बीच संबंधों में पिछले कुछ दशकों में उल्लेखनीय बदलाव आए हैं। दोनों देशों ने ऐतिहासिक मतभेदों को पार करते हुए, साझा लोकतांत्रिक मूल्यों और रणनीतिक हितों के आधार पर एक मजबूत साझेदारी स्थापित की है।
  - » **अटल बिहारी वाजपेयी:** भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत और अमेरिका को 'स्वाभाविक सहयोगी' घोषित किया। उन्होंने दोनों देशों के बीच आपसी सम्मान और साझा भू-राजनीतिक लक्ष्यों पर जोर दिया।
  - » **बराक ओबामा:** अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारत-अमेरिका संबंधों को '21वीं सदी का निर्णायक रिश्ता' बताया और इसके वैश्विक महत्व पर प्रकाश डाला।
  - » **नरेंद्र मोदी:** भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में दोनों देशों के संबंधों में और अधिक मजबूती आई है। 2016 में, उन्होंने ऐतिहासिक हिचकिचाहट से गतिशील और स्थायी गठबंधन में परिवर्तन का जश्न मनाया।
- ये उपलब्धियां दोनों देशों के बीच लगातार मजबूत होते संबंधों को दर्शाती हैं। व्यापार, प्रौद्योगिकी, रक्षा और वैश्विक शासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में दोनों देश सहयोग कर रहे हैं।

भारत-अमेरिका संबंध: ट्रम्प के पहले कार्यकाल में मजबूत नींव

ट्रम्प के पहले कार्यकाल (2017-2021) के दौरान, भारत और अमेरिका के बीच रणनीतिक साझेदारी और मजबूत हुई। दोनों देशों ने कई महत्वपूर्ण पहलों के माध्यम से अपने संबंधों को गहरा किया:

- **भू-राजनीतिक सहयोग:**
  - » क्वाड पहल को पुनर्जीवित किया तथा स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर जोर दिया।
  - » अमेरिकी प्रशांत कमान का नाम बदलकर अमेरिकी हिंद-प्रशांत कमान कर दिया गया, जो भारत की रणनीतिक भूमिका को दर्शाता है।
- **व्यक्तिगत कूटनीति:** ट्रम्प और मोदी के बीच घनिष्ठ संबंध, जो 'हाउडी मोदी' और 'नमस्ते ट्रम्प' जैसे आयोजनों से उजागर हुआ, ने आपसी सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया।
- **रक्षा एवं सुरक्षा :**
  - » भारत को प्रमुख रक्षा साझेदार के रूप में नामित किया गया, जिससे रक्षा सहयोग और हथियार व्यापार को बढ़ावा मिला।
  - » आतंकवाद-रोधी सहयोग और खुफिया-साझाकरण तंत्र को मजबूत किया गया।

आर्थिक और व्यापार सहयोग: साझेदारी का एक स्तंभ

आर्थिक संबंध भारत-अमेरिका संबंधों की आधारशिला बने हुए हैं:

- **व्यापार:** अमेरिका वस्तुओं और सेवाओं के लिए भारत का सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है, जो मजबूत आर्थिक अंतरनिर्भरता को बढ़ावा देता है।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई):** भारत में अमेरिकी एफडीआई 2022 में कुल 51.6 बिलियन डॉलर रहा, जो भारत की विकास क्षमता में निवेशकों के विश्वास का संकेत है।
- **तकनीकी उन्नति:**
  - » भारत को सामरिक व्यापार प्राधिकरण टियर-1 का दर्जा दिए जाने से महत्वपूर्ण अमेरिकी प्रौद्योगिकियों तक लाइसेंस-मुक्त पहुंच की अनुमति मिल गई।
  - » स्वच्छ ऊर्जा, ब्लॉकचेन, साइबर विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ती तकनीकी साझेदारी को दर्शाता है।

ट्रम्प 2.0: परिवर्तन के लिए एक दृष्टिकोण

दूसरे कार्यकाल के लिए अपने उद्घाटन भाषण में राष्ट्रपति ट्रम्प ने एक महत्वाकांक्षी घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय एजेंडे की रूपरेखा प्रस्तुत की, जो वैश्विक संबंधों को प्रभावित करने वाले बदलावों का संकेत देता है:

- **आर्थिक पुनरुद्धार:** इसमें मुद्रास्फीति को कम करने, ऊर्जा स्वतंत्रता को बढ़ावा देने और घरेलू विनिर्माण का विस्तार करने

पर ध्यान केंद्रित किया गया।

» अमेरिकी उद्योगों को बढ़ावा देने के लक्ष्य के साथ, अमेरिका ने दूसरे देशों से आने वाले सामानों पर टैक्स बढ़ाएगा ताकि अपने देश के सामानों को बढ़ावा मिले।

- **विदेश नीति में पुनःसंरेखण:** इसमें 'अमेरिका प्रथम' पर जोर दिया गया, विदेशी संघर्षों की तुलना में सीमा सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई।
  - » गठबंधनों के लिए लेन-देन संबंधी दृष्टिकोण अपनाया गया, जिसमें आर्थिक और रणनीतिक लाभ पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- **सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन:** पारंपरिक अमेरिकी मूल्यों को बहाल करने के उद्देश्य से मुक्त भाषण, पहचान की राजनीति और पर्यावरणीय जनादेश पर उदार नीतियों को उलटने का संकल्प लिया गया।

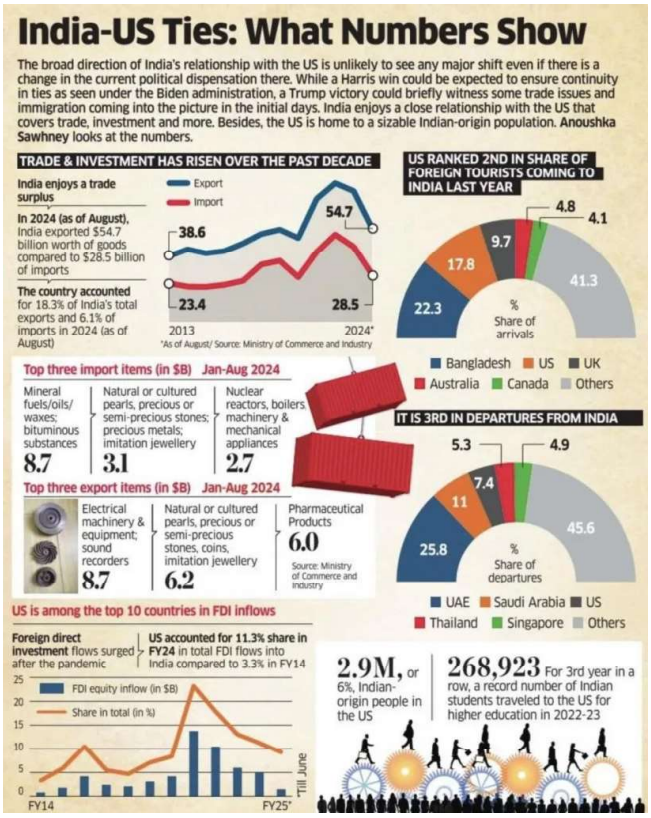

ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में भारत-अमेरिका संबंध: अवसर और चुनौतियां

ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में अमेरिका के साथ भारत के संबंध संभावित लाभ और बाधाओं के साथ विकसित होने के लिए तैयार हैं:

अवसर

- **सामरिक सहयोग:** हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर निरंतर ध्यान देना भारत के सामरिक हितों के अनुरूप है, विशेष रूप से चीन के प्रभाव का मुकाबला करने में। क्वाड पहल के गति पकड़ने की संभावना है, जिससे क्षेत्रीय सुरक्षा और सहयोग बढ़ेगा।
- **प्रौद्योगिकीय नवाचार:** स्वच्छ ऊर्जा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उन्नत विनिर्माण जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में संयुक्त उद्यम भारत के नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत कर सकते हैं। अंतरिक्ष अन्वेषण और स्वास्थ्य सुरक्षा में सहयोग से द्विपक्षीय संबंधों के नए रास्ते खुलेंगे।
- **आर्थिक लाभ:** ट्रम्प की संरक्षणवादी नीतियां चुनौतियां पेश करती हैं, भारत वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के बदलाव से लाभान्वित हो सकता है, विशेष रूप से तब जब कंपनियां चीन से दूर विविधीकरण की तलाश कर रही हैं।

चुनौतियां:

- **व्यापार और टैरिफ नीतियां:** घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए आयात पर कर लगाने पर ट्रम्प का जोर, अमेरिका को भारत के निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। ट्रम्प की व्यापार नीतियों की लेन-देन संबंधी प्रकृति प्रतिकूल शर्तों से बचने के लिए सावधानीपूर्वक बातचीत की मांग करती है।
- **आव्रजन नीतियां:** प्रतिबंधात्मक वीजा व्यवस्था, विशेष रूप से एच-1बी धारकों के लिए, भारत के आईटी क्षेत्र और अमेरिका में काम करने वाले कुशल पेशेवरों को प्रभावित कर सकती है।
- **सामरिक स्वायत्तता:** भारत को विदेश नीति में स्वतंत्रता बनाए रखते हुए अमेरिका के साथ अपनी बढ़ती साझेदारी को संतुलित करना होगा, विशेष रूप से रूस और अन्य वैश्विक शक्तियों के साथ अपने संबंधों के संबंध में।
- **बाजार अनिश्चितता:** ट्रम्प की आर्थिक नीतियों के कारण भारतीय बाजार सतर्क बने हुए हैं, क्योंकि इसका रुपया-डॉलर विनिमय दर और निवेश प्रवाह पर संभावित प्रभाव पड़ सकता है।

परिवर्तनकारी विदेश नीति दृष्टिकोण:

ट्रम्प की दूसरे कार्यकाल की विदेश नीति एक मुखर और लेन-देन संबंधी रुख को दर्शाती है:

- **रणनीतिक हितों पर ध्यान केंद्रित करना:**
  - » दूरवर्ती संघर्षों की तुलना में अमेरिकी सीमाओं और राष्ट्रीय हितों की रक्षा को प्राथमिकता देना।
  - » बहुपक्षवाद और उदार अंतर्राष्ट्रीयतावाद के स्थान पर निष्पक्ष व्यापार और पारस्परिकता पर जोर दिया जाना चाहिए।
- **वैश्विक निहितार्थ:**
  - » हिंद-प्रशांत, यूरेशिया और मैक्सिको की खाड़ी (जिसे अब 'अमेरिका की खाड़ी' नाम दिया गया है) पर ट्रम्प की नीतियां शक्ति गतिशीलता को पुनः परिभाषित कर सकती हैं।

» उनका 'शांति निर्माता' बनने पर जोर देना, विस्तारित संघर्षों में शामिल होने की अनिच्छा को दर्शाता है, जो भारत की रणनीतिक गणनाओं को प्रभावित कर सकता है।

निष्कर्ष:

ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में भारत-अमेरिका संबंध अवसरों और चुनौतियों से भरे हुए हैं। व्यापार, प्रौद्योगिकी और रक्षा जैसे क्षेत्रों में साझा हित दोनों देशों के बीच मजबूत संबंधों की नींव रखते हैं। हालांकि, ट्रम्प की नीतियों की लेन-देन प्रकृति के कारण भारत को एक सक्रिय और संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा। अपनी रणनीतिक शक्तियों का लाभ उठाते हुए, घरेलू सुधारों को संबोधित करते हुए और अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को बनाए रखते हुए, भारत इस परिवर्तनकारी युग में अमेरिका के साथ अपनी साझेदारी को मजबूत कर सकता है। वैश्विक व्यवस्था में बदलाव के इस दौर में, भारत-अमेरिका गठबंधन क्षेत्रीय और वैश्विक गतिशीलता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह गठबंधन एक तेजी से जटिल होते विश्व में स्थिरता और प्रगति सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है।

भारत-तालिबान संबंधः अफगान भू-राजनीति में भारत

2021 में तालिबान के सत्ता में आगमन के परिणामस्वरूप दक्षिण एशियाई भू-राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। भारत ने इस नवीन परिदृश्य में मानवीय संकट और क्षेत्रीय हितों के मध्य संतुलन साधते हुए एक व्यावहारिक रणनीति अपनाई। यह कदम केवल तालिबान के उदय की प्रतिक्रिया नहीं था, अपितु भारत की व्यापक क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं और बदलते वैश्विक परिदृश्य में अपनी स्थिति को मजबूत करने की इच्छा का भी परिचायक था। जनवरी 2025 में भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिश्री और तालिबान विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी के बीच हुई उच्च स्तरीय बैठक ने भारत की विदेश नीति में एक नए अध्याय की शुरुआत का संकेत दिया।

पृष्ठभूमि:

- 2021 में अमेरिकी सैनिकों की वापसी के बाद अफगानिस्तान में तालिबान का पुनरुत्थान दक्षिण एशियाई भू-राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इस घटनाक्रम ने क्षेत्र के देशों, विशेषकर भारत को अपनी विदेश नीति पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया। भारत ने इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया। एक ओर, उसने अफगानिस्तान में मानवीय संकट को देखते हुए सहायता प्रदान की। दूसरी ओर, उसने अपने रणनीतिक हितों की रक्षा के लिए तालिबान शासन के साथ संवाद भी बनाए रखा।
- हालांकि भारत ने औपचारिक रूप से तालिबान सरकार को मान्यता नहीं दी, परंतु उसने काबुल में एक तकनीकी मिशन स्थापित करके अपनी उपस्थिति बनाए रखी। यह सतर्क जुड़ाव भारत को अपने रणनीतिक हितों की सुरक्षा करते हुए अफगानिस्तान में मानवीय सहायता प्रदान करने का अवसर प्रदान करता है।

भू-राजनीतिक गतिशीलता और पाकिस्तान की भूमिका:

- अफगानिस्तान में तालिबान के सत्ता की वापसी से, दक्षिण एशियाई क्षेत्र में राजनीतिक और सुरक्षा परिदृश्य में उल्लेखनीय बदलाव आया है। यह बदलाव भारत, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों को गहराई से प्रभावित कर रहा है। तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) का मुद्दा इस तनाव का एक प्रमुख कारण है। टीटीपी, जो पाकिस्तान के आदिवासी क्षेत्रों में पश्तून राष्ट्रवाद स्थापित करना चाहता है, को तालिबान का समर्थन प्राप्त है। यह समर्थन पाकिस्तान के लिए एक गंभीर सुरक्षा चुनौती बन गया है। पाकिस्तान ने टीटीपी के ठिकानों को नष्ट करने के लिए अफगानिस्तान में हवाई हमले किए हैं, जिसके कारण दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ गया है। भारत ने पाकिस्तान के हवाई हमलों की निंदा की है। भारत का मानना है कि यह क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा है।

- अफगानिस्तान की धरती से संचालित 6,000 से अधिक टीटीपी लड़ाकों की उपस्थिति के साथ-साथ टीटीपी के साथ तालिबान के संबंध, पाकिस्तान के सुरक्षा परिदृश्य को जटिल बनाते हैं। अफगानिस्तान के सोवियत कब्जे के दौरान पाकिस्तान ने तालिबान का समर्थन किया था। यह विडंबनापूर्ण है कि आज वही तालिबान पाकिस्तान के लिए एक बड़ी सुरक्षा चुनौती बन गया है। इन विद्रोही समूहों की उपस्थिति, तालिबान के अल-कायदा के साथ संबंध क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा हैं।

तालिबान के प्रति भारत का रणनीतिक दृष्टिकोण:

- अफगानिस्तान के प्रति भारत का दृष्टिकोण मानवीय चिंताओं और भू-राजनीतिक हितों के एक जटिल मिश्रण से प्रभावित है। तालिबान शासन अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करने के प्रयास में है, जबकि भारत अपने व्यापक क्षेत्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने पर केंद्रित है।
- **मानवीय सहायता:** भारत अफगानिस्तान को मानवीय सहायता का एक महत्वपूर्ण प्रदाता रहा है। इसकी सहायता में COVID-19, पोलियो और तपेदिक के लिए दवाएं और टीके, साथ ही शीतकालीन कपड़े, स्वच्छता किट और आवश्यक खाद्य आपूर्ति शामिल हैं। 2024-25 के केंद्रीय बजट में, भारत ने अफगानिस्तान की मानवीय सहायता के लिए 200 करोड़ आवंटित किए, जो अफगान लोगों का समर्थन करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। इसके अलावा, मिश्री-मुत्ताकी वार्ता के बाद, भारत ने अफगानिस्तान के स्वास्थ्य क्षेत्र और शरणार्थी पुनर्वास के लिए अतिरिक्त समर्थन का वचन दिया है।
- **क्षेत्रीय साझेदारी का लाभ उठाना:** भारत की क्षेत्रीय रणनीति में पड़ोसी देशों के साथ साझेदारी भी शामिल है। एक उल्लेखनीय सहयोग ईरान के साथ है, विशेष रूप से चाबहार बंदरगाह के माध्यम से, जोकि भारत को पाकिस्तान को दरकिनार करते हुए अफगानिस्तान को सहायता और व्यापार पहुंचाने के लिए एक रणनीतिक मार्ग प्रदान करता है। यह साझेदारी न केवल अफगानिस्तान में भारत के प्रभाव को बढ़ाती है बल्कि ईरान के साथ काबुल पर महत्वपूर्ण प्रभाव के साथ व्यापक क्षेत्रीय मध्यस्थता के लिए भी मार्ग खोलती है।
- **सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर:** भारत की सांस्कृतिक कूटनीति अफगानिस्तान के साथ अपने जुड़ाव में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अफगानिस्तान में क्रिकेट की बढ़ती लोकप्रियता ने भारत के लिए अफगान युवाओं के साथ जुड़ने के अवसर पैदा किए हैं, विशेष रूप से इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के माध्यम से, जहां राशिद खान जैसे अफगान खिलाड़ियों ने अपनी पहचान बनाई है। इसके अलावा, भारत ने 2021 से भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के माध्यम से 3,000 से अधिक छात्रवृत्तियां प्रदान करके अफगान छात्रों का समर्थन जारी रखा है। ये पहल लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करती हैं और क्षेत्र में भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाती हैं।

चुनौतियाँ और अवसर:

भारत का तालिबान के साथ जुड़ाव कई अवसर प्रस्तुत करता है, यह चुनौतियों से भी रहित नहीं है।

- **चुनौतियाँ:**
  - **क्षेत्रीय सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** अल-कायदा, टीटीपी और आईएसकेपी जैसे आतंकवादी समूहों की उपस्थिति एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है। ये संगठन क्षेत्रीय स्थिरता को खतरा पैदा करते हैं और भारत के राजनयिक प्रयासों को जटिल बनाते हैं।
  - **पाकिस्तान का प्रभाव:** पाकिस्तान द्वारा तालिबान सहित आतंकवादी समूहों को कथित तौर पर समर्थन देने से क्षेत्रीय अस्थिरता बढ़ रही है, विशेषकर डूरंड लाइन के आसपास। डूरंड लाइन, जो एक औपनिवेशिक युग की सीमा है, को तालिबान द्वारा मान्यता नहीं दी गयी है।
  - **आंतरिक तालिबान नीतियां:** तालिबान का अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार, मानवाधिकार रिकॉर्ड और इस्लामी कानून की सख्त व्याख्या विवादास्पद मुद्दे हैं। इन नीतियों ने वैश्विक स्तर पर व्यापक आलोचना को आकर्षित किया है।
- **अवसर:**
  - **पारंपरिक संबंधों को मजबूत करना:** अफगानिस्तान और भारत ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध साझा करते हैं। भारत विकास परियोजनाओं और मानवीय सहायता के माध्यम से अफगानिस्तान के साथ अपने संबंधों को पुनर्निर्माण और मजबूत करने के लिए इन कनेक्शनों का लाभ उठा सकता है।
  - **क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देना:** तालिबान के साथ रचनात्मक रूप से जुड़कर, भारत के पास क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान देने और अफगानिस्तान में पाकिस्तान और चीन के प्रभाव का प्रतिकार करने का अवसर है।
  - **'एक्ट वेस्ट' नीति का विस्तार:** अफगानिस्तान का रणनीतिक स्थान भारत की एक्ट वेस्ट नीति का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसका उद्देश्य पश्चिम एशिया और मध्य एशिया के साथ भारत के संबंधों को मजबूत करना है। इस नीति में अफगानिस्तान को एकीकृत करने से भारत की क्षेत्रीय उपस्थिति और प्रभाव बढ़ता है।

अफगानिस्तान के बुनियादी ढांचे में भारत का निवेश:

भारत ने अफगानिस्तान के बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण निवेश किया है, जोकि देश के विकास के प्रति अपनी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता

का प्रदर्शन करता है। प्रमुख परियोजनाओं में शामिल हैं:

- **सलमा बांध:** इसे अफगान-भारत मैत्री बांध के रूप में जाना जाता है, 2016 में उद्घाटित इस परियोजना से अफगानिस्तान की बिजली उत्पादन क्षमता बढ़ती है और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा मिलता है।
- **जरंज-देलाराम राजमार्ग:** भारत के सीमा सड़क संगठन द्वारा निर्मित, यह राजमार्ग अफगानिस्तान को ईरान के चाबहार बंदरगाह से जोड़ता है, एक महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग प्रदान करता है। यह बुनियादी ढांचा परियोजना वैश्विक बाजारों के साथ अफगानिस्तान की कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।

अफगानिस्तान के साथ भारत का जुड़ाव क्यों महत्वपूर्ण है

- **भू-राजनीतिक हित:** भारत क्षेत्र में पाकिस्तान की भूमिका का प्रतिकार करने और मध्य एशिया तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए अफगानिस्तान में अपना प्रभाव बनाए रखना चाहता है, जो बढ़ते हुए आर्थिक और भू-राजनीतिक महत्व का क्षेत्र है।
- **क्षेत्रीय स्थिरता:** भारत अफगानिस्तान में बढ़ती अस्थिरता को गंभीरता से देख रहा है, क्योंकि इससे पूरे दक्षिण एशिया में अशांति फैलने का खतरा है। तालिबान का सत्ता में आना और पाकिस्तान में जारी विद्रोह ने क्षेत्र की सुरक्षा को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है।
- **निवेशों को सुरक्षित करना:** भारत ने अफगानिस्तान में बुनियादी ढांचे और विकास परियोजनाओं में भारी निवेश किया है और क्षेत्र में अपने दीर्घकालिक हितों को सुरक्षित करने के लिए भारत के लिए इन निवेशों की रक्षा करना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

तालिबान के साथ भारत का जुड़ाव एक जटिल भू-राजनीतिक स्थिति के लिए एक व्यावहारिक प्रतिक्रिया है। हालांकि देश ने औपचारिक रूप से तालिबान को मान्यता देने से परहेज किया है, लेकिन इसका बहुआयामी दृष्टिकोण-मानवीय सहायता, क्षेत्रीय साझेदारी और सांस्कृतिक कूटनीति पर केंद्रित-अफगानिस्तान के कल्याण और क्षेत्र में अपने रणनीतिक हितों के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। आतंकवादी समूहों, पाकिस्तान के प्रभाव और तालिबान की विवादास्पद आंतरिक नीतियों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद, भारत की सक्रिय कूटनीति तेजी से अस्थिर वातावरण में रचनात्मक जुड़ाव के लिए एक ढांचा प्रदान करती है। मानवीय सहायता को भू-राजनीतिक विचारों के साथ संतुलित करके, भारत क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान देना चाहता है, साथ ही अपने हितों को संरक्षित करना और अफगानिस्तान में अपने प्रभाव को मजबूत करना चाहता है।

संक्षिप्त मुद्दे

जन्मसिद्ध नागरिकता पर बहस

चर्चा में क्यों?

हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका में जन्मसिद्ध नागरिकता (Birthright Citizenship) पर बहस राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा जारी एक कार्यकारी आदेश के कारण फिर से शुरू हो गई है, जिसमें इस अधिकार को रोकने का प्रयास किया गया है। 14वें संशोधन के उल्लंघन का हवाला देते हुए, जो अमेरिकी धरती पर पैदा हुए सभी व्यक्तियों को नागरिकता की गारंटी देता है, एक संघीय न्यायाधीश ने आदेश को अस्थायी रूप से रोक दिया।

अमेरिका में जन्मसिद्ध नागरिकता का इतिहास:

- स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती वर्षों में, नागरिकता का निर्धारण मुख्य रूप से व्यक्तिगत राज्यों के कानूनों पर निर्भर था। हालांकि, एक व्यापक समझ थी कि अमेरिकी क्षेत्र में जन्मे बच्चे अमेरिकी नागरिक होते हैं।
- वर्ष 1788 में अपनाए गए संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान ने 'प्राकृतिक रूप से पैदा हुए नागरिकों' की अवधारणा को मान्यता दी। हालांकि, संविधान ने इस शब्द को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया, जिससे नागरिकता के दायरे के बारे में अस्पष्टता बनी रही।
- 1866 में पारित 14वां संशोधन ने अमेरिकी नागरिकता के दायरे में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। इस संशोधन ने स्पष्ट रूप से घोषित किया कि 'संयुक्त राज्य अमेरिका में जन्मे या प्राकृतिकीकृत सभी व्यक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका और जिस राज्य में वे निवास करते हैं, के नागरिक हैं।'
- इस संशोधन ने ड्रेड स्कॉट बनाम संयुक्त राज्य अमेरिका के मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को उलट दिया, जिसमें दासों और उनके वंशजों को नागरिकता से वंचित कर दिया गया था।
- **अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट की भूमिका:** 14वें संशोधन ने विशेष रूप से 'अमेरिका के अधिकार क्षेत्र के अधीन' वाक्यांश के संबंध में बहस छेड़ दी। 1898 के सुप्रीम कोर्ट के मामले (यूनाइटेड स्टेट्स बनाम वोंग किम अर्क) ने स्पष्ट किया कि चीनी प्रवासियों के बच्चे भी नागरिकता के हकदार हैं, इस बात की पुष्टि करते हुए कि अमेरिकी धरती पर पैदा होना नागरिकता के लिए पर्याप्त है।
- **प्लिलर बनाम डो (1982):** इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि अवैध अप्रवासियों के बच्चों को भी अमेरिकी

सार्वजनिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। यह फैसला 14वें संशोधन के तहत बच्चों के नागरिकता अधिकारों पर आधारित था, भले ही उनके माता-पिता की कानूनी स्थिति कुछ भी हो।

भारत में जन्मसिद्ध नागरिकता:

- भारत की स्वतंत्रता के समय से ही जन्मसिद्ध नागरिकता एक बहस का विषय रहा है। बी.आर. अंबेडकर और सरदार पटेल जैसे देश के प्रमुख नेताओं ने जन्मसिद्ध नागरिकता का समर्थन किया था। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 5 में इस सिद्धांत को स्वीकार किया गया और बाद में नागरिकता अधिनियम, 1955 के माध्यम से इसे कानूनी रूप दिया गया।
- हालांकि, 1986 में, संसद ने 'बांग्लादेश, श्रीलंका और कुछ अफ्रीकी देशों' से प्रवासियों के प्रवेश को संबोधित करने के लिए अधिनियम में संशोधन किया। संशोधन लागू होने के बाद पैदा हुए सभी बच्चे केवल तभी नागरिक बनेंगे जब माता-पिता में से कोई एक भारतीय नागरिक हो, जो भारत में जन्मसिद्ध नागरिकता का अंत करता है।
- 2003 में, अधिनियम में एक और संशोधन किया गया जिसके अनुसार, यदि किसी बच्चे के माता-पिता में से कोई एक अवैध अप्रवासी था, तो वह बच्चा जन्म के समय भारतीय नागरिक नहीं होगा। इस संशोधन ने जन्मसिद्ध नागरिकता की अवधारणा को और अधिक सीमित कर दिया।

निष्कर्ष:

जन्मसिद्ध नागरिकता एक जटिल मुद्दा है जिसके कई आयाम हैं। यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर लगातार बहस होती रहेगी और यह देश की सामाजिक, राजनीतिक और कानूनी प्रणाली पर गहरा प्रभाव डालता रहेगा।

भारत-फ्रांस होराइजन 2047 रोडमैप

चर्चा में क्यों?

भारत और फ्रांस ने भारत-फ्रांस होराइजन 2047 रोडमैप की समीक्षा करते हुए उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने पर सहमति व्यक्त की है। उच्च-स्तरीय प्रौद्योगिकियां रक्षा, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष, साइबर और डिजिटल प्रौद्योगिकियों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) जैसी जटिल और औद्योगिक 4.0 प्रौद्योगिकियों को संदर्भित करती हैं।

भारत-फ्रांस होराइजन 2047 रोडमैप के बारे में:

- 'होराइजन 2047' रोडमैप भारत की दीर्घकालिक रणनीति है जिसका लक्ष्य 2047 तक भारत को वैश्विक नेतृत्व की भूमिका में स्थापित करना है। यह योजना सुरक्षा, स्थिरता और लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करने पर केंद्रित है।
- जुलाई 2023 में पेरिस में प्रधानमंत्री मोदी और फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के बीच एक बैठक के दौरान होराइजन 2047 रोडमैप का अनावरण किया गया था, जिसका उद्देश्य व्यापार और निवेश से लेकर रणनीतिक सहयोग तक विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देना है।

भारत और फ्रांस के संबंधों के बारे में:

- 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के तुरंत बाद भारत और फ्रांस के बीच राजनयिक संबंध स्थापित हुए, जिसने कई क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग का मार्ग प्रशस्त किया।
- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) के अनुसार, फ्रांस भारत का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता है, जोकि भारत के रक्षा आयातों का 33% हिस्सा है। प्रमुख परियोजनाओं में राफेल विमान की खरीद और पी-75 स्कॉर्पीन पनडुब्बी परियोजना शामिल है।
  - » **राफेल विमान खरीद:** भारत ने अपनी वायु रक्षा क्षमताओं को बढ़ाते हुए राफेल जेट खरीदे हैं।
  - » **पी-75 स्कॉर्पीन परियोजना:** इसमें भारत की नौसेना के लिए उन्नत स्कॉर्पीन पनडुब्बियों का निर्माण शामिल है।
  - » **मेंटेनेंस रिपेयर एंड ओवरहॉल (एमआरओ) सुविधाएं:** यह उन्नत विमान प्रणोदन (लीप) और राफेल इंजन रखरखाव पर ध्यान केंद्रित करेंगी।

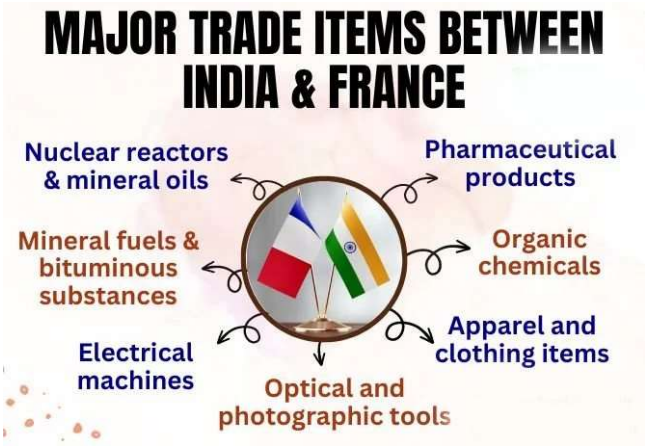

भारत और फ्रांस के बीच प्रमुख सैन्य अभ्यास:

- **द्विपक्षीय अभ्यास:** उल्लेखनीय अभ्यासों में वरुण (नौसैनिक अभ्यास) और फ्रिंजैक्स-23 (संयुक्त सैन्य अभ्यास) शामिल हैं।
- **बहुपक्षीय अभ्यास:** फ्रांस और भारत अन्य अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के सहयोग से ला पेरूज और ओरियन जैसे बहुपक्षीय अभ्यासों में भाग लेता है।

भारत-फ्रांस इंडो-पैसिफिक रोडमैप के बारे में:

- भारत-फ्रांस इंडो-पैसिफिक रोडमैप 2023 में जारी किया गया था, जिसका उद्देश्य भारतीय महासागर क्षेत्र से परे पूरे इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाना है। यह रोडमैप क्षेत्र में शांति,

स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने पर केंद्रित है।

अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत और फ्रांस का सहयोग:

- फ्रांस भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक प्रमुख घटक आपूर्तिकर्ता है। दोनों देश भविष्य के प्रक्षेपण वाहनों और त्रिशना पृथ्वी अवलोकन मिशन पर सहयोग करने के लिए सहमत हुए हैं, जिससे अंतरिक्ष अन्वेषण और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग का विस्तार हो रहा है।

भारत और फ्रांस के बीच आर्थिक सहयोग:

- फ्रांस भारत में एक प्रमुख निवेशक है। वित्त वर्ष 2022-23 में फ्रांस का भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 659.77 मिलियन अमेरिकी डॉलर रहा।
- उल्लेखनीय आर्थिक परियोजनाओं में टाटा ग्रुप और एयरबस द्वारा संयुक्त रूप से नागरिक हेलीकॉप्टरों का निर्माण और सीएफएम इंटरनेशनल द्वारा भारत के अकासा एयर को 300 से अधिक लीप-1बी इंजनों की बिक्री शामिल है।

भारत और फ्रांस के बीच डिजिटल सहयोग:

- **यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई):** फ्रांस ने एफिल टॉवर पर यूपीआई लॉन्च किया, जिससे भारतीय आगंतुकों और एनआरआई के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक लेनदेन सक्षम हुए।
- **सुपरकंप्यूटिंग:** फ्रांसीसी कंपनियों ने 14 सुपरकंप्यूटर विकसित किए हैं, जिनमें परम सिद्धि भी शामिल है, जो 4.6 पेटाफ्लॉप्स प्रति सेकंड की गति के साथ भारत का सबसे तेज सुपरकंप्यूटर है।

बहुपक्षीय सहयोग:

- फ्रांस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता और कश्मीर एवं आतंकवाद जैसे मुद्दों पर भारत के रुख का लगातार समर्थन किया है। इसके अतिरिक्त, फ्रांस ने भारत को मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर), वासेनार व्यवस्था (डब्ल्यूए) और ऑस्ट्रेलिया समूह (एजी) जैसे महत्वपूर्ण बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण वार्ता में शामिल होने में सहायता प्रदान की है।

भारत-फ्रांस संबंधों में चुनौतियाँ:

- **द्विपक्षीय व्यापार:** दोनों देशों के मध्य व्यापार बढ़ रहा है, यह 2022 में 15.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर पर रहा, किन्तु अन्य वैश्विक साझेदारियों की तुलना में अभी भी कम है।
- **वीजा प्रतिबंध:** फ्रांस में भारतीय संवाददाताओं के लिए वीजा प्राप्त करना कठिन हो गया है, जिससे द्विपक्षीय संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
- **परमाणु समझौता में विलंब:** जैतापुर परमाणु ऊर्जा परियोजना में तकनीकी, वित्तीय और परमाणु दायित्व मुद्दों के कारण देरी हो रही है।
- **रणनीतिक स्वायत्तता में मतभेद:** भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति और फ्रांस की इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखने की नीति में अंतर के कारण दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने में चुनौतियां हैं, विशेषकर चीन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए।

भारत और यूरोपीय संघ के बीच व्यापार वार्ता

सन्दर्भ:

हाल ही में वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने व्यापार और आर्थिक सुरक्षा हेतु यूरोपीय आयुक्त मारोस सेफकोविच के साथ वार्ता की, जिसमें अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के विकास, महत्वपूर्ण कच्चे माल की आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करने और मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) वार्ता को आगे बढ़ाने जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह भारत-ईयू आर्थिक संबंधों को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारत और यूरोपीय संघ के बीच सहयोग:

- भारत व्यापार और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण मोर्चों पर यूरोपीय संघ के साथ सहयोग करने की सहमति बनी है। प्राथमिक लक्ष्यों में शामिल हैं:
  - » **अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का विकास:** भारत और यूरोपीय संघ डिजिटल, विनिर्माण और नवाचार जैसे क्षेत्रों में आपसी विकास को बढ़ावा देने के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के विकास पर ध्यान केंद्रित करेंगे।
  - » **कच्चे माल की आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करना:** दोनों पक्ष ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिक्स और रक्षा जैसे उद्योगों के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण कच्चे माल की स्थिर और सुरक्षित आपूर्ति सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखते हैं, साथ ही गैर-बाजार अर्थव्यवस्थाओं पर निर्भरता को कम करते हैं।
  - » **मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए):** नेताओं ने दोनों क्षेत्रों के व्यवसायों के लिए व्यापार बाधाओं को दूर करने और प्रक्रियाओं को सरल बनाने के लिए पारस्परिक रूप से लाभप्रद मुक्त व्यापार समझौते की दिशा में काम करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।
- वार्ता ऐसे समय में हुई है जब वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं संकट में हैं और देश कमियों को दूर करने और अधिक लचीली, विविध व्यापार नेटवर्क सुनिश्चित करने के तरीकों की तलाश कर रहे हैं।

भारत और यूरोपीय संघ के बीच सहयोग के क्षेत्र:

- **आर्थिक सहयोग:**
  - » **व्यापार:** यूरोपीय संघ भारत के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक है, 2021 में द्विपक्षीय व्यापार 88 बिलियन यूरो से अधिक था। भारत यूरोपीय संघ का 10वां

सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।

» **निवेश:** यूरोपीय संघ भारत में विदेशी निवेश का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। भारत में यूरोपीय संघ की विदेशी निवेश हिस्सेदारी 2017 में 63.7 बिलियन यूरो से बढ़कर 2020 में 87.3 बिलियन यूरो हो गई। टाटा समूह जैसी भारतीय कंपनियों की यूरोपीय संघ में, विशेष रूप से फ्रांस और इटली जैसे देशों में मजबूत उपस्थिति है।

- **बुनियादी ढांचा विकास:** यूरोपीय संघ भारत के बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है, ऊर्जा और परिवहन जैसे क्षेत्रों में परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण प्रदान करता है।

यूरोपीय संघ (ईयू) के बारे में:

- यूरोपीय संघ (ईयू) 27 देशों का एक राजनीतिक और आर्थिक संघ है, जोकि मुख्य रूप से यूरोप में स्थित है।
- मास्ट्रिच संधि द्वारा स्थापित, जोकि 1 नवंबर, 1993 को लागू हुई। यूरोपीय संघ का उद्देश्य यूरोप में आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता बढ़ाने के लिए अपने सदस्यों के बीच सहयोग और एकीकरण को बढ़ावा देना है।
- यूरोपीय संघ अपनी सामान्य मुद्रा यूरो का उपयोग करता है, जिसे इसके 19 सदस्य देशों द्वारा अपनाया गया है।
- यह एक एकल बाजार भी संचालित करता है, जोकि अपने सदस्य देशों में माल, सेवाओं और पूंजी के मुक्त आवागमन की अनुमति देता है।

ब्रिक्स ब्लॉक

चर्चा में क्यों?

हाल ही में नाइजीरिया को आधिकारिक तौर पर ब्रिक्स ब्लॉक का 'सहयोगी देश' बनाया गया, जिसमें अब पूर्णकालिक सदस्यों के साथ नौ सहयोगी देश शामिल हैं।

ब्रिक्स ब्लॉक के बारे में:

- **स्थापना:** ब्रिक्स की औपचारिक स्थापना 2009 में हुई थी, शुरुआत में इसे ब्रिक (ब्राजील, रूस, भारत और चीन) के रूप में जाना जाता था। 2010 में दक्षिण अफ्रीका इसमें शामिल हुआ, जिससे इसका नाम ब्रिक्स पड़ा। यह समूह वैश्विक अर्थव्यवस्था का 25% से अधिक और विश्व की लगभग 45% आबादी का प्रतिनिधित्व करता है।
- **मुख्यालय:** ब्रिक्स का कोई स्थायी मुख्यालय नहीं है और यह एक घूर्णन(रोटेशन) अध्यक्षता के आधार पर संचालित होता है।
- **पूर्णकालिक सदस्य:** इस ब्लॉक में ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, ईरान, मिस्र, इथियोपिया, संयुक्त अरब अमीरात और इंडोनेशिया शामिल हैं।
  - » 2023 में, ब्रिक्स का विस्तार हुआ जिसमें ईरान, मिस्र, इथियोपिया और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हुए। सऊदी अरब को भी आमंत्रित किया गया है लेकिन वह अभी तक इसमें शामिल नहीं हुआ है।
  - » 2025 में इंडोनेशिया पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल हुआ।
- **सहयोगी देश:** सहयोगी देशों में नाइजीरिया, बेलारूस, बोलीविया, क्यूबा, कजाकिस्तान, मलेशिया, थाईलैंड, युगांडा और उज्बेकिस्तान शामिल हैं।

विकास:

- **2006:** जी8 शिखर सम्मेलन के दौरान ब्रिक्स का गठन हुआ।
- **2009:** रूस के येकातेरिनबर्ग में पहला ब्रिक शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया।
- **2010:** दक्षिण अफ्रीका के शामिल होने के साथ ब्रिक्स का विस्तार हुआ।
- **2014:** ब्राजील के फोर्टालेजा में न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी) की स्थापना की गई।

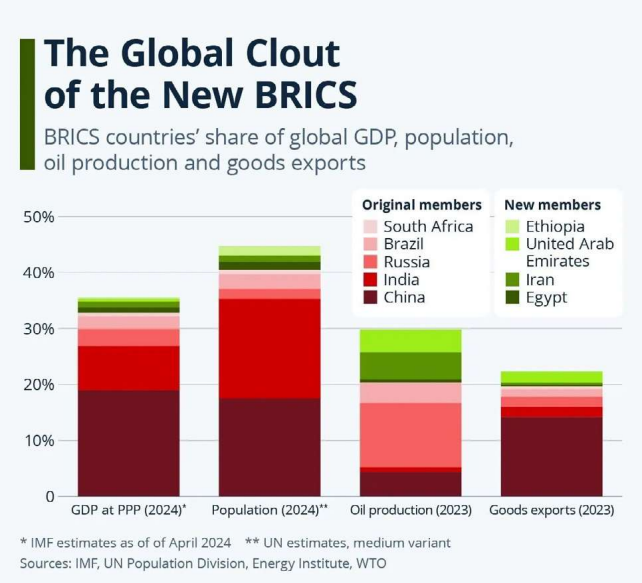

कार्य:

- **आर्थिक सहयोग:** सदस्य राष्ट्रों के बीच व्यापार और निवेश को बढ़ावा देना।
- **वैश्विक शासन सुधार:** संयुक्त राष्ट्र और आईएमएफ जैसे वैश्विक संस्थानों में निष्पक्ष प्रतिनिधित्व का समर्थन करना।
- **विकास परियोजनाएं:** एनडीबी के माध्यम से बुनियादी ढांचे और सतत विकास पहलों के लिए धन जुटाना।
- **दक्षिण-दक्षिण सहयोग:** वैश्विक चुनौतियों से सामूहिक रूप से निपटने के लिए विकासशील देशों के बीच गठबंधन को मजबूत करना।

ब्रिक्स की पहल:

- **आकस्मिक रिजर्व व्यवस्था (सीआरए):** भुगतान संतुलन

कठिनाइयों का सामना कर रहे सदस्य देशों को तरलता सहायता प्रदान करने के लिए $100 बिलियन तक की राशि का एक वित्तीय तंत्र।

- **न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी):** उभरते बाजारों में बुनियादी ढांचे और सतत विकास के लिए संसाधन जुटाता है, जिसमें 96 परियोजनाओं के लिए $32.8 बिलियन की प्रतिबद्धता है।
- **ब्रिक्स भुगतान प्रणाली:** डॉलर आधारित भुगतान प्रणाली पर निर्भरता को कम करने के लिए विकल्प विकसित करना।

भारत के लिए ब्रिक्स का महत्वः

- **भू-राजनीतिः** ब्रिक्स भारत को अमेरिका और रूस-चीन धुरी के बीच अपने रणनीतिक हितों को संतुलित करने का एक मंच प्रदान करता है, जोकि वैश्विक भू-राजनीतिक गतिशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **वैश्विक आर्थिक व्यवस्थाः** ब्रिक्स देश एक अधिक न्यायसंगत और संतुलित वैश्विक आर्थिक व्यवस्था की वकालत करते हुए, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली में सुधार के लिए एक सामान्य उद्देश्य साझा करते हैं, जोकि भारत को वैश्विक नीतियों को आकार देने में मदद करता है।
- **विकासशील देशों की आवाजः** ब्रिक्स वैश्विक दक्षिण की आवाज का प्रतिनिधित्व करता है, जोकि भारत को व्यापार और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर पश्चिमी नीतियों की चुनौतियों के बीच विकासशील देशों के अधिकारों की रक्षा करने का अवसर प्रदान करता है।
- **आतंकवाद विरोधी सहयोगः** ब्रिक्स भारत को आतंकवाद के खिलाफ अपने प्रयासों को बढ़ाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है, आतंकवाद विरोधी रणनीतियों पर चर्चा के लिए एक मंच प्रदान करता है और मजबूत वैश्विक कार्रवाइयों की दिशा में काम करता है।
- **वैश्विक समूह और राजनयिक जुड़ावः** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) जैसी वैश्विक संस्थाओं में स्थायी सदस्यता हासिल करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत ब्रिक्स मंच का उपयोग कर रहा है। यह मंच भारत को चीन के साथ अपने संबंधों को सुधारने, द्विपक्षीय मुद्दों को हल करने और अन्य सदस्य देशों के साथ सहयोग बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है।

रूस और ईरान ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी संधि पर हस्ताक्षर किए

चर्चा में क्यों?

हाल ही में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने एक ऐतिहासिक समझौते-ईरानी-रूसी व्यापक रणनीतिक साझेदारी संधि पर हस्ताक्षर किए। यह संधि 20 वर्षीय साझेदारी की रूपरेखा तैयार करती है, जिसका उद्देश्य रक्षा, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी और आतंकवाद का मुकाबला करने सहित अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देना है।

संधि के प्रमुख प्रावधानः

- **आर्थिक सहयोगः** संधि व्यापार को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, जोकि पहले ही 2024 में 15.5% बढ़कर 3.77 बिलियन डॉलर हो गया है। दोनों देश ऊर्जा, वित्त और प्रौद्योगिकी में व्यापार का विस्तार करने और अपनी आर्थिक साझेदारी को मजबूत करने का लक्ष्य रखते हैं।
- **रक्षा और सैन्य सहयोगः** रूस और ईरान संयुक्त आतंकवाद विरोधी अभियानों, खुफिया जानकारी साझा करने और रक्षा प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान सहित सैन्य संबंधों को मजबूत करना चाहते हैं।
- **साइबर सुरक्षा और प्रौद्योगिकीः** दोनों देश सूचना प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा और शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा के विकास में बढ़ते सहयोग के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- **क्षेत्रीय और वैश्विक सहयोगः** संधि व्यापक क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दों को शामिल करती है, जिसमें आतंकवाद का मुकाबला करने और संगठित अपराध और धन शोधन जैसी चुनौतियों का समाधान करने पर जोर दिया गया है।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान और कूटनीतिः** संधि के एक भाग में रूस और ईरान के बीच सांस्कृतिक और राजनयिक संबंधों के विस्तार पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है, विभिन्न गैर-राजनीतिक क्षेत्रों में आपसी समझ और सहयोग को बढ़ावा दिया गया है।

वैश्विक प्रभावः

- **अमेरिकी प्रतिबंधों पर प्रभावः** इस संधि के प्रमुख प्रेरक कारकों में से एक रूस और ईरान दोनों पर अमेरिकी प्रतिबंधों के आर्थिक और राजनीतिक प्रभावों को कम करना है। संधि दोनों देशों को प्रतिबंधों को दरकिनार करने और व्यापार और ऊर्जा विनिमय को बढ़ावा देकर अपनी आर्थिक लचीलापन बढ़ाने की अनुमति देती है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां दोनों देश बाहरी सहयोग पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
- **मध्य पूर्व में गठबंधनों में बदलावः** यह संधि मध्य पूर्व में शक्ति संतुलन को बदलने की क्षमता रखती है। चूंकि दोनों देश इस क्षेत्र में, विशेषकर सीरिया में प्रमुख देश हैं, इसलिए यह समझौता पश्चिमी देशों, खासकर अमेरिका और उसके सहयोगियों के प्रभाव को कम करने और क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करने के उनके प्रयासों को बढ़ावा दे सकता है।
- **ऊर्जा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रः** ईरान और रूस दोनों ऊर्जा संपन्न राष्ट्र हैं। तेल और गैस में उनका बढ़ता सहयोग वैश्विक ऊर्जा बाजारों को बाधित कर सकता है।

- इसके अलावा, प्रौद्योगिकी और साइबर सुरक्षा में सहयोग दोनों देशों को अधिक उन्नत तकनीकी ढांचे विकसित करने की अनुमति देगा, संभावित रूप से उन्हें पश्चिमी प्रौद्योगिकियों पर कम निर्भर बनाएगा और वैश्विक तकनीकी परिदृश्य में उनके प्रभाव को बढ़ाएगा।
- **क्षेत्रीय सुरक्षा गतिकी:** यह संधि क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य को काफी प्रभावित कर सकती है, विशेषकर सीरिया जैसे संघर्ष क्षेत्रों में रूस और ईरान के संयुक्त प्रयासों के मद्देनजर। दोनों देशों का आतंकवाद और क्षेत्रीय अस्थिरता के खिलाफ एकजुट मोर्चा पड़ोसी देशों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय पर गहरा प्रभाव डाल सकता है।
- **वैश्विक शक्ति संतुलन:** यह रणनीतिक साझेदारी एक नए वैश्विक ध्रुवीकरण की शुरुआत का संकेत दे सकती है, जिसमें रूस और ईरान प्रमुख देश के रूप में उभर रहे हैं। यह संधि अन्य गैर-पश्चिमी शक्तियों, विशेषकर चीन के साथ सहयोग को बढ़ावा दे सकती है, जिससे वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में बदलाव आ सकता है और शक्ति संतुलन में एक नया समीकरण स्थापित हो सकता है।

इंडोनेशिया ब्रिक्स समूह में शामिल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में इंडोनेशिया ने औपचारिक रूप से ब्रिक्स समूह में शामिल होने की घोषणा की है, जिससे उभरती अर्थव्यवस्थाओं के इस गठबंधन का विस्तार हुआ है जिसमें रूस, चीन, ब्राजील, भारत और दक्षिण अफ्रीका जैसे देश शामिल हैं। इंडोनेशिया अब आधिकारिक रूप से उभरती अर्थव्यवस्थाओं के समूह ब्रिक्स (BRICS) का पूर्ण सदस्य (11वां) बन गया है। इस कदम को वैश्विक राजनीति में एक प्रवृत्ति के रूप में देखा जा रहा है जहां देश पश्चिमी वर्चस्व, विशेषकर आर्थिक मामलों में, का मुकाबला करने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

इस समूह में शामिल होने के पीछे के कारण:

- **वैश्विक शासन को मजबूत करना:** इंडोनेशिया वैश्विक शासन में अपनी भूमिका बढ़ाने के लिए ब्रिक्स में शामिल हो रहा है, क्योंकि यह समूह विश्व की वृहद् आबादी और आर्थिक शक्ति के एक महत्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है।
- **आर्थिक विकास और व्यापार के अवसर:** ब्रिक्स इंडोनेशिया को व्यापक व्यापार संबंधों और बाजारों, निवेशों और बुनियादी ढांचे के विकास तक बेहतर पहुंच प्रदान करता है, जिससे समूह के भीतर आर्थिक सहयोग बढ़ता है।
- **डॉलर-विमुद्रीकरण प्रयास:** ब्रिक्स के हिस्से के रूप में, इंडोनेशिया को अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने और वैकल्पिक व्यापार तंत्रों और मुद्राओं का पता लगाने के प्रयासों से लाभ होता है, जिससे इसकी आर्थिक संप्रभुता मजबूत होती है।
- **वैश्विक संस्थानों में सुधार:** इंडोनेशिया आईएमएफ और विश्व बैंक जैसे वैश्विक संस्थानों में सुधार की वकालत करने में ब्रिक्स के साथ संरेखित है, जिसका उद्देश्य अधिक समावेशी और निष्पक्ष वैश्विक आर्थिक व्यवस्था है।
- **ग्लोबल साउथ सहयोग:** इंडोनेशिया की सदस्यता ग्लोबल साउथ में अन्य विकासशील देशों के साथ काम करने की अपनी प्रतिबद्धता पर जोर देती है, जिससे उभरती अर्थव्यवस्थाओं की जरूरतों के लिए सामूहिक आवाज में योगदान होता है।
- **बहुपक्षवाद और कूटनीति:** ब्रिक्स सदस्यता इंडोनेशिया की विदेश नीति के अनुरूप है, जोकि जलवायु परिवर्तन, गरीबी और सुरक्षा जैसे वैश्विक मुद्दों पर बहुपक्षवाद और सहयोग का समर्थन करती है।

ब्रिक्स का महत्व:

- ब्रिक्स के पास महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति है, जो दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद में 35% का योगदान देता है और वैश्विक आबादी का 46% हिस्सा है, जो विकासशील देशों के बीच व्यापार और निवेश को बढ़ावा देता है। यह पश्चिमी प्रभाव के विकल्प के रूप में कार्य करता है, जो उभरती अर्थव्यवस्थाओं को अमेरिका और यूरोप पर निर्भरता कम करने और अधिक संतुलित वैश्विक प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करता है।
- एक प्रमुख लक्ष्य व्यापार में स्थानीय मुद्राओं को बढ़ावा देकर, सदस्य अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करके और वित्तीय कमजोरियों को कम करके अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करना है। ब्रिक्स निष्पक्ष वैश्विक नीतियों की भी वकालत करता है, जो संयुक्त राष्ट्र और आईएमएफ जैसे वैश्विक संगठनों में विकासशील देशों के मजबूत प्रतिनिधित्व पर जोर देता है।
- सहयोग प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे और पर्यावरण संरक्षण तक फैला हुआ है, जिसमें सदस्य जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य सेवा चुनौतियों पर सहयोग करते हैं। ऊर्जा सुरक्षा एक और प्राथमिकता है, क्योंकि ब्रिक्स देश ऊर्जा के प्रमुख उत्पादक और उपभोक्ता हैं, जो स्थिर और सस्ती आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करते हैं। वैश्विक सहयोग पर जोर देकर, ब्रिक्स एकतरफा कार्रवाई के बजाय सामूहिक समस्या-समाधान को बढ़ावा देता है।

ब्रिक्स के सामने चुनौतियाँ:

- विविध आर्थिक हितों के कारण परस्पर विरोधी प्राथमिकताएँ बनती हैं, जहाँ चीन और भारत विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि ब्राजील और रूस प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं। चीन-भारत सीमा तनाव और रूस के पश्चिम के साथ विवाद सहित राजनीतिक मतभेदों के कारण एकीकृत रुख बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।
- भू-राजनीतिक संघर्ष निर्णय लेने को और जटिल बनाते हैं, क्योंकि ब्रिक्स के भीतर प्रतिद्वंद्विता और बाहरी गठबंधन, जैसे कि भारत के अमेरिका के साथ संबंध, सामंजस्य को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त, ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक व्यापार पर निर्भर

रहती हैं, जिससे पश्चिमी बाजारों पर निर्भरता कम करना और अमेरिकी डॉलर से दूर जाना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

- इन चुनौतियों के बावजूद, ब्रिक्स वैश्विक अर्थव्यवस्था को आकार देना जारी रखता है, और अधिक समावेशी और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के लिए दबाव डालता है

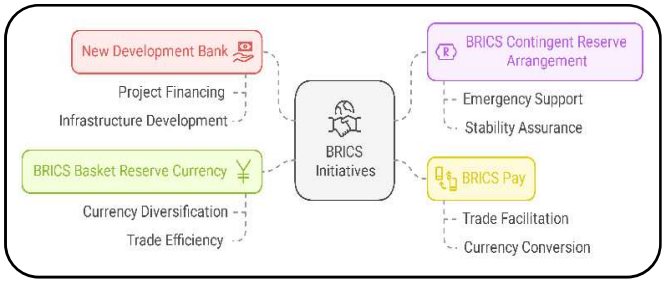

ब्रिक्स की मुख्य पहलें:

ब्रिक्स ने कई प्रमुख पहल शुरू की हैं:

- **न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी):** एक वैश्विक वित्तीय संस्थान जिसका उद्देश्य विकास परियोजनाओं के लिए ऋण प्रदान करना है।
- **ब्रिक्स आकस्मिक रिजर्व व्यवस्था:** वित्तीय संकट के दौरान सदस्य राज्यों की सहायता के लिए 100 बिलियन डॉलर का फंड।
- **ब्रिक्स पे:** सदस्यों के बीच व्यापार को सुगम बनाने के लिए एक डिजिटल भुगतान प्रणाली।
- **ब्रिक्स बास्केट रिजर्व करेंसी:** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अमेरिकी डॉलर के वर्चस्व के विकल्प के रूप में प्रस्तावित।

भारत और अफगानिस्तान के बीच पहली उच्च-स्तरीय राजनयिक वार्ता

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत और तालिबान ने 2021 में तालिबान द्वारा अफगानिस्तान पर नियंत्रण स्थापित करने के बाद अपनी पहली उच्च-स्तरीय राजनयिक वार्ता आयोजित की। विदेश सचिव विक्रम मिश्री ने दुबई में अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी से मुलाकात की। वार्ता में सुरक्षा, मानवीय सहायता और ईरान के चाबहार बंदरगाह के माध्यम से व्यापार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

बैठक में किन मुद्दों पर चर्चा हुई?

- **सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** भारत ने अफगानिस्तान से भारत-विरोधी आतंकवादी गतिविधियों के बारे में चिंता व्यक्त की। तालिबान ने भारत को आश्वासन दिया कि वह इन सुरक्षा खतरों का समाधान करेगा।
- **मानवीय सहायता:** भारत ने खाद्य, दवाइयाँ और टीके सहित आवश्यक सहायता प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। अफगान पक्ष ने भारत द्वारा किए गए पिछले शिपमेंट्स, जिनमें गेहूं और भूकंप राहत सामग्री शामिल थी, की सराहना की।
- **विकास परियोजनाएं:** दोनों पक्षों ने अफगानिस्तान की तत्काल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भविष्य की विकास परियोजनाओं में भारत की भागीदारी पर चर्चा की।
- **चाबहार बंदरगाह के माध्यम से व्यापार:** क्षेत्रीय संपर्क के लिए ईरान के चाबहार बंदरगाह के उपयोग को एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में रेखांकित किया गया। भारत को इस बंदरगाह पर अमेरिकी प्रतिबंधों से छूट दी गई है, जिससे अफगानिस्तान के साथ व्यापार को सुगम बनाया जा सकता है।
- **खेल सहयोग:** चर्चा में क्रिकेट संबंधों को मजबूत करने पर भी ध्यान दिया गया, जिसमें भारत द्वारा अफगान क्रिकेटरों को प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान करके समर्थन किया गया।

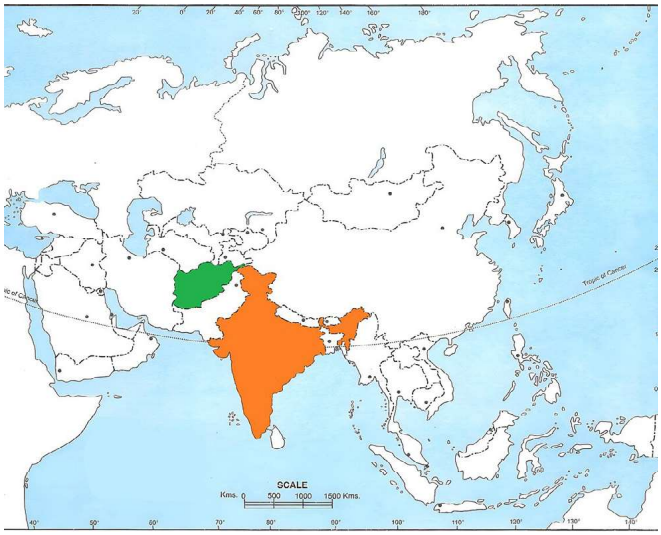

अफगानिस्तान के लिए भारत क्या कर रहा है?

भारत मानवीय सहायता और विकास पहलों के माध्यम से अफगानिस्तान की सहायता में सक्रिय रूप से शामिल रहा है:

- **मानवीय सहायता:** भारत ने गेहूं, दवाइयाँ और जाड़े के कपड़े जैसे आवश्यक आपूर्तियाँ भेजी हैं।
- **स्वास्थ्य क्षेत्र में समर्थन:** भारत स्वास्थ्य क्षेत्र में और सहायता प्रदान करने की योजना बना रहा है, जिसमें चिकित्सा संसाधन भी शामिल हैं।
- **शरणार्थियों का पुनर्वास:** भारत विशेष रूप से पाकिस्तान से लौटने वाले अफगान शरणार्थियों के पुनर्वास में सहायता कर रहा है।
- **विकास पहल:** भारत अफगानिस्तान में दीर्घकालिक विकास परियोजनाओं में शामिल होने की संभावना तलाश रहा है।

अफगानिस्तान का भारत के लिए महत्व:

अफगानिस्तान विभिन्न कारणों से भारत के लिए महत्वपूर्ण है:

- **भू-राजनीतिक विचार:** पाकिस्तान, ईरान और मध्य एशिया की सीमा से लगे अफगानिस्तान का स्थान भारत की सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी रणनीति के लिए महत्वपूर्ण है।
- **व्यापार और संपर्क:** चाबहार बंदरगाह का उपयोग भारत द्वारा अफगानिस्तान और मध्य एशिया के साथ व्यापार संबंध ों को बढ़ाता है।
- **जन-जन संबंध (People-To-People Ties):** भारत और अफगानिस्तान के बीच गहरे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध हैं, जो क्षेत्र में भारत के प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण हैं।

भारत के सामने चुनौतियाँ:

तालिबान के नेतृत्व वाले अफगानिस्तान के साथ व्यवहार करने में भारत के सामने कई चुनौतियाँ हैं:

- **सुरक्षा जोखिम:** यह सुनिश्चित करना कि अफगानिस्तान भारत-विरोधी आतंकवादी समूहों का गढ़ न बने, भारत के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय है।
- **राजनीतिक संवेदनशीलताएं:** मानवाधिकारों, विशेष रूप से महिलाओं और अल्पसंख्यकों के संबंध में चिंताओं को देखते हुए, भारत चिंतित है।
- **क्षेत्रीय गतिशीलता:** तालिबान के साथ जुड़ते हुए भारत को पाकिस्तान और ईरान जैसे पड़ोसी देशों के साथ जटिल संबंधों को नेविगेट करना होगा।
- **प्रतिबंधों का जोखिम:** हालांकि भारत को चाबहार पर अमेरिकी प्रतिबंधों से छूट दी गई है, लेकिन बदलते अमेरिकी राजनीतिक परिदृश्य में, भविष्य में प्रतिबंधों का जोखिम अभी भी मौजूद है।

भारत-अमेरिका सोनोबॉय सह-निर्माण साझेदारी

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने गहरे समुद्र में पनडुब्बियों का पता लगाने के लिए अंडरसी डोमेन जागरूकता (UDA) के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक सोनोबॉय के सह-निर्माण के लिए एक ऐतिहासिक साझेदारी शुरू की है। यह कदम हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति के बारे में बढ़ती चिंताओं के बीच उठाया गया है।

सोनोबॉय के बारे में :

- सोनोबॉय ऐसे उपकरण हैं जोकि ध्वनिक संकेतों के माध्यम से पनडुब्बियों का पता लगाते हैं। वे अंडरसी युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे पनडुब्बियों का पता लगाना और उन्हें निष्क्रिय करना संभव हो पाता है। इन उपकरणों को समुद्री गश्ती विमानों, हेलीकॉप्टरों या यूएवी जैसे विमानों से तैनात किया जाता है, जोकि नौसैनिक रक्षा कार्यों के लिए महत्वपूर्ण व्यापक क्षेत्र खोज का संचालन करते हैं।

शामिल हितधारक:

- सह-निर्माण पहल में अल्ट्रा मैरीटाइम (अंडरसी युद्ध प्रौद्योगिकियों में अग्रणी अमेरिकी कंपनी) और भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (एक राज्य-स्वामित्व वाली भारतीय रक्षा कंपनी) शामिल है। अल्ट्रा मैरीटाइम सोनोबॉय डिजाइन और उत्पादन में विशेषज्ञता प्रदान करेगा, जबकि बीडीएल भारत के भीतर विनिर्माण और वितरण को संभालेगा।

क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज पर पहल:

- यह सहयोग जनवरी 2023 में शुरू की गई अमेरिका-भारत क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज (iCET) पहल के तहत एक महत्वपूर्ण कदम है। यह पहल उन्नत प्रौद्योगिकियों में, विशेष रूप से अंडरसी डोमेन जागरूकता जैसे रक्षा क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

भारत-अमेरिका संबंधों की बहुआयामी साझेदारी और विकास यात्रा

भारत के लिए महत्व:

- यह साझेदारी भारत की नौसेना क्षमताओं को मजबूत करती है, जिससे भारतीय नौसेना को तेजी से चुनौतीपूर्ण हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी निगरानी और पता लगाने की क्षमताओं को बढ़ाने की क्षमता मिलती है।
- भारत में उत्पादित सोनोबॉय भी अमेरिकी नौसेना प्लेटफार्मों और ऑस्ट्रेलिया और जापान सहित सहयोगी बलों के प्लेटफार्मों के साथ इंटरऑपरेबल होंगे।
- यह इंटरऑपरेबिलिटी एक मजबूत रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देती है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की रणनीतिक स्थिति को मजबूत करती है, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता और समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

भारत-अमेरिका रक्षा संबंध: एक मजबूत आधार

भारत और अमेरिका के बीच रणनीतिक रक्षा संबंधों ने पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण विकास किया है:

- **2005:** भारत और अमेरिका ने रणनीतिक संवाद शुरू किए, जोकि गहन सबंधो की शुरुआत का प्रतीक है।
- **2016:** भारत को 'प्रमुख रक्षा साझेदार' नामित किया गया, जिससे उन्नत तकनीक तक पहुंच प्रदान की गई।

- **2018:** भारत को रणनीतिक व्यापार प्राधिकरण स्तर 1 (एसटीए-1) का दर्जा प्राप्त हुआ, जिससे अमेरिकी सैन्य तकनीक तक आसान पहुंच की सुविधा मिली।
- **2018:** 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता की स्थापना ने रणनीतिक सहयोग को और मजबूत किया।
- **2019:** पहला त्रि-सेवा अभ्यास, 'टाइगर ट्राइंफ' हुआ, साथ ही अमेरिकी कंपनियों को भारत के रक्षा उत्पादन में भाग लेने की अनुमति देने के लिए औद्योगिक सुरक्षा अनुबंध (आईएसए) पर हस्ताक्षर किए गए।
- **2021-2022:** भारत और अमेरिका ने प्रमुख रक्षा सौदों पर प्रगति की, जिसमें एमक्यू-9बी ड्रोन और एफ-414 फाइटर जेट इंजन का अधिग्रहण शामिल है।
- **2023:** भारत-अमेरिका रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र (आईएनडीयूएस-एक्स) को रक्षा कंपनियों, निवेशकों और अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए लॉन्च किया गया था।

निष्कर्ष:

सोनोबॉय का सह-निर्माण भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग में एक महत्वपूर्ण विकास है, जोकि भारत की रणनीतिक समुद्री क्षमताओं को बढ़ा रहा है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक मजबूत रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा दे रहा है।

पहली भारत-मलेशिया सुरक्षा वार्ता

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और मलेशिया के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के महानिदेशक राजा डाटो नुशीरवान बिन जैनल आबिदीन ने संयुक्त रूप से पहली भारत-मलेशिया सुरक्षा वार्ता की सह-अध्यक्षता की। यह वार्ता द्विपक्षीय सुरक्षा सहयोग में एक महत्वपूर्ण विकास है, जिसमें आतंकवाद पर सहयोग, समुद्री सुरक्षा और रणनीतिक मुद्दों सहित साझी वैश्विक और क्षेत्रीय चुनौतियों के समाधान पर चर्चा की गयी।

वार्ता के फोकस क्षेत्र:

- वार्ता के केंद्रबिंदु क्षेत्र में आतंकवाद के बढ़ते खतरे को ध्यान में रखते हुए आतंकवाद का मुकाबला और उग्रवाद का निवारण करना था।
- दोनों देशों ने इस खतरे से निपटने के लिए सहयोगात्मक उपायों के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की। व्यापार और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों को सुरक्षित करना और समुद्री सुरक्षा बढ़ाना भी प्रमुख रूप से प्रदर्शित किया गया।
- इस सुरक्षा वार्ता से रक्षा, आर्थिक और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है, जोकि क्षेत्रीय शांति और स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

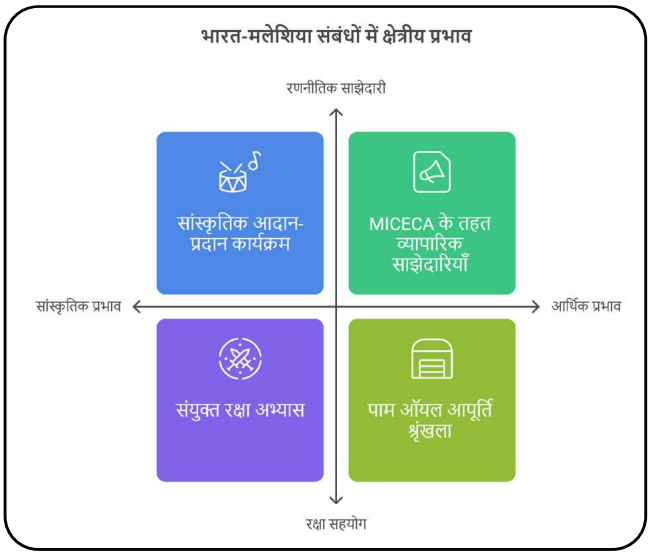

भारत-मलेशिया संबंधों के बारे में:

- भारत और मलेशिया के बीच राजनयिक संबंध 1957 में स्थापित हुए थे। विगत वर्षों में, व्यापार, रक्षा और सांस्कृतिक क्षेत्रों में संबंध मजबूत हुए हैं।
- **आर्थिक संबंध:** वित्त वर्ष 2023-24 में, द्विपक्षीय व्यापार 20.01 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया, जिससे मलेशिया भारत का 16वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया। मलेशिया-भारत व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (एमआईसीईसीए), स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और केंद्रीय बैंक साझेदारी जैसी प्रमुख पहलों ने इन संबंधों को बढ़ावा दिया है।
- **पाम ऑयल राजनीति:** मलेशिया भारत को प्रतिवर्ष लगभग तीन मिलियन मीट्रिक टन ताड़ के तेल का निर्यात करके भारत के खाद्य तेल बाजार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही, मलेशिया अनुसंधान एवं विकास तथा बीज आपूर्ति के माध्यम से भारत के राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन को सहायता प्रदान करता है।
- **रक्षा सहयोग:** संयुक्त उद्यम, हथियारों की खरीद और सैन्य प्रशिक्षण जैसे क्षेत्रों में सहयोग से भारत और मलेशिया के बीच रक्षा संबंध मजबूत हुए हैं। मलेशिया-भारत रक्षा सहयोग समिति (एमआईडीसीओएम) की वार्षिक बैठकें इस सहयोग को और गहरा बनाती हैं। 2023 में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) ने कुआलालंपुर में अपना पहला क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित करके इस संबंध को और मजबूत किया है।
- **जन-से-जन संपर्क:** मलेशिया दो मिलियन से अधिक भारतीय मूल के लोगों का घर है, जिससे सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक संबंधो को बढ़ावा मिलता है।

भारत-मलेशिया संबंधों में चुनौतियाँ:

- **कमजोर आर्थिक सहयोग:** द्विपक्षीय व्यापार मलेशिया-चीन व्यापार संबंधों की तुलना में मामूली है, जबकि भारत के निर्यात प्रतिबंधों ने मलेशिया की खाद्य सुरक्षा को प्रभावित किया है।

- **रक्षा भू-राजनीति:** मलेशिया द्वारा भारत के तेजस के बजाय दक्षिण कोरिया के एफए-50 जेट का चयन करने से रक्षा सौदों में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- **राजनीतिक तनाव:** कश्मीर और नागरिकता संशोधन अधिनियम जैसे मुद्दों पर असहमति के कारण तनाव पैदा हुआ है।
- **प्रत्यर्पण मुद्दे:** जाकिर नाइक को प्रत्यर्पित करने से इनकार करने से मलेशिया में तनाव संबंधो में तनाव रहता है।
- **चीन संबंध:** दक्षिण चीन सागर में चीन के साथ मलेशिया की मौन कूटनीति भारत के लिए चुनौतियां पैदा करती है।
- **श्रम शोषण:** मलेशिया में भारतीय प्रवासी श्रमिकों के साथ दुर्व्यवहार की चिंताएं बनी हुई हैं।

भारत द्वारा संबंधों को मजबूत करने के लिए पहल:

- **तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी):** भारत मलेशियाई नागरिकों के लिए 100 वार्षिक सीटें आवंटित करता है, जिससे शैक्षिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है।
- **एमआईसीईसीए:** मंच द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग को मजबूत करता है।
- **सांस्कृतिक कूटनीति:** कुआलालंपुर में नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय सांस्कृतिक केंद्र भारतीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।
- **वित्तीय संपर्क:** भारत का यूपीआई भुगतान सिस्टम मलेशिया ने भी अपनाया है जिससे वित्तीय लेनदेन का आधुनिकीकरण होता है।

भारतीय विदेश मंत्री की अमेरिकी एनएसए से मुलाकात

चर्चा में क्यों?

हाल ही में विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने नई दिल्ली में अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन से मुलाकात की और महत्वपूर्ण रणनीतिक, क्षेत्रीय और द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की। यह बैठक सुलिवन की दो दिवसीय भारत यात्रा का हिस्सा है। अमेरिकी विदेश मंत्री सुलिवन संयुक्त राज्य अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में डोनाल्ड ट्रम्प के शपथ ग्रहण से पहले बिडेन प्रशासन के हाई-प्रोफाइल कार्यक्रमों को पूरा कर रहे हैं।

बैठक के मुख्य बिंदु:

- इस बैठक का प्राथमिक उद्देश्य भारत और अमेरिका के बीच रणनीतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए प्रारंभ की गई महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों पर भारत-अमेरिका पहल (आईसीईटी) की प्रगति का आकलन करना था।
- जयशंकर और सुलिवन दोनों ने आईसीईटी पहल की प्रगति पर चर्चा की, जिसमें अंतरिक्ष, रक्षा, रणनीतिक प्रौद्योगिकी और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा सहयोग जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं।
- उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और बायोटेक्नोलॉजी जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों पर भी अंतर्दृष्टि साझा की, जिनसे द्विपक्षीय संबंधों के भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है।

आईसीईटी क्या है?

- महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों पर भारत-अमेरिका पहल (आईसीईटी) एक रणनीतिक सहयोग है जिसका उद्देश्य भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच नवाचार को बढ़ावा देना और तकनीकी साझेदारी को मजबूत करना है।
- मई 2022 में घोषित और जनवरी 2023 में आधिकारिक रूप से लॉन्च किया गया, आईसीईटी दोनों देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों (एनएससी) द्वारा चलाया जा रहा है। यह पहल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), क्वांटम कंप्यूटिंग, सेमीकंडक्टर और वायरलेस दूरसंचार जैसे उन्नत तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग पर जोर देती है।

आईसीईटी के फोकस क्षेत्र:

आईसीईटी ने सहयोग के छह प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की है, जिनमें शामिल हैं:

- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई):** दोनों देशों के अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देकर एआई प्रौद्योगिकियों के विकास में तेजी लाना।
- **रक्षा:** सह-विकास, सह-उत्पादन और रक्षा स्टार्टअप को बढ़ावा देकर रक्षा क्षेत्र को मजबूत बनाना।
- **नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र:** सहकारी ढांचे और पहलों का निर्माण करके नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना।
- **सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र:** आपूर्ति श्रृंखला लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित करते हुए दोनों देशों में सेमीकंडक्टर उद्योगों के विकास का समर्थन करना।
- **मानव अंतरिक्ष उड़ान:** अंतरिक्ष अन्वेषण और संबंधित प्रौद्योगिकियों पर सहयोगात्मक प्रयास।
- **5G और 6G प्रौद्योगिकियां:** ओपनआरएएन जैसी अत्याधुनिक वायरलेस प्रौद्योगिकियों को अपनाने में सहायता करना, जो रेडियो एक्सेस नेटवर्क (आरएएन) प्रणाली का एक गैर- स्वामित्व वाला संस्करण है और विभिन्न विक्रेताओं के उपकरणों के बीच अंतर-संचालन की अनुमति देता है।

बैठक का महत्व:

- आईसीईटी के तहत स्थापित रणनीतिक और तकनीकी साझेदारी के मद्देनजर, दोनों देशों ने इस बात पर जोर दिया कि इस पहल ने रक्षा नवाचार, सेमीकंडक्टर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे क्षेत्रों में पहले ही उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। चर्चाओं में उभरती प्रौद्योगिकियों में अग्रणी बने रहने के महत्व को रेखांकित किया गया, जिसमें दोनों सरकारों ने निजी क्षेत्र की नवाचारक पहलों

को प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान दिया।

भारत-मालदीव संबंध

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने नई दिल्ली में मालदीव के विदेश मंत्री अब्दुल्ला खलील से मुलाकात की। इस महत्वपूर्ण बैठक में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।

मुख्य समझौता ज्ञापन:

- **उच्च प्रभाव सामुदायिक विकास परियोजनाओं पर समझौता ज्ञापन:** भारत और मालदीव ने भारत की अनुदान सहायता से वित्त पोषित उच्च प्रभाव सामुदायिक विकास परियोजनाओं (HICDP) के चरण-III के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह अक्टूबर 2024 में राष्ट्रपति मुइज़ू की यात्रा के दौरान किए गए समझौतों का अनुसरण करता है।
- **सीमा पार लेनदेन के लिए स्थानीय मुद्राओं को बढ़ावा:** दोनों देशो ने सीमा पार लेनदेन में स्थानीय मुद्राओं के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए एक नए रूपरेखा समझौते का स्वागत किया, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच निरंतर सहयोग पर प्रकाश डाला गया।

इस समझौता ज्ञापन के निहितार्थ:

- भारत मालदीव में उच्च प्रभाव सामुदायिक विकास परियोजनाओं (HICDP) को लागू करेगा, जिसका वित्तपोषण भारत की अनुदान सहायता से होगा, जिससे भारत की पड़ोस प्रथम नीति और विजन SAGAR के तहत संबंधों को मजबूती मिलेगी।
- भारत-मालदीव सहयोग में वृद्धि से क्षेत्रीय स्थिरता और समुद्री सुरक्षा में योगदान मिलता है।
- नेताओं के बीच उच्च स्तरीय यात्राएं बेहतर संबंधों का संकेत देती हैं, जो ऋण राहत, आर्थिक सहयोग और शांति पर केंद्रित हैं।
- मजबूत संबंध हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा और समृद्धि सुनिश्चित करने में भारत की भूमिका को मजबूत करते हैं।

भारत के लिए मालदीव का महत्व:

- **भू-राजनीतिक:** मालदीव भारत की पड़ोस प्रथम नीति (NFP) और SAGAR नीति के लिए केंद्रीय स्थान रखता है, जोकि क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।
- **रणनीतिक महत्व:** हिंद महासागर में प्रमुख चोकपॉइंट्स पर स्थित होने के कारण यह नौवहन की स्वतंत्रता और क्षेत्रीय स्थिरता की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।
- **भू-अर्थशास्त्र:** मालदीव प्रमुख समुद्री मार्गों पर स्थित है, जोकि भारत के व्यापार और ऊर्जा आयात के लिए महत्वपूर्ण है। भारत 2023 में मालदीव का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार बन गया।
- **सुरक्षा:** मालदीव आतंकवाद, समुद्री डकैती और हिंद महासागर में चीन के रणनीतिक प्रभाव का मुकाबला करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **प्रवासी और पर्यटन:** बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय कार्यबल और एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल।

द्विपक्षीय संबंधों में चुनौतियाँ :

- **भारत विरोधी भावनाएँ:** 'इंडिया आउट कैंपेन' द्वारा भारतीय सैन्य उपस्थिति को कम करने और बुनियादी ढाँचा जैसी परियोजनाओं को रोकने की बढ़ती माँगें।
- **चीनी प्रभाव:** चीनी निवेश में वृद्धि और सिनामाले ब्रिज जैसी बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ भारत के लिए चिंताएँ बढ़ाती हैं।
- **कट्टरपंथ:** इस्लामी चरमपंथी समूहों का विकास, जो संभावित रूप से भारत की सुरक्षा के लिए खतरा है।
- **अविश्वास में वृद्धि:** उथुरु थिला फाल्हू हार्बर जैसी परियोजनाओं पर अटकलें अविश्वास को बढ़ावा दे रही हैं।

4 पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

वैश्विक और भारतीय तापमान रुझानः जलवायु परिवर्तन और भारत की संवेदनशीलता के निहितार्थ

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) के अनुसार, वर्ष 2024 इतिहास में अब तक का सबसे गर्म वर्ष रहा है। यह घोषणा पिछले एक दशक में अभूतपूर्व वैश्विक तापमान वृद्धि की पुष्टि करती है, जिसमें 2015 से 2024 तक के दस वर्ष सबसे गर्म रहे हैं। 2024 में, वैश्विक औसत सतह का तापमान पूर्व-औद्योगिक काल (1850-1900) के औसत से 1.55 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। यह पहली बार है जब वैश्विक तापमान पेरिस समझौते के तहत निर्धारित 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा को पार कर गया है। हालांकि, भारत में तापमान वृद्धि वैश्विक औसत की तुलना में अपेक्षाकृत कम रही है। 2024 में भारत में तापमान सामान्य से 0.65 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा।

वैश्विक तापमान वृद्धिः डब्ल्यूएमओ द्वारा प्रमुख निष्कर्ष

- **रिकॉर्ड वैश्विक तापमानः** 2024 में वैश्विक औसत सतह का तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.55 डिग्री सेल्सियस अधिक था, जोकि पहली बार वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक हुआ। यह घटना जलवायु परिवर्तन के तेजी से बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है और वैश्विक तापमान वृद्धि को कम करने के लिए तुरंत कदम उठाने की आवश्यकता को रेखांकित करती है।
- **महासागरीय तापः** 2024 में महासागरों ने रिकॉर्ड 16 जेटा जूल गर्मी अवशोषित की, जोकि 2023 में वैश्विक बिजली उत्पादन के लगभग 140 गुना है। यह दर्शाता है कि वैश्विक तापमान वृद्धि से उत्पन्न लगभग 90% अतिरिक्त गर्मी महासागरों में संग्रहित हो रही है। इस विशाल मात्रा में गर्मी के अवशोषण से समुद्री जल का दीर्घकालिक तापमान बढ़ रहा है, जिससे समुद्री पारिस्थितिक तंत्र गंभीर रूप से प्रभावित हो रहे हैं।
- **तापमान आकलनः** हाल ही में वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस की निर्धारित सीमा को पार कर गया है, जो पेरिस समझौते के तहत निर्धारित लक्ष्य से अधिक है। इसके बावजूद, विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने आश्वासन दिया है कि समझौते के लक्ष्यों को प्राप्त करना अभी भी संभव है। हालांकि, हर अतिरिक्त अंश तापमान वृद्धि के साथ पारिस्थितिक तंत्र और मानव समाज पर पड़ने वाले प्रभावों की तीव्रता बढ़ती जाएगी। पेरिस समझौते का प्रमुख उद्देश्य वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से काफी नीचे रखना है और आदर्श रूप से इसे 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करना है।

भारत में तापमान रुझानः

- भारत, विश्व भर में हो रहे तापमान वृद्धि के प्रभावों से अछूता नहीं रहा है। हालांकि, भारत में तापमान वृद्धि का स्तर वैश्विक औसत से कम है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के आंकड़ों के अनुसार, 2024 में भारत का औसत तापमान, लंबकालीन औसत से 0.65 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। यह वैश्विक स्तर पर देखी गई 1.55 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि से काफी कम है।भारत में तापमान वृद्धि का यह रुझान 1901-1910 के आधार वर्ष से तुलना करने पर और अधिक स्पष्ट होता है। इस अवधि से तुलना करने पर, 2024 में भारत का तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है। यह दीर्घकालिक तापमान वृद्धि का एक स्पष्ट संकेत है।
- हालांकि, यह वृद्धि वैश्विक स्तर पर भूमि सतह के तापमान में हुई 1.59 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि से कम है। उसी अवधि में महासागरों का तापमान लगभग 0.88 डिग्री सेल्सियस बढ़ा है। भूमि और महासागरों के तापमान में यह अंतर वैश्विक और क्षेत्रीय जलवायु परिवर्तन के जटिल पैटर्न को दर्शाता है।

भारत में कम तापमान वृद्धि के पीछे कारणः

- **भौगोलिक स्थितिः** भारत भूमध्य रेखा के निकट उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में स्थित है। ध्रुवीय क्षेत्रों के विपरीत, जोकि उष्णकटिबंध से गर्मी के हस्तांतरण जैसी वायुमंडलीय घटनाओं के कारण बहुत अधिक दर से गर्म हो रहे हैं। भारत समान तापमान

वृद्धि का अनुभव नहीं करता है। उच्च अक्षांशों, विशेष रूप से आर्कटिक में, वैश्विक औसत से दोगुनी तेजी से तापमान वृद्धि देखी गई है। यह घटना अलबेडो प्रभाव के कारण होती है, जहां बर्फ और हिमपात का नुकसान भूमि और पानी को उजागर करता है जो अधिक गर्मी को अवशोषित करता है।

- **अलबेडो प्रभाव:** यह अंतर मुख्यत: अलबेडो प्रभाव के कारण है। ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ और हिम की सतह सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करती है, जिससे पृथ्वी कम गर्मी अवशोषित करती है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण जब बर्फ पिघलती है, तो अंधेरी सतह उजागर होती है जो सूर्य के प्रकाश को अधिक अवशोषित करता है। इससे तापमान और बढ़ जाता है, जोकि बदले में और अधिक बर्फ को पिघलाता है, एक चक्र जो लगातार चलता रहता है। इस प्रक्रिया को ध्रुवीय प्रवर्धन कहते हैं।
- **एरोसोल और प्रदूषण:** भारत के वायुमंडल में एरोसोल और पार्टिकुलेट मैटर सौर विकिरण को अंतरिक्ष में वापस बिखेर कर शीतलन प्रभाव डालते हैं। ये एरोसोल, जोकि बादल निर्माण को भी प्रभावित करते हैं, पृथ्वी की सतह द्वारा अवशोषित होने वाले सूर्य के प्रकाश की मात्रा को कम करने में मदद करते हैं।
- **ऊंचाई में भिन्नता:** भारत का भौगोलिक विस्तार विविधतापूर्ण होने के कारण, देश के विभिन्न क्षेत्रों में तापमान वृद्धि की दर अलग-अलग है। उदाहरण के लिए, हिमालयी क्षेत्र जैसे उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्र, स्थानीय भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों के कारण अन्य क्षेत्रों की तुलना में तेजी से गर्म हो रहे हैं।
- हालांकि, राष्ट्रीय स्तर पर भारत में औसत तापमान वृद्धि अभी भी वैश्विक औसत से कम है। यह भारत की भौगोलिक स्थिति, मौसमी चक्रों और स्थानीय जलवायु परिस्थितियों के कारण है।

बढ़ते वैश्विक तापमान के परिणाम:

- **समुद्र स्तर में वृद्धि:** 1880 के बाद से वैश्विक समुद्र स्तर में लगभग 8 इंच की वृद्धि हुई है और 2100 तक कम से कम एक फुट और बढ़ने का अनुमान है। इससे तटीय क्षेत्रों में जलमग्नता होगी, लाखों लोगों को विस्थापित किया जाएगा और बांग्लादेश, मालदीव और भारत के कुछ हिस्सों जैसे निचले इलाकों में विशेष रूप से पारिस्थितिक तंत्र बाधित होगा।
- **महासागर और समुद्री जीवन:** वैश्विक तापमान वृद्धि से उत्पन्न अधिकांश अतिरिक्त गर्मी को अवशोषित करने वाले महासागर भी अधिक अम्लीय होते जा रहे हैं, जिसका समुद्री जीवन पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। बढ़ते CO2 अवशोषण के कारण होने वाला महासागरीय अम्लीकरण प्रवाल भित्तियों और समुद्री खाद्य श्रृंखला को खतरे में डालता है।
- **लू और सूखा:** गर्मी और सूखे की लंबी अवधि तीव्र होने की उम्मीद है, जिससे पानी की कमी, कृषि चुनौतियाँ और स्वास्थ्य जोखिम बढ़ेंगे। इसके विपरीत, शीत लहरें आम हो जाएंगी। अत्यधिक गर्मी और सूखे के कारण जंगल की आग का बढ़ता जोखिम पारिस्थितिक तंत्र और मानव बुनियादी ढांचे के लिए अतिरिक्त खतरा पैदा करता है।

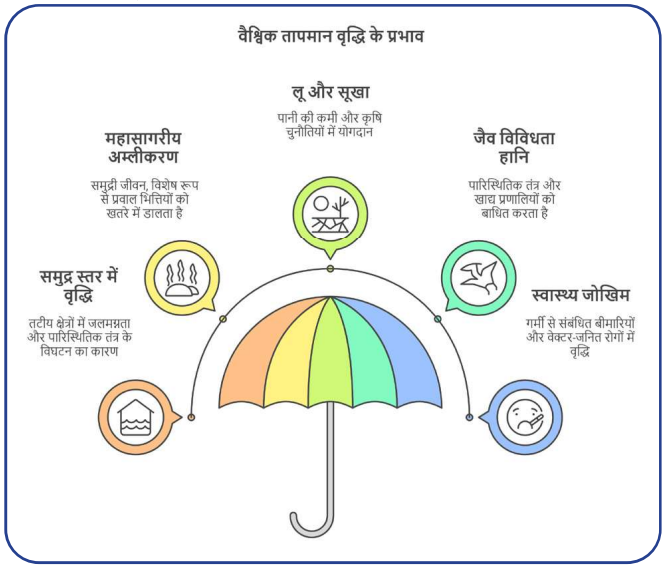

- **जैव विविधता हानि:** बढ़ते तापमान और बदलते मौसम के पैटर्न कई प्रजातियों को विलुप्त होने की ओर ले जा रहे हैं, जिससे पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता बाधित हो रही है। जैव विविधता की हानि का खाद्य प्रणालियों, जल संसाधनों और ग्रह के स्वास्थ्य पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है।
- **स्वास्थ्य और वायु गुणवत्ता:** बढ़ते तापमान से वायु की गुणवत्ता बिगड़ती है, जिससे गर्मी से संबंधित बीमारियों, श्वसन संबंधी समस्याओं और मलेरिया और डेंगू जैसी वेक्टर-जनित बीमारियों के प्रसार में वृद्धि होती है।

जलवायु निगरानी और प्रतिक्रिया को मजबूत करना:

- **मौसम स्टेशनों का विस्तार:** जलवायु अवलोकन क्षमताओं को बढ़ाने के लिए, भारत को अपने मौसम स्टेशनों का विस्तार करने की आवश्यकता है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। 2047 के लिए विकसित भारत के दृष्टिकोण के हिस्से के रूप में, प्रत्येक प्रमुख पंचायत में एक स्टेशन अधिक सटीक जलवायु आकलन के लिए वास्तविक समय डेटा एकत्र करने में मदद करेगा।
- **कंप्यूटिंग क्षमताओं को बढ़ाना:** भारत को जलवायु डेटा को प्रभावी ढंग से संसाधित करने के लिए उन्नत कंप्यूटिंग और विश्लेषण बुनियादी ढांचे में निवेश करना चाहिए। इससे आपदा प्रबंधन, कृषि पूर्वानुमान और जलवायु लचीलेपन के लिए रणनीतियों को तैयार करने में मदद मिलेगी।

- **नियमित प्रभाव आकलन:** भारत को समुद्र स्तर में वृद्धि, पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन और चरम मौसम की घटनाओं जैसे विकसित जोखिमों को ट्रैक करने के लिए नियमित जलवायु परिवर्तन प्रभाव आकलन करना चाहिए। लक्षित अनुकूलन रणनीतियों और नीतिगत हस्तक्षेपों को तैयार करने के लिए ये आकलन आवश्यक हैं।
- **मिशन मौसम:** चरम मौसमी घटनाओं के सटीक पूर्वानुमान और प्रभावी प्रतिक्रिया के लिए, मिशन मौसम को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मौसम विज्ञान संबंधी प्रणालियों के साथ और अधिक गहराई से जोड़ा जाना चाहिए। विशेष रूप से तटीय और पर्वतीय क्षेत्रों, जो चरम मौसमी घटनाओं के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, के लिए उच्च-रिजॉल्यूशन वाले पूर्वानुमानों की आवश्यकता होती है
- **स्थानीय प्रभाव अध्ययन:** जलवायु परिवर्तन के प्रभाव क्षेत्रीय स्तर पर भिन्न-भिन्न होते हैं। हिमालय, तटीय क्षेत्र और शहरी केंद्र जैसे विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र विशिष्ट जलवायु चुनौतियों का सामना करते हैं। इन क्षेत्रों के लिए प्रभावी अनुकूलन रणनीतियाँ विकसित करने के लिए स्थानीय स्तर पर विस्तृत अध्ययन करना आवश्यक है।

निष्कर्ष:

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) के 2024 के आँकड़े स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि वैश्विक तापमान में वृद्धि एक गंभीर चुनौती बन गई है, जोकि वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर जलवायु को प्रभावित कर रही है। हालांकि भारत का औसत तापमान वैश्विक औसत से कम है, फिर भी देश अपनी भौगोलिक स्थिति, वायु प्रदूषण और क्षेत्रीय तापमान भिन्नताओं के कारण जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से अछूता नहीं रह सकता है। भारत को जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। इसमें मजबूत जलवायु निगरानी प्रणालियों का विकास, स्थानीय स्तर पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन और प्रभावी आपदा प्रबंधन तंत्रों को मजबूत करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना, ऊर्जा दक्षता को बढ़ाना, और वन संरक्षण जैसे उपायों को अपनाकर भारत जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम कर सकता है।

संक्षिप्त मुद्दे

वेटलैंड सिटी मान्यता

चर्चा में क्यों?

हाल ही में इंदौर और उदयपुर भारत के पहले ऐसे शहर बन गए हैं जो ग्लोबल वेटलैंड सिटीज नेटवर्क में शामिल हुए हैं और प्रतिष्ठित वेटलैंड सिटी की मान्यता प्राप्त की है। यह वैश्विक मान्यता इन शहरों के वेटलैंड संरक्षण और सतत शहरी विकास के लिए किए गए प्रयासों को उजागर करती है। ये दोनों शहर अब दुनिया भर में 31 वेटलैंड मान्यता प्राप्त शहरों में शामिल हो गए हैं, जोकि शहरी पर्यावरण संरक्षण में भारत के लिए एक महत्वपूर्ण विकास है।

प्राप्त शहरों में महत्वपूर्ण वेटलैंड्स:

- » **इंदौर:** सिरपुर झील, एक रामसर स्थल और पक्षी अभयारण्य।
- » **उदयपुर:** पिछोला झील, फतेह सागर झील, रंग सागर, स्वरूप सागर और दूध तलाई वेटलैंड्स।

- वेटलैंड्स बाढ़ नियंत्रण, स्थानीय आजीविका का समर्थन करने और मनोरंजनात्मक एवं सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे जलवायु विनियमन और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं में भी योगदान करते हैं, जिसमें जल शुद्धिकरण और जैव विविधता संरक्षण शामिल हैं।
- सरकार इस उपलब्धि को सतत विकास, पारिस्थितिक संरक्षण और एकीकृत शहरी प्रगति पर अपने जोर के अनुरूप मानती है।

वेटलैंड सिटी मान्यता:

- वेटलैंड सिटी मान्यता को 2015 में रामसर कन्वेंशन सीओपी12 के दौरान संकल्प XII-10 के तहत अनुमोदित किया गया था। यह शहरों को वैश्विक स्तर पर वेटलैंड्स के प्रभावी संरक्षण और शहरी नियोजन तथा सामुदायिक जीवन में वेटलैंड्स के एकीकरण के लिए मान्यता देता है।
- योग्यता प्राप्त करने के लिए, शहरों को रामसर कन्वेंशन द्वारा निर्धारित छह अंतरराष्ट्रीय मानदंडों को पूरा करना होगा, जिसमें वेटलैंड संरक्षण, सतत शहरी विकास और सामुदायिक जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- मान्यता के प्राथमिक उद्देश्यों में शहरी वेटलैंड्स का संरक्षण, स्थानीय समुदायों के लिए सामाजिक-आर्थिक लाभों को बढ़ाना और सतत शहरी विकास को बढ़ावा देना शामिल है।

मान्यता के लाभ:

- **पर्यावरणीय:** जैव विविधता बढ़ाता है, जल प्रणालियों को नियंत्रित करता है और बाढ़ को रोकता है।
- **सामाजिक:** पर्यावरण संरक्षण में सामुदायिक शिक्षा और भागीदारी को बढ़ावा देता है।
- **आर्थिक:** इको-टूरिज्म को बढ़ावा देता है और सतत आजीविका का समर्थन करता है।
- वैश्विक स्तर पर, मान्यता वेटलैंड संरक्षण में शहरों के प्रयासों

के लिए अंतरराष्ट्रीय मान्यता और सकारात्मक प्रचार प्रदान करती है। यह सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और अन्य शहरों को वेटलैंड संरक्षण को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

भारतीय ग्रे वुल्फ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में कर्नाटक के कोप्पल जिले के बंकापुर वन्यजीव अभयारण्य में भारतीय ग्रे वुल्फ ने आठ शावकों को जन्म दिया है। शावकों के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए, कर्नाटक वन विभाग ने विशेष सुरक्षा उपाय किए हैं, क्योंकि आमतौर पर वन में भेड़िये के आधे शावक ही जीवित रह पाते हैं।

भारतीय ग्रे वुल्फ के बारे में:

- भारतीय ग्रे वुल्फ (कैनिस ल्यूपस पल्लीप्स) ग्रे वुल्फ की एक उप-प्रजाति है जोकि भारतीय उपमहाद्वीप की मूल निवासी है।
- मुख्य रूप से राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों सहित भारत के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है।
- यह घास के मैदानों, झाड़ियों और रेगिस्तानों जैसे विविध पारिस्थितिक तंत्रों में निवास करता है और विभिन्न वातावरणों के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित होता है।

- भेड़िया आमतौर पर आकार में छोटा होता है, जिसमें भूरे रंग का फर कोट होता है, जिसमें हल्के और गहरे रंग के शेड होते हैं।
- अपने सामाजिक स्वभाव के लिए जाने जाने वाले, भारतीय ग्रे वुल्फ अक्सर परिवार-उन्मुख पैक्स (समूह) में रहते हैं।
- एक विशिष्ट पैक में एक प्रजनन जोड़ी और उनकी संतान शामिल होती है।
- ये भेड़िये कुशल शिकारी होते हैं, जो छोटे से मध्यम आकार के शाकाहारी जानवरों का शिकार करते हैं और कभी-कभी मरे हुए जानवरों का मांस भी खाते हैं।
- भारतीय ग्रे वुल्फ को IUCN रेड लिस्ट में 'लुप्तप्राय' के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
- आवास का नुकसान, मानव-वन्य संघर्ष और शिकार जैसी गतिविधियों के कारण उनकी आबादी लगातार कम हो रही है।
- इस प्रजाति और इसके आवास की रक्षा के लिए संरक्षण प्रयास महत्वपूर्ण हैं।

बंकापुर वुल्फ अभयारण्य के बारे में:

- बंकापुर वुल्फ अभयारण्य कर्नाटक के कोप्पल जिले में स्थित है और 332 हेक्टेयर में फैला हुआ है।
- अभयारण्य में स्क्रब जंगल, पहाड़ियाँ और प्राकृतिक गुफाएँ हैं, जो एक विविध आवास प्रदान करते हैं।
- यह विभिन्न वन्यजीव प्रजातियों का घर है, जिसमें भेड़िये, तेंदुए, मोर, काले हिरण, लोमड़ी, खरगोश और साही शामिल हैं।
- अभयारण्य 15वें वन्यजीव बोर्ड की बैठक में घोषित कर्नाटक का पहला वुल्फ वाइल्डलाइफ अभयारण्य है।
- अभयारण्य में अब लगभग 35-40 भेड़िये रहते हैं, जिनमें नए शावक भी शामिल हैं। इसे इको-सेंसिटिव जोन घोषित करने का निर्णय लिया गया है।
- गंगावती शहर से 15 किलोमीटर दूर स्थित इस अभयारण्य को एक पर्यटन स्थल के रूप में योजनाबद्ध किया जा रहा है।
- प्रशासन अभयारण्य के भीतर सफारी स्थापित करने की व्यवहार्यता का अध्ययन कर रहा है।

ओलिव रिडली कछुए

चर्चा में क्यों?

तमिलनाडु के तटों पर, विशेष रूप से चेन्नई में, हाल ही में हुई ओलिव रिडली कछुओं की बड़े पैमाने पर मौत एक गंभीर संकट का संकेत है। पिछले दो हफ्तों में लगभग 350 कछुए मृत पाए गए हैं, जोकि इस क्षेत्र के लिए असामान्य रूप से उच्च संख्या है। विशेषज्ञों का मानना है कि मछली पकड़ने के जालों में फंसना इन कछुओं की मृत्यु का मुख्य कारण है। कछुओं के प्राकृतिक आवास में मछलियों की अधिकता के कारण मछली पकड़ने वाले जहाजों की संख्या में वृद्धि हुई है, जिससे कछुओं के लिए खतरा और बढ़ गया है।

- पोस्ट-मार्टम रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि अधिकांश कछुओं की मौत दम घुटने और डूबने के कारण हुई है। इस संकट से निपटने के लिए, विशेषज्ञ जालों में कछुए-बाद करने वाले उपकरणों को अनिवार्य बनाने और मछली पकड़ने के तरीकों में बदलाव लाने की सलाह देते हैं।

ओलिव रिडली कछुए (लेपिडोकेलिस ओलिवेसिया) के बारे में:

- ओलिव रिडली कछुआ (Lepidochelys olivacea) दुनिया का दूसरा सबसे छोटा और सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला समुद्री कछुआ है। ये कछुए अपने सामूहिक घोंसले बनाने के अनूठे व्यवहार के लिए जाने जाते हैं, जिसे 'अरिबास' कहा जाता

है। इस व्यवहार में हजारों मादाएं एक ही समुद्र तट पर एक साथ अपने अंडे देती हैं। ओलिव रिडली कछुए समुद्री पारिस्थितिक तंत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- **शारीरिक विशेषताएं**
  - » **आकार:** नर और मादा ओलिव रिडली कछुए आकार में लगभग समान होते हैं, हालांकि मादाओं का कवच (कारापेस) थोड़ा अधिक गोल होता है।
  - » **कारापेस:** इनका कवच दिल के आकार का और गोल होता है। इसका रंग जैतून-हरा होता है, जिसके कारण इन्हें 'ओलिव रिडली' नाम दिया गया है।
  - » **हैचलिंग्स:** ओलिव रिडली कछुए के नवजात शिशुओं का कवच गहरे भूरे रंग का होता है जो पानी के संपर्क में आने पर काला हो जाता है।

- **वितरण:**
  - » ओलिव रिडली कछुए मुख्य रूप से प्रशांत और हिंद महासागरों के उष्णकटिबंधीय जल में पाए जाते हैं। कुछ आबादी अटलांटिक महासागर के गर्म क्षेत्रों में भी पाई जाती है।
  - » भारत में, ओडिशा का गहिर्माथा समुद्र तट इन कछुओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रजनन स्थल है। यहां बड़े पैमाने पर अरिबादा (सामूहिक घोंसला निर्माण) की घटना देखी जाती है।
- **आहार:**
  - » **मांसाहारी:** ओलिव रिडली कछुए मांसाहारी होते हैं। वे मुख्य रूप से जेलिफिश, छोटी मछलियाँ और अन्य समुद्री अकशेरुकी जीवों को खाते हैं।
- **पारिस्थितिक महत्व**
  - » ओलिव रिडली कछुओं का सामूहिक घोंसले का शिकार व्यवहार (अरिबास) समुद्र तट के पारिस्थितिक तंत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह समुद्र तट की संरचना और अन्य समुद्री जीवों की आबादी को प्रभावित करता है। ये कछुए समुद्री पारिस्थितिक तंत्र में संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
  - » वे जेलिफिश की आबादी को नियंत्रित करके और समुद्र तट को पोषक तत्व प्रदान करके पारिस्थितिक तंत्र को संतुलित रखते हैं।

संरक्षण स्थिति:

- **IUCN रेड लिस्ट:** ओलिव रिडली कछुओं को वर्तमान में मानवीय गतिविधियों और पर्यावरणीय कारकों के कारण 'सुभेद्य' के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
- **CITES:** उन्हें परिशिष्ट I के तहत वर्गीकृत किया गया है, जिसमें विलुप्त होने के खतरे वाली प्रजातियां शामिल हैं और जिन्हें विशेष परिस्थितियों को छोड़कर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से प्रतिबंधित किया गया है।

खतरें:

ओलिव रिडली कछुओं को कई खतरों का सामना करना पड़ता है जिसके कारण उनकी संवेदनशील स्थिति हुई है:

- **अस्थिर अंडा संग्रह:** उपभोग और व्यापार के लिए मानव द्वारा कछुए के अंडे का संग्रह।
- **समुद्र तट पर वध:** कछुओं को कभी-कभी शिकारियों द्वारा उनके मांस और गोले के लिए मार दिया जाता है।
- **नाव टकराव:** कछुए अक्सर नावों से टकरा जाते हैं, जिससे चोट या मृत्यु हो जाती है।
- **समुद्री मलबा:** कछुए समुद्री मलबे में उलझ सकते हैं या इसे खा सकते हैं, जैसे प्लास्टिक, जोकि महत्वपूर्ण स्वास्थ्य जोखिम पैदा करता है।
- **प्राकृतिक आपदाएं:** तूफान और प्राकृतिक आपदाएं घोंसले के शिकार स्थलों को नुकसान पहुंचा सकती हैं।
- **जलवायु परिवर्तन:** बढ़ते समुद्र का स्तर और बदलते तापमान घोंसले के शिकार और हैचिंग की सफलता को प्रभावित करते हैं।
- **समुद्र तट का कटाव:** तटीय विकास और कटाव महत्वपूर्ण घोंसले के शिकार आवासों को नष्ट कर रहे हैं।

मिशन मौसम

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मिशन मौसम का शुभारंभ किया, जोकि भारत की मौसम पूर्वानुमान और आपदा प्रबंधन क्षमताओं को मजबूत करने में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह मिशन भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) की 150वीं स्थापना दिवस समारोह के दौरान शुरू किया गया है, जोकि 1875 से अपनी स्थापना के बाद से देश की सेवा कर रहा है।

मिशन मौसम के बारे में:

- मिशन मौसम का उद्देश्य मौसम की जानकारी के पूर्वानुमान और प्रसार में भारत के मौसम विभाग की क्षमताओं को उन्नत करना है। पहले दो वर्षों के लिए 2,000 करोड़ रुपये के बजट के

साथ, यह पहल विभिन्न क्षेत्रों में मौसम निगरानी, पूर्वानुमान और मॉडलिंग में सुधार पर ध्यान केंद्रित करेगी।

- इन क्षेत्रों में कृषि, विमानन, रक्षा, आपदा प्रबंधन, पर्यटन और स्वास्थ्य शामिल हैं, जोकि सभी सटीक और समय पर मौसम की जानकारी पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं।
- मिशन मौसम, 2012 के मिशन मानसून जैसी पूर्व की पहलों पर आधारित है, लेकिन इसका दायरा कहीं अधिक व्यापक है। वर्तमान में, आईएमडी की लू जैसी चरम घटनाओं का पूर्वानुमान लगभग 97.99% सटीक है, जबकि भारी वर्षा के पूर्वानुमान लगभग 80%सटीकता पर हैं।
- मिशन मानसून मुख्य रूप से दीर्घकालिक मानसून पूर्वानुमानों पर केंद्रित था, मिशन मौसम का लक्ष्य सभी प्रकार की मौसमी घटनाओं, जैसे कि लू, भारी वर्षा, चक्रवात और ओलावृष्टि, के लिए अधिक सटीक और समय पर पूर्वानुमान प्रदान करना है।

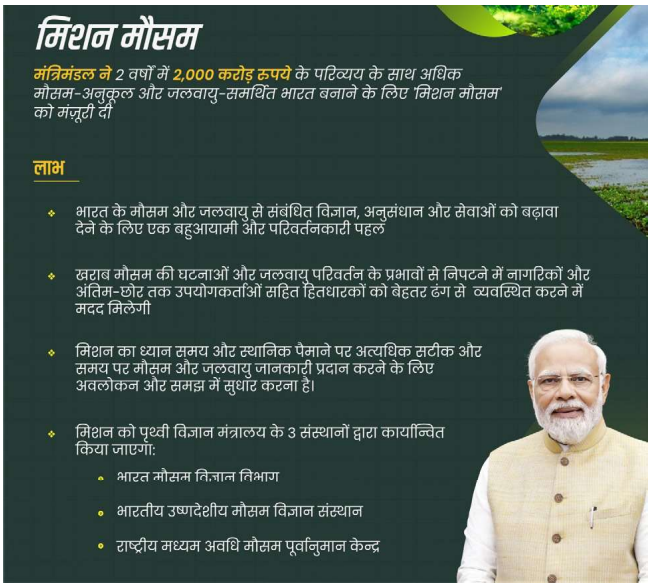

मिशन मौसम के प्रमुख उद्देश्य:

- मिशन मौसम का लक्ष्य मौसम सेवाओं के सभी पहलुओं को कवर करना है, जिसमें नियमित पूर्वानुमान से लेकर चरम मौसम की घटनाओं के प्रबंधन तक शामिल है। पहल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मौसम संशोधन तकनीकों का विकास और अनुप्रयोग है, जैसे कि वर्षा, कोहरा, ओलावृष्टि और बिजली गिरने को बढ़ाना या दबाना।
- इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, भारत बादल भौतिकी पर उन्नत शोध में निवेश कर रहा है। पुणे में भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) में स्थापित एक अद्वितीय बादल कक्ष वैज्ञानिकों को नियंत्रित परिस्थितियों में बादल निर्माण प्रक्रिया का अध्ययन करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करेगा। यह सुविधा, जोकि संवहन गुणों से युक्त है, विश्व स्तर पर अद्वितीय है और मानसून बादलों की हमारी समझ को बढ़ाकर देश के मौसम पैटर्न को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगी।
- मिशन मौसम का नेतृत्व पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत तीन प्रमुख संस्थान करेंगे: भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी), पुणे में भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) और नोएडा में राष्ट्रीय मध्यम दूरी मौसम पूर्वानुमान केंद्र (एनसीएमआरडब्ल्यूएफ)। ये संस्थान मिशन के उद्देश्यों को लागू करने और भारत की जलवायु लचीलापन बढ़ाने के लिए सहयोग करेंगे।

निष्कर्ष:

मिशन मौसम यह सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण कदम है कि भारत मौसम के लिए तैयार और जलवायु के प्रति स्मार्ट है। मौसम पूर्वानुमान प्रणालियों के उन्नयन, आपदा प्रबंधन को बढ़ाने और बादल भौतिकी में नए शोध पर ध्यान देने के साथ, मिशन विभिन्न क्षेत्रों को सीधे लाभान्वित करेगा। जैसे-जैसे भारत जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों का सामना करता है, मिशन मौसम प्राकृतिक आपदाओं के प्रभावों को कम करने और भविष्य की जलवायु चुनौतियों के लिए राष्ट्र की तैयारी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

अमेरिका में ध्रुवीय भंवर

चर्चा में क्यों?

हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका में आए शीतकालीन तूफान ने कम से कम पांच लोगों की जान ले ली है। इस तूफान के कारण बड़े पैमाने पर स्कूल बंद हुए, सड़कें अवरुद्ध हो गईं और बिजली आपूर्ति बाधित हुई। यह चरम मौसमी घटना मुख्यत: ध्रुवीय भंवर के विस्तार के कारण हुई है। ध्रुवीय भंवर एक शक्तिशाली ठंडी हवा का क्षेत्र है जिसने अमेरिका के बड़े हिस्से में तापमान में भारी गिरावट का कारण बना है।

ध्रुवीय भंवर क्या है?

- ध्रुवीय भंवर कम दबाव और ठंडी हवा का एक विशाल क्षेत्र है जोकि सामान्यतौर पर पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्रों पर बना रहता है, जोकि उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के चारों ओर एक चक्र की तरह घूमता है। ध्रुवीय भंवर दो प्रकार के होते हैं:
  - » **क्षोभमंडलीय ध्रुवीय भंवर:** यह वायुमंडल की सबसे निचली परत (पृथ्वी की सतह से लगभग 10 से 15 किलोमीटर ऊपर) पर होता है, जहाँ अधिकांश मौसमी घटनाएँ होती हैं।
  - » **समतापमंडलीय ध्रुवीय भंवर:** पृथ्वी से लगभग 15 से 50 किलोमीटर ऊपर स्थित, यह भंवर शरद ऋतु के दौरान सबसे शक्तिशाली होता है और गर्मियों में गायब हो जाता है।
- ध्रुवीय भंवर पृथ्वी के वायुमंडल की एक प्राकृतिक विशेषता है, जब यह कमजोर हो जाता है या अपनी सामान्य स्थिति से हट जाता है, तो इसका वैश्विक मौसम पैटर्न पर महत्वपूर्ण प्रभाव

पड़ सकता है, विशेष रूप से यू.एस., यूरोप के कुछ हिस्सों और एशिया में।

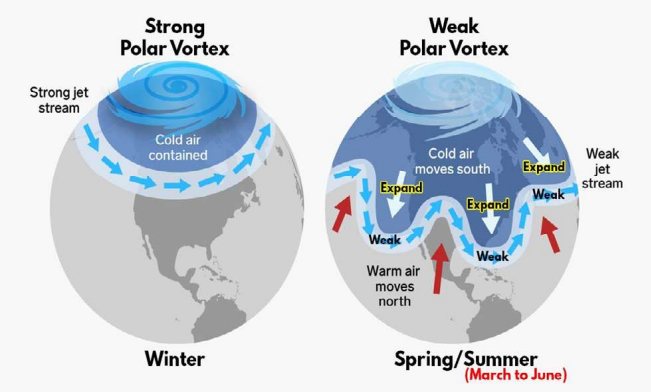

ध्रुवीय भंवर कब अत्यधिक ठंड का कारण बनता है?

- ध्रुवीय भंवर आमतौर पर ध्रुवों के पास ठंडी हवा को सीमित रखता है। लेकिन जब यह कमजोर पड़ता है, तो ठंडी आर्कटिक हवा दक्षिण की ओर बढ़ जाती है, जिससे तापमान में गिरावट होती है और अत्यधिक सर्दी की स्थिति पैदा हो सकती है। यह दक्षिणी क्षेत्रों, जैसे फ्लोरिडा को भी प्रभावित कर सकता है।
- सामान्यतः, जेट स्ट्रीम ध्रुवीय भंवर को स्थिर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक तेज गति वाली हवा का बैंड है जो ध्रुवों के पास ठंडी हवा को सीमित रखता है। लेकिन जब ध्रुवीय भंवर कमजोर होता है, तो जेट स्ट्रीम अस्थिर हो जाती है और लहरदार हो जाती है। इससे उच्च दबाव प्रणालियाँ ठंडी हवा को दक्षिण की ओर धकेलती हैं।
- जब ध्रुवीय भंवर विस्थापित होता है, तो यह गंभीर सर्दियों के तूफानों को जन्म दे सकता है, जो कि तापमान, बर्फ और बर्फ के जमाव की विशेषता रखते हैं। ये तूफान अक्सर दैनिक जीवन को बाधित करते हैं, जिससे यातायात दुर्घटनाएँ, बिजली की कटौती और स्कूल और व्यवसाय बंद हो जाते हैं। वे उन लोगों के लिए खतरनाक स्थिति भी पैदा कर सकते हैं जो लंबे समय तक ठंड के संपर्क में रहते हैं, जिससे हाइपोथर्मिया और शीतदंश का खतरा बढ़ जाता है।

क्या जलवायु परिवर्तन ध्रुवीय भंवर को प्रभावित कर रहा है?

- जलवायु परिवर्तन और ध्रुवीय भंवर के व्यवहार के बीच संबंध सक्रिय शोध का एक क्षेत्र है। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्लोबल वार्मिंग, विशेष रूप से आर्कटिक में, ध्रुवीय भंवर की ताकत और स्थिरता को प्रभावित कर सकती है।
- हाल के वर्षों में, शोधकर्ताओं ने देखा है कि आर्कटिक दुनिया के अन्य हिस्सों की तुलना में अधिक तेज गति से गर्म हो रहा है – एक घटना जिसे आर्कटिक प्रवर्धन (Arctic Amplification) के रूप में जाना जाता है। जैसे-जैसे आर्कटिक तेजी से गर्म होता है, ध्रुवों और निचले अक्षांशों के बीच तापमान का अंतर कम होता जाता है, जिससे ध्रुवीय भंवर कमजोर होता जाता है और यह विघटन के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है।

वैश्विक जल मॉनिटर रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

हाल ही में जारी वैश्विक जल मॉनिटर रिपोर्ट 2024 के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी का जल चक्र प्रभावित हो रहा है। इसका परिणाम है कि तीव्र वर्षा, बाढ़ और सूखे जैसी चरम मौसमी घटनाएँ अधिक बार और गंभीर रूप से हो रही हैं।

रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष:

- ऑस्ट्रेलिया, सऊदी अरब, चीन और जर्मनी के विश्वविद्यालयों के अंतर्राष्ट्रीय शोधकर्ताओं की एक टीम द्वारा वैश्विक जल मॉनिटर रिपोर्ट 2024 तैयार की गई है जो जल चक्र पर जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी परिणामों पर प्रकाश डालती है। रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्षों में शामिल हैं:
  - » **मृत्यु और विस्थापन:** 2024 में जल-संबंधित आपदाओं के कारण 8,700 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई और 40 मिलियन लोग विस्थापित हुए, जिससे वैश्विक स्तर पर 550 बिलियन डॉलर से अधिक का आर्थिक नुकसान हुआ।
  - » **शुष्क महीनों में वृद्धि:** 2024 में रिकॉर्ड सूखे महीनों की आवृत्ति आधार अवधि (1995-2005) की तुलना में 38% अधिक थी, जो दुनिया भर में बढ़ते सूखे काल को दर्शाती है।
  - » **वर्षा रिकॉर्ड में वृद्धि:** 2024 में वर्षा रिकॉर्ड अधिक बार टूटे, 2000 की तुलना में मासिक वर्षा रिकॉर्ड 27% अधिक बार स्थापित हुए और दैनिक वर्षा रिकॉर्ड 52% अधिक बार हुआ।
  - » **जल भंडारण में परिवर्तन:** पारंपरिक रूप से शुष्क क्षेत्रों में स्थलीय जल भंडारण (टीडब्ल्यूएस) में उल्लेखनीय गिरावट आई, जबकि पश्चिमी, मध्य और पूर्वी अफ्रीका के क्षेत्रों में जल भंडार में वृद्धि देखी गई।
  - » **भविष्य के अनुमान:** 2025 के लिए, रिपोर्ट उत्तरी दक्षिण अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका और एशिया के कुछ हिस्सों में सूखे का पूर्वानुमान लगाती है, साथ ही सहारा और यूरोप जैसे गीले क्षेत्रों में बाढ़ के जोखिम में वृद्धि का पूर्वानुमान लगाती है।

जल चक्र क्या है?

- जल चक्र पृथ्वी के वायुमंडल, महासागरों और भूमि में पानी के बदलते रूपों की एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। यह सौर ऊर्जा द्वारा संचालित होता है और जल उपलब्धता और मौसम विनियमन के लिए आवश्यक है। चक्र में शामिल हैं:

» **वाष्पीकरण:** सूर्य की गर्मी के कारण पानी वाष्प में बदल जाता है।
» **वाष्पोत्सर्जन:** पौधे अपने पत्तों के माध्यम से जल वाष्प छोड़ते हैं।
» **संघनन:** जल वाष्प ठंडा होकर बादल बनाता है।
» **वर्षण:** पानी बारिश, हिमपात आदि के रूप में वापस आता है।
» **अंत:स्राव और अपवाह:** पानी जमीन में रिसता है या नदियों और धाराओं में बहता है।

जलवायु परिवर्तन जल चक्र को कैसे प्रभावित कर रहा है?

- जलवायु परिवर्तन के कारण जल चक्र में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। बढ़ते तापमान के कारण वाष्पोत्सर्जन की दर में वृद्धि हो रही है, जिससे वायुमंडल में आर्द्रता बढ़ रही है और चरम वर्षण की घटनाओं में वृद्धि हो रही है।
- इसके साथ ही, बढ़ते तापमान के कारण मिट्टी की नमी कम हो रही है, जिससे सूखे की अवधि बढ़ रही है। परिणामस्वरूप, जल चक्र की गतिशीलता में परिवर्तन हो रहा है और जल संसाधनों का वितरण असमान हो रहा है।

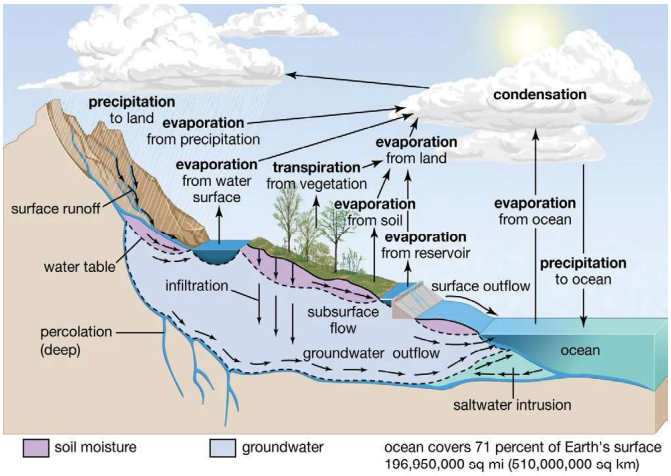

जल चक्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव:

- **चरम मौसम:** अधिक बार भारी बारिश और सूखा, खाद्य और जल आपूर्ति, कृषि और बुनियादी ढांचे को बाधित करता है।
- **स्वास्थ्य जोखिम:** बाढ़ जल स्रोतों को दूषित करती है और सूखा स्वच्छ पानी तक पहुंच को कम करता है, जिससे स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं।
- **आर्थिक नुकसान:** जल-संबंधित आपदाओं के कारण वित्तीय बोझ पड़ता है, विशेष रूप से कृषि और पर्यटन में।
- **विस्थापन:** लाखों लोग सालाना बाढ़ और सूखे के कारण विस्थापित होते हैं, विशेषकर कमजोर क्षेत्रों में।

अत्याधिक वर्षा और बाढ़ का सामना करने के लिए सुझाव:

जल चक्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए, निम्नलिखित सुझाव है:

- **जल प्रबंधन को मजबूत बनाना:** बाढ़ और सूखे दोनों को संभालने के लिए पूर्वानुमान तकनीकी में सुधार करें और बुनियादी ढांचे में निवेश करना।
- **वैश्विक उत्सर्जन में कमी:** जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों को धीमा करने के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना।
- **अनुकूलन रणनीतियाँ:** कमजोर क्षेत्रों में लचीला बुनियादी ढांचा, बेहतर शहरी नियोजन और प्राकृतिक जल प्रणालियों के संरक्षण को लागू करना।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** जल-संबंधित आपदाओं से समुदायों की रक्षा के लिए संसाधनों और प्रौद्योगिकियों को वैश्विक स्तर पर साझा करना।

गतिशील भूजल संसाधन मूल्यांकन रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय सरकार द्वारा जारी की गई 2024 की गतिशील भूजल संसाधन आकलन रिपोर्ट देश के भूजल संसाधनों की वर्तमान स्थिति का एक व्यापक मूल्यांकन प्रस्तुत करती है। यह रिपोर्ट केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) और विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के सम्मिलित प्रयासों का परिणाम है। भूजल संसाधनों के वैज्ञानिक आकलन के माध्यम से, यह रिपोर्ट नीति निर्माताओं, जल संसाधन प्रबंधकों और आम जनता को सूचित निर्णय लेने में सहायता करेगी।

मुख्य निष्कर्ष:

- **कुल वार्षिक भूजल पुनर्भरण:** देश में कुल वार्षिक भूजल पुनर्भरण में पिछले आकलन की तुलना में 15 अरब घन मीटर (बीसीएम) की वृद्धि हुई है। वर्ष 2024 में यह आंकड़ा 446.90 बीसीएम तक पहुंच गया है।
- **वार्षिक भूजल निष्कर्षण:** वर्ष 2017 की तुलना में वर्ष 2024 में भूजल निष्कर्षण 3 अरब घन मीटर कम होकर 245.64 बीसीएम रह गया है।
- **भूजल निष्कर्षण का औसत स्तर:** भारत में भूजल निष्कर्षण का औसत स्तर वर्तमान में 60.47% है।

भूजल का वर्गीकरण:

- **सुरक्षित (Safe Units):** 4951 इकाइयाँ (कुल इकाइयों का 73.4%)
- **अर्ध-महत्वपूर्ण (Semi-Critical Units):** 711 इकाइयाँ (10.5%)
- **महत्वपूर्ण (Critical Units):** 206 इकाइयाँ (3.05%)

- **अति-शोषित (Over&eñploited Units):** 751 इकाइयाँ (11.1%)
- **खारा (Saline Units):** 127 यूनिट (1.8%)

पिछले पांच वर्षों में भूजल पुनर्भरण और निष्कर्षण के निष्कर्ष:

- **पुनर्भरण में वृद्धि:** वर्ष 2017 की तुलना में भूजल पुनर्भरण में 15 बीसीएम (बिलियन क्यूबिक मीटर) की वृद्धि हुई है। विशेष रूप से, टैंकों, तालाबों और जल संरक्षण संरचनाओं में पुनर्भरण पिछले पांच वर्षों में लगातार बढ़ रहा है, जो वर्ष 2023 की तुलना में वर्ष 2024 में 0.39 बीसीएम की वृद्धि दर्शाता है।
- **निष्कर्षण में कमी:** वर्ष 2017 की तुलना से भूजल निष्कर्षण में 3 बीसीएम की कमी आई है।
- सुरक्षित मूल्यांकन इकाइयों का प्रतिशत 2017 में 62.6% से बढ़कर 2024 में 73.4% हो गया है, जोकि भूजल प्रबंधन में सकारात्मक प्रगति दर्शाता है।
- अति-शोषित इकाइयों का प्रतिशत 2017 में 17.24% से घटकर 2024 में 11.13% हो गया है, जो उन क्षेत्रों में कमी दर्शाता है जहां भूजल संसाधनों का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है।

रिपोर्ट नीति निर्माण में किस प्रकार सहायक है?

- गतिशील भूजल संसाधन मूल्यांकन रिपोर्ट देश भर में भूजल संसाधनों की स्थिति पर महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करती है। यह नीति निर्माताओं, सरकारी एजेंसियों और अन्य हितधारकों को निम्नलिखित में सहायता करती है:
  - » यह रिपोर्ट उन क्षेत्रों की स्पष्ट पहचान करती है जहां भूजल संसाधन अधिक दबाव में हैं और तत्काल संरक्षण प्रयासों की आवश्यकता है।
  - » रिपोर्ट में दिए गए डेटा के आधार पर, अतिशोषण को रोकने के लिए प्रभावी रणनीतियां तैयार की जा सकती हैं।
  - » यह रिपोर्ट टिकाऊ जल प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक नीतिगत ढांचे को मजबूत करने में मदद करती है।
  - » रिपोर्ट में उपलब्ध जानकारी के आधार पर जल संरक्षण अवसंरचनाओं के विकास और रखरखाव के लिए बेहतर निर्णय लिए जा सकते हैं।

वायनाड भूस्खलन: राष्ट्रीय आपदा घोषित

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा वायनाड में हुए विनाशकारी भूस्खलन को 'गंभीर प्रकृति' की राष्ट्रीय आपदा घोषित किया गया है। यह वर्गीकरण केरल सरकार को पुनर्वास प्रयासों में सहायता के लिए सांसदों के स्थानीय क्षेत्र विकास निधि सहित अतिरिक्त वित्तीय संसाधन जुटाने में सक्षम बनाएगा। पांच महीने पहले हुई इस प्राकृतिक आपदा में 254 लोगों ने अपनी जान गंवा दी थी और 128 लोग लापता हो गए थे।

भारत में आपदा की परिभाषा:

- भारत में आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के अनुसार, आपदा को 'ऐसी भयावह घटना के रूप में परिभाषित किया गया है जो जीवन की भारी क्षति, मानवीय पीड़ा, संपत्ति की क्षति या पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती है। इससे प्रभावित समुदाय की इससे निपटने की क्षमता खत्म हो जानी चाहिए।'

आपदा के प्रकार:

- आपदाएँ प्राकृतिक या मानवजनित हो सकती हैं।
  - » **प्राकृतिक आपदाएँ:** भूकंप, बाढ़, चक्रवात, सूखा आदि।
  - » **मानवजनित आपदाएँ:** परमाणु, जैविक या रासायनिक घटनाएँ, दुर्घटनाएँ या लापरवाही के परिणामस्वरूप होने वाली घटनाएँ।

राष्ट्रीय आपदा घोषित करने के नियम:

- किसी आपदा को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने के लिए कोई निश्चित कानूनी प्रावधान नहीं है। हालांकि, आम तौर पर किसी राज्य की एक तिहाई आबादी को प्रभावित करने वाली और 'दुर्लभ गंभीरता' वाली आपदा को राष्ट्रीय आपदा माना जा सकता है। यह निर्णय आपदा की तीव्रता, प्रभावित क्षेत्र के आकार और राज्य सरकार की आपदा प्रबंधन क्षमता जैसे कारकों पर निर्भर करता है।

दुर्लभ गंभीरता निर्धारित करने के कारक:

- किसी आपदा को 'दुर्लभ गंभीरता' की श्रेणी में रखने के लिए निम्नलिखित कारकों का मूल्यांकन किया जाता है:
  - » **आपदा की तीव्रता और पैमाना:** आपदा कितनी गंभीर थी और इसका प्रभाव कितने बड़े क्षेत्र पर पड़ा था?
  - » **आवश्यक सहायता का स्तर:** प्रभावित क्षेत्रों को कितनी सहायता की आवश्यकता है?
  - » **आपदा से निपटने की राज्य की क्षमता:** प्रभावित राज्य अपनी क्षमताओं से आपदा से कितना निपट सकता है?
  - » **राहत योजनाओं में उपलब्ध विकल्प और लचीलापन:** राज्य सरकार के पास आपदा राहत के लिए कितने विकल्प और संसाधन उपलब्ध हैं?

गंभीर आपदाओं के उदाहरण:

- गंभीर मानी जाने वाली आपदाओं के उदाहरणों में 2013 की उत्तराखंड बाढ़ और 2014 में आंध्र प्रदेश में आए चक्रवात हुदहुद शामिल हैं, जिन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सहायता प्रदान की गई थी।

राष्ट्रीय आपदा घोषित करने के लाभ:

- जब किसी आपदा को 'दुर्लभ गंभीरता' की घोषित किया जाता है, तो प्रभावित राज्य को राष्ट्रीय स्तर पर सहायता प्राप्त होती है,

जिसमें शामिल हैं:

» राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (एनडीआरएफ) से अतिरिक्त धनराशि।

» आपदा राहत कोष (सीआरएफ) जिसमें केन्द्र और राज्य के बीच 3:1 का अंशदान होता है।

» यदि सीआरएफ अपर्याप्त हो तो राष्ट्रीय आपदा आकस्मिकता निधि (एनसीसीएफ) से अतिरिक्त सहायता।

» ऋण चुकौती सहायता या रियायती ऋण।

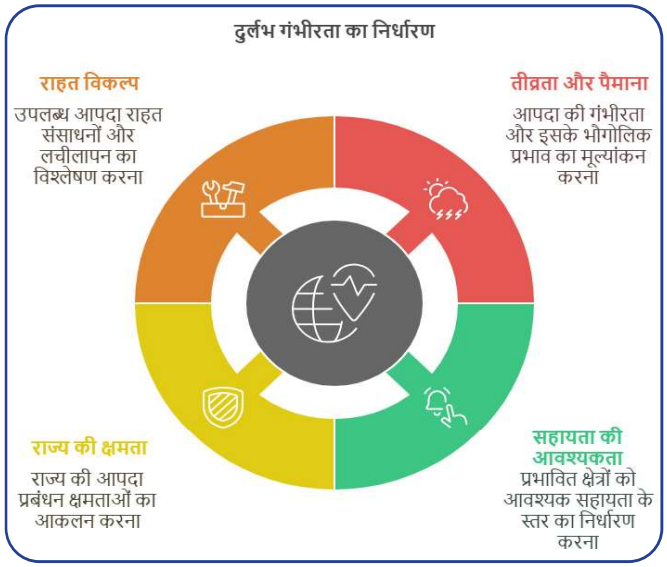

आपदा राहत के लिए वित्तपोषण:

आपदा राहत के लिए वित्तपोषण की प्रक्रिया राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन नीति, 2009 का अनुसरण करती है। इसमें निम्नलिखित चरण शामिल हैं:

- राष्ट्रीय संकट प्रबंधन समिति (एनसीएमसी) बड़े संकटों से निपटने के लिए एनसीएमसी जिम्मेदार होती है।
- केंद्रीय टीमें प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करती हैं और क्षति का आकलन करती हैं।
- केंद्रीय गृह सचिव एक अंतर-मंत्रालयी समूह का नेतृत्व करते हुए मूल्यांकन की समीक्षा करते हैं।
- उच्च स्तरीय समिति वित्तीय सहायता को मंजूरी देती है।

राष्ट्रीय क्रिटिकल मिनरल्स मिशन (NCMM)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत सरकार ने राष्ट्रीय क्रिटिकल मिनरल्स मिशन (NCMM) को मंजूरी दी है। इस मिशन के तहत 16,300 करोड़ की स्वीकृति प्रदान की गई है, जबकि इसका कुल बजट 34,300 करोड़ निर्धारित किया गया है, जिसे सात वर्षों में चरणबद्ध रूप से लागू किया जाएगा। इस मिशन का उद्देश्य भारत को क्रिटिकल मिनरल्स (महत्वपूर्ण खनिजों) में आत्मनिर्भर बनाना और ग्रीन एनर्जी (हरित ऊर्जा) संक्रमण को गति देना है।

राष्ट्रीय क्रिटिकल मिनरल्स मिशन के मुख्य उद्देश्य:

- भारत और विदेशों में क्रिटिकल मिनरल्स की खोज और खनन को बढ़ावा देना।
- आयात पर निर्भरता कम करना और घरेलू संसाधनों को सुरक्षित करना। खनिजों के प्रसंस्करण (Processing) के लिए नई तकनीकों का विकास करना।
- पुराने उत्पादों से खनिजों को रिसाइकल (Recycle) करने को प्रोत्साहित करना।
- सरकारी और निजी कंपनियों को विदेशों में खनिज संपत्तियाँ खरीदने में सहायता करना।

क्रिटिकल मिनरल्स क्या होते हैं?

- क्रिटिकल मिनरल्स वे खनिज या तत्व होते हैं, जो आधुनिक तकनीकों के निर्माण के लिए बहुत आवश्यक होते हैं। ये खनिज स्वच्छ ऊर्जा (clean energy) के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण हैं, जैसे इलेक्ट्रिक वाहन (EVs), पवन ऊर्जा (wind turbines) और सौर ऊर्जा (solar panels) में इनका उपयोग होता है।

क्रिटिकल मिनरल्स का महत्व:

- **कुछ प्रमुख क्रिटिकल मिनरल्स:** कॉपर (Copper), लिथियम (Lithium), निकल (Nickel), कोबाल्ट (Cobalt) और रेयर अर्थ एलिमेंट्स (Rare Earth Elements) इनका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में होता है:
  - » **नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable Energy):** पवन टरबाइन, सौर पैनल और बिजली ग्रिड में।
  - » **इलेक्ट्रिक वाहन (EVs):** बैटरियों और EV चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर में।
  - » **इलेक्ट्रॉनिक्स और हाई-टेक उद्योग:** स्मार्टफोन, रक्षा प्रणाली, और मेडिकल उपकरणों में।
- वर्तमान विश्व में हरित ऊर्जा संक्रमण (Green Energy Transition) की दिशा में अग्रसर है, जिसके परिणामस्वरूप क्रिटिकल मिनरल्स की वैश्विक मांग में तीव्र वृद्धि हो रही है। भारत के तकनीकी सशक्तिकरण एवं आर्थिक प्रगति के लिए इन खनिजों की घरेलू आपूर्ति श्रृंखला (Domestic Supply Chain) को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

सरकार की रणनीति और क्रियान्वयन:

- **खनन मंजूरी की प्रक्रिया को तेज करना:** खनन परियोजनाओं की स्वीकृति प्रक्रिया को तेज और प्रभावी बनाने हेतु सरलीकृत एवं समयबद्ध मंजूरी प्रणाली लागू करने की योजना बनाई गई है।
- **खनिजों का भंडार तैयार करना:** महत्वपूर्ण खनिजों का एक रणनीतिक भंडार (Strategic Reserve) बनाया जाएगा।
- **नीति सुधार:** 1957 के 'खान और खनिज (विकास और

विनियमन) अधिनियम' में 2023 में संशोधन किया गया, जिससे 24 रणनीतिक खनिज ब्लॉकों की नीलामी संभव हो सकी।

- **भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (Geological Survey of India - GSI) की खोज परियोजनाएँ:** पिछले 3 वर्षों में 368 खनिज खोज परियोजनाएँ शुरू की गईं। 2025-26 में 227 और परियोजनाएँ शुरू करने की योजना है।
- **आयात शुल्क में छूट:** 2024-25 के बजट में क्रिटिकल मिनरल्स पर कस्टम ड्यूटी हटाई गई, जिससे घरेलू प्रसंस्करण और निर्माण को बढ़ावा मिलेगा।

NCMM का भारत की ऊर्जा नीति पर प्रभाव:

- स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र के लिए आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित करेगा।
- EV बैटरियों और नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादों के घरेलू निर्माण को बढ़ावा देगा।
- भारत को वैश्विक क्रिटिकल मिनरल्स बाजार में मजबूत स्थिति दिलाएगा।
- खनन और प्रसंस्करण क्षेत्र में विदेशी और निजी निवेश आकर्षित करेगा।

चुनौतियाँ और आगे की राह:

- **भू-राजनीतिक (Geopolitical) चुनौतियाँ:** विदेशों में खनिज संपत्तियाँ खरीदने में अंतरराष्ट्रीय राजनीति बाधा बन सकती है।
- **पर्यावरणीय चिंताएँ:** बढ़ता खनन पर्यावरण के लिए खतरा बन सकता है, इसलिए संतुलन बनाए रखना जरूरी है।
- **निवेश जोखिम:** निजी क्षेत्र की भागीदारी तभी सफल होगी, जब सरकार उचित नीतिगत समर्थन देगी।

खनन धूल का वनस्पति पर प्रभाव

चर्चा में क्यों?

साउथेम्प्टन विश्वविद्यालय, यूके और राउरकेला स्थित राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा किए गए एक नवीनतम अध्ययन से पता चलता है कि खुले खदानों से उत्पन्न खनन धूल पौधों के स्वास्थ्य और वृद्धि को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। इस अध्ययन को ओडिशा के झारसुगुड़ा में किया गया था, जो भारत के प्रमुख कोयला उत्पादक क्षेत्रों में से एक है और जहां 16 सक्रिय कोयला खदानें स्थित हैं। अध्ययन ओडिशा के झारसुगुड़ा में किया गया था, जो भारत में कोयला खनन क्षेत्र है, जहां 16 सक्रिय कोयला खदानें हैं और विशाल कोयला भंडार मौजूद हैं।

खनन धूल के प्रभाव को समझना:

- खुले खदान खनन से उत्पन्न विशाल मात्रा में धूल आसपास की वनस्पति पर जमा हो जाती है। इस धूल में सीसा, एल्यूमीनियम और लोहा जैसी विभिन्न हानिकारक धातुएं होती हैं, जो पौधों के जीवन के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण जैविक प्रक्रियाओं को बाधित करती हैं।
- यह धूल प्रकाश संश्लेषण, प्रकाश अवशोषण, पोषक तत्वों की उपलब्धता, गैस विनिमय और पौधों और रोगजनकों के बीच बातचीत को प्रभावित करती है, जो पौधों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

खनन धूल पौधों के कार्यों को कैसे प्रभावित करती है?

- **स्टोमेटा अवरोध:**
  - » धूल के कण पत्तियों पर उपस्थित रंध्रों (स्टोमेटा) को अवरुद्ध कर देते हैं। ये रंध्र पौधों को कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करने और ऑक्सीजन छोड़ने में सहायता करते हैं।
  - » रंध्रों के बंद होने से प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया बाधित होती है, जिसके परिणामस्वरूप पौधों को कार्बन डाइऑक्साइड प्राप्त करने में कठिनाई होती है और वे पर्याप्त ऑक्सीजन भी नहीं छोड़ पाते।
- **कम कार्बन अवशोषण:**
  - » अध्ययनों से पता चला है कि पत्तियों पर जमा धूल की मात्रा बढ़ने के साथ पौधों द्वारा अवशोषित कार्बन की मात्रा में भी कमी आती है। उदाहरण के लिए, पत्तियों के प्रति वर्ग मीटर धूल के प्रत्येक अतिरिक्त ग्राम के लिए, कार्बन अवशोषण 2 से 3 ग्राम तक कम हो सकता है।
  - » कार्बन अवशोषण में यह कमी पौधों के विकास और वृद्धि को सीधे प्रभावित करती है।
- **बाधित वाष्पोत्सर्जन:**
  - » खनन धूल पौधों के वाष्पोत्सर्जन की प्रक्रिया को भी बाधित करती है। वाष्पोत्सर्जन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पौधे अपनी पत्तियों के माध्यम से जल वाष्प को वातावरण में छोड़ते हैं।
  - » धूल के कारण वाष्पोत्सर्जन की दर कम हो जाती है, जिससे पौधों के लिए अपने शरीर का तापमान नियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है। यह स्थिति मनुष्यों के पसीना निकालने के समान है, जो शरीर को ठंडा रखने में मदद करता है।

अध्ययन का महत्व:

- यह शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि खनन धूल पारिस्थितिक तंत्र को किस हद तक नुकसान पहुंचाती है और इस समस्या से निपटने के लिए हमें और अधिक शोध तथा प्रभावी पर्यावरण प्रबंधन रणनीतियों की आवश्यकता है।
- जैसे-जैसे खनन गतिविधियां बढ़ रही हैं, पौधों के स्वास्थ्य पर धूल के हानिकारक प्रभावों को समझना और इनसे निपटने के उपाय करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। यह न केवल पौधों को बचाने के लिए आवश्यक है बल्कि संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्रों को भी संरक्षित रखने के लिए।

5 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्पैडेक्स डॉकिंग मिशनः भारत की अंतरिक्ष अन्वेषण यात्रा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि

हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अपने महत्वाकांक्षी स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (स्पाडेक्स) मिशन को सफलतापूर्वक लॉन्च करके अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक नया अध्याय जोड़ा है। अंतरिक्ष में उन्नत डॉकिंग तकनीक का प्रदर्शन करके, इसरो ने अंतरिक्ष अन्वेषण में वैश्विक नेता के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत किया है। भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन के बाद चौथा देश बन गया, जिसने यह तकनीकी उपलब्धि हासिल की है।

स्पैडेक्स मिशन क्या है?

- स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (SpaDeX) इसरो का एक महत्वाकांक्षी मिशन है जिसका उद्देश्य अंतरिक्ष में दो उपग्रहों को आपस में जोड़ने की तकनीक का प्रदर्शन करना है। इस तकनीक को डॉकिंग कहा जाता है, जिससे वे एक इकाई के रूप में कार्य कर सकें।
- डॉकिंग विभिन्न प्रकार के उन्नत अंतरिक्ष परिचालनों के लिए आवश्यक है, जैसे मॉड्यूलर असेंबली, पुनः आपूर्ति मिशन, चालक दल स्थानांतरण और नमूना वापसी मिशन।
- स्पैडेक्स के मामले में, इसरो तकनीक का परीक्षण करने के लिए दो छोटे उपग्रहों का उपयोग किया, जिनमें से प्रत्येक का वजन 220 किलोग्राम था। 30 दिसंबर, 2024 को लॉन्च किये गये इस मिशन का उद्देश्य दो उपग्रहों को डॉकिंग के लिए एक साथ लाने के लिए सटीक अभ्यास की एक श्रृंखला आयोजित करना था।

स्पेस डॉकिंग को समझनाः

- स्पेस डॉकिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक ही कक्षा में परिक्रमा कर रहे दो अंतरिक्ष यान भौतिक रूप से जुड़ते हैं। इस जटिल कार्य को सफलतापूर्वक अंजाम देना कई महत्वपूर्ण अंतरिक्ष मिशनों के लिए आवश्यक है। स्पेस डॉकिंग के मुख्य चरण निम्नलिखित हैं:
  - **रेंडेजवसः** इस चरण में दोनों अंतरिक्ष यान एक ही कक्षा में लाए जाते हैं, ताकि वे एक-दूसरे के करीब आ सकें
  - **डॉकिंगः** एक बार जब दोनों यान एक-दूसरे के पर्याप्त रूप से करीब आ जाते हैं, तो वे विशेष डॉकिंग सिस्टम का उपयोग करके एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं। यह एक यांत्रिक कनेक्शन होता है जो दोनों यानों को एक साथ रखता है।
  - **शक्ति और संसाधन साझाकरणः** डॉकिंग के बाद, दोनों यान एक-दूसरे के साथ विद्युत शक्ति, ईंधन और अन्य संसाधनों को साझा कर सकते हैं।
- अंतरिक्ष डॉकिंग मानव अंतरिक्ष अन्वेषण, अंतरिक्ष स्टेशन निर्माण और अंतरग्रहीय प्रयासों से जुड़े भविष्य के मिशनों के लिए एक आवश्यक तकनीक है। डॉकिंग अंतरिक्ष में मॉड्यूल के बीच चालक दल, आपूर्ति और वैज्ञानिक पेलोड को स्थानांतरित करने के लिए एक तंत्र भी प्रदान करता है।

अंतरिक्ष डॉकिंग प्रौद्योगिकी के लिए भारत की प्रेरणाः

- अंतरिक्ष डॉकिंग तकनीक की भारत की खोज अंतरिक्ष अन्वेषण में एक प्रमुख देश बनने की इसकी व्यापक महत्वाकांक्षाओं का हिस्सा है। स्पैडेक्स मिशन इसरो को भारत के नियोजित चंद्र मिशन और अंतरिक्ष स्टेशन की स्थापना जैसे भविष्य के मिशनों का समर्थन करने के लिए आवश्यक विशेषज्ञता और अनुभव प्रदान करेगा।
  - **अंतरिक्ष स्टेशन की स्थापनाः** भारत का दीर्घकालिक लक्ष्य 2035 तक अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना है। अंतरिक्ष स्टेशन के निर्माण, चालक दल के आवागमन, वैज्ञानिक अनुसंधान और उपग्रह सेवाओं जैसे कार्यों को पूरा करने के लिए, कक्षा में कई अंतरिक्ष यानों को एक

साथ जोड़ने की क्षमता अनिवार्य है।

» **चंद्र मिशन और चंद्रयान-4 का समर्थन:** डॉकिंग तकनीक चंद्रयान-4 मिशन के लिए भी महत्वपूर्ण होगी, जिसका उद्देश्य चंद्रमा के नमूनों को पृथ्वी पर वापस लाना है। इस मिशन में अलग-अलग लॉन्च किए जाने वाले कई अंतरिक्ष यान शामिल होंगे, जिन्हें चंद्रमा की ओर बढ़ने से पहले कक्षा में डॉक करना होगा।

अंतरिक्ष डॉकिंग का ऐतिहासिक संदर्भ:

- अंतरिक्ष डॉकिंग की अवधारणा का जन्म 1960 के दशक में अमेरिका और सोवियत संघ के बीच चली अंतरिक्ष दौड़ के दौरान हुआ था। दोनों महाशक्तियां अंतरिक्ष में अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही थीं। इसी प्रतिस्पर्धा के दौरान अंतरिक्ष यानों को एक-दूसरे से जोड़ने की तकनीक का विकास किया गया।
- 1966 में, अमेरिका ने इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की जब जेमिनी VIII अंतरिक्ष यान एजेना लक्ष्य वाहन के साथ सफलतापूर्वक जुड़ गया। यह दुनिया का पहला अंतरिक्ष डॉकिंग था। उल्लेखनीय है कि इस मिशन में नील आर्मस्ट्रांग भी शामिल थे, जो बाद में 1969 में चंद्रमा पर कदम रखने वाले पहले व्यक्ति बने।
- 1967 में, सोवियत संघ ने अंतरिक्ष डॉकिंग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की जब कोस्मोस 186 और कोस्मोस 188 अंतरिक्ष यान स्वचालित रूप से एक-दूसरे से जुड़ गए। यह दुनिया का पहला बिना चालक वाला अंतरिक्ष डॉकिंग था। इस सफलता ने भविष्य में अधिक जटिल अंतरिक्ष मिशनों के लिए रास्ता प्रशस्त किया।
- 2011 में, चीन भी इस तकनीक में महारत हासिल करने में सफल रहा। शेनझोउ 8 अंतरिक्ष यान तियांगोंग 1 अंतरिक्ष प्रयोगशाला के साथ सफलतापूर्वक जुड़ गया। इसके बाद 2012 में, चीन ने शेनझोउ 9 अंतरिक्ष यान के माध्यम से पहला मानवयुक्त अंतरिक्ष डॉकिंग मिशन पूरा किया।

स्पैडेक्स द्वारा प्रदर्शित तकनीकी प्रगति:

- स्पैडेक्स मिशन कई तकनीकी प्रगति को दर्शाता है जोकि भारत के भविष्य के अंतरिक्ष प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण होंगे। मिशन की सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से दो छोटे उपग्रहों, SDX01 और SDX02 का उपयोग शामिल था। अपने छोटे आकार के कारण, इन उपग्रहों को सफलतापूर्वक डॉक करने के लिए अत्यधिक सटीक तकनीक की आवश्यकता होती है, जिससे यह मिशन सामान्य अंतरिक्ष यान डॉकिंग ऑपरेशनों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

उन्नत सेंसर और नेविगेशन सिस्टम:

- **लेजर रेंज फाइंडर:** इनका उपयोग उच्च सटीकता के साथ उपग्रहों के बीच की दूरी मापने के लिए किया जाता है।
- **रेंडेजवस सेंसर:** ये सेंसर अंतरिक्ष यान को एक दूसरे की ओर निर्देशित करने में सहायता करते हैं और संरेखण बनाए रखने में मदद करते हैं।
- **निकटता और डॉकिंग सेंसर:** ये सेंसर अंतरिक्ष यान को यह पता लगाने में सक्षम बनाते हैं कि वे डॉक करने के लिए पर्याप्त निकट हैं और लॉकिंग तंत्र आरंभ करते हैं।
- इसके अतिरिक्त, स्पैडेक्स मिशन में CROPS (ऑर्बिटल प्लांट स्टडीज के लिए कॉम्पैक्ट रिसर्च मॉड्यूल) नामक एक उपकरण भी शामिल है। इस उपकरण के माध्यम से अंतरिक्ष में पहली बार जैविक प्रयोग किए जा रहे हैं। इन प्रयोगों का उद्देश्य यह पता लगाना है कि पौधे सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण की स्थितियों में कैसे विकसित होते हैं। यह प्रयोग इसरो के अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम में एक नया अध्याय जोड़ता है।

डॉकिंग और सटीक संचालन में चुनौतियाँ:

- दो तेज गति से चलने वाले अंतरिक्ष यानों की डॉकिंग एक जटिल और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है। सफल डॉकिंग सुनिश्चित करने के लिए दो उपग्रहों की सापेक्ष गति और प्रक्षेप पथ को सावधानीपूर्वक नियंत्रित किया जाना चाहिए। संरेखण में थोड़ा सा भी विचलन मिशन की विफलता का कारण बन सकता है। इसरो इन चुनौतियों का समाधान करने और डॉकिंग

अभ्यास की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए उन्नत सेंसर का उपयोग करते हैं।

- डॉकिंग की प्रक्रिया में कई चरण होते हैं। सबसे पहले, दोनों यानों को एक-दूसरे के करीब लाया जाता है। फिर, धीरे-धीरे उनकी दूरी कम की जाती है। यह दूरी पहले 5 किलोमीटर होती है, फिर इसे कम करके 1.5 किलोमीटर, 500 मीटर, 225 मीटर और 15 मीटर किया जाता है। आखिर में, जब दोनों यान केवल 3 मीटर की दूरी पर होते हैं, तो उनमें लगे विशेष उपकरणों की मदद से दोनों यानों को जोड़ दिया जाता है। एक बार जब दोनों यान जुड़ जाते हैं, तो वे एक-दूसरे से विद्युत ऊर्जा साझा करते हैं और एक ही यान की तरह काम करते हैं।

भारत के भविष्य के अंतरिक्ष अन्वेषण लक्ष्यों पर प्रभाव:

- स्पैडेक्स मिशन के सफल समापन से भारत के भविष्य के अंतरिक्ष अन्वेषण लक्ष्यों पर स्थायी प्रभाव पड़ेगा। अंतरिक्ष यान को डॉक करने की क्षमता अंतरिक्ष स्टेशनों और अंतरग्रहीय मिशनों के निर्माण सहित अधिक जटिल मिशनों को सक्षम करेगी। स्पैडेक्स के माध्यम से विकसित प्रौद्योगिकियां भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के निर्माण और संचालन में सहायक होंगी। अंतरिक्ष स्टेशन से अगले कुछ दशकों में भारत की अंतरिक्ष गतिविधियों में केन्द्रीय भूमिका निभाने की उम्मीद है।
- इसके अतिरिक्त, स्पैडेक्स उपग्रह सेवा और चंद्र मिशनों को सुगम बनाएगा, जिससे भारत अंतरिक्ष अन्वेषण में अग्रणी भूमिका निभाने की स्थिति में होगा। जैसे-जैसे इसरो डॉकिंग तकनीक को परिष्कृत करना जारी रखेगा, एजेंसी भविष्य के मिशनों के लिए स्वायत्त प्रणालियों को विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित करेगी। यह प्रगति अधिक परिष्कृत मिशनों का संचालन करना संभव बनाएगी, जिसमें कक्षा में कई अंतरिक्ष यान को इकट्ठा करने की आवश्यकता वाले मिशन भी शामिल हैं।

निष्कर्ष:

भारत का स्पैडेक्स डॉकिंग मिशन इसरो और अंतरिक्ष अन्वेषण में देश की बढ़ती क्षमताओं के लिए एक महत्वपूर्ण विकास है। डॉकिंग तकनीक का सफलतापूर्वक प्रदर्शन करके, भारत यह उपलब्धि हासिल करने वाला चौथा देश बन जाएगा, जिससे देश अंतरिक्ष अन्वेषण में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित हो जाएगा। जैसे-जैसे इसरो अंतरिक्ष अन्वेषण की सीमाओं को आगे बढ़ाता जा रहा है, स्पैडेक्स मिशन दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। डॉकिंग तकनीक में प्रगति और भविष्य के सहयोग की संभावना के साथ, भारत आने वाले वर्षों में अंतरिक्ष अन्वेषण के भविष्य को आकार देने वाले तेजी से जटिल मिशनों को लेने के लिए तैयार है।

संक्षिप्त मुद्दे

गिलियन-बैरे सिंड्रोम

चर्चा में क्यों?

हाल ही में पुणे में गिलियन-बैरे सिंड्रोम (GBS) के मामलों में असामान्य वृद्धि दर्ज की गई है, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य तंत्र के लिए गंभीर चिंता उत्पन्न हुई है। यह एक दुर्लभ लेकिन गंभीर न्यूरोलॉजिकल विकार है, इस स्थिति ने राज्य और केंद्रीय स्वास्थ्य अधिकारियों को सक्रिय कदम उठाने पर मजबूर कर दिया है।

गिलियन-बैरे सिंड्रोम (GBS) क्या है?

- GBS एक गंभीर ऑटोइम्यून विकार है जो परिधीय तंत्रिका तंत्र (Peripheral Nervous System) को प्रभावित करता है।
- **लक्षण:** यह अंगों में कमजोरी, झुनझुनी और सुन्नता से शुरू होता है, जो पक्षाघात में बदल सकता है। पक्षाघात 6 से 12 महीने या उससे भी अधिक समय तक रह सकता है।
- **तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव:** यह सिंड्रोम मांसपेशियों की गति, दर्द, तापमान और स्पर्श संवेदनाओं के लिए जिम्मेदार तंत्रिकाओं को प्रभावित करता है।
- **प्रभाव:** हालांकि वयस्कों और पुरुषों में अधिक आम है, GBS सभी उम्र के व्यक्तियों में हो सकता है।

जीबीएस का कारण:

- गिलियन-बैरे सिंड्रोम (GBS) का सटीक कारण अभी पूरी तरह से ज्ञात नहीं है, लेकिन यह आमतौर पर एक संक्रमण (वायरल या जीवाणुजनित) के पश्चात देखा जाता है। यह स्थिति शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को भ्रमित कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप प्रतिरक्षा प्रणाली गलती से शरीर के अपने परिधीय तंत्रिका तंत्र पर आक्रमण कर देती है।

टीकाकरण और सर्जरी:

- दुर्लभ मामलों में, टीकाकरण या सर्जरी गिलियन-बैरे सिंड्रोम (GBS) के विकास के जोखिम को थोड़ा बढ़ा सकती है। हालांकि, यह जोखिम आमतौर पर अत्यधिक कम होता है।

GBS के लिए उपचार:

- GBS के उपचार में आमतौर पर प्लास्मफेरेसिस जैसी प्रक्रियाएं शामिल होती हैं। इस प्रक्रिया में रोगी के प्लाज्मा को हटाकर इसे अन्य तरल पदार्थों से बदला जाता है, जिसका उद्देश्य नसों पर प्रतिरक्षा प्रणाली के हमले को कम करना है।

पैराक्वाट

चर्चा में क्यों?

हाल ही में तिरुवनंतपुरम की एक अदालत ने वर्ष 2022 में पैराक्वाट नामक एक रासायनिक शाकनाशी का उपयोग करके अपने प्रेमी को जहर देने का दोषी पाए जाने के बाद 24 वर्षीय एक महिला को मौत की सजा सुनाई हैं।

पैराक्वाट क्या है?

- पैराक्वाट (पैराक्वाट डाइक्लोराइड या मिथाइल वायोलोजेन)एक व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला शाकनाशी (herbicide) है जो खरपतवारों के विकास को नियंत्रित करने और फसल की कटाई से पहले उसे सुखाने के लिए उपयोग किया जाता है।
- डब्ल्यूएचओ द्वारा मध्यम रूप से खतरनाक के रूप में वर्गीकृत, पैराक्वाट 70 से अधिक देशों में प्रतिबंधित है, जिनमें चीन और यूरोपीय संघ भी शामिल हैं, क्योंकि यह अत्यधिक विषाक्त है।
- इसके बावजूद, यह अमेरिका और भारत में प्रचलित है, 2014 और 2018 के बीच अमेरिका में इसका उपयोग दोगुना होकर 11 मिलियन पाउंड प्रति वर्ष हो गया है। यूएस ईपीए चेतावनी देता है कि इसकी एक छोटा सी मात्रा भी घातक हो सकती है।

पैराक्वाट विषाक्तता कैसे होती है?

- पैराक्वाट विषाक्तता आमतौर पर जब इसे शरीर में अंदर लिया जाता है तब होती है, लेकिन यह त्वचा के संपर्क में आने या सांस के जरिए भी हो सकती है। यह रसायन शरीर में जल्दी फैलता है और फेफड़े, जिगर और गुर्दे जैसे महत्वपूर्ण अंगों को नुकसान पहुंचाता है। पैराक्वाट कोशिकाओं में 'सक्रिय परिवहन' के माध्यम से प्रवेश करता है, जिससे यह शरीर के ऊतकों में गहरी तक पहुंच सकता है।

पैराक्वाट विषाक्तता के लक्षण:

- विषाक्तता की गंभीरता मात्रा, संपर्क विधि और पहले से मौजूद स्वास्थ्य स्थितियों पर निर्भर करती है।
- कम मात्रा के लक्षण दिनों या हफ्तों में प्रकट होते हैं, जिससे हृदय, यकृत और गुर्दे सहित महत्वपूर्ण अंगों को नुकसान होता है।
- ज्यादा मात्रा के तत्काल लक्षणों में पेट में दर्द, मुंह और गले में सूजन, खूनी दस्त और मतली शामिल हैं। तीव्र गुर्दे की विफलता, तेज दिल की दर, श्वसन विफलता और मृत्यु हो सकती है।

पैराक्वाट विषाक्तता के उपचार:

- पैराक्वाट विषाक्तता का कोई ज्ञात प्रतिरोधक नहीं है, लेकिन सक्रिय चारकोल या फुलर की मिट्टी जैसे उपचार तुरंत लेने पर रसायन को बांधने में मदद कर सकते हैं।
- अस्पताल में इम्यूनोसप्रेसन और चारकोल हेमोपरफ्यूजन जैसे उपचारों की खोज की गई है लेकिन व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं हैं।
- सीडीसी दूषित कपड़ों को हटाने, इसके संपर्क से बचने और साबुन और पानी से उजागर त्वचा को धोने की सलाह देता है।

विनियमन और उपयोग प्रतिबंध:

- अमेरिका में पैराक्वाट केवल लाइसेंस प्राप्त वाणिज्यिक उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध है, जिसमें इसे अन्य तरल पदार्थों से अलग करने के लिए नीले रंग का डाई और आकस्मिक अंतर्ग्रहण को कम करने के लिए एक उल्टी एजेंट जैसे अतिरिक्त सुरक्षा उपाय शामिल हैं।
- भारत में पैराक्वाट 1968 के कीटनाशक अधिनियम के तहत विनियमित है और विशिष्ट फसलों पर उपयोग के लिए अनुमोदित है। हालांकि, इसका उपयोग अक्सर अनियमित होता है, पैराक्वाट बिना उचित पर्चे के बेचा जाता है। किसान बिना सुरक्षात्मक उपकरणों के इसे संभालते हैं, जिससे जोखिम बढ़ जाता है।

निष्कर्ष:

अनियंत्रित बिक्री, अनुचित भंडारण और सुरक्षित उपयोग पर प्रशिक्षण की कमी से विषाक्तता का खतरा बढ़ जाता है। सुरक्षा उपायों के बेहतर प्रवर्तन और किसानों को पैराक्वाट के सुरक्षित संचालन पर शिक्षा की आवश्यकता है।

रोडामिन बी

चर्चा में क्यों?

हाल ही में रोडामिन बी नामक एक सिंथेटिक रंग, जो वस्त्रों, चमड़े और कागज जैसे उत्पादों में व्यापक रूप से इस्तेमाल होता है, खाद्य पदार्थों में इसके अवैध उपयोग के कारण चर्चा का विषय बन गया है। अपनी चमकदार गुलाबी रंग और फ्लोरोसेंट गुणों के लिए जाना जाने वाला यह रंग, डीएनए क्षति, उत्परिवर्तन और कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता है, जिससे यह स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है।

रोडामिन बी क्या है?

- रोडामिन बी ($C_{28}H_{31}ClN_2O_3$) एक सिंथेटिक रंग है जो पानी में घुल जाता है। यह पाउडर के रूप में हरा दिखता है, लेकिन पानी में घोलने पर चमकीला गुलाबी रंग का हो जाता है और चमकदार नजर आता है।
- इसका व्यापक रूप से वस्त्र, चमड़ा, कागज और पेंट बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। इसके अतिरिक्त, वैज्ञानिक शोध में भी इसका उपयोग होता है क्योंकि यह चमकदार होता है। चूंकि यह आसानी से टूटता नहीं है, इसलिए यह पर्यावरण में लंबे समय

तक रहता है और प्रदूषण फैलाता है।
- अपनी औद्योगिक उपयोगिता के बावजूद, रोडामिन बी को विश्व स्तर पर विषाक्त के रूप में वर्गीकृत किया गया है और खाद्य पदार्थों में प्रतिबंधित है।

रोडामिन बी के हानिकारक प्रभाव:

- रोडामिन बी गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों से जुड़ा हुआ है। अध्ययनों से इसके कार्सिनोजेनिक गुणों का पता चलता है, जो इसे डीएनए क्षति, उत्परिवर्तन और पशु मॉडल में ट्यूमर वृद्धि से जोड़ते हैं।
- लंबे समय तक रोडामिन बी के संपर्क में रहने से हमारे शरीर के अहम अंग जैसे कि लीवर, किडनी और मूत्राशय को नुकसान पहुंच सकता है। यह हमारे शरीर की कोशिकाओं को भी नुकसान पहुंचाता है।
- बच्चे और बीमार लोग रोडामिन बी से सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। यह पानी और मिट्टी को भी प्रदूषित करता है जिससे पूरा पर्यावरण प्रभावित होता है।
- त्वचा रोग विशेषज्ञों का कहना है कि रोडामिन बी से एलर्जी और त्वचा संबंधी समस्याएं भी हो सकती हैं।

वैश्विक नियामक कार्रवाइयाँ:

- संयुक्त राज्य अमेरिका में, एफडीए ने दशकों पहले खाद्य पदार्थों में रोडामिन बी पर प्रतिबंध लगा दिया था और जनवरी 2025 में इसकी कार्सिनोजेनिटी के बढ़ते सबूतों का हवाला देते हुए निषेध को और मजबूत किया।
- इसी प्रकार, यूरोपीय संघ ने इसके उपयोग को प्रतिबंधित कर दिया है, इसे ष्बहुत अधिक चिंता का विषयष् के रूप में चिन्हित किया है।

भारत में रोडामिन बी के खिलाफ कार्रवाइयाँ:

- **तमिलनाडु:** फरवरी 2024 में, जब रंगीन कॉटन कैंडी में रोडामिन बी मिला, तो सरकार ने इसे बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया। यह कदम खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 के उल्लंघन के कारण उठाया गया था।
- **कर्नाटक:** मार्च 2024 में, कर्नाटक सरकार ने भी कॉटन कैंडी जैसे लोकप्रिय स्ट्रीट फूड्स में रोडामिन बी के इस्तेमाल पर रोक लगा दी। इस नियम को तोड़ने वालों को 10 लाख रुपये का जुर्माना या जेल हो सकती है।
- **पुदुचेरी और हिमाचल प्रदेश:** साल 2024 की शुरुआत में, पुदुचेरी और हिमाचल प्रदेश सरकारों ने भी लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए रोडामिन बी के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगा दिए थे।

आगे की राह:

भारत में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत और व्यापक तंत्र की आवश्यकता है। खाद्य पदार्थों में मिलाए जाने वाले हानिकारक योजकों, विशेषकर सिंथेटिक रंगों पर गहन शोध के लिए एफएसएसएआई को पर्याप्त धनराशि आवंटित की जानी चाहिए। इसके साथ ही, खाद्य सुरक्षा के बारे में जन जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को सुरक्षित खाद्य पदार्थों के महत्व के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करना कि खाद्य पदार्थ न केवल आकर्षक बल्कि पोषण से भरपूर और सुरक्षित भी हों।

जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ने LID-568 नामक ब्लैक होल की खोज

चर्चा में क्यों?

हाल ही में नासा के जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) और चंद्रा एक्स-रे वेधशाला का उपयोग कर रहे खगोलविदों ने LID-568 की खोज की है, जो एक ऐसा ब्लैक होल है जो ब्लैक होल के निर्माण के मौजूदा सिद्धांतों को चुनौती देता है। बिग बैंग के केवल 1.5 अरब वर्ष बाद अस्तित्व में आए LID-568 नामक ब्लैक होल एडिंगटन सीमा की तुलना में लगभग 40 गुना अधिक दर से पदार्थ ग्रहण कर रहा है।

सुपर-एडिंगटन अभिवृद्धि का रहस्य:

- 'एडिंगटन सीमा एक ब्लैक होल द्वारा पदार्थ ग्रहण करने की अधिकतम दर को निर्धारित करती है, जहां गुरुत्वाकर्षण का खिंचाव और विकिरण का बाहरी दबाव संतुलन में होते हैं। यदि विकिरण दबाव गुरुत्वाकर्षण से अधिक हो जाता है, तो ब्लैक होल पदार्थ ग्रहण करना बंद कर देता है।
- हालांकि, LID-568 इस सीमा को 40 गुना पार कर गया है, सुपर-एडिंगटन अभिवृद्धि नामक एक प्रक्रिया में संलग्न हो गया है, जिसे पहले इस पैमाने पर असंभव माना जाता था।

अभिनव प्रयास:

- LID-568 की खोज दो कारणों से महत्वपूर्ण है:
  - » यह अन्य ज्ञात सुपर-एडिंगटन ब्लैक होल की तुलना में पृथ्वी से अधिक दूर स्थित है।
  - » यह एडिंगटन सीमा को 40 गुना तक पार करता है, जो एक अत्यंत उच्च दर है।
- ऐसी अभिवृद्धि घटनाएं आमतौर पर अल्पकालिक होती हैं, इसलिए LID-568 का अवलोकन सुपरमैसिव ब्लैक होल के प्रारंभिक विकास को समझने में अत्यंत मूल्यवान है।

LID-568 की खोज के लाभ:

- LID-568 ब्लैक होल सुपरमैसिव ब्लैक होल के निर्माण के पारंपरिक मॉडलों को चुनौती देता है। ये पारंपरिक मॉडल बताते हैं कि सुपरमैसिव ब्लैक होल गैस बादलों के ढहने या पहले सितारों की मृत्यु से बनते हैं। LID-586 की सुपर-एडिंगटन अभिवृद्धि के माध्यम से अत्यंत तीव्र वृद्धि, बिग बैंग के इतने जल्द बाद इन ब्लैक होल के इतने बड़े कैसे हो गए, इस सवाल का एक नया समाधान पेश करती है।
- यह दर्शाता है कि अपेक्षाकृत छोटे प्रारंभिक द्रव्यमान के साथ भी, सुपर-एडिंगटन अभिवृद्धि के छोटे विस्फोटों के दौरान ब्लैक होल

तेजी से बड़े हो सकते हैं।

ब्लैक होल के बारे में:

- सुपरमैसिव ब्लैक होल, जो आकाशगंगाओं के केंद्रों में स्थित होते हैं, सूर्य के द्रव्यमान के लाखों से अरबों गुना अधिक भारी होते हैं। LID-568 इन ब्रह्मांडीय विशालकायों के प्रारंभिक गठन और विकास के बारे में हमें अद्वितीय जानकारी प्रदान करता है, जिससे हमारी समझ में एक नई आयाम जुड़ गया है।

जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) और चंद्रा एक्स-रे वेधशाला के बारे में:

- जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) एक अत्याधुनिक अंतरिक्ष दूरबीन है जिसे मुख्य रूप से अवरक्त प्रकाश में अवलोकन करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- नासा, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) और कनाडाई अंतरिक्ष एजेंसी (CSA) के संयुक्त प्रयास से विकसित, यह हबल स्पेस टेलीस्कोप का उत्तराधिकारी है।

JWST की प्रमुख विशेषताएं:

- JWST दूरस्थ और धुंधली वस्तुओं को देखने के लिए अवरक्त प्रकाश में अवलोकन करता है, जो दृश्य प्रकाश की सीमा से परे है।
- इसका 6.5-मीटर का प्राथमिक दर्पण 18 हेक्सागोनल सोने से लेपित खंडों से बना है जो प्रक्षेपण के लिए फोल्ड हो जाता है और अंतरिक्ष में खुलकर अपना आकार ले लेता है।
- च-परत की सनशील्ड उपकरणों को सूर्य की गर्मी से बचाती है, जिससे अवरक्त अवलोकनों के लिए आवश्यक कम तापमान बना रहता है।
- JWST लैग्रेंज बिंदु 2 (L2) पर स्थित है, जो पृथ्वी से काफी दूर है। यह स्थान सूर्य और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के संतुलन बिंदु पर है, जिससे ईंधन की खपत कम होती है और अवलोकन की स्थिरता बढ़ती है।
- JWST के मुख्य उद्देश्य आकाशगंगाओं की उत्पत्ति, तारा निर्माण और ग्रह प्रणालियों की जांच करना है और उनकी भौतिक और रासायनिक गुणों का विश्लेषण करके अन्य प्रणालियों में जीवन की संभावना का आकलन करना है।

चंद्रा एक्स-रे वेधशाला:

- 1999 में लॉन्च की गई चंद्रा एक्स-रे वेधशाला, नासा का एक प्रमुख एक्स-रे टेलीस्कोप है। यह विस्फोटित तारे, आकाशगंगाओं के समूह और ब्लैक होल जैसी उच्च-ऊर्जा घटनाओं का अध्ययन करने के लिए डिजाइन किया गया है। चंद्रा एक्स-रे वेधशाला अत्यंत उच्च रिजॉल्यूशन के साथ एक्स-रे का पता लगाने में सक्षम है, जिससे वैज्ञानिकों को ब्रह्मांड के सबसे चरम वातावरणों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

भारत अंतरिक्ष डॉकिंग में चौथा देश बना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत ने अंतरिक्ष डॉकिंग में सफलता प्राप्त कर अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है। इसरो के स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (SpaDeX) मिशन के तहत, SDX01 (चेजर) और SDX02 (टारगेट) नामक दो छोटे अंतरिक्ष यानों का उपयोग करके यह उपलब्धि हासिल की गई।

अंतरिक्ष डॉकिंग के बारे में:

- अंतरिक्ष डॉकिंग दो तेजी से गतिमान उपग्रहों को अंतरिक्ष में सटीक रूप से जोड़ने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है।

भारत का अंतरिक्ष डॉकिंग मिशन विवरण:

- SpaDeX मिशन में दो अंतरिक्ष यान शामिल थे-SDX01 (चेजर) और SDX02 (टारगेट)- जोकि सफलतापूर्वक कक्षा में डॉक हो गए। यह तकनीक भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों और उपग्रह सेवाओं के लिए महत्वपूर्ण है।
- अमेरिका, रूस और चीन ही ऐसे अन्य देश हैं जिन्होंने भारत से पहले सफल अंतरिक्ष डॉकिंग किया है। इस विशिष्ट समूह में शामिल होकर भारत ने वैश्विक अंतरिक्ष अन्वेषण समुदाय में अपनी स्थिति को मजबूत किया है।

SpaDeX मिशन के बारे में

- **पृष्ठभूमि:** दिसंबर 2024 में, इसरो ने श्रीहरिकोटा अंतरिक्ष केंद्र से PSLV-C60 रॉकेट के माध्यम से SpaDeX मिशन लॉन्च किया। इस मिशन में SpaDeX उपग्रह और इसके साथ 24 PS4-ऑर्बिटल एक्सपेरिमेंट मॉड्यूल (POEM-4) पेलोड शामिल थे।
- **मिशन का उद्देश्य:** इस मिशन का प्राथमिक उद्देश्य दो छोटे उपग्रहों, SDX01 (चेजर) और SDX02 (टारगेट) के बीच स्वायत्त रेंडेज-वूस और डॉकिंग तकनीक का प्रदर्शन करना था।
- **मिशन लक्ष्य:**
  - » **रेंडेज-वूस और डॉकिंग:** SDX01 (चेजर) को SDX02 (टारगेट) तक पहुंचाना और दोनों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए स्वायत्त तकनीक विकसित करना।
  - » **नियंत्रण मूल्यांकन:** एक बार डॉक होने के बाद, दोनों अंतरिक्ष यानों को एक इकाई के रूप में नियंत्रित करने और स्थिरता बनाए रखने की क्षमता का मूल्यांकन करना।
  - » **पावर ट्रांसफर:** डॉक किए गए अंतरिक्ष यानों के बीच बिजली हस्तांतरण की क्षमता का परीक्षण करना।
  - » **जीवन विस्तार:** टारगेट अंतरिक्ष यान के परिचालन जीवन को बढ़ाने की संभावना का पता लगाना।

मिशन अवधि:

- डॉकिंग संचालन के बाद मिशन की अवधि दो वर्ष तक रहने की संभावना है।
- SpaDeX मिशन के लिए विकसित स्वदेशी तकनीकें:
  - » **इंटर-सैटेलाइट कम्युनिकेशन लिंक (ISL):** दो अंतरिक्ष यानों के बीच स्वायत्त संचार की सुविधा प्रदान करता है।
  - » **GNSS-आधारित RODP प्रोसेसर:** यह सिस्टम अंतरिक्ष यान की सापेक्ष स्थिति और वेग निर्धारित करता है, जो सटीक डॉकिंग के लिए महत्वपूर्ण है।
  - » **अन्य स्वदेशी प्रौद्योगिकियां:**
    - ➢ **डॉकिंग मैकेनिज्म:** दो अंतरिक्ष यानों को जोड़ने में सक्षम बनाता है।
    - ➢ **सेंसर सूट:** स्वायत्त डॉकिंग संचालन के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करता है।
    - ➢ **स्वायत्त रेंडेज-वूस रणनीति:** यह सुनिश्चित करता है कि अंतरिक्ष यान बिना किसी मैन्युअल हस्तक्षेप के संपर्क में आएं और डॉक करें।

भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाओं के लिए SpaDeX मिशन का महत्व

- **भविष्य के मिशनों के लिए समर्थन:** SpaDeX तकनीक भारत के दीर्घकालिक अंतरिक्ष उद्देश्यों, जैसे चंद्रमा से नमूना वापसी और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) के विकास में योगदान देगी।
- **उपग्रह सेवा:** डॉकिंग तकनीक उपग्रहों की सर्विसिंग और ईंधन भरने की अनुमति देती है, जिससे उनके परिचालन जीवन को बढ़ाया जा सकता है और उपग्रह रखरखाव की लागत को कम किया जा सकता है।

भविष्य के अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए लाभ

- **मल्टी-रॉकेट लॉन्च:** इस तकनीक का उपयोग कई रॉकेटों का एक साथ लॉन्च करके बड़े अंतरिक्ष स्टेशन या अन्य विशाल संरचनाओं का निर्माण करने के लिए किया जा सकता है।
- **संभावित अनुप्रयोग:**
  - » **अंतरिक्ष रोबोटिक्स:** उपग्रहों की मरम्मत और अन्य जटिल कार्यों के लिए रोबोट का उपयोग करने में यह तकनीक सहायक होगी।
  - » **प्राकृतिक संसाधन निगरानी:** पृथ्वी के संसाधनों और पर्यावरण की निगरानी के लिए इस तकनीक का उपयोग किया जा सकता है।

त्रिकोफाइटन इंडोटिनिया

चर्चा में क्यों?

हाल ही में त्वचा रोगों का कारक एक कवक, ट्रिकोफाइटन इंडोटिनिया, त्वचा रोग विशेषज्ञों के बीच विवाद का केंद्र बन गया है। तीस से अधिक त्वचा रोग विशेषज्ञों ने इस कवक का नाम बदलने का आह्वान किया है क्योंकि इसका नाम मूलत: भारत के नाम पर रखा गया था। उनका तर्क है कि यद्यपि इस रोगजनक की पहली पहचान भारत में हुई थी, किंतु अब इसे विश्व के 40 से अधिक देशों में रिपोर्ट किया गया है। इस तथ्य के बावजूद कि भारत इसके मूल देश होने का कोई पुख्ता प्रमाण नहीं है।

त्रिकोफाइटन इंडोटिनिया के बारे में:

- त्रिकोफाइटन इंडोटिनिया एक कवक (fungus) है जो डर्मेटोफाइट समूह से संबंधित है। यह समूह उन कवकों का है जो त्वचा, बालों और नाखूनों के ऊपरी हिस्से में संक्रमण पैदा करते हैं। डर्मेटोफाइट्स के कारण होने वाले संक्रमण को डर्मेटोफाइटोसिस (Dermatophytosis) कहते हैं।
- टी. इंडोटिनिया के कारण होने वाले डर्मेटोफाइटोसिस में सूजन, खुजली और त्वचा पर लाल चकत्ते जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। ये चकत्ते आमतौर पर कमर, गुदा, धड़ और चेहरे पर होते हैं। यह संक्रमण किसी भी उम्र या लिंग के व्यक्ति को हो सकता है।
- सन 2020 में, एक जापानी शोध दल ने भारत और नेपाल से इस कवक के नमूने एकत्र किए थे। वैज्ञानिकों की एक सामान्य प्रथा के अनुसार, किसी नए रोगजनक (pathogen) का नाम उस देश के नाम पर रखा जाता है जहां उसकी पहली खोज होती है।
- इसलिए, इस कवक का नाम इंडोटिनिया रखा गया था। लेकिन अब यह कवक 40 से अधिक देशों में पाया गया है, इसलिए त्वचा रोग विशेषज्ञ इस बात पर सवाल उठा रहे हैं कि क्या इस कवक का नाम भारत के नाम पर रखना उचित है, क्योंकि भारत इसके मूल देश होने का कोई पुख्ता प्रमाण नहीं है।

संक्रमण और उपचार:

- त्रिकोफाइटन इंडोटिनिया एक कवक है जो त्वचा, बालों और नाखूनों में संक्रमण पैदा करता है और यह मुख्य रूप से सीधे त्वचा के संपर्क में आने या दूषित वस्तुओं (जैसे तौलिए, कपड़े) के माध्यम से फैलता है। इस कवक की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह अधिकांश एंटिफंगल दवाओं, विशेष रूप से टेरबिनाफिन, के प्रति प्रतिरोधी हो गया है।
- टेरबिनाफिन आमतौर पर इस तरह के संक्रमणों के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली पहली पंक्ति की दवा होती है। इस प्रतिरोध के कारण, टी. इंडोटिनिया के कारण होने वाले संक्रमणों का इलाज करना बहुत मुश्किल हो गया है, जिससे वैश्विक स्वास्थ्य पर एक गंभीर खतरा मंडरा रहा है।

उपचार के विकल्प:

- ऐतिहासिक रूप से, डर्मेटोफाइट संक्रमण के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पहला उपचार ग्रिसोफुल्विन था, जिसे 1958 में पेश किया गया था। ग्रिसोफुल्विन माइक्रोट्यूब्यूल को बाधित करके फंगल कोशिका विभाजन में हस्तक्षेप कर काम करता है।
- डर्मेटोफाइट संक्रमण के लिए आधुनिक उपचार विकल्पों में

एंटिफंगल एजेंट जैसे टेरबिनाफिन (एक एलीलामाइन) और इट्राकोनाजोल (एक ट्राइजोल) शामिल हैं। ये दवाएं आमतौर पर मौखिक चिकित्सा के लिए उपयोग की जाती हैं, हालांकि टी. इंडोटिनिया जैसे रोगजनकों का प्रतिरोध प्रभावी उपचार के लिए एक चुनौती पेश करता है।

जंगल की आग को बुझाने में गुलाबी अग्निशमन द्रव्य का उपयोग

चर्चा में क्यों?

हाल ही में दक्षिणी कैलिफोर्निया में लगी विनाशकारी जंगल की आग पर काबू पाने के लिए फॉस-चेक सहित गुलाबी अग्निशमन द्रव्य का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जा रहा है।

गुलाबी अग्निशमन द्रव्य क्या है?

- गुलाबी अग्निशमन द्रव्य एक रासायनिक मिश्रण है जिसका उपयोग आग को धीमा करने के लिए किया जाता है, विशेष रूप से जंगल की आग बुझाने के प्रयासों में। संयुक्त राज्य अमेरिका में उपयोग किए जाने वाले अग्निशमन द्रव्य का सबसे आम ब्रांड फॉस-चेक है।
  - » **संरचना:** फॉस-चेक मुख्य रूप से तीन घटकों से बना है:
  - » **पानी:** मिश्रण में प्राथमिक विलायक।
  - » **उर्वरक:** इसमें अमोनियम लवण होते हैं, जैसे डायमोनियम फॉस्फेट ([NH4]2HPO4 और अमोनियम पॉलीफॉस्फेट ((NH4PO3)n)।
- **रंजक (Pigment):** गुलाबी रंग इसलिए डाला जाता है ताकि दमकलकर्मी आसानी से पहचान सकें कि उन्होंने आग बुझाने के लिए कहाँ-कहाँ दवा का छिड़काव किया है। इससे उन्हें आग को रोकने के लिए एक सुरक्षित सीमा बनाना आसान हो जाता है।
- फॉस-चेक में मौजूद लवण, विशेष रूप से अमोनियम पॉलीफॉस्फेट, पानी की तुलना में अधिक समय तक रहने के लिए डिजाइन किए गए हैं, क्योंकि वे आसानी से वाष्पित नहीं होते हैं। इससे आग और ज्यादा फैलने से रुक जाती है और सुरक्षा बढ़ जाती है।

यह कैसे काम करता है?

- अग्निशमन द्रव्य को आग के आगे छिड़का जाता है ताकि पेड़-पौधों पर एक सुरक्षात्मक परत बन जाए। यह परत आग को फैलने से रोकती है क्योंकि यह हवा में मौजूद ऑक्सीजन को आग तक पहुंचने से रोकती है। जब यह द्रव्य पौधों के रेशों के साथ मिलता है तो यह आग की गर्मी को सोख लेता है और पौधों को जलने से बचाता है

क्या हैं चिंताएं?

व्यापक उपयोग के बावजूद, फॉस-चेक के अग्निशमन द्रव्य के रूप में उपयोग के संबंध में कई चिंताएं हैं:

- **विषाक्त धातु:** 2024 में एक अध्ययन से पता चला है कि फॉस-चेक में हानिकारक भारी धातुएं, जिनमें क्रोमियम और कैडमियम शामिल हैं। ये धातुएं गुर्दा और यकृत रोग जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, 2009 और 2021 के बीच 400 टन से अधिक भारी धातुओं के उत्सर्जन से पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि हुई है।
- **जल प्रदूषण:** अग्निशमन द्रव्यों से निकलने वाली विषाक्त धातुएं स्थानीय जलमार्गों में प्रवेश कर सकती हैं, जिससे नदियों और धाराओं में प्रदूषण होता है। यह जलीय जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है, संभावित रूप से पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान पहुंचाता है।
- **अग्निशमन द्रव्यों की प्रभावशीलता:** फॉस-चेक जैसे हवाई अग्निशमन द्रव्यों की प्रभावशीलता ढलान, ईंधन के प्रकार, भू-भाग और मौसम जैसी विभिन्न परिस्थितियों पर निर्भर करती है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम में हो रहे बदलावों ने अग्निशमन कार्यों को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है

विनाशकारी जंगल की आग के कारण:

दक्षिणी कैलिफोर्निया में लगातार और विनाशकारी वनाग्नि कई कारकों से प्रभावित होती है:

- **सूखा:** इस क्षेत्र में लंबे समय से सूखा पड़ रहा है, हाल के महीनों में अधिक वर्षा नहीं हुई है, जिससे जंगल की आग शुरू होने और तेजी से फैलने के लिए सही वातावरण बन गया है।
- **सांता अना हवाएं:** गर्म और शुष्क हवाएं, जिन्हें सांता अना हवाएं के रूप में जाना जाता है, इस क्षेत्र में सामान्य हैं और आग के प्रज्वलन और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।
- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन जंगल की आग की आवृत्ति, तीव्रता और मौसम की लंबाई को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। बढ़ते तापमान, लंबे समय तक सूखा और बदलते मौसम के पैटर्न सभी कैलिफोर्निया में अधिक विनाशकारी जंगल की आग में योगदान दे रहे हैं।

एनीमियाफोन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में कॉर्नेल विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित, एनीमियाफोन एक अभिनव तकनीक है जो आयरन की कमी का सटीक, त्वरित और किफायती मूल्यांकन करने में सक्षम है। यह तकनीक भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) को हस्तांतरित कर दी गई है जिससे इसे पूरे देश में एनीमिया, महिला स्वास्थ्य और मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए अपने कार्यक्रमों में एकीकृत किया जा सके।

एनीमियाफोन के बारे में:

- एनीमियाफोन को आयरन की कमी, जोकि एनीमिया का एक प्रमुख कारण है, के निदान के लिए एक त्वरित, सटीक और लागत-प्रभावी तरीका प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- यह तकनीक तेजी से जांच और निदान में सहायता करेगी, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां स्वास्थ्य सेवा संसाधन सीमित हो सकते हैं। भारत में आयरन की कमी से होने वाला एनीमिया एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, जो 50% से 70% गर्भवती महिलाओं को प्रभावित करती है।

एनीमियाफोन कैसे काम करता है?

- इस परीक्षण में, व्यक्ति की उंगली से एक छोटी सी रक्त की बूंद ली जाती है। इस रक्त की बूंद को एक विशेष प्रकार की टेस्ट स्ट्रिप पर लगाया जाता है। यह टेस्ट स्ट्रिप कोविड-19 परीक्षण वाली स्ट्रिप के समान होती है।
- कुछ ही मिनटों में, परिणाम उपलब्ध हो जाते हैं और इन्हें मोबाइल फोन, वायरलेस टैबलेट या कंप्यूटर के माध्यम से एक क्लिनिकल डेटाबेस में अपलोड किया जा सकता है। इस तरह, सभी परीक्षण परिणामों का एक केंद्रीय रिकॉर्ड रखा जा सकता है, जिससे स्वास्थ्य कर्मियों को रोगियों की देखभाल करने में मदद मिलती है।

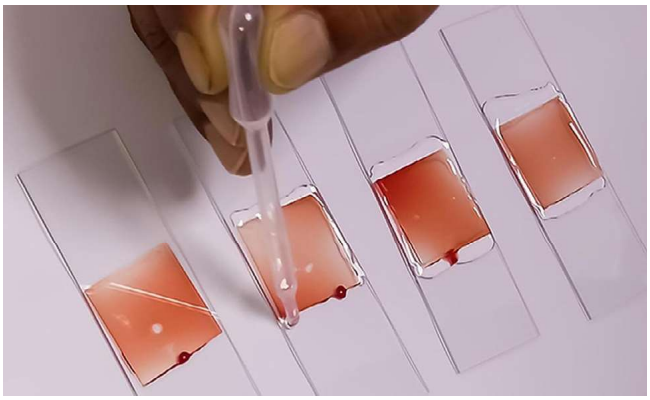

एनीमियाफोन के प्रमुख लाभ:

एनीमियाफोन कई लाभ प्रदान करता है जोकि इसे भारत में एनीमिया के खिलाफ लड़ाई में एक अमूल्य उपकरण बनाते हैं:

- **सस्ती:** यह पारंपरिक प्रयोगशाला परीक्षणों का एक कम लागत वाला विकल्प है। पोर्टेबिलिटी: डिवाइस छोटा है, जिससे इसे दूरस्थ क्षेत्रों में ले जाना और उपयोग करना आसान हो जाता है।
- **त्वरित परिणाम:** यह मिनटों के भीतर परिणाम प्रदान करता है, जिससे तत्काल कार्रवाई सक्षम हो जाती है।
- **वायरलेस एकीकरण:** परिणाम सीधे एक क्लिनिकल डेटाबेस में अपलोड किए जाते हैं, जिससे मैन्युअल डेटा एंट्री की आवश्यकता कम हो जाती है।
- **उपयोग में आसानी:** डिवाइस संचालित करने में आसान है और स्वास्थ्य कर्मियों को इसका उपयोग करने के लिए व्यापक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है।

महत्व:

- भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में एनीमियाफोन के एकीकरण से समय पर निदान तक पहुंच बढ़ेगी और विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों में आयरन की कमी से होने वाले एनीमिया से निपटने में मदद मिलेगी, जिससे बेहतर मातृ और शिशु स्वास्थ्य परिणाम प्राप्त होंगे।

एनीमिया के बारे में:

- एनीमिया एक ऐसी स्थिति है जिसमें रक्त में स्वस्थ लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या कम हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप शरीर के विभिन्न अंगों को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल पाती। इसके सामान्य लक्षणों में थकान, कमजोरी और सांस लेने में तकलीफ शामिल हैं। एनीमिया की गंभीरता हल्के से लेकर गंभीर तक हो सकती है और कुछ मामलों में यह जीवन के लिए खतरा भी साबित हो सकता है। इसके कई कारण हो सकते हैं और इसका उपचार अंतर्निहित कारण पर निर्भर करता है।

भारत में आयरन की कमी की समस्या:

- विशेष रूप से आयरन की कमी से होने वाला एनीमिया रोग, भारत में एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) के अनुसार, लगभग 59% महिलाएं और 6-59 महीने की आयु के 47% बच्चे एनीमिया से पीड़ित हैं।
- इस स्थिति के गंभीर परिणाम होते हैं, जिनमें थकान, सांस लेने में तकलीफ और चरम मामलों में अंग विफलता, प्रसव के दौरान जटिलताएं और यहां तक कि मृत्यु भी शामिल है। भारत में उच्च मातृ और शिशु मृत्यु दर एनीमिया से निकटता से जुड़ी हुई है, जिससे यह देश के लिए एक प्राथमिक स्वास्थ्य चिंता का विषय बन गया है।

जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्र सरकार ने जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट (जीआईपी) के पूरा होने की घोषणा की, जोकि भारत के जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र में एक प्रमुख विकास है। इस परियोजना ने 10,000 जीनोम का एक अनुक्रमण डेटाबेस का अनावरण किया, जोकि भारत की विशाल आनुवंशिक विविधता को प्रदर्शित करता है। भारतीय जैव डेटा केंद्र (आईबीडीसी) में संचित यह विशाल आनुवंशिक डेटाबेस, स्वास्थ्य सेवा, जैव चिकित्सा अनुसंधान और सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट के बारे में :

- जनवरी 2020 में लॉन्च किया गया, जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट का

उद्देश्य भारत की आबादी की एक व्यापक आनुवंशिक सूची तैयार करना था। विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों के 10,000 व्यक्तियों के जीनोम का अनुक्रमण करके, इसने भारतीय उपमहाद्वीप की विशिष्ट आनुवंशिक विविधताओं को उजागर करने वाला एक डेटाबेस बनाया है।

- इस पहल को 20 से अधिक संस्थानों के एक संघ द्वारा निष्पादित किया गया था, जिनमें शामिल हैं:
  - » भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली, मद्रास और जोधपुर
  - » भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बेंगलुरु
  - » वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)
  - » जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान और नवाचार केंद्र (बीआरआईसी)
- यह सहयोग भारत के मजबूत शोध पारिस्थितिकी तंत्र को रेखांकित करता है, जो बड़े पैमाने पर, वैज्ञानिक परियोजनाओं को संभालने में सक्षम है।

जीनोम अनुक्रमण की भूमिका:

- जीनोम अनुक्रमण, जोकि किसी जीव के पूर्ण आनुवंशिक संयोजन को डिकोड करता है, परियोजना के केंद्र में है। यह उन आनुवंशिक भिन्नताओं की पहचान करता है जो लक्षणों, रोग संवेदनशीलता और अनुकूलन को प्रभावित करती हैं, जिससे यह परिशुद्ध चिकित्सा और जनसंख्या-विशिष्ट अनुसंधान के लिए आधारशिला बन जाता है।

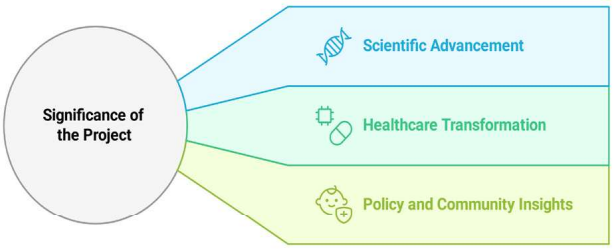

परियोजना का महत्व

- **वैज्ञानिक प्रगति:**
  - » शोधकर्ताओं को स्वास्थ्य और रोग पर आनुवंशिक प्रभावों का पता लगाने के लिए एक मूल्यवान डेटासेट प्रदान करता है।
  - » भारत के विविध जनसांख्यिकीय समूहों की आनुवंशिक संरचना को समझने के लिए एक आधार स्थापित करता है।
- **स्वास्थ्य परिवर्तन:**
  - » भारतीय आनुवंशिक प्रोफाइलों के अनुरूप परिशुद्ध चिकित्सा के विकास की सुविधा प्रदान करता है।
  - » आनुवंशिक और संक्रामक रोगों के उपचार में प्रगति का समर्थन करता है।
- **नीति और सामुदायिक अंतर्दृष्टि:**
  - » साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण के लिए डेटा प्रदान करता है।
  - » विभिन्न समुदायों की जीवन शैली और अनुकूलन को समझने में वृद्धि करता है, लक्षित स्वास्थ्य हस्तक्षेपों में सहायता करता है।

अनुप्रयोग और भविष्य की क्षमता:

- जीआईपी भारत को जीनोमिक्स और जैव प्रौद्योगिकी में एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करता है। इसके दीर्घकालिक अनुप्रयोगों में शामिल हैं:
  - » **चिकित्सा:** आनुवंशिक प्रोफाइलों के आधार पर अनुकूलित उपचार।
  - » **दवा विकास:** नए दवा लक्ष्यों और उपचारों की पहचान।
  - » **सार्वजनिक स्वास्थ्य:** आनुवंशिक विकारों सहित रोगों से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने के लिए अंतर्दृष्टि।
- इसके अतिरिक्त, यह परियोजना जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के बढ़ते एकीकरण के साथ संरेखित है, जोकि अभिनव, डेटा-संचालित समाधानों के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है।

निष्कर्ष:

जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट एक अभूतपूर्व पहल है जोकि समाज के लाभ के लिए विज्ञान का उपयोग करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। एक मजबूत आनुवंशिक डेटाबेस बनाकर, यह परियोजना न केवल भारत की जैव प्रौद्योगिकी क्षमताओं को बढ़ाती है बल्कि स्वास्थ्य सेवा, अनुसंधान और नीति निर्माण में महत्वपूर्ण सुधारों की नींव भी रखती है। यह परियोजना एक समावेशी और वैज्ञानिक रूप से उन्नत राष्ट्र के निर्माण में एक परिवर्तनकारी कदम का प्रतीक है।

नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में नई विधि

चर्चा में क्यों?

हाल ही में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लांट जीनोम रिसर्च (NIPGR) द्वारा किए गए इस अध्ययन से पता चला है कि पौधों में नाइट्रिक ऑक्साइड (NO) के स्तर को कम करने से नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में काफी सुधार हो सकता है, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ाने और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में मदद मिलेगी।

नाइट्रोजन उपयोग दक्षता (NUE):

- **कृषि में नाइट्रोजन की भूमिका:** नाइट्रोजन पौधों के विकास और फसल उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। कुशल नाइट्रोजन उपयोग फसल उत्पादकता बढ़ाने और मृदा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **पारंपरिक विधियों की चुनौतियाँ:** वर्तमान कृषि पद्धतियाँ मुख्य रूप से अकार्बनिक नाइट्रोजन उर्वरकों पर निर्भर करती हैं, जिन्हें अलग-अलग हिस्सों में या धीरे-धीरे मिट्टी में घुलने

वाले रूप में दिया जाता है। हालांकि, ये विधियाँ किसानों के लिए महंगी हैं और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती हैं। ये उर्वरक नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx) जैसी हानिकारक गैसें उत्पन्न करते हैं, जो वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन में योगदान करती हैं। साथ ही, इन उर्वरकों के उत्पादन से भी ग्रीनहाउस गैसें निकलती हैं जो जलवायु परिवर्तन को और बढ़ाती हैं।

- **सतत समाधानों की आवश्यकता:** नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में सुधार करने और सिंथेटिक नाइट्रोजन उर्वरकों पर निर्भरता को कम करने के लिए अधिक टिकाऊ तरीकों की आवश्यकता है।

अनुसंधान के बारे में:

- शोधकर्ताओं ने पाया है कि पौधों में नाइट्रिक ऑक्साइड (NO) की मात्रा को नियंत्रित करके हम फसलों की नाइट्रोजन उपयोग क्षमता को काफी बढ़ा सकते हैं। NO, पौधों में नाइट्रेट ट्रांसपोर्टर्स (NRT2.1 और NRT2.4 जैसे) नामक प्रोटीनों को नियंत्रित करता है जो मिट्टी से नाइट्रोजन को अवशोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- शोधकर्ताओं ने पौधों पर विभिन्न रसायनों का प्रयोग करके देखा कि NO की मात्रा को कम या बढ़ाकर नाइट्रोजन अवशोषण को कैसे प्रभावित किया जा सकता है। उन्होंने पाया कि फाइटोग्लोबिन नामक एक प्राकृतिक पदार्थ, जो NO को कम करता है, का उपयोग करके नाइट्रेट ट्रांसपोर्टर्स की गतिविधि को बढ़ाया जा सकता है, जिससे पौधे मिट्टी से अधिक नाइट्रोजन सोख पाते हैं।

परिणाम:

- शोधकर्ताओं ने पाया है कि पौधों में नाइट्रिक ऑक्साइड (NO) की मात्रा कम करने पर वे मिट्टी से अधिक नाइट्रोजन सोखने लगते हैं। यह खोज कृषि क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। यह फसल उत्पादन को टिकाऊ तरीके से बढ़ाने के लिए एक संभावित समाधान प्रदान करता है।
- सिंथेटिक उर्वरकों की उच्च मात्रा पर निर्भर करने वाली पारंपरिक विधियों के विपरीत, यह नई विधि पौधों में NO के स्तर को आनुवंशिक और औषधीय रूप से संशोधित करने पर केंद्रित है। यह उर्वरकों की आवश्यकता को कम करते हुए नाइट्रोजन अवशोषण को बढ़ाने का एक टिकाऊ तरीका प्रदान करता है, इस प्रकार पर्यावरणीय क्षति को कम करता है।

इस नवाचार के संभावित लाभ:

- **सतत कृषि:** नई विधि सिंथेटिक नाइट्रोजन उर्वरकों पर निर्भरता को कम करने में मदद कर सकती है, जो फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए एक अधिक पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण प्रदान करती है।
- **किसानों के लिए लागत-प्रभावशीलता:** एनयूई में सुधार करके, यह विधि किसानों के लिए परिचालन लागत को कम कर सकती है, जिससे यह दुनिया भर में कृषि क्षेत्रों के लिए आर्थिक रूप से लाभदायक हो सकती है।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** नाइट्रोजन उर्वरकों के उपयोग को कम करने से अत्यधिक NOx उत्सर्जन और कृषि प्रथाओं के समग्र पारिस्थितिक पदचिह्न से जुड़ी पर्यावरणीय समस्याओं को कम करने में मदद मिल सकती है।
- **बेहतर फसल उत्पादकता:** नाइट्रोजन अवशोषण को कुशलतापूर्वक बढ़ाने की क्षमता विशेष रूप से कम नाइट्रोजन वाले वातावरण में पौधों के विकास को बढ़ावा दे सकती है, इस प्रकार फसल उत्पादन को टिकाऊ तरीके से बढ़ावा दे सकती है।

CROPS मिशन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। इसरो ने अंतरिक्ष में सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण की स्थितियों में लोबिया के बीजों को सफलतापूर्वक अंकुरित कर दिया है। यह प्रयोग, इसरो के CROPS मिशन (ऑर्बिटल प्लांट स्टडीज के लिए कॉम्पैक्ट रिसर्च मॉड्यूल) का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य अंतरिक्ष में पौधों के विकास को समझना है। यह भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसरो के CROPS मिशन के बारे में:

- विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (वीएसएससी) द्वारा विकसित क्रॉप्स पेलोड को अंतरिक्षीय वातावरण में पौधों को उगाने और बनाए रखने के लिए इसरो की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया है।

अंतरिक्ष में सफल अंकुरण:

- **प्रक्षेपण:** CROPS प्रयोग 30 दिसंबर, 2024 को इसरो के PSLV-C60 मिशन के जरिए प्रक्षेपित किया गया।
- **प्लेटफार्म:** लोबिया के बीजों को POEM-4 प्लेटफार्म पर रखा गया, जिससे PSLV रॉकेट के चौथे चरण को वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए पुनः उपयोग में लाया जा सका।
- **परिणाम:** चार दिनों के भीतर, आठ लोबिया के बीजों में पत्तियाँ उग आई, जिससे अंतरिक्ष में पौधो की वृद्धि की संभावना प्रदर्शित हुई।

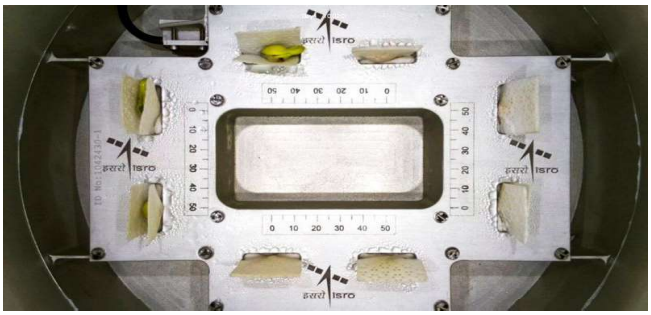

क्रॉप्स मिशन का महत्व:

- **सूक्ष्मगुरुत्व प्रभावों को समझना:** अंतरिक्ष के विशिष्ट

वातावरण में पौधे किस प्रकार विकसित होते हैं, इसकी जानकारी प्रदान करता है।

- **गहन अंतरिक्ष अन्वेषण में सहायता:** इस प्रयोग से प्राप्त जानकारी मंगल जैसे दीर्घकालिक मिशनों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे स्थायी जीवन समर्थन प्रणालियां विकसित होंगी।
- **खगोल वनस्पति विज्ञान में योगदान:** अंतरिक्ष में भोजन उगाने पर वैश्विक अनुसंधान को बढ़ावा देना।

भविष्य के अनुप्रयोग:

- **अंतरिक्ष में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना:** यह प्रयोग टिकाऊ कृषि प्रणालियों का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, जिससे लंबे मिशनों पर अंतरिक्ष यात्रियों के लिए भोजन सुनिश्चित हो सकेगा।
- **गहरे अंतरिक्ष मिशन की तैयारी:** सीआरओपीएस जैसे अनुसंधान मंगल और उससे आगे के मिशनों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

POEM–4 के बारे में:

- यह एक अंतरिक्ष अनुसंधान मंच है जिसका उपयोग सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण स्थितियों में प्रयोग करने के लिए किया जाता है। यह मंच PSLV रॉकेट के चौथे चरण को पुन: उपयोग करके बनाया गया है।
- यह इसरो के स्पैडेक्स मिशन का हिस्सा है और POEM (PSLV ऑर्बिटल एक्सपेरीमेंट मॉड्यूल) मंचों की श्रृंखला का चौथा मंच है। इसकी क्षमता POEM-3 मंच से तीन गुना अधिक है। POEM–4 प्लेटफॉर्म पर कुछ पेलोड इस प्रकार हैं:
  - » **वॉकिंग रोबोटिक आर्म:** एक रोबोट मैनिपुलेटर जोकि निरीक्षण और सर्विसिंग के लिए इंचवर्म जैसी गति में चल सकता है।
  - » **मलबा कैप्चर रोबोट मैनिपुलेटर:** वीएसएससी का एक नवाचार जोकि अंतरिक्ष सफाई में मदद करने के लिए मलबे को पकड़ सकता है और उसे हटा सकता है।
  - » **ग्रेडिएंट कंट्रोल रिएक्शन व्हील असेंबली (RWA):** यह एक उपकरण है जो POEM प्लेटफॉर्म को स्थिर रखने में मदद करता है। यह विशेष तरह के पहियों का उपयोग करता है।

SpaDeX मिशन क्या है?

- 30 दिसंबर, 2024 को इसरो के PSLV-C60 द्वारा प्रक्षेपित SpaDeX मिशन का लक्ष्य भारत के लिए अंतरिक्ष में दो उपग्रहों को जोड़ने (डॉकिंग) की पहली उपलब्धि हासिल करना है। इस मिशन में SDX01 (चेजर) और SDX02 (टारगेट) नामक दो छोटे उपग्रह शामिल हैं।
- 7 जनवरी, 2025 को इन दोनों उपग्रहों को आपस में जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। यदि यह प्रयास सफल रहा, तो भारत अंतरिक्ष डॉकिंग तकनीक में महारत हासिल करने वाले चुनिंदा देशों में शामिल हो जाएगा।
- यह तकनीक भविष्य में अंतरिक्ष स्टेशन बनाने, अन्य ग्रहों पर मिशन भेजने और अंतरिक्ष में ही यानों में ईंधन भरने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। SpaDeX मिशन की सफलता भारत की अंतरिक्ष क्षमताओं में एक बड़ा मील का पत्थर साबित होगी और यह भविष्य में भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक मजबूत आधार तैयार करेगा।

एचएमपीवी प्रकोप

चर्चा में क्यों?

हाल ही में चीन में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (HMPV) के प्रकोप की खबरों के मद्देनजर, भारत सरकार ने सतर्कता बरतनी शुरू कर दी है। चीन में इस वायरस ने 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को अधिक प्रभावित किया है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार भारत में भी HMPV के कुछ मामले सामने आये हैं।

चीन में प्रकोप:

- चीन में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (HMPV) के मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, विशेषकर बच्चों में। यह वायरस श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है और सर्दी-जुकाम जैसे लक्षण पैदा करता है।

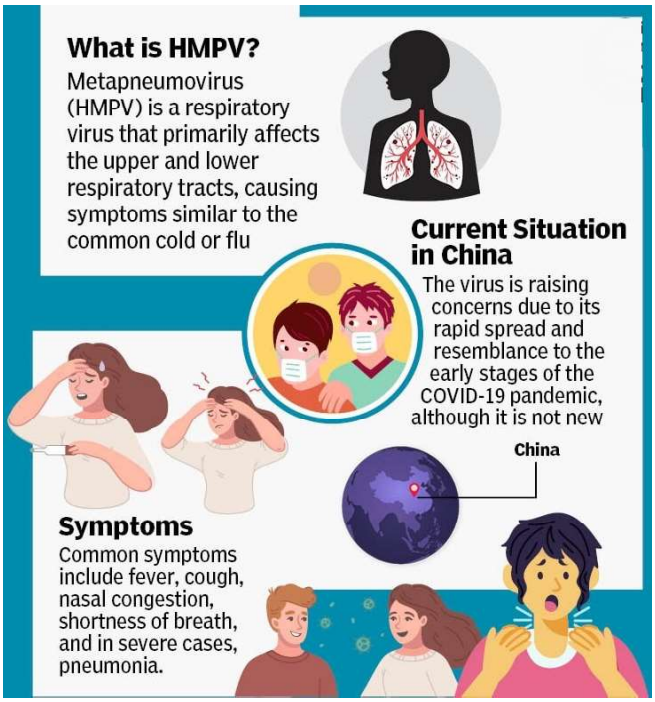

एचएमपीवी के बारे में:

- HMPV पैरामाइक्सोविरिडे परिवार का एक सदस्य है, जिसमें रेस्पिरेटरी सिंसिटियल वायरस (RSV) भी शामिल है। यह वायरस ऊपरी और निचले श्वसन तंत्र को संक्रमित करता है और सभी

आयु वर्गों के लोगों को प्रभावित कर सकता है। हालांकि, शिशुओं, बुजुर्गों और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले व्यक्तियों में यह अधिक गंभीर हो सकता है। HMPV के सामान्य लक्षणों में बुखार, खांसी, नाक बहना और सांस लेने में कठिनाई शामिल हैं।

- यह वायरस संक्रमित व्यक्ति के खांसने या छींकने से निकलने वाली छोटी बूंदों के माध्यम से या संक्रमित सतहों को छूने और फिर मुंह, नाक या आंखों को छूने से फैलता है। इस वायरस का समय आमतौर पर तीन से छह दिनों का होता है और बीमारी की अवधि संक्रमण की गंभीरता पर निर्भर करती है।

इन्फ्लूएंजा, आरएसवी और सार्स–सीओवी–2 के साथ एचएमपीवी की तुलनाः

वायरस परिवार

- एचएमपीवी: पैरामाइक्सोविरिडे
- इन्फ्लूएंजा: ऑर्थोमिक्सोविरिडे
- आरएसवी: पैरामाइक्सोविरिडे
- SARS-CoV-2: कोरोनाविरिडे

हस्तांतरण

- **एचएमपीवी:** हवा में उड़ने वाली बूंदें, निकट संपर्क
- **इन्फ्लूएंजा:** वायुजनित बूंदें, निकट संपर्क
- **आरएसवी:** हवा में उड़ने वाली बूंदें, निकट संपर्क
- **SARS-CoV-2:** हवा में मौजूद बूंदें, निकट संपर्क, फोमाइट्स

लक्षण

- **एचएमपीवी:** खांसी, घरघराहट, बुखार, नाक बंद होना, सांस लेने में कठिनाई
- **इन्फ्लूएंजा:** बुखार, खांसी, गले में खराश, थकान, शरीर में दर्द
- आरएसवी: खांसी, घरघराहट, सांस लेने में तकलीफ, बुखार
- **SARS-CoV-2:** बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ, थकान, स्वाद/गंध का न महसूस होना
- **उद्भवन (incubation):** उद्भवन का तात्पर्य उस समय से है जब लक्षणों के प्रकट होने से पहले ,रोगाणु शरीर के अंदर बढ़ रहे होते हैं।
- **एचएमपीवी:** 3 से 6 दिन
- **इन्फ्लूएंजा:** 1 से 4 दिन
- **आरएसवी:** 4 से 6 दिन
- **SARS-CoV-2:** 2 से 14 दिन (औसत5–6 दिन)

मौसम:

- **एचएमपीवी:** सर्दी और वसंत के महीने
- **इन्फ्लूएंजा:** सर्दियों के महीने
- **आरएसवी:** सर्दियों के महीने
- **SARS-CoV-2:** वर्ष भर, क्षेत्र के आधार पर

वैक्सीन की उपलब्धता:

- **एचएमपीवी:** कोई टीका उपलब्ध नहीं है।
- **इन्फ्लूएंजा:** फ्लू वैक्सीन उपलब्ध हैं।
- **आरएसवी:** कोई टीका उपलब्ध नहीं है।
- **SARS-CoV-2:** उपलब्ध टीके (जैसे, फाइजर, मॉडर्ना)

इलाज:

- **एचएमपीवी:** सहायक देखभाल (ऑक्सीजन, एंटीवायरल सामान्य नहीं)
- **इन्फ्लूएंजा:** एंटीवायरल दवाएं (जैसे ओसेल्टामिविर), सहायक देखभाल
- **आरएसवी:** सहायक देखभाल, ब्रोन्कोडायलेटर्स, स्टेरॉयड
- **SARS-CoV-2:** एंटीवायरल उपचार (जैसे, रेमडेसिविर), मोनोक्लोनल एंटीबॉडी, सहायक देखभाल

एच. पाइलोरी

चर्चा में क्यों?

हाल ही में शोधकर्ताओं ने CRISPR तकनीक का उपयोग करते हुए हेलिकोबैक्टर पाइलोरी (H- pylori) नामक जीवाणु और इसके एंटीबायोटिक प्रतिरोध को पहचानने की एक नई विधि विकसित की है। यह नई विधि हेलिकोबैक्टर पाइलोरी संक्रमण का तेजी से और सटीक निदान करने में सक्षम है।

हेलिकोबैक्टर पाइलोरी क्या है?

- हेलिकोबैक्टर पाइलोरी एक जीवाणु है जो विश्व की लगभग 43% आबादी को संक्रमित करता है। यह जीवाणु पेट की आंतरिक परत में रहता है और लंबे समय तक संक्रमण का कारण बन सकता है।
- H- pylori संक्रमण से पेप्टिक अल्सर, गैस्ट्राइटिस, अपच और गंभीर मामलों में पेट के कैंसर जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए, इस संक्रमण का समय पर पता लगाना और उपचार करना बेहद जरूरी है।

उत्परिवर्तनों का पता लगाना क्यों महत्वपूर्ण है?

- एच. पाइलोरी के 23S राइबोसोमल आरएनए जीन में उत्परिवर्तन के कारण क्लैरिथ्रोमाइसिन के प्रति प्रतिरोध विकसित हो जाता है, जिससे एंटीबायोटिक चिकित्सा की प्रभावकारिता कम हो जाती है। उत्परिवर्तनों का पता लगाकर, लक्षित एंटीबायोटिक चिकित्सा की योजना बनाई जा सकती है, जिससे उपचार परिणामों में सुधार होता है और जटिलताओं का जोखिम कम होता है।

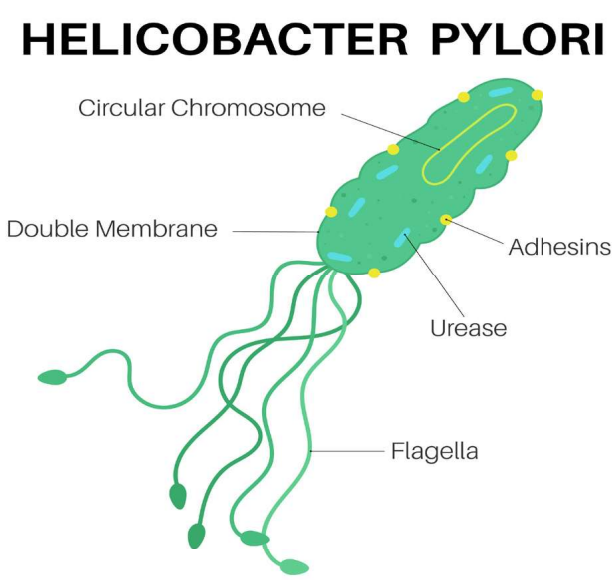

नई निदान पद्धति कैसे काम करती है?

- हाल ही में विकसित तकनीक, हेलिकोबैक्टर पाइलोरी (H-pylori) जीवाणु संक्रमण का सटीक और त्वरित निदान करने में सक्षम है। इस तकनीक में en31-FnCas9 नामक एक CRISPR प्रोटीन का उपयोग किया जाता है, जोकि हेलिकोबैक्टर पाइलोरी में एंटीबायोटिक प्रतिरोध उत्पन्न करने वाले विशिष्ट उत्परिवर्तनों को लक्षित करता है।
- इस CRISPR प्रोटीन को पार्श्व प्रवाह-आधारित परीक्षण (FELUDA) तकनीक के साथ जोड़कर एक ऐसा परीक्षण विकसित किया गया है जो न केवल तेजी से परिणाम देता है बल्कि इसे समझना भी आसान है।

दूरदराज के क्षेत्रों में संभावित प्रभाव:

- यह लागत प्रभावी, आसान निदान पद्धति ग्रामीण या वंचित क्षेत्रों में उपयोग के लिए आदर्श है, जहाँ उन्नत निदान उपकरणों तक पहुँच सीमित है। त्वरित, सटीक परिणाम प्रदान करके, यह स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों को उपचार के बारे में सूचित निर्णय लेने, एच. पाइलोरी संक्रमण वाले रोगियों के लिए परिणामों में सुधार करने और गैस्ट्रिक कैंसर जैसी जटिलताओं को रोकने में मदद कर सकता है।

डीपसीक एआई

चर्चा में क्यों?

हाल ही में डीपसीक, एक चीनी एआई स्टार्टअप है, जिसने अपनी उच्च प्रदर्शन वाली एआई मॉडल, डीपसीक-वी3 और डीपसीक-आर1 के साथ वैश्विक पहचान प्राप्त की है। ये मॉडल अब चैटजीपीटी से भी अधिक डाउनलोड हो चुके हैं। इसकी तीव्र सफलता के परिणामस्वरूप नास्डैक स्टॉक मार्केट में 3% की गिरावट आई, जो पिछले दो वर्षों में इसका सबसे खराब प्रदर्शन था।

- ओपनएआई और गूगल जैसी बड़ी कंपनियों ने एआई विकास में कई करोड़ डॉलर का निवेश किया है, लेकिन डीपसीक ने काफी कम निवेश में यह सफलता प्राप्त की है, जिससे यह सवाल उठता है कि क्या एआई के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता है।

डीपसीक क्या है?

- डीपसीक की स्थापना लियांग वेनफेंग ने की थी, जो हांगझोउ, चीन में स्थित हाई फ्लायर नामक हेज फंड के सीईओ हैं। इसे पहले हाई फ्लायर एआई के तहत एक शोध इकाई के रूप में 2019 में स्थापित किया गया था, जिसके बाद यह एआई उद्योग में एक प्रमुख दावेदार के रूप में उभरा।
- यह उच्च प्रदर्शन वाले ओपन-सोर्स एआई मॉडल विकसित करने के लिए प्रसिद्ध है, जो कम लागत में अधिक प्रभावी होते हैं और इस प्रकार एआई को व्यवसायों और डेवलपर्स के लिए ज्यादा सुलभ बनाते हैं।

डीपसीक क्यों महत्वपूर्ण है?

- डीपसीक की प्रगति सीधे तौर पर यूएस-आधारित एआई दिग्गजों, जैसे ओपनएआई, मेटा और गूगल, की प्रभुत्व को चुनौती देता है। यह कम लागत में उच्च-प्रदर्शन एआई प्रदान करके इस विश्वास को तोड़ता है कि एआई की प्रगति के लिए विशाल निवेश की आवश्यकता है।

डीपसीक एआई मॉडल का प्रदर्शन

- डीपसीक-वी3, जो मिक्सचर-ऑफ-एक्सपर्ट्स आर्किटेक्चर पर आधारित है, ने विभिन्न परीक्षणों में GPT-4 और क्लॉड 3.5 सोननेट को पीछे छोड़ दिया है।
- डीपसीक-आर1, एक किफायती लेकिन शक्तिशाली मॉडल है, जो गणित, कोडिंग और सामान्य ज्ञान जैसे क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा करता है और महंगे एआई सिस्टम्स की आवश्यकता को चुनौती देता है।

किफायती एआई विकास:

डीपसीक ने एआई विकास की लागत को कुछ अभिनव रणनीतियों के जरिए घटाया है:

- **पुराने जीपीयू का उपयोग:** महंगे और अत्याधुनिक चिप्स की बजाय, डीपसीक एनवीआईडीआईए एच800 जीपीयू का उपयोग करता है, जिससे हार्डवेयर की लागत कम होती है।
- **अनुकूलित प्रशिक्षण तकनीकें:** इसका सहायक-हानि-मुक्त लोड संतुलन तरीका (Auxiliary-Loss-Free Load Balancing) एआई मॉडलों को न्यूनतम संसाधनों के साथ प्रशिक्षित करने में मदद करता है, जिससे गुणवत्ता में कोई समझौता किए बिना कार्यक्षमता बनाए रखी जाती है।

व्यापक प्रभाव:

- डीपसीक की सफलता एआई उद्योग को फिर से आकार

दे सकती है, यह साबित करते हुए कि उच्च प्रदर्शन वाली एआई को कम लागत में विकसित किया जा सकता है। इसके ओपन-सोर्स दृष्टिकोण से एआई को छोटे व्यवसायों, शोधकर्ताओं और डेवलपर्स के लिए सुलभ बना दिया गया है, जिनके पास प्रमुख कंपनियों के वित्तीय समर्थन की कमी होती है।

भविष्य में एआई विकास पर प्रभाव:

- **उद्योग मानक:** डीपसीक का प्रभावी और किफायती मॉडल विकास एआई कंपनियों को अधिक स्थिर निवेश रणनीतियों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकता है।
- **निवेश प्रवृत्तियाँ:** उच्च लागत बनाम कम लागत वाले एआई विकास पर बहस तीव्र हो सकती है, जो एआई क्षेत्र में फंडिंग प्राथमिकताओं को प्रभावित करेगा।
- **वैश्विक एआई प्रतिस्पर्धा:** डीपसीक का उदय चीन की एआई स्थिति को मजबूत करता है, जिससे पश्चिमी तकनीकी कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा बढ़ती है।

आगे की राह:

डीपसीक वैश्विक एआई परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाने के लिए तैयार है। यह न्यूनतम संसाधनों का उपयोग करते हुए एआई विकास के नए मानक स्थापित कर रहा है, यह साबित करते हुए कि किफायती एआई भी उच्चतम स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकता है। इसके बढ़ते प्रभाव से एआई उद्योग में एक नई दिशा उत्पन्न हो सकती है, जिससे एआई को और सस्ता, अधिक सुलभ और प्रभावी बनाया जा सकेगा।

NVS-02 उपग्रह

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने एनवीएस-02 (NVS-02) उपग्रह के सफल प्रक्षेपण के साथ अंतरिक्ष यात्रा में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। यह प्रक्षेपण आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (शार) से जीएसएलवी-एफ15 रॉकेट द्वारा किया गया।

NVS-02 उपग्रह और NavIC प्रणाली में इसकी भूमिका :

- **NavIC प्रणाली:** NVS-02 उपग्रह भारत की दूसरी पीढ़ी की NavIC प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका उद्देश्य भारत की क्षेत्रीय उपग्रह नेविगेशन क्षमताओं को बढ़ाना है।
- **उद्देश्य:** दूसरी पीढ़ी के उपग्रहों का उद्देश्य पहले पीढ़ी की NavIC प्रणाली की सटीकता और विश्वसनीयता को बेहतर बनाना है। यह प्रणाली शुरू में भारत की विदेशी नेविगेशन प्रणालियों जैसे GPS पर निर्भरता को कम करने के लिए लॉन्च की गई थी।

NavIC की विशेषताएँ:

- भारत की स्वदेशी उपग्रह नेविगेशन प्रणाली, जो भारत के भीतर और इसके सीमा से 1500 किलोमीटर तक उच्च सटीकता के साथ स्थिति, गति और समय (PVT) डेटा प्रदान करती है।

NVS-02 उपग्रह की प्रमुख विशेषताएँ:

- **वजन और पावर:** NVS-02 उपग्रह का वजन 2,250 किलोग्राम है और इसकी पावर क्षमता लगभग 3 kW है, जो इसे अपने निर्धारित जीवनकाल के दौरान अत्यधिक प्रभावी तरीके से कार्य करने के लिए सक्षम बनाती है।
- **पेलोड संरचना:** NVS-02 उपग्रह, अपने पूर्ववर्ती NVS-01 की तरह, तीन प्रमुख आवृत्ति बैंड्स: L1, L5, और S बैंड्स में नेविगेशन पेलोड से लैस है। इसके अतिरिक्त, इसमें C-बैंड में एक रेंजिंग पेलोड भी है, जो उपग्रह की स्थिति, गति और समय (PVT) सेवाओं की सटीकता को और भी बढ़ाता है।
- **एटॉमिक घड़ी:** NVS-02 उपग्रह की एक प्रमुख विशेषता इसकी रूबिडियम एटॉमिक फ्रिक्वेंसी स्टैंडर्ड (RAFS) है, जो सटीक समय की माप सुनिश्चित करता है। यह एटॉमिक घड़ी नेविगेशन और स्थिति डेटा की सटीकता के लिए महत्वपूर्ण है
- **विस्तारित जीवनकाल:** NVS-02 उपग्रह का कार्यकाल 12 वर्षों तक बढ़ाया गया है, जिससे भारत की NavIC प्रणाली की दीर्घकालिक स्थिरता और निरंतरता सुनिश्चित होती है।
- **स्वदेशी तकनीक:** उपग्रह में स्वदेशी रूप से विकसित एटॉमिक घड़ियाँ हैं, जोकि पुराने सिस्टमों की तुलना में अधिक सटीकता प्रदान करती हैं। यह ISRO की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के प्रयासों का हिस्सा है।
- **पुराने उपग्रह का प्रतिस्थापन:** NVS-02 उपग्रह, पुराने NavIC उपग्रह IRNSS-1E का प्रतिस्थापन करेगा, जो अब तक प्रणाली में कार्यरत था। यह उपग्रह 111.75°E की कक्षा में स्थापित होगा, जिससे NavIC प्रणाली की निरंतरता और विश्वसनीयता बनी रहेगी।
- **विकास और एकीकरण:** NVS-02 उपग्रह का डिजाइन, विकास और एकीकरण ISRO के U R राव उपग्रह केंद्र (URSC) में किया गया, जो संगठन की उपग्रह प्रौद्योगिकी में मजबूत क्षमताओं को दर्शाता है।

NavIC की भारत के लिए महत्ता:

- **प्रौद्योगिकी में उन्नति:** विभिन्न क्षेत्रों (रक्षा, कृषि, परिवहन, आपदा प्रबंधन) में उपग्रह नेविगेशन की बढ़ती मांग के साथ, NavIC एक विश्वसनीय क्षेत्रीय विकल्प प्रदान करता है।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धा:** NVS-02 उपग्रह भारत की आत्मनिर्भर उपग्रह नेविगेशन प्रणाली की क्षमता को मजबूत करता है, जो GPS (अमेरिका), GLONASS (रूस), BeiDou (चीन), और Galileo (यूरोपीय संघ) जैसे वैश्विक प्रणालियों से प्रतिस्पर्धा करता है।
- **सैन्य और नागरिक उपयोग:** NavIC की उन्नत विशेषताएँ रणनीतिक रक्षा और नागरिक क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण समर्थन

प्रदान करती हैं, जिससे भारत को एक मजबूत नेविगेशन विकल्प प्राप्त होता है।

NavIC का भविष्य:

- **पूर्ण कक्षीय प्रणाली:** NavIC अंततः सात कार्यात्मक उपग्रहों का गठन करेगा, जो भारतीय उपमहाद्वीप के लिए निरंतर, सटीक और विश्वसनीय सेवाएँ प्रदान करेंगे।
- **राष्ट्रीय विकास:** ये सेवाएँ शहरी योजना, कृषि, और आपदा प्रबंधन जैसे विभिन्न क्षेत्रों को लाभान्वित करेंगी।
- **ISRO के लक्ष्य:** NVS-02 उपग्रह का प्रक्षेपण इसरो के व्यापक दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य अंतरिक्ष अन्वेषण और प्रौद्योगिकी नवाचार में प्रमुख देश बनना है।

नैनो-सूत्रीकरण: पार्किंसन रोग के सुरक्षित उपचार के लिए

चर्चा में क्यों?

हाल ही में मोहाली स्थित नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (INST) के वैज्ञानिकों ने हाल ही में पार्किंसन रोग के उपचार में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने एक लक्षित नैनो-सूत्रीकरण विकसित किया है जो इस न्यूरोडीजेनेरेटिव विकार के लिए एक सुरक्षित और अधिक प्रभावी उपचार विकल्प प्रदान करता है। यह नवाचार वर्तमान चिकित्सा पद्धतियों की सीमाओं को पार करते हुए, पार्किंसन रोगियों के लिए एक संभावित बदलाव ला सकता है।

पार्किंसन रोग क्या है?

- पार्किंसन रोग एक प्रगतिशील तंत्रिका तंत्र का विकार है जो मुख्य रूप से मोटर कार्यों को प्रभावित करता है।
- यह मस्तिष्क में डोपामाइन उत्पादक तंत्रिका कोशिकाओं के क्षरण के कारण होता है, जो आंदोलन को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- इस बीमारी के सामान्य लक्षणों में कंपकंपी, मांसपेशियों में कठोरता, गति में धीमापन और संतुलन की समस्याएं शामिल हैं।
- वर्तमान में उपलब्ध दवाएं केवल लक्षणों को कम कर सकती हैं, इस बीमारी का कोई स्थायी इलाज अभी तक नहीं मिल पाया है।

नए नैनो-सूत्रीकरण के बारे में:

- INST के शोध दल ने पार्किंसन रोग के इलाज के लिए एक नया तरीका खोजा है। उन्होंने 17बीटा-एस्ट्राडियोल (E2) नामक हार्मोन को एक विशेष प्रकार के नैनोकणों में संलग्न किया है। इस नैनो-सूत्रीकरण से E2 को मस्तिष्क में धीरे-धीरे और लगातार छोड़ा जा सकता है।
- E2 हार्मोन पार्किंसन रोग में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब मस्तिष्क में इस हार्मोन का संतुलन बिगड़ जाता है, तो पार्किंसन जैसी बीमारियां हो सकती हैं।
- पारंपरिक E2 उपचार परिधीय दुष्प्रभावों और इसके आणविक तंत्रों की अपूर्ण समझ से सीमित हैं।
- नया नैनो-सूत्रीकरण लक्षित वितरण प्रणाली का उपयोग करके इन मुद्दों को संबोधित करता है, जिससे दुष्प्रभाव कम होते हैं और चिकित्सीय परिणामों में सुधार होता है।

यह कैसे काम करता है?

- इस नए उपचार में, डोपामाइन रिसेप्टर D3 नामक एक खास तरह के रिसेप्टर को 17बीटा-एस्ट्राडियोल (E2) हार्मोन से जोड़ा जाता है और फिर इसे बहुत छोटे कणों (नैनोकणों) में पैक किया जाता है। ये नैनोकण मस्तिष्क में धीरे-धीरे E2 हार्मोन को छोड़ते रहते हैं।
- यह नया तरीका कैल्पेन नामक एक प्रोटीन को माइटोकॉन्ड्रिया (कोशिका के ऊर्जा घर) तक जाने से रोकता है। कैल्पेन प्रोटीन कोशिका को नुकसान पहुंचाता है।
- जब कैल्पेन माइटोकॉन्ड्रिया तक नहीं पहुंच पाता, तो कोशिकाएं रोटेनोन नामक एक पदार्थ से होने वाले नुकसान से बच जाती हैं। रोटेनोन कई तंत्रिका रोगों में कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाता है।

अनुसंधान का महत्व:

- इस शोध को कार्बोहाइड्रेट पॉलिमर्स जर्नल में प्रकाशित किया गया है। इस अध्ययन से हमें पार्किंसन रोग के मरीजों में E2 हार्मोन के ऑक्सीडेटिव तनाव और तंत्रिका कोशिकाओं के क्षति को कम करने की क्षमता के बारे में बहुत कुछ समझने में मदद मिली है।
- शोधकर्ताओं का मानना है कि अगर इस नैनो-सूत्रीकरण पर और अधिक शोध किया जाए तो इसे पार्किंसन रोग के लिए एक सुरक्षित और प्रभावी दवा बनाया जा सकता है।
- इससे पहले भी, INST के शोधकर्ताओं ने एक अन्य हार्मोन, मेलाटोनिन, को नैनोकणों के रूप में बनाकर पार्किंसन रोग के इलाज के लिए प्रयोग किया था।
- इन दोनों खोजों से पता चलता है कि नैनो तकनीक का उपयोग करके तंत्रिका तंत्र के रोगों के इलाज के लिए बहुत संभावनाएं हैं। इससे भविष्य में पार्किंसन रोग और अन्य तंत्रिका रोगों के मरीजों के लिए बेहतर और दीर्घकालिक इलाज उपलब्ध हो सकते हैं।

6 आर्थिक मुद्दे

आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25: एक व्यापक विश्लेषण

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 31 जनवरी 2025 को संसद में आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25 प्रस्तुत किया। यह भारत के पिछले वर्ष के आर्थिक प्रदर्शन की विस्तृत समीक्षा प्रदान करता है तथा आगामी वित्त वर्ष के लिए अनुमान प्रस्तुत करता है। यह सर्वेक्षण मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA) वी. अनंथा नागेश्वरन के मार्गदर्शन में आर्थिक मामलों के विभाग द्वारा तैयार किया गया है। आर्थिक सर्वेक्षण नीति–निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह देश के आर्थिक प्रदर्शन की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत करता है, प्रमुख चुनौतियों को रेखांकित करता है और आर्थिक लचीलेपन को सुदृढ़ करने के लिए रणनीतियाँ सुझाता है।

इस वर्ष का सर्वेक्षण संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारत की आर्थिक स्थिरता पर बल देता है। साथ ही, यह उन संरचनात्मक कमजोरियों को भी इंगित करता है जो दीर्घकालिक विकास को बाधित कर सकती हैं। भारत की विकास गाथा को निरंतर बनाए रखने के लिए यह सर्वेक्षण विनियामक सुधारों, व्यापार सुलभता में वृद्धि और एक अधिक उद्यम–हितैषी वातावरण के निर्माण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

वैश्विक आर्थिक संदर्भ:

आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25 में दो प्रमुख वैश्विक चिंताओं पर प्रकाश डाला गया है जो भारत की आर्थिक प्रगति को प्रभावित कर सकती हैं:

- **वैश्विक व्यापार और निवेश में मंदी:** वैश्विक आर्थिक वातावरण लगातार प्रतिकूल होता जा रहा है। वैश्विक व्यापार और निवेश में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है, जिसका मुख्य कारण संरक्षणवाद में वृद्धि और वैश्वीकरण में आई गिरावट है। भू–राजनीतिक तनाव और आर्थिक अनिश्चितताओं ने इस प्रवृत्ति को और अधिक गहरा किया है। सर्वेक्षण में इस बात की चेतावनी दी गई है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था एक दीर्घकालिक ठहराव (Stagnation) के दौर में प्रवेश कर सकती है, जिसमें वैश्विक आर्थिक विकास की गति मंद बनी रह सकती है।
- **वैश्विक विनिर्माण में चीन का प्रभुत्व:** सर्वेक्षण वैश्विक विनिर्माण क्षेत्र में चीन की प्रभावशाली भूमिका को रेखांकित करता है। चीन वर्तमान में वैश्विक उत्पादन में लगभग एक–तिहाई योगदान देता है, जो अगली 10 सबसे बड़ी विनिर्माण अर्थव्यवस्थाओं के संयुक्त उत्पादन से भी अधिक है। हालांकि, भू–राजनीतिक बदलाव, आर्थिक विखंडन (Fragmentation) और आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ी चिंताओं ने वैश्विक विनिर्माण रणनीतियों के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता को जन्म दिया है। वैश्वीकरण के युग में स्थापित आपूर्ति श्रृंखलाओं की पुनर्संरचना की संभावनाओं के बीच, चीन पर वैश्विक निर्भरता फिर से बढ़ सकती है। यह भारत के लिए न केवल चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है बल्कि अवसर भी प्रदान करता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति:

- **वास्तविक जीडीपी वृद्धि:** आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25 के अनुसार, वित्त वर्ष 2024–25 में भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 6.4% रहने का अनुमान है, जबकि वित्त वर्ष 2025–26 के लिए यह 6.3% से 6.8% के बीच में रहने की संभावना जताई गई है। यह स्थिरता आर्थिक वृद्धि मजबूत घरेलू मांग, बढ़ते निजी निवेश और सेवा क्षेत्र के बेहतर प्रदर्शन को दर्शाती है।
- **निजी उपभोग में वृद्धि:** निजी अंतिम उपभोग व्यय (PFCE), जो व्यक्तियों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं पर किए गए खर्च को मापता है, में वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। भारत के

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में PFCE की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2023-24 में 60.3% से बढ़कर वित्त वर्ष 2024-25 में 61.8% होने की उम्मीद है। यह वृद्धि वित्त वर्ष 2002-03 के बाद से निजी उपभोग का उच्चतम स्तर होगी। उपभोग में यह वृद्धि मुख्य रूप से मजबूत उपभोक्ता विश्वास, बढ़ती डिस्पोजेबल आय, मध्यम वर्ग की खपत में विस्तार और शहरीकरण जैसे कारकों से प्रेरित होगी।

- **सकल मूल्य वर्धन (जीवीए):** समग्र सकल मूल्य वर्धन (GVA) महामारी से पहले के रुझानों को पार कर चुका है और ऐतिहासिक स्तरों से ऊपर बना हुआ है, जिससे विनिर्माण, सेवाओं और कृषि जैसे प्रमुख क्षेत्रों में निरंतर वृद्धि का संकेत मिलता है।
- **मुद्रास्फीति के रुझान:** सर्वेक्षण के अनुसार, मुख्य मुद्रास्फीति में गिरावट दर्ज की गई है, जिसका मुख्य कारण कोर मुद्रास्फीति (जिसमें खाद्य और ईंधन की कीमतें शामिल नहीं होती हैं) में कमी है। हालांकि, खाद्य मुद्रास्फीति अभी भी चिंता का विषय बनी हुई है, जो वित्त वर्ष 2023-24 में 7.5% से बढ़कर वित्त वर्ष 2024-25 में 8.4% हो गई है।
  - » खाद्य मुद्रास्फीति में वृद्धि में योगदान देने वाले कारकों में आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, कृषि उत्पादन को प्रभावित करने वाली मौसम संबंधी अनिश्चितताएं तथा सब्जियों और दालों जैसी आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतें शामिल हैं।
  - » सरकार का लक्ष्य मौद्रिक नीति में लचीलापन बनाए रखते हुए खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं में लक्षित हस्तक्षेप के माध्यम से मुद्रास्फीति को स्थिर करना है।

क्षेत्रीय विकास:

- **कृषि विकास:** वित्त वर्ष 2024-25 में कृषि क्षेत्र में 3.8% की वृद्धि होने का अनुमान है। वित्त वर्ष की पहली छमाही में कृषि क्षेत्र में स्थिर वृद्धि दर्ज की गई, जिसमें दूसरी तिमाही में 3.5% की वृद्धि देखी गई। यह वृद्धि खरीफ उत्पादन में वृद्धि, अनुकूल मानसूनी परिस्थितियों और उच्च जलाशय स्तरों द्वारा समर्थित रही, जिससे सिंचाई सुविधाओं और फसल उत्पादकता में सुधार हुआ। वित्त वर्ष 2024-25 के लिए कुल खरीफ खाद्यान्न उत्पादन 1647.05 लाख मीट्रिक टन (LMT) तक पहुँचने की उम्मीद है, जो वित्त वर्ष 2023-24 की तुलना में 5.7% की वृद्धि को दर्शाता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कृषि क्षेत्र में लचीलापन बनाए रखना आवश्यक है।
- **औद्योगिक क्षेत्र का प्रदर्शन:** वित्त वर्ष 2024-25 में भारत के औद्योगिक क्षेत्र में 6.2% की वृद्धि का अनुमान है, जो निर्माण गतिविधियों, बिजली, गैस, जल आपूर्ति और अन्य क्षेत्रों में मजबूत प्रदर्शन से प्रेरित है। हालांकि, वित्त वर्ष 2024-25 की पहली छमाही, विशेष रूप से दूसरी तिमाही में, औद्योगिक विकास को विनिर्माण निर्यात में गिरावट, औसत से अधिक मानसून के कारण आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और त्योहारी सीजन के मिले-जुले प्रभावों के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इन प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, भारत का विनिर्माण क्रय प्रबंधक सूचकांक (PMI) वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ने वाले सूचकांकों में से एक बना हुआ है, जो घरेलू बाजार में मजबूत मांग और उत्पादन गतिविधि में सुधार को दर्शाता है।
- **सेवा क्षेत्र की वृद्धि:** सेवा क्षेत्र अन्य क्षेत्रों से बेहतर प्रदर्शन कर रहा है, और वित्त वर्ष 2024-25 में इसकी अनुमानित वृद्धि दर 7.2% है। वित्त वर्ष 2024-25 की पहली छमाही में इस क्षेत्र में 7.1% की वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि मुख्य रूप से वित्तीय सेवाओं, रियल एस्टेट, पेशेवर सेवाओं, लोक प्रशासन और रक्षा द्वारा संचालित है। वित्त वर्ष 2024-25 के अप्रैल से नवंबर के बीच भारत के सेवा निर्यात में 12. 8% की वृद्धि हुई, जो वैश्विक बाजार में इस क्षेत्र की प्रतिस्पर्धात्मकता को दर्शाता है, विशेष रूप से आईटी और व्यावसायिक सेवाओं में।

बाह्य क्षेत्र प्रदर्शन:

- **व्यापार और चालू खाता:** अप्रैल से दिसंबर 2024 तक भारत के व्यापारिक निर्यात में सालाना आधार पर 1.6% की वृद्धि हुई, जबकि व्यापारिक आयात में 5.2% की वृद्धि दर्ज की गई। सेवाओं के निर्यात में मजबूत प्रदर्शन ने इस असंतुलन को दूर करने में मदद की, जिसके परिणामस्वरूप भारत वैश्विक स्तर पर सेवाओं के सातवें सबसे बड़े निर्यातक के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखने में सफल रहा। विदेशों से भेजे गए धन ने भी चालू खाता घाटे (CAD) को Q2 FY25 में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 1.2% पर अपेक्षाकृत सीमित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई):** एफडीआई प्रवाह में उल्लेखनीय सुधार देखा गया, जो वित्त वर्ष 2024 में 47.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2025 में 55.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 17.9% अधिक है। यह वृद्धि आर्थिक सुधारों, राजनीतिक स्थिरता और बड़े उपभोक्ता बाजार द्वारा प्रेरित भारत की अपील को निवेश गंतव्य के रूप में उजागर करती है।

बुनियादी ढांचा और नवीकरणीय ऊर्जा:

- **बुनियादी ढांचे का विकास:** बुनियादी ढांचे में निवेश दीर्घकालिक विकास के लिए एक प्रमुख प्राथमिकता बनी हुई है। रेल और बंदरगाह क्षमता के विस्तार पर सरकार का ध्यान स्पष्ट है। 2031 किलोमीटर रेलवे नेटवर्क शुरू हो गया है और अप्रैल से नवंबर 2024 के बीच वंदे भारत ट्रेनों की

17 नई जोड़ी शुरू की गई हैं, जिससे कनेक्टिविटी में और वृद्धि हुई है।

- **नवीकरणीय ऊर्जा:** भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता दिसंबर 2024 तक सालाना आधार पर 15.8% बढ़ने की उम्मीद है। राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन और प्रधानमंत्री-कुसुम योजना जैसे हरित निवेशों पर सरकार के जोर से कार्बन में तेजी से कमी आने की संभावना है।

रोजगार और श्रम बाजार: बेहतर होते रुझान

- आर्थिक सर्वेक्षण में रोजगार रुझानों की रिपोर्ट दी गई है, जो महामारी के बाद की रिकवरी, नौकरियों के औपचारिकीकरण में वृद्धि और कार्यबल की बढ़ती भागीदारी द्वारा समर्थित है। 2023-24 के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) के अनुसार:
  - » बेरोजगारी दर में गिरावट आई है।
  - » श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) में सुधार हुआ है, जो रोजगार के अवसरों में वृद्धि का संकेत है।
  - » श्रमिक-जनसंख्या अनुपात (WPR) में वृद्धि हुई है, जो कार्यबल की अधिक सहभागिता को दर्शाता है।
- हालाँकि, नौकरी की गुणवत्ता और वेतन वृद्धि में संरचनात्मक चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

नीति अनुशंसाएँ:

- **आर्थिक वृद्धि के लिए विनियमन में कमी:** सर्वेक्षण में व्यवसाय विनियमन को सरल बनाने की बात की गई है, विशेषकर छोटे और मध्यम उद्यमों (SMEs) के लिए। नौकरशाही संबंधी बाधाओं को कम करने से व्यवसाय करने की लागत कम होगी, उद्यमशीलता को बढ़ावा मिलेगा और निवेश तथा रोजगार सृजन को बढ़ावा मिलेगा।
- **व्यापार सुधार कार्य योजना (BRAP):** उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) ने व्यापार सुधार कार्य योजना (BRAP) पेश की है, जिसका उद्देश्य व्यापार के अनुकूल नीतियों को बढ़ावा देना है। सर्वेक्षण में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए उभरते और महत्वाकांक्षी राज्यों में BRAP को लागू करने के महत्व पर जोर दिया गया है।
- **बुनियादी ढांचे और निवेश की कमी को दूर करना:** सर्वेक्षण में बड़े पैमाने पर और गुणवत्तापूर्ण तरीके से वस्तुओं के उत्पादन में भारत की चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है। इसके लिए दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता के लिए घरेलू विनिर्माण और बुनियादी ढांचे में निवेश को मजबूत करना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 भारत की आर्थिक प्रगति का विस्तृत और सूक्ष्म मूल्यांकन प्रदान करता है। जबकि जीडीपी वृद्धि स्थिर बनी हुई है, मुद्रास्फीति, विनियामक बाधाओं और औद्योगिक बाधाओं जैसी संरचनात्मक चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक होगा। प्रमुख नीति प्राथमिकताएँ हैं:

- व्यापार विस्तार और रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करने के लिए विनियमन में कमी।
- औद्योगिक एवं अवसंरचना क्षमता में वृद्धि करना।
- आपूर्ति पक्ष हस्तक्षेप के माध्यम से मुद्रास्फीति को स्थिर करना।
- स्थायी रोजगार वृद्धि के लिए श्रम बाजार को मजबूत बनाना।

भारत की व्यापार-समर्थक नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करना, निवेश को आकर्षित करना और औद्योगिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना, इन सभी पहलुओं की क्षमता इसके आर्थिक विकास को निरंतर बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाएगी।

केंद्रीय बजट 2025-26

भारत के वित्त मंत्री द्वारा प्रस्तुत वित्त वर्ष 2025-26 का केंद्रीय बजट एक ऐतिहासिक वित्तीय रोडमैप है, जोकि 'विकसित भारत' की दिशा में प्रगति करने और राष्ट्र के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। बजट इस विचार को रेखांकित करता है कि एक देश केवल उसकी मिट्टी नहीं, बल्कि उसके लोग होते हैं, जैसा कि प्रसिद्ध तेलुगु कवि और नाटककार श्री गुरजादा अप्पा राव द्वारा व्यक्त किया गया था। इसी विचार का अनुसरण करते हुए सभी क्षेत्रों में समावेशी विकास और सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए, बजट में 'सबका साथ, सबका विकास' थीम को अपनाया गया है। संतुलित विकास को प्रोत्साहित करने के लिए सभी के लिए विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसमें विशेष रूप से कृषि, एमएसएमई, निवेश और निर्यात पर जोर दिया जाएगा। यह बजट भारत के लिए एक सतत विकास पथ सुनिश्चित करते हुए दीर्घकालिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए आर्थिक सुधारों को एकीकृत करता है।

बजट 2025-26 के मुख्य उद्देश्य:

- वित्त मंत्री के बजट भाषण में विकास को बढ़ावा देने के लिए छह व्यापक सिद्धांतों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला गया:
  - » **शून्य गरीबी:** कल्याणकारी उपायों को मजबूत करना और वंचितों के लिए आर्थिक अवसर सुनिश्चित करना।

- » **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा:** उच्च मानक शिक्षा और प्रशिक्षण सुविधाओं तक पहुंच का विस्तार करना।
- » **किफायती स्वास्थ्य सेवा:** स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे तक सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना।
- » **कुशल श्रमिकों के लिए रोजगार:** कौशल विकास कार्यक्रमों और रोजगार सृजन को बढ़ावा देना।
- » **महिलाओं की आर्थिक भागीदारी:** आर्थिक गतिविधियों में 70% महिलाओं की भागीदारी का लक्ष्य।
- » **कृषि उत्कृष्टता:** भारत को खाद्य उत्पादन में वैश्विक अग्रणी के रूप में स्थापित करना।

- इन सिद्धांतों के माध्यम से सरकार आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और समावेशी भारत की नींव रखना चाहती है।

आर्थिक विकास के चार इंजन:

केंद्रीय बजट का रणनीतिक दृष्टिकोण विकास के चार प्राथमिक इंजनों पर आधारित है– कृषि, एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम), निवेश और निर्यात। इन क्षेत्रों को भारत की अर्थव्यवस्था के प्रमुख चालकों के रूप में देखा जाता है, जिसमें लक्षित सुधार और योजनाएँ उनकी क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से हैं।

- **कृषि: ग्रामीण समृद्धि को मजबूत करना:** कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनी हुई है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। सरकार ने कृषि उत्पादकता बढ़ाने, विविधीकरण को बढ़ावा देने और किसानों के लिए वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए कई पहलों की घोषणा की है।
  - » **प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना:** इसके अंतर्गत कम कृषि उत्पादकता वाले 100 जिलों को शामिल किया गया है, जिसमें फसल कटाई के बाद भंडारण बढ़ाने, सिंचाई की सुविधाओं में सुधार करने का लक्ष्य रखा गया।
  - » **दलहनों में आत्मनिर्भरता मिशन:** यह एक छह वर्षीय पहल है, जो नाफेड और एनसीसीएफ द्वारा खरीद समर्थन तथा तुअर, उड़द और मसूर दालों के उत्पादन पर केंद्रित है।
  - » **बिहार में मखाना बोर्ड:** यह बोर्ड मखाना की खेती, प्रसंस्करण और निर्यात पर ध्यान केंद्रित करेगा, जिससे विशेष रूप से बिहार और अन्य क्षेत्रों के किसानों को लाभ होगा।
  - » **किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी):** संशोधित ब्याज अनुदान के साथ ऋण सीमा को 3 लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये कर दिया गया है, जिससे किसानों को ऋण तक आसान पहुंच की सुविधा मिलेगी।
  - » **ग्रामीण समृद्धि और लचीलापन कार्यक्रम:** ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए एक लक्षित कार्यक्रम, जिसमें युवाओं, महिलाओं और हाशिए पर पड़े किसानों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- इन पहलों के माध्यम से सरकार का लक्ष्य कृषि में आत्मनिर्भरता हासिल करना और किसानों की आजीविका में सुधार करना है।
- **एमएसएमई: लघु और मध्यम उद्यमों को बढ़ावा देना:** एमएसएमई भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं और निर्यात में इनकी हिस्सेदारी लगभग 45% है। केंद्रीय बजट 2025-26 में एमएसएमई की प्रतिस्पर्धात्मकता और मापनीयता बढ़ाने के लिए कई सुधारों का प्रस्ताव किया गया है:
  - » **निवेश और कारोबार की सीमा में वृद्धि:** एमएसएमई के लिए वर्गीकरण सीमा बढ़ा दी गई है, जिससे छोटे व्यवसायों के लिए अधिक लाभ संभव हो सकेगा।
  - » **नई उद्यमिता योजना:** अगले पांच वर्षों में 5 लाख महिला, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों को 2 करोड़ रुपये तक का सावधि ऋण (टर्म लोन) प्रदान किया जाएगा।
  - » **राष्ट्रीय विनिर्माण मिशन:** 'मेक इन इंडिया' अभियान को मजबूत करने के लिए एक व्यापक पहल, जो नवाचार और निर्यात क्षमता पर केंद्रित है।
  - » **खिलौना उद्योग विकास:** सरकार का लक्ष्य एक समर्पित योजना के माध्यम से भारत को खिलौना विनिर्माण के लिए वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करना है।
- एमएसएमई को मजबूत करके, बजट का उद्देश्य अधिक लचीली और विविधतापूर्ण अर्थव्यवस्था बनाना, नवाचार और रोजगार सृजन को बढ़ावा देना है।
- **निवेश: बुनियादी ढांचा और मानव पूंजी विकास:** आर्थिक विकास को गति देने में निवेश महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और केन्द्रीय बजट में बुनियादी ढांचे के विकास और मानव पूंजी दोनों पर जोर दिया गया है।
  - » **मानव पूंजी निवेश:** सरकार सरकारी स्कूलों में 50,000 अटल टिंकरिंग लैब स्थापित करेगी, ग्रामीण स्कूलों और स्वास्थ्य केंद्रों को भारतनेट ब्रॉडबैंड पहुंच प्रदान करेगी और भारतीय भाषा की पाठ्यपुस्तकों को भारतीय मानक ब्यूरो (आईएसबीएन) के माध्यम से डिजिटल करेगी। इसके अतिरिक्त, युवाओं को वैश्विक नौकरी बाजारों के लिए उपयुक्त कौशल से लैस करने के लिए कौशल विकास के पांच राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए जाएंगे।
  - » **बुनियादी ढांचे का विकास:** सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) परियोजनाओं के लिए 3 साल की पाइपलाइन बनाई जाएगी और पूंजीगत व्यय के लिए राज्यों को 50

साल के ब्याज मुक्त ऋण के रूप में 1.5 लाख करोड़ आवंटित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, नई परियोजनाओं में पुनर्निवेश के लिए 10 लाख करोड़ का लक्ष्य रखते हुए एक परिसंपत्ति मुद्रीकरण योजना प्रस्तावित है।

» **शहरी एवं जल अवसंरचना:** जल जीवन मिशन को 2028 तक बढ़ा दिया गया है, जिसमें जल गुणवत्ता और बुनियादी ढांचे के रखरखाव पर ध्यान केंद्रित किया गया है। शहरी विकास के लिए आवंटित 1 लाख करोड़ रुपये के शहरी चुनौती कोष का उद्देश्य बेहतर बुनियादी ढांचे और टिकाऊ योजना के माध्यम से शहरों को आर्थिक केंद्रों के रूप में विकसित करना है।

- इन पहलों से यह सुनिश्चित होगा कि भौतिक और मानव पूंजी दोनों में निवेश किया जाए, जिससे टिकाऊ और समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।
- **निर्यात: भारत के वैश्विक व्यापार का विस्तार:** भारत के निर्यात आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं और केंद्रीय बजट में वैश्विक बाजारों में भारत की उपस्थिति बढ़ाने के उपायों की रूपरेखा दी गई है।
  - » **निर्यात संवर्धन मिशन:** इसका उद्देश्य एमएसएमई को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचने में सहायता करना है।
  - » **भारतट्रेडनेट (बीटीएन):** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के दस्तावेजीकरण और वित्तपोषण के लिए एक एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म, जिसका उद्देश्य व्यापार प्रक्रियाओं को सरल बनाना है।
  - » **निर्यात अवसंरचना विकास:** निर्यात वृद्धि को समर्थन देने के लिए भंडारण और अवसंरचना, विशेष रूप से शीघ्र खराब होने वाले सामान और हवाई माल के लिए निवेश किया जाएगा।
  - » **उद्योग 4.0 के लिए विनिर्माण:** इलेक्ट्रॉनिक्स और स्वचालन जैसे उच्च तकनीक उद्योगों के लिए घरेलू क्षमताओं को बढ़ाया जाएगा।

सुधार: विकास की रीढ़

- केन्द्रीय बजट में महत्वपूर्ण सुधार शामिल हैं जिनका उद्देश्य व्यापार को आसान बनाना तथा अधिक निवेशक-अनुकूल विनियामक वातावरण बनाना है।
  - » **बीमा में एफडीआई:** सरकार ने बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की सीमा 74% से बढ़ाकर 100% कर दी है, जिससे इस क्षेत्र में विदेशी निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा।
  - » **विनियामक सुधार:** विनियामक सुधारों पर एक उच्च स्तरीय समिति की स्थापना और निवेश मित्रता सूचकांक की शुरुआत से व्यवसाय प्रारंभ करने की आसानी में वृद्धि होगी और प्रतिस्पर्धी शासन को बढ़ावा मिलेगा।
  - » **कानूनों का गैर-अपराधीकरण:** जन विश्वास विधेयक 2.0 विभिन्न कानूनों के 100 से अधिक प्रावधानों को गैर-अपराधीकरण कर देगा, जिससे व्यवसायों के लिए अनुपालन का बोझ कम हो जाएगा।
- इन सुधारों का उद्देश्य भारत के निवेश माहौल को बेहतर बनाना है, जिससे व्यवसायों के लिए विकास और समृद्धि आसान हो सके।

राजकोषीय समेकन और कराधान:

- **राजकोषीय घाटा:** 2024-25 के लिए राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 4.8% अनुमानित है, जबकि 2025-26 के लिए 4.4% का लक्ष्य है।
- **प्रत्यक्ष कराधान सुधार:** सरकार ने एक संशोधित कर संरचना पेश की है जो मध्यम वर्ग को राहत प्रदान करती है:
  - » प्रति वर्ष 12 लाख रुपये तक की आय पर कोई आयकर नहीं।
  - » वरिष्ठ नागरिकों की ब्याज आय और किराये की आय पर कर कटौती बढ़ा दी गई है।
- **सीमा शुल्क एवं अप्रत्यक्ष कराधान:** घरेलू विनिर्माण को समर्थन देने के लिए कई सुधारों की घोषणा की गई है, जिनमें महत्वपूर्ण खनिजों और जीवन रक्षक दवाओं के लिए छूट भी शामिल है।

निष्कर्ष:

केंद्रीय बजट 2025-26 भारत के विकास के लिए एक व्यापक खाका प्रस्तुत करता है, जो तात्कालिक चुनौतियों और दीर्घकालिक उद्देश्यों दोनों को संबोधित करता है। कृषि, एमएसएमई, निवेश और निर्यात पर ध्यान केंद्रित करके, बजट एक आत्मनिर्भर और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी भारत की नींव रखता है। व्यापार करने में आसानी को बेहतर बनाने, राजकोषीय अनुशासन को बढ़ाने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए किए गए सुधारों के साथ, सरकार का लक्ष्य भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलना है, जो 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण को प्राप्त करता है। विभिन्न क्षेत्रों में लक्षित योजनाएँ और रणनीतिक निवेश भारत को सतत विकास की ओर अग्रसर करेंगे, जिससे समाज के सभी वर्गों के लिए समृद्धि सुनिश्चित होगी। यह बजट सामाजिक समानता, तकनीकी नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर स्पष्ट ध्यान देने के साथ भारत को आर्थिक विकास के एक नए युग में ले जाने के लिए तैयार है।

आठवां वेतन आयोग: उद्देश्यों, प्रभाव और निहितार्थों का अवलोकन

हाल ही में भारत सरकार ने केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों एवं पेंशनभोगियों के वेतनमान और भत्तों में संशोधन के लिए आठवां वेतन आयोग गठित करने की घोषणा की है। लगभग हर दस वर्षों में गठित होने वाले वेतन आयोग, सरकारी कर्मचारियों को न्यायसंगत एवं महंगाई भत्ता सहित पारिश्रमिक प्रदान करने तथा सरकार के व्यय पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हुए, आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वेतन आयोग:

- वेतन आयोग सरकारी कर्मचारियों के वेतन और पेंशन ढांचे की समीक्षा और संशोधन की सिफारिश करने के लिए भारत सरकार द्वारा स्थापित एक विशेष निकाय है। ऐसे आयोगों के प्रमुख उद्देश्य हैं:
  - **मुद्रास्फीति को संबोधित करना:** बढ़ती जीवन यापन लागत का सामना करने के लिए वेतन समायोजित करना।
  - **समता:** सरकारी कर्मचारियों का पारिश्रमिक निजी क्षेत्र के कर्मचारियों के बराबर होना चाहिए।
  - **नौकरी संतुष्टि:** कर्मचारियों की कार्यकुशलता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए समय-समय पर वेतन संरचना में बदलाव करना।
  - **मैक्रोइकोनॉमिक दृष्टिकोण:** कर्मचारियों की क्रय शक्ति बढ़ाकर समग्र अर्थव्यवस्था को गति देना।
- 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद से, सात वेतन आयोग स्थापित किए गए हैं। प्रत्येक ने कार्यबल की विकसित होती आवश्यकताओं और आर्थिक परिदृश्य को संबोधित करते हुए, मुआवजा संरचनाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए हैं।

वेतन आयोग की सिफारिशों में ऐतिहासिक प्रवृत्तियाँ:

- ऐतिहासिक रूप से, वेतन आयोग की सिफारिशों का कार्यान्वयन वेतन संरचनाओं और सरकारी खर्चों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता रहा है। उदाहरण के लिए:

वेतन आयोग	लागू वर्ष	फिटमेंट फैक्टर	वेतन पर प्रभाव
5वां वेतन आयोग	1996	1.40	मध्यम वृद्धि
6वां वेतन आयोग	2006	1.86	महत्वपूर्ण वृद्धि
7वां वेतन आयोग	2016	2.57	भारी वृद्धि
8वां वेतन आयोग	2026 (अपेक्षित)	2.28-2.86 (अंदाजा)	अनुमानित महत्वपूर्ण वृद्धि

- सातवें वेतन आयोग ने सरकारी कर्मचारियों के लिए कई महत्वपूर्ण सुधार किए, जिनमें न्यूनतम मूल वेतन को 7,000 रुपये से बढ़ाकर 18,000 रुपये करना, पेंशन में वृद्धि और विभिन्न भत्तों में सुधार शामिल हैं। आठवां वेतन आयोग इन उपलब्धियों पर आगे बढ़ते हुए, बदलते समय के साथ नई चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है।

आठवां वेतन आयोग: प्रमुख विवरण

- **संविधान और समयरेखा:** केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में आठवें वेतन आयोग के गठन को मंजूरी दी है। आयोग के अध्यक्ष और दो सदस्यों की नियुक्ति की प्रक्रिया शीघ्र शुरू की जाएगी। हालांकि आयोग की सिफारिशें 2026 में लागू होने की संभावना है, लेकिन केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ अन्य संबंधित पक्षों के साथ विचार-विमर्श करके इस प्रक्रिया को तेज करने का प्रयास किया जाएगा।

आठवें वेतन आयोग के प्रमुख फोकस क्षेत्र:

- **मुद्रास्फीति समायोजन:** महंगाई दर में उतार-चढ़ाव को ध्यान में रखते हुए कर्मचारियों के वेतन और भत्तों में नियमित समायोजन किया जाएगा ताकि उनकी जीवन स्तर में सुधार हो सके।
- **फिटमेंट फैक्टर में संशोधन:** संशोधित मूल वेतन की गणना के लिए उपयोग किए जाने वाले फिटमेंट फैक्टर को 2.28 से 2.86 के बीच बढ़ाया जा सकता है। इससे कर्मचारियों के मूल वेतन में लगभग 40-50% तक की वृद्धि हो सकती है।
- **भत्तों में संशोधन:** वेतन वृद्धि के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के भत्तों में भी संशोधन किया जाएगा, जैसे कि महंगाई भत्ता, यात्रा भत्ता आदि।
- **विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव:** सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से लेकर बैंकिंग और इंजीनियरिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत कर्मचारियों पर इन बदलावों का व्यापक प्रभाव पड़ेगा।

क्षेत्रीय प्रभाव:

- **केंद्र सरकार के कर्मचारी और पेंशनभोगी:** लगभग 49

लाख कर्मचारी और 65 लाख पेंशनभोगी संशोधित वेतन और पेंशन संरचनाओं से लाभान्वित होंगे। यह कदम महंगाई के बढ़ते दबाव को देखते हुए कर्मचारियों की मांगों को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

- **सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (पीएसयू):** महारत्न और नवरत्न पीएसयू, जैसे ओएनजीसी और एनटीपीसी, वेतन संरचनाओं में महत्वपूर्ण संशोधन करने की उम्मीद है, जिससे शीर्ष प्रतिभाओं को बनाए रखने और प्रतिस्पर्धी मुआवजा सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।
- **सरकारी नौकरियों में इंजीनियर:** वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में कार्यरत संस्थानों, जैसे इसरो के साथ-साथ भारतीय रेलवे जैसे बड़े संगठनों में इंजीनियरों के वेतन में वृद्धि होने की उम्मीद है। इससे इन क्षेत्रों में कार्यरत तकनीकी विशेषज्ञों को प्रोत्साहन मिलेगा।
- **बैंकिंग क्षेत्र के कर्मचारी:** सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में कार्यरत कर्मचारी भी इस वेतन आयोग से होने वाले लाभों से वंचित नहीं रहेंगे, जिससे बैंकिंग क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों की कार्यकुशलता में सुधार होगा।

आर्थिक निहितार्थ:

- आठवें वेतन आयोग के कार्यान्वयन से न केवल कर्मचारियों का कल्याण होगा, बल्कि बढ़ती खपत के माध्यम से आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहन मिलेगा। जैसे-जैसे सरकारी कर्मचारी और पेंशनभोगी अधिक आय से लाभान्वित होंगे, गुणक प्रभाव से विभिन्न क्षेत्रों में मांग को बढ़ावा मिलेगा, जिससे राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में योगदान होगा। हालांकि, 7वें वेतन आयोग के कार्यान्वयन के दौरान देखा गया, उच्च व्यय से जुड़े राजकोषीय बोझ को संतुलित करना भी सरकार के लिए आवश्यक है, जिसके कारण राजकोषीय व्यय में 1 लाख करोड़ रुपये की वृद्धि हुई थी।

चुनौतियाँ:

- **मुद्रास्फीति प्रबंधन:** वेतन वृद्धि से अर्थव्यवस्था में अधिक धन प्रवाहित होगा जिससे मुद्रास्फीति बढ़ सकती है। इसलिए सरकार को इस स्थिति से निपटने के लिए प्रभावी मौद्रिक नीतियां अपनानी होंगी।
- **राजकोषीय जिम्मेदारी:** सरकार को कर्मचारियों की मांगों और देश की अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक स्थिरता के बीच संतुलन बनाना होगा। वेतन आयोग की सिफारिशों को इस तरह से लागू किया जाना चाहिए कि इससे देश की अर्थव्यवस्था पर अनावश्यक बोझ न पड़े।
- **हितधारक परामर्श:** केंद्र और राज्य सरकारों, कर्मचारी संघों और अन्य संबंधित पक्षों के साथ व्यापक विचार-विमर्श किया जाना चाहिए ताकि सभी हितधारकों की बात को सुनकर एक न्यायसंगत और व्यावहारिक समाधान निकाला जा सके।

निष्कर्ष:

आठवां वेतन आयोग केंद्र सरकार के कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए उचित और प्रतिस्पर्धी मुआवजा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है। मुद्रास्फीति के दबावों को संबोधित करके, भत्तों को बढ़ाकर और बहु-क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देकर, आयोग भारत के आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। हालांकि, सरकार को सतत कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए कर्मचारी कल्याण और राजकोषीय विवेक के बीच संतुलन बनाना होगा।

संक्षिप्त मुद्दे

नीति आयोग का राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक

चर्चा में क्यों?

हाल ही में नीति आयोग ने भारतीय राज्यों के राजकोषीय प्रदर्शन का विस्तृत मूल्यांकन प्रदान करने के लिए राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (एफएचआई) 2025 लॉन्च किया है। यह सूचकांक राज्यों के वित्तीय स्वास्थ्य का मूल्यांकन करता है और सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सुधारों का मार्गदर्शन करने का लक्ष्य रखता है।

- 'राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक 2025' शीर्षक वाली रिपोर्ट ने 2022-23 के लिए राज्यों को रैंक दिया, जिसमें 18 प्रमुख राज्यों को शामिल किया गया जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद, जनसांख्यिकी, कुल सार्वजनिक व्यय, राजस्व और समग्र राजकोषीय स्थिरता में उनके योगदान के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था को चलाते हैं

राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक क्या है?

- राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (एफएचआई) नीति आयोग की एक व्यापक पहल है जिसका उद्देश्य भारत के राज्यों की वित्तीय स्थिरता का आकलन और निगरानी करना है। यह सूचकांक पांच प्रमुख उप-सूचकांकों पर आधारित है:
  - » व्यय की गुणवत्ता

» राजस्व संग्रहण
» राजकोषीय सतर्कता
» ऋण सूचकांक
» ऋण स्थिरता

- इस सूचकांक के लिए डेटा वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सीएजी) से लिया गया है और इसमें 2014-15 से 2021-22 तक के रुझान शामिल हैं। एफएचआई उन राज्यों पर केंद्रित है जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद, जनसांख्यिकी, सार्वजनिक व्यय और राजस्व सृजन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

प्रमुख विशेषताएं:

- **शीर्ष प्रदर्शनकर्ता (अचीवर्स)**
  - » **ओडिशा:** 67.8 के उच्चतम स्कोर के साथ पहले स्थान पर रहते हुए, ओडिशा ने ऋण प्रबंधन और स्थिरता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।
  - » **छत्तीसगढ़:** 55.2 के स्कोर के साथ दूसरे स्थान पर रहा, जो मजबूत राजकोषीय विवेक और संतुलित राजकोषीय नीतियों का प्रमाण है।
  - » **गोवा:** 53.6 के स्कोर के साथ तीसरे स्थान पर, गोवा ने राजकोषीय प्रबंधन और राजस्व सृजन के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदर्शित किया है।
- **अल्प प्रदर्शनकर्ता:**
  - » **केरल:** 29.7 के स्कोर के साथ, केरल खराब ऋण स्थिरता और कम गुणवत्ता वाले व्यय से जूझ रहा है।
  - » **पंजाब:** 28.4 के स्कोर के साथ, पंजाब कम राजस्व जुटाने और उच्च राजकोषीय घाटे की चुनौतियों का सामना कर रहा है।
  - » **पश्चिम बंगाल:** 27.8 के स्कोर के साथ, पश्चिम बंगाल ऋण सूचकांक और समग्र राजकोषीय प्रबंधन से संबंधित मुद्दों से जूझ रहा है।
  - » **आंध्र प्रदेश:** 26.9 के सबसे कम स्कोर के साथ, आंध्र प्रदेश लगातार उच्च राजकोषीय घाटे से प्रभावित रहा है
- **शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्यों (जैसे ओडिशा, छत्तीसगढ़, गोवा और झारखंड) ने निम्नलिखित विशेषताएं प्रदर्शित की हैं:**
  - » **उच्च पूंजीगत परिव्यय:** इन राज्यों ने अपने सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) का 4% तक का उच्च पूंजीगत परिव्यय किया है।
  - » **प्रभावी राजस्व संग्रहण:** इन राज्यों ने राजस्व जुटाने में प्रभावी ढंग से काम किया है।
  - » **राजस्व अधिशेष:** इन राज्यों ने राजस्व अधिशेष हासिल किया है।
  - » **कम ब्याज भुगतान:** इन राज्यों ने राजस्व प्राप्तियों का लगभग 7% ही ब्याज भुगतान पर खर्च किया

एफएचआई का महत्व:

- राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (एफएचआई) डेटा-आधारित जानकारी प्रदान करके राज्यों को वित्तीय अनुशासन बनाए रखने में मदद करता है। यह राज्यों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है और उन्हें अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार करने के लिए प्रेरित करता है।
- एफएचआई राज्य-विशिष्ट चुनौतियों की पहचान करने में भी मदद करता है और इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक सुधारों का मार्गदर्शन करता है।
- एफएचआई सहकारी संघवाद को मजबूत करता है और भारत के 'विकसित भारत @2047' के लक्ष्य के अनुरूप है। यह सूचकांक राज्यों के वित्तीय स्वास्थ्य पर नियमित रूप से नजर रखता है और निरंतर सुधार सुनिश्चित करने में मदद करता है।

कच्चे जूट के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में वृद्धि

चर्चा में क्यों?

हाल ही में किसानों का समर्थन करने और जूट उद्योग को बढ़ावा देने के एक महत्वपूर्ण कदम में, केंद्र सरकार ने कच्चे जूट के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में वृद्धि को मंजूरी दे दी है। 2025-26 विपणन सीजन के लिए नया MSP 5,650 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है, जो पिछले वर्ष की कीमत से 315 रुपये अधिक है।

2024-25 की MSP से तुलना:

- 2025-26 के लिए वृद्धि वर्ष 2024-25 विपणन सीजन के लिए लागू की गई 285 रुपये की वृद्धि से अधिक है, जब MSP को बढ़ाकर 5,335 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया गया था।
- इस नवीनतम वृद्धि से किसानों को जूट की खेती के लिए और अधिक प्रोत्साहित करने की उम्मीद है, जिसे देश में जूट उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जाता है।
- MSP बढ़ाकर, सरकार न केवल जूट किसानों को बेहतर रिटर्न प्रदान कर रही है, बल्कि जूट क्षेत्र में स्थिरता को भी बढ़ावा दे रही है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) के बारे में:

- न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) वह न्यूनतम मूल्य है जिस पर सरकार किसानों से कुछ फसलों की खरीद की गारंटी देती है।
- यह एक सुरक्षात्मक उपाय है जो किसानों को एक उचित मूल्य प्राप्त करने में मदद करता है और उन्हें बाजार में होने वाले उतार-चढ़ाव से बचाता है, जिससे उन्हें नुकसान हो सकता है।
- MSP किसानों के लिए एक सुरक्षा जाल के रूप में काम करता है, यह सुनिश्चित करता है कि उन्हें अपने उत्पाद के लिए एक

निश्चित आय मिले, खासकर जब बाजार में कीमतें अस्थिर हों।

MSP की मुख्य विशेषताएं

- **सरकारी खरीद:** MSP वह मूल्य है जिस पर सरकारी एजेंसियां, जैसे कि भारतीय खाद्य निगम (FCI) और अन्य राज्य एजेंसियां, किसानों से फसलों की खरीद करती हैं। यह खरीद तभी होती है जब बाजार मूल्य MSP से नीचे गिर जाता है, यह सुनिश्चित करता है कि किसानों को अपने उत्पाद को नुकसान में बेचने के लिए मजबूर न किया जाए।
- **CACP द्वारा सिफारिशें:** कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (CACP) विभिन्न फसलों के लिए MSP तय करने की सिफारिश करता है। यह आयोग फसलों की उत्पादन लागत, बाजार में चल रहे भाव और अन्य कारकों को ध्यान में रखकर यह निर्णय लेता है। CACP मुख्यत: 23 फसलों के लिए MSP की सिफारिश करता है, जिनमें 22 प्रमुख फसलें और गन्ना भी शामिल है। हालांकि, सरकार 25 फसलों के लिए MSP घोषित करती है।
- **कोई वैधानिक समर्थन नहीं:** जबकि MSP किसानों की आय की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसके लिए कोई कानूनी बाध्यता नहीं है। सरकार कानूनी रूप से MSP पर फसलों की खरीद के लिए बाध्य नहीं है, भले ही बाजार मूल्य घोषित मूल्य से नीचे गिर जाए। इसलिए, MSP एक दिशानिर्देश के रूप में कार्य करता है, न कि एक कानून के रूप में।

भारतीय कृषि में MSP की भूमिका:

- MSP भारत की कृषि नीति में एक महत्वपूर्ण उपकरण है जिसका उद्देश्य किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य दिलाना है। यह किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है, लेकिन कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं होने के कारण, इसकी सफलता सरकार की नीतियों पर निर्भर करती है। यही कारण है कि MSP कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण, लेकिन विवादास्पद विषय बना हुआ है। MSP किसानों को कीमतों में गिरावट से बचाकर फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

डायमंड इम्प्रेस्ट ऑथोराइजेशन (DIA) योजना

चर्चा में क्यों?

भारत के डायमंड उद्योग में गिरते निर्यात और नौकरी की हानि को संबोधित करने के लिए वाणिज्य विभाग ने 2025 अप्रैल से डायमंड इम्प्रेस्ट ऑथोराइजेशन (DIA) योजना शुरू की है। यह पहल भारत की वैश्विक स्तर पर हीरे के व्यापार में स्थिति को मजबूत करने और निर्यातकों को लक्षित समर्थन प्रदान करने के साथ-साथ घरेलू हितों की रक्षा करने का उद्देश्य रखती है।

DIA योजना के बारे में:

- यह योजना भारत के हीरे के निर्यात को बढ़ाने, मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने और देश की वैश्विक हीरे के उद्योग में प्रमुखता बनाए रखने का लक्ष्य रखती है।
- **मुख्य प्रावधान:**
  - » **ड्यूटी-फ्री आयात:** 0.25 कैरेट (25 सेंट) से कम के प्राकृतिक कट और पॉलिश किए हुए हीरे बिना ड्यूटी चुकाए आयात किए जा सकते हैं।
  - » **मूल्य संवर्धन अनिवार्यता:** निर्यातकों को योजना के लाभ प्राप्त करने के लिए कम से कम 10% मूल्य संवर्धन सुनिश्चित करना होगा।

पात्रता मानदंड:

- **कौन आवेदन कर सकता है?**
  - » केवल दो-स्टार एक्सपोर्ट हाउस और उससे ऊपर के निर्यातक पात्र होंगे।
  - » कंपनियों को हर साल $15 मिलियन या उससे अधिक का निर्यात राजस्व होना चाहिए।
- **दो-स्टार एक्सपोर्ट हाउस की परिभाषा:** वे व्यवसाय जो हर साल कम से कम $15 मिलियन का निर्यात करते हैं।

योजना का महत्व:

- **वैश्विक एकरूपता:** यह योजना अंतरराष्ट्रीय लाभकारीकरण (beneficiation) के अभ्यास के अनुरूप है, जैसा कि हीरे उत्पादक देशों जैसे बोत्सवाना, नामीबिया और अंगोला में स्थानीय प्रसंस्करण अनिवार्य है।
- **प्रतिस्पर्धा में वृद्धि:** बढ़ती लागत और खनन देशों से प्रतिस्पर्धा ने भारत के डायमंटैरों के लिए चुनौतियां खड़ी की हैं। यह योजना प्रतिस्पर्धा को संतुलित करती है और कंपनियों को अपने संचालन विदेशों में स्थानांतरित करने से रोकती है।
- **नवाचार को बढ़ावा देना:** इनपुट लागत को कम करके और उन्नत कटाई एवं पॉलिशिंग तकनीकों को बढ़ावा देकर यह योजना हीरे के उद्योग में नवाचार को प्रोत्साहित करती है।

हीरे के उद्योग पर प्रभाव:

- **निर्यात प्रवृत्तियाँ:** भारत दुनिया के 90% हीरे प्रसंस्कृत करता है, लेकिन निर्यात में गिरावट आई है।
- FY24 में निर्यात $32.71 बिलियन तक गिर गए, जो पिछले तीन वर्षों में सबसे कम है, जबकि FY23 में यह $37.96 बिलियन और FY22 में $38.94 बिलियन था।
- **रोजगार सृजन:** हीरे का उद्योग श्रम-गहन है, जिससे यह योजना मूल्य श्रृंखला में कारीगरों से लेकर प्रसंस्करण इकाइयों तक रोजगार के महत्वपूर्ण अवसर उत्पन्न कर सकती है।
- **उद्योग समर्थन:** यह योजना लागत को कम करने, नवाचार को प्रोत्साहित करने और भारत की वैश्विक हीरे के व्यापार में नेतृत्व को बनाए रखने की क्षमता रखती है।

चुनौतियाँ और अवसर:

- **चुनौतियाँ:**
  - » उत्पादन लागत में वृद्धि और अमेरिका और चीन जैसे प्रमुख बाजारों से मांग में गिरावट।
  - » खनन देशों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा, जो स्थानीय लाभकारीकरण और मूल्य संवर्धन पर जोर देते हैं।
- **अवसर:**
  - » यह योजना भारत के डायमंटैरों को उन्नत तकनीकों और प्रक्रियाओं को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकती है, जिससे वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा बनाए रखने में मदद मिलेगी।
  - » यह दीर्घकालिक विकास के लिए एक ढांचा प्रदान करती है, साथ ही रोजगार सृजन और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करती है।

DIA योजना भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

- भारत के रत्न और आभूषण का निर्यात लंबे समय से देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जिनके प्रमुख बाजारों में अमेरिका, यूएई और हांगकांग शामिल हैं। हालांकि, हालिया निर्यात में गिरावट यह दर्शाती है कि DIA योजना जैसी लक्षित पहल की आवश्यकता है।
- यह पहल न केवल तत्काल चुनौतियों का समाधान करती है, बल्कि यह भारत की निरंतर नवाचार को बढ़ावा देने और हीरे के उद्योग में अपनी नेतृत्व स्थिति को बनाए रखने के प्रति प्रतिबद्धता को भी प्रदर्शित करती है।

भारत: विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था

चर्चा में क्यों?

हाल ही में विश्व बैंक के वैश्विक आर्थिक संभावना (जीईपी) रिपोर्ट के जनवरी 2025 संस्करण के अनुसार, भारत की अर्थव्यवस्था वित्त वर्ष 26 और 27 में 6.7% की स्थिर दर से बढ़ने का अनुमान है। यह विकास दर वैश्विक औसत 2.7% से काफी अधिक है, जोकि भारत की आर्थिक लचीलेपन को दर्शाता है।

- भारत अगले दो वित्तीय वर्षों में दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखने की ओर अग्रसर है।

रिपोर्ट के बारे में:

- वैश्विक आर्थिक संभावना (जीईपी) रिपोर्ट विश्व बैंक समूह द्वारा प्रकाशित एक प्रमुख प्रकाशन है जोकि वैश्विक आर्थिक रुझानों और अनुमानों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के विकास और चुनौतियों पर जोर देता है।
- जीईपी रिपोर्ट साल में दो बार- जनवरी और जून में प्रकाशित होती है, जोकि नीति निर्माताओं, अर्थशास्त्रियों और शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में कार्य करती है।

रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष :

- **भारत की आर्थिक वृद्धि:** भारत सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था बनी रहेगी, वित्त वर्ष 26 और 27 के दौरान 6.7% की लगातार वार्षिक वृद्धि दर के साथ।
- **क्षेत्रीय विकास:** भारत का सेवा क्षेत्र वृद्धि करता रहेगा, जबकि विनिर्माण क्षेत्र में सरकारी पहलों के समर्थन से सुधार होने की उम्मीद है।
- **निजी खपत:** मजबूत श्रम बाजार, बढ़ती क्रेडिट पहुंच और कम मुद्रास्फीति भारत में निजी खपत को बढ़ावा देंगी।
- **निवेश वृद्धि:** निजी निवेश, बेहतर कॉर्पोरेट बैलेंस शीट और अनुकूल वित्तपोषण स्थितियों से प्रेरित होकर भारत में निवेश स्थिर रहेगा।
- **वैश्विक विकास तुलना:** वैश्विक अर्थव्यवस्था में 2.7% की वृद्धि का अनुमान है, जबकि भारत इस वृद्धि को पीछे छोड़ देगा।
- **उभरते बाजारों का परिवर्तन:** उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं (ईएमडीई) ने विश्व अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। ये देश अब वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 45% का योगदान देते हैं, जो सदी की शुरुआत में 25% था।

भारत में विकास को गति देने वाली प्रमुख पहलें:

- **पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान:** यह योजना देश के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य आधुनिक सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क के माध्यम से देश के विभिन्न हिस्सों को बेहतर ढंग से जोड़ना है।
- **स्टार्टअप इंडिया:** यह पहल नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देती है। इसके तहत स्टार्टअप्स को वित्तीय सहायता, मार्गदर्शन और कर प्रोत्साहन प्रदान किए जाते हैं।
- **उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना:** यह योजना घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई है। इसके तहत इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल और कपड़ा जैसे क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाने वाली कंपनियों को वित्तीय प्रोत्साहन दिए जाते हैं।

विश्व बैंक के बारे में:

- विश्व बैंक एक वैश्विक वित्तीय संस्था है जिसकी स्थापना 1944 में हुई थी। इसे मूल रूप से अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (आईबीआरडी) के नाम से जाना जाता था और इसे अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के साथ स्थापित किया गया था। बाद में आईबीआरडी को विश्व बैंक के नाम से जाना जाने लगा।
- इसका मुख्य उद्देश्य विकासशील देशों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करना है, जिससे गरीबी कम हो और समृद्धि बढ़े। यह सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने पर केंद्रित है। विश्व बैंक समूह में पांच संस्थान शामिल हैं:

» अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (आईबीआरडी)
» अंतर्राष्ट्रीय विकास एसोसिएशन (आईडीए)
» अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम (आईएफसी)
» बहुपक्षीय गारंटी एजेंसी (एमआईजीए)
» अंतर्राष्ट्रीय निवेश विवाद निपटान केंद्र (आईसीएसआईडी)

- भारत विश्व बैंक का सदस्य देश है, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय निवेश विवाद निपटान केंद्र (आईसीएसआईडी) का सदस्य नहीं है। विश्व बैंक संयुक्त राष्ट्र की एक विशेषीकृत एजेंसी है जिसमें 189 देश सदस्य हैं। विश्व बैंक द्वारा प्रकाशित प्रमुख रिपोर्टों में मानव पूंजी सूचकांक, विश्व विकास रिपोर्ट और वैश्विक आर्थिक संभावनाएं शामिल हैं।

'सैशेटाइजेशन' योजना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने और विशेष रूप से कम आय वाले और वंचित समुदायों के बीच म्यूचुअल फंड की पहुंच बढ़ाने के लिए एक नई पहल शुरू की है।

- सेबी ने इस योजना के अंतर्गत सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) की न्यूनतम सीमा को घटाकर 250 रुपये प्रति माह कर दिया है, जिससे छोटे निवेशकों के लिए म्यूचुअल फंड में प्रवेश आसान हो गया है।
- इस 'सैशेटाइजेशन' पहल का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को शेयर बाजार में निवेश करने के लिए प्रेरित करना है।

सैशेटाइजेशन के बारे में:

- यह अवधारणा जो उपभोक्ता सामान (FMCG) क्षेत्र से ली गयी है, जहां छोटे और सस्ते उत्पाद संवेदनशील उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करते हैं।
- इस रणनीति ने ग्रामीण और कम आय वाले लोगों तक सफलतापूर्वक पहुंच बनाई है, जो बड़ी मात्रा में खरीदारी नहीं कर सकते थे।
- सेबी म्यूचुअल फंड उद्योग में इस मॉडल को लागू करने की योजना बना रही है, जो निवेश के अवसर प्रदान करने के लिए 250 रूपये की न्यूनतम एसआईपी (Systematic Investment Plan) की पेशकश करती है।

250 रुपये एसआईपी क्यों?

- वर्तमान में, अधिकांश म्यूचुअल फंडों को 500 रुपये की न्यूनतम एसआईपी की आवश्यकता होती है, जो कई व्यक्तियों की वित्तीय पहुंच से बाहर है। इस सीमा को घटाकर 250 रुपये करने का सेबी का प्रस्ताव प्रवेश बाधा को कम करने का लक्ष्य रखता है, जिससे कम आय वाले समूहों के लोग निवेश शुरू कर सकें।
- इस कदम का उद्देश्य इन व्यक्तियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और म्यूचुअल फंड कंपनियों को अपनी सेवाओं का विस्तार करके वंचित क्षेत्रों में पहुंचाना है, जिससे निवेश भागीदारी में अंतर को कम करने में मदद मिलेगी।

यह योजना कैसे कार्य करेगी?

- सेबी के परामर्श पत्र में उल्लिखित है कि 250 रुपये की एसआईपी मुख्य रूप से कम आय वाले पृष्ठभूमि के नए निवेशकों को लक्षित करेगी। मौजूदा निवेशक पात्र नहीं होंगे।
- यह योजना एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) के साथ 250 रुपये की तीन एसआईपी तक की अनुमति देती है। इन एसआईपी को रियायती दरों पर पेश किया जाएगा, पहले तीन के बाद की किसी भी अतिरिक्त एसआईपी को छूट से बाहर रखा जाएगा।
- यह एसआईपी केवल इक्विटी योजनाओं तक सीमित होगी, इसमें उच्च जोखिम वाले ऋण फंड, थीमैटिक फंड और मिड-कैप या स्मॉल-कैप इक्विटी फंड जैसे विकल्प शामिल नहीं होंगे। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना कि पहली बार निवेश करने वाले अत्यधिक जोखिम के संपर्क में न आएं।
- इसके अतिरिक्त, विकास विकल्प का चयन किया जाएगा, जिसका अर्थ है कि लाभों को पुनर्निवेशित किया जाएगा ताकि निवेश का मूल्य बढ़ सके।

आगे की राह:

- सेबी की सैशेटाइजेशन योजना लाखों नए निवेशकों को म्यूचुअल फंड बाजार में ला सकती है, विशेषकर वंचित क्षेत्रों में। इस विस्तार से भारत के इक्विटी बाजारों में अधिक घरेलू निवेश हो सकता है, जो विदेशी निवेशकों के कारण होने वाली अस्थिरता के खिलाफ अधिक स्थिरता प्रदान करता है।
- छोटे, सस्ते एसआईपी की पेशकश करके, सेबी का लक्ष्य भारत के पूंजी बाजारों के वित्तीय लाभों को अधिक समतापूर्ण बनाना है, जिससे नए निवेशकों को समय के साथ धन सृजन में मदद मिलेगी। जैसे-जैसे म्यूचुअल फंड बढ़ते हैं, ये छोटे टिकट एसआईपी कई लोगों के लिए उनकी निवेश यात्रा का पहला कदम बन सकते हैं।

जेड-मोर्ह सुरंग (Z-Morh Tunne)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर के सोनमर्ग में जेड-मोर्ह सुरंग का उद्घाटन किया। यह सुरंग जम्मू-कश्मीर में बुनियादी ढांचे के विकास की एक महत्वाकांक्षी परियोजना का हिस्सा है। जोजिला सुरंग और उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक जैसी अन्य प्रमुख परियोजनाओं के साथ मिलकर, जेड-मोर्ह सुरंग इस क्षेत्र को अधिक जुड़ा हुआ और सुलभ बनाएगी।

जेड-मोर्ह सुरंग के बारे में:

- जेड-मोर्ह सुरंग 6.4 किलोमीटर लंबी है और कश्मीर के गांदरबल

में स्थित है, जिसे श्रीनगर-लेह राजमार्ग पर हिमस्खलन-प्रवण क्षेत्रों को बायपास करने के लिए डिजाइन किया गया है। जेड-मोर्ह सुरंग का निर्माण मई 2015 में शुरू हुआ और 2024 में पूरा हुआ। सुरंग का फरवरी 2024 में सॉफ्ट ओपनिंग हुआ और इसका आधिकारिक उद्घाटन जनवरी 2025 में हुआ।

- यह परियोजना शुरू में 2015 में बीआरओ के तहत शुरू हुई थी, लेकिन बाद में सुरंग का विकास राष्ट्रीय राजमार्ग और आधारभूत संरचना विकास निगम लिमिटेड (एनएचआईडीसीएल) को सौंप दिया गया था, न कि बीआरओ को।
- जेड-मोर्ह सुरंग उन्नत तकनीकों से सुसज्जित है, जिसमें रीयल-टाइम ट्रैफिक अपडेट, एक ट्रैफिक प्रबंधन प्रणाली और अन्य सुविधाएँ शामिल हैं जोकि सहज कनेक्टिविटी सुनिश्चित करती हैं।

सुरंग का महत्वः

- जेड-मोर्ह सुरंग रक्षा रसद को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा देगी क्योंकि यह सोनमर्ग और श्रीनगर के बीच रक्षा बलों के लिए आसान, सभी मौसमों में पहुंच सुनिश्चित करेगी, जोकि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में रणनीतिक संचालन के लिए महत्वपूर्ण है।
- सुरंग से माल के सुचारू परिवहन को बढ़ावा मिलने, व्यापार को बढ़ावा देने और सोनमर्ग में अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने की उम्मीद है, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। यह विशेष रूप से क्षेत्र को साल भर सुलभ बनाकर पर्यटन और स्थानीय व्यवसायों के विकास का समर्थन करेगा।
- जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के दूरस्थ क्षेत्रों के बीच कनेक्टिविटी में सुधार करके, सुरंग सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा देती है, स्थानीय आबादी के लिए गतिशीलता और पहुंच को बढ़ाती है और इन क्षेत्रों में एकता को बढ़ावा देती है।
- जेड-मोर्ह सुरंग सोनमर्ग को साल भर पर्यटन के लिए खोल देगी, जिसमें इसे एक संभावित स्की गंतव्य भी बनाना शामिल है। इससे नए आर्थिक अवसर पैदा होंगे और सोनमर्ग को एक प्रमुख पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने में मदद मिलेगी।

जोजिला सुरंग क्या है?

- **स्थानः** जोजिला सुरंग जम्मू-कश्मीर में श्रीनगर-लेह राजमार्ग पर 11,578 फीट (लगभग 3,500 मीटर) की ऊंचाई पर निर्माणाधीन है।
- **उद्देश्यः** सुरंग का उद्देश्य एनएच-1 पर श्रीनगर और लेह के बीच साल भर कनेक्टिविटी प्रदान करना है, जिससे पूरे वर्ष पहुंच सुनिश्चित हो सके।
- **कुल लंबाईः** सुरंग 14.15 किलोमीटर लंबी होगी।
- **महत्वः** यह भारत की सबसे लंबी सड़क सुरंग और एशिया की सबसे लंबी द्वि-दिशात्मक सुरंग होगी।
- **आयामः** सुरंग 9.5 मीटर चौड़ी और 7.57 मीटर ऊंची होगी, जिसे घोड़े की नाल के आकार में डिजाइन किया गया है।

विश्व आर्थिक स्थिति और संभावनाएं (WESP) 2025 रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

हाल ही में संयुक्त राष्ट्र ने अपनी विश्व आर्थिक स्थिति और संभावनाएं (WESP) 2025 रिपोर्ट जारी की है, जिसमें 2025 में वैश्विक आर्थिक वृद्धि 2.8% पर स्थिर रहने का अनुमान लगाया गया है, जोकि पिछले वर्ष के समान है।

WESP 2025 रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्षः

- **वैश्विक वृद्धि मंद गति से बनी हुई हैः** उच्च ऋण स्तर, धीमी उत्पादकता वृद्धि और कमजोर निवेश के कारण 2024 और 2025 दोनों वर्षों में वैश्विक आर्थिक वृद्धि 2.8% रहने का अनुमान है, जोकि पूर्व-महामारी औसत 3.2% से कम है।
- **लचीलापनः** वैश्विक अर्थव्यवस्था ने कई आर्थिक झटकों के प्रति लचीलापन प्रदर्शित किया है, लेकिन धीमी उत्पादकता वृद्धि और उच्च ऋण जैसे अंतर्निहित संरचनात्मक मुद्दे प्रगति पर अंकुश लगा रहे हैं।
- **क्षेत्रीय विकास में भिन्नताः** क्षेत्रीयता में विकास भिन्न-भिन्न हैं। जबकि अमेरिका और यूरोप जैसे विकसित अर्थव्यवस्थाओं में विकास धीमा है, भारत, पूर्वी एशिया और अफ्रीका के कुछ हिस्सों जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाएं अधिक आशाजनक वृद्धि दर दिखाती हैं।
- **मुद्रास्फीति और मौद्रिक नीतिः** वैश्विक मुद्रास्फीति में 2024 में 4% से घटकर 2025 में 3.4% होने का अनुमान है, जोकि घरों और व्यवसायों के लिए कुछ राहत प्रदान करता है। कई केंद्रीय बैंकों द्वारा मुद्रास्फीति कम होने के साथ-साथ ब्याज दरों में कमी की उम्मीद है, हालांकि विकासशील देशों को अभी भी मुद्रास्फीति की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।
- **व्यापार और भू-राजनीतिक जोखिमः** वैश्विक व्यापार में 2025 में मामूली 3.2% की वृद्धि होने की उम्मीद है, व्यापार नीतियों में तनाव और भू-राजनीतिक संघर्ष स्थिरता के लिए जोखिम पैदा करते हैं।

2025 में भारत की संभावित वृद्धिः

WESP 2025 रिपोर्ट में भारत एक प्रमुख प्रदर्शनकर्ता है, जिसकी अनुमानित सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 6.6% है, जो इसे दक्षिण एशिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बनाती है। इस सकारात्मक दृष्टिकोण में कई कारक योगदान करते हैं:

- **निजी खपत और निवेशः** भारत की मजबूत निजी खपत और विशेष रूप से बुनियादी ढांचे में निवेश में वृद्धि, इसकी आर्थिक वृद्धि के प्रमुख चालक हैं। बुनियादी ढांचे में पूंजीगत व्यय (CapEx) पर सरकार का जोर महत्वपूर्ण दीर्घकालिक आर्थिक लाभ प्रदान करने की उम्मीद है, जिसमें बेहतर कनेक्टिविटी,

औद्योगिक विकास और रोजगार सृजन शामिल हैं।

- **रुपये पर दबाव कम होना:** अमेरिकी डॉलर के मजबूत होने के कारण दबाव में रहे भारतीय रुपये के आने वाले वर्ष में स्थिर होने की उम्मीद है। रिपोर्ट में अमेरिकी मौद्रिक नीतियों के ढीले होने के कारण दक्षिण एशियाई मुद्राओं, जिसमें रुपया भी शामिल है, पर मूल्यह्रास दबाव कम होने का संकेत दिया गया है, जो इस क्षेत्र में अधिक निवेश को आकर्षित करेगा। इससे भारत के विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ावा मिल सकता है और अर्थव्यवस्था के लिए कुछ राहत प्रदान कर सकता है।
- **क्षेत्रीय विकास चालक:** भारत के विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में विस्तार जारी रहने का अनुमान है। विशेष रूप से, फार्मास्यूटिकल्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और प्रौद्योगिकी सेवाओं में भारत की बढ़ती उपस्थिति देश के निर्यात प्रदर्शन को मजबूत समर्थन प्रदान करेगी। इसके अतिरिक्त, 2024 में अनुकूल मानसून सीजन से 2025 में कृषि उत्पादकता में सुधार होने की उम्मीद है, जिससे अर्थव्यवस्था को और मजबूती मिलेगी।
- **श्रम बाजार और लैंगिक अंतर:** भारत में श्रम बाजार संकेतक मजबूत बने हुए हैं, शहरी बेरोजगारी 6.6% पर स्थिर है, लैंगिक असमानताएं बनी हुई हैं। रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि महिलाओं की श्रम शक्ति में भागीदारी में सुधार हुआ है, किन्तु महत्वपूर्ण अंतराल बने हुए हैं, जोकि राष्ट्र की समग्र उत्पादकता क्षमता को सीमित करते हैं। इन लैंगिक असमानताओं को दूर करने से आगे आर्थिक विकास को गति मिल सकती है।
- **महत्वपूर्ण खनिज संसाधन:** भारत में दुर्लभ पृथ्वी तत्वों जैसे महत्वपूर्ण खनिजों के विशाल भंडार हैं। ये खनिज प्रौद्योगिकी और हरित ऊर्जा उद्योगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनकी वैश्विक मांग लगातार बढ़ रही है। भारत इन खनिजों को उनके आर्थिक विकास के लिए एक बड़े अवसर के रूप में देख रहा है। देश इन प्राकृतिक संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करके अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बना सकता है।

वित्त वर्ष 2025-26 के लिए जीडीपी वृद्धि का पूर्वानुमान

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत सरकार के सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई) ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 'पहले अग्रिम अनुमान' (एफएई) जारी किए हैं। ये अनुमान उपलब्ध डेटा और पिछले रुझानों के आधार पर देश के आर्थिक उत्पादन का पूर्वानुमान लगाते हैं।

जीडीपी क्या है?

- सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) किसी विशिष्ट अवधि में किसी देश में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को मापता है। यह मध्यवर्ती वस्तुओं को छोड़कर कुल आर्थिक उत्पादन को दर्शाता है।

जीडीपी वृद्धि के चार प्रमुख 'इंजन':

- **निजी अंतिम उपभोग व्यय (पीएफसीई):** वस्तुओं और सेवाओं पर व्यक्तियों और परिवारों द्वारा किया गया व्यय।
- **सरकारी अंतिम उपभोग व्यय (जीएफसीई):** मजदूरी, रक्षा, शिक्षा और सार्वजनिक सेवाओं पर सरकारी व्यय।
- **सकल स्थिर पूंजीगत व्यय (जीएफसीएफ):** बुनियादी ढांचे और उत्पादन क्षमता में निवेश।
- **शुद्ध निर्यात (एनएक्स):** जो किसी देश द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य (निर्यात) और उस देश द्वारा खरीदे गए विदेशी वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य (आयात) के बीच अंतर को दर्शाता है।

जीडीपी गणना का सूत्र:

- जीडीपी = निजी उपभोग + सकल निवेश + सरकारी निवेश + सरकारी व्यय + (निर्यात - आयात)

असल जीडीपी और नाममात्र जीडीपी में अंतर (Difference between Real GDP and Nominal GDP):

- **नाममात्र जीडीपी (Nominal GDP):** किसी विशिष्ट समय अवधि (त्रैमासिक या वार्षिक) में किसी देश की सीमाओं के भीतर उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य, वर्तमान बाजार मूल्यों का उपयोग करके गणना किया जाता है, जिसमें मुद्रास्फीति शामिल है। यह अर्थव्यवस्था के आकार की गणना के लिए उपयोगी है, किन्तु आर्थिक विकास के दृष्टिकोण को विकृत करता है।
- **वास्तविक जीडीपी (Real GDP):** जब एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों की गणना आधार वर्ष के मूल्य या स्थिर मूल्य पर की जाती है तो जो GDP की वैल्यू प्राप्त होती है उसे रियल जीडीपी कहते हैं। यह विशेष रूप से नीति निर्माताओं के लिए आर्थिक रणनीतियों को डिजाइन करने और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

वित्त वर्ष 2025-26 के लिए जीडीपी पूर्वानुमान:

- पूर्वानुमान के आधार पर वित्त वर्ष 2025-26 के लिए भारत की नाममात्र जीडीपी का 324 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है, जो वित्त वर्ष 24 की तुलना में 9.7% की वृद्धि को दर्शाता है। साथ ही यह भारत के नाममात्र जीडीपी को 85 रुपये प्रति डॉलर की विनिमय दर के आधार पर लगभग 3.8 ट्रिलियन डॉलर का अनुमान करता है। हालांकि, यह अनुमान संघ बजट में अनुमानित 328 लाख करोड़ रुपये से कम है।
  - » **नाममात्र जीडीपी:** वित्त वर्ष 24 की तुलना में 9.7% की वृद्धि को दर्शाते हुए 324 लाख करोड़ रुपये पर अनुमानित है।

» **वास्तविक जीडीपी:** नाममात्र जीडीपी का 57% हिस्सा बनाते हुए 184.9 लाख करोड़ रुपये अनुमानित है।

- वित्त वर्ष 20 के बाद से भारत का वास्तविक जीडीपी 4.8% की औसत दर से बढ़ा है, जो 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद देखी गई 7% की वृद्धि से काफी कम है।
- नाममात्र जीडीपी वृद्धि भी धीमी हो गई है, 2003-04 और 2018-19 के बीच 13.5% के ऐतिहासिक औसत की तुलना में वार्षिक वृद्धि 10% से नीचे आ रही है।

जीडीपी वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक:

भारत का जीडीपी चार मुख्य घटकों से प्रभावित होता है:

- **निजी उपभोग (पीएफसीई):** जीडीपी में लगभग 60% का योगदान देने वाला, निजी उपभोग में कम वृद्धि समग्र जीडीपी विस्तार में बाधा डालती है। यह इस वर्ष 7.3% बढ़ने की उम्मीद है, लेकिन वित्त वर्ष 2020-21 के बाद से यह केवल 4.8% की दर से बढ़ा है।
- **सरकारी व्यय (जीएफसीई):** जीडीपी का 10% हिस्सा होने के कारण, सरकारी व्यय में वित्त वर्ष 25 में केवल 4.2% की वृद्धि हुई, जो अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने के प्रयासों के बावजूद सीमित राजकोषीय कमी को दर्शाता है।
- **निवेश (जीएफसीएफ):** जीडीपी का लगभग 30% हिस्सा होने के कारण, निवेश में वित्त वर्ष 25 में 6.3% की वृद्धि होने का अनुमान है। हालांकि, निजी उपभोग कम होने के कारण व्यवसायों द्वारा सतर्कता बरती जा रही है, जिससे 2014 के बाद से निवेश में वृद्धि कम हो रही है।
- **शुद्ध निर्यात:** भारत पारंपरिक रूप से निर्यात की तुलना में अधिक आयात करता है, जो जीडीपी पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। हालांकि, हाल के वर्षों में आयात और निर्यात के बीच का अंतर कम हुआ है।

वित्त वर्ष 2024 में ग्रामीण गरीबी में कमी आई: एसबीआई

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के एक नवीनतम शोध अध्ययन में भारत में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गरीबी के स्तर में उल्लेखनीय गिरावट का पता चला है। यह अध्ययन भारत में गरीबी उन्मूलन के प्रयासों में हुई प्रगति को दर्शाता है।

मुख्य निष्कर्ष:

- **ग्रामीण गरीबी में कमी:** ग्रामीण गरीबी 2023-24 में 4.86% तक गिर गई है, जोकि 2011-12 में 25.7% थी। यह मुख्य रूप से सरकारी सहायता और सबसे गरीब दशमक (Decile) में अधिक खपत के कारण है।
- **शहरी गरीबी में कमी:** शहरी गरीबी 2011-12 में 13.7% से घटकर 4.09% हो गई।
- **सरकारी कार्यक्रमों का प्रभाव:** सरकारी पहल, विशेषकर प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी), ग्रामीण बुनियादी ढांचे का विकास और किसान सम्मान निधि कार्यक्रम, गरीबी में कमी लाने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।
- **उपभोग असमानता में कमी:** ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में उपभोग असमानता में पिछले वर्ष की तुलना में सुधार हुआ है।
- **खाद्य मूल्य प्रभाव:** खाद्य मूल्यों में उतार-चढ़ाव समग्र उपभोग को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जहां खाद्य व्यय अधिक है।

निष्कर्ष:

- **गरीबी कम करने प्राप्त सफलता:** ये निष्कर्ष बताते हैं कि कुल गरीबी 4-4.5% तक कम हो सकती है, जिससे गरीबी और कम होगी तथा देश के आर्थिक विकास में तेजी आएगी।
- **सरकारी कार्यक्रम और बुनियादी ढांचा विकास:** ग्रामीण-शहरी आय असमानता को कम करने में बुनियादी ढांचे और कल्याणकारी कार्यक्रमों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।
- **खाद्य मुद्रास्फीति की भूमिका:** खाद्य मुद्रास्फीति ग्रामीण, निम्न-आय वाले राज्यों में उच्च आय वाले क्षेत्रों की तुलना में खपत को अधिक प्रभावित करती है, जिससे मांग कम हो जाती है।
- **आर्थिक असमानताएं:** अध्ययन यह भी बताता है कि उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में बचत दर कम है, जोकि उच्च बाहरी प्रवास से जुड़ी है, जबकि उच्च आय वाले राज्यों में बचत दर बेहतर दिखाई देती है।

चुनौतियां:

- **ग्रामीण-शहरी विभाजन:** गरीबी में कमी के बावजूद, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच आय और संसाधनों तक पहुंच में असमानताएं बनी हुई हैं।
- **संभावित संशोधन:** 2021 की जनगणना पूरी होने और नई ग्रामीण-शहरी जनसंख्या हिस्सेदारी उपलब्ध होने पर गरीबी के अनुमान बदल सकते हैं।
- **खाद्य मुद्रास्फीति के प्रति संवेदनशीलता:** ग्रामीण क्षेत्र बढ़ती खाद्य कीमतों से अधिक प्रभावित होते हैं, जिससे उनके उपभोग पैटर्न पर असर पड़ता है।
- **सरकारी कार्यक्रमों की स्थिरता:** सरकारी कार्यक्रमों की प्रभावशीलता और दीर्घकालिक स्थिरता चिंता का विषय है, क्योंकि इन पहलों को बदलती आर्थिक स्थितियों के अनुरूप ढलना जारी रखना होगा।

गरीबी:

- गरीबी से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें व्यक्ति या समुदाय के पास न्यूनतम जीवन स्तर के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन

और आवश्यक वस्तुओं की कमी होती है। विश्व बैंक इसे कल्याण में अभाव की स्थिति के रूप में परिभाषित करता है, जिसमें कम आय, खराब स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छ पानी तक सीमित पहुंच और किसी के जीवन को बेहतर बनाने की क्षमता की कमी शामिल है।

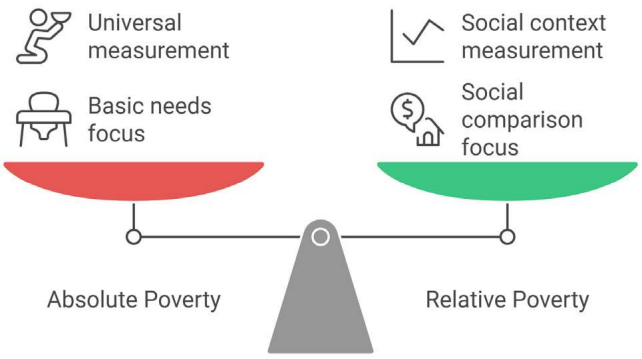

Comparing Poverty Types: Needs vs. Social Context

गरीबी के प्रकार:

- **पूर्ण गरीबी:** ऐसी स्थिति को संदर्भित करता है जहां घरेलू आय भोजन, आश्रय और आवास सहित बुनियादी जीवन स्तर को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है। पूर्ण गरीबी को विभिन्न देशों और समय के साथ मापा जा सकता है। विश्व बैंक ने 2022 में गरीबी रेखा को $2.15 प्रतिदिन तक अपडेट किया है।
- **सापेक्ष गरीबी:** सामाजिक दृष्टिकोण से परिभाषित, सापेक्ष गरीबी यह मापती है कि व्यक्ति या परिवार आसपास की आबादी के जीवन स्तर की तुलना में कैसे हैं। इसे अक्सर औसत आय के एक निश्चित प्रतिशत से नीचे रहने वाले लोगों के अनुपात के रूप में मापा जाता है।

थोक मूल्य सूचकांक के आधार वर्ष में संशोधन हेतु कार्य समूह गठित

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत सरकार ने थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) की वर्तमान श्रृंखला के आधार वर्ष को 2011-12 से संशोधित कर 2022-23 करने के लिए एक कार्य समूह गठित करने का निर्णय लिया है। संशोधन का उद्देश्य WPI को अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों के अनुकूल बनाना है, ताकि मूल्य सूचकांक प्रासंगिक और विश्वसनीय संकेतक बन सके।

कार्य समूह की संरचना:

- कार्य समूह का नेतृत्व नीति आयोग के सदस्य प्रोफेसर रमेश चंद करेंगे, जो इसके अध्यक्ष होंगे। इस समूह में आर्थिक सलाहकार, सांख्यिकीविद्, सरकारी विभागों के प्रतिनिधि, अर्थशास्त्री और उद्योग और शिक्षा जगत के सदस्य सहित विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल हैं। उल्लेखनीय रूप से, विविध दृष्टिकोण लाने के लिए कई गैर-आधिकारिक अर्थशास्त्रियों को शामिल किया गया है।

थोक मूल्य सूचकांक (WPI) के बारे में:

- थोक मूल्य सूचकांक (WPI) उपभोक्ता बाजार तक पहुँचने से पहले व्यवसायों के मध्य थोक में बेची जाने वाली वस्तुओं की कीमतों में बदलाव को मापता है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आर्थिक सलाहकार कार्यालय द्वारा मासिक रूप से प्रकाशित WPI विनिर्माण और निर्माण जैसे क्षेत्रों में मुद्रास्फीति के रुझान को ट्रैक करने में मदद करता है। WPI में वृद्धि मुद्रास्फीति के दबाव का संकेत देती है, जबकि गिरावट कम मुद्रास्फीति को दर्शाती है।

थोक मूल्य सूचकांक और उपभोक्ता मुद्रास्फीति सूचकांक:

- WPI वस्तुओं के थोक मूल्य परिवर्तनों को ट्रैक करता है, जबकि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) औसत मूल्य को ट्रैक करता है जोकि घर-परिवार वस्तुओं और सेवाओं के लिए भुगतान करते हैं। WPI थोक स्तर पर वस्तुओं तक सीमित है, जबकि CPI में वस्तुएँ और सेवाएँ दोनों शामिल हैं। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) अब मौद्रिक नीति निर्धारित करने के लिए CPI का उपयोग करता है, क्योंकि यह उपभोक्ता मुद्रास्फीति को बेहतर ढंग से दर्शाता है।

थोक मूल्य सूचकांक में संशोधन :

- 2017 में, GDP और औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) जैसे आर्थिक संकेतकों के साथ संरेखित करने के लिए WPI आधार वर्ष को 2004-05 से संशोधित कर 2011-12 कर दिया गया था। इस अद्यतन ने अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों को दर्शाने में WPI की सटीकता में सुधार किया।

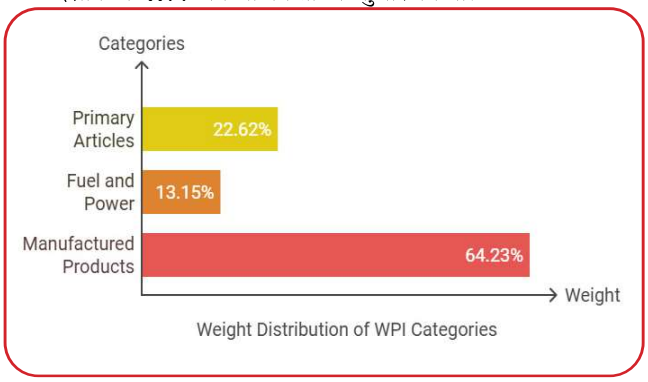

Weight Distribution of WPI Categories

थोक मूल्य सूचकांक की गणना:

- WPI की गणना वस्तुओं की एक टोकरी से कीमतों के भारित

औसत का उपयोग करके की जाती है, जिसे तीन समूहों में वर्गीकृत किया जाता है:

» प्राथमिक वस्तुएँ (22.62%): इसमें खाद्य और कृषि उत्पाद जैसे कच्चे माल शामिल हैं।

» ईंधन और बिजली (13.15%): इसमें तेल और कोयला जैसे ऊर्जा उत्पाद शामिल हैं।

» निर्मित उत्पाद (64.23%): इसमें औद्योगिक उत्पाद और मशीनरी शामिल हैं।

- WPI कुल 697 वस्तुओं को ट्रैक करता है, जिसमें 117 प्राथमिक वस्तुएँ, 16 ईंधन वस्तुएँ और 564 उत्पाद शामिल हैं।

महत्व:

- भारतीय अर्थव्यवस्था की उभरती संरचना के साथ सूचकांक को सरेखित रखने के लिए WPI आधार वर्ष का संशोधन महत्वपूर्ण है। अद्यतन सूचकांक मूल्य परिवर्तनों का अधिक सटीक प्रतिबिंब प्रदान करेगा, नीति, व्यवसाय और वित्तीय नियोजन के लिए बेहतर आर्थिक निर्णय लेने में सहायता करेगा।

डीएपी विशेष पैकेज और फसल बीमा योजनाओं की अवधि बढ़ी

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्र सरकार ने डाईअमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) उर्वरक पर एकमुश्त विशेष सब्सिडी में वृद्धि की घोषणा की है। साथ ही, दो महत्वपूर्ण कृषि बीमा योजनाओं को जारी रखने का निर्णय लिया गया है। ये दोनों ही कदम किसानों को आने वाले वर्षों में वित्तीय सहायता और जोखिम कवरेज प्रदान करने के उद्देश्य से उठाए गए हैं।

कैबिनेट के प्रमुख निर्णय:

- **डीएपी विशेष पैकेज का विस्तार:**
  - » केंद्रीय मंत्रिमंडल ने डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) उर्वरक की कीमतों को स्थिर रखने के लिए एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। 1 जनवरी, 2025 से, डीएपी पर 3,500 रुपये प्रति मीट्रिक टन की दर से एकमुश्त विशेष सब्सिडी दी जाएगी।
  - » यह सब्सिडी किसानों को डीएपी उर्वरक की सुलभता सुनिश्चित करेगी, जोकि फसल उत्पादन के लिए अत्यंत आवश्यक है।
  - » इस पैकेज के लिए लगभग 3,850 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है, जोकि वैश्विक चुनौतियों के बावजूद किसान कल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- **फसल बीमा योजनाओं को जारी रखना:**
  - » केंद्र सरकार ने किसानों की आय को स्थिर करने और उन्हें प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। इनमें से एक है प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना (आरडब्ल्यूबीसीआईएस) को 2025-26 तक जारी रखने का निर्णय। इन योजनाओं के लिए 69,515.71 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है।
  - » इन योजनाओं के तहत, किसानों को सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि जैसी प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले फसल नुकसान के लिए मुआवजा दिया जाता है। इससे किसानों को आर्थिक संकट से उबरने में मदद मिलती है और वे कृषि गतिविधियों को जारी रख सकते हैं।

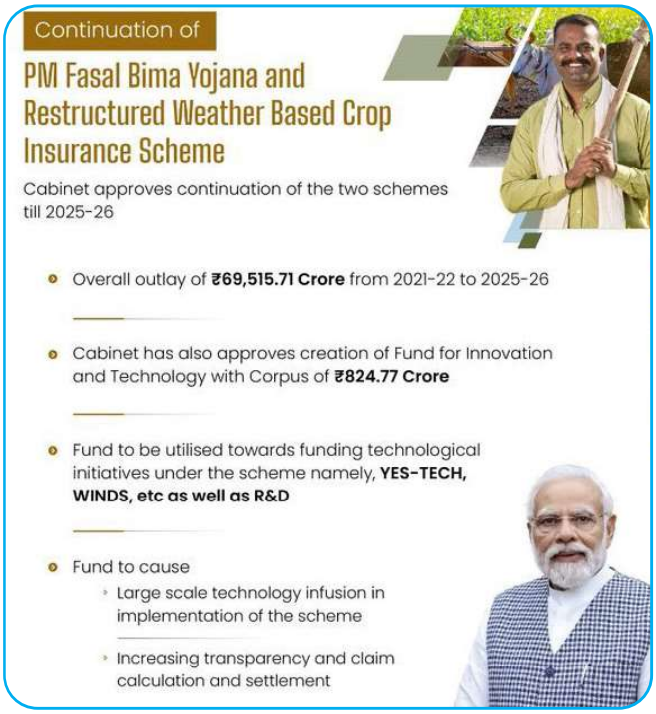

  - » सरकार ने इन बीमा योजनाओं को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी कोष (एफआईएटी) की स्थापना की है। एफआईएटी कोष के लिए 824.77 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।
- **मौसम सूचना और नेटवर्क डाटा सिस्टम (WINDS):**
  - » मौसम से संबंधित डेटा की सटीकता बढ़ाने के लिए, 2024-25 में WINDS पहल को लागू किया जाएगा। यह प्रणाली मौसम पूर्वानुमान को बढ़ावा देगी और किसानों को समय पर और सटीक मौसम अपडेट प्रदान करेगी, जिससे बेहतर फसल योजना और जोखिम शमन में सहायता मिलेगी।
- **गैर-बासमती सफेद चावल व्यापार पर समझौता ज्ञापन:**
  - » मंत्रिमंडल ने गैर-बासमती सफेद चावल (एनबीडब्ल्यूआर) के व्यापार के लिए भारत के सहकारिता मंत्रालय और इंडोनेशिया के व्यापार मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) को भी मंजूरी दे दी है। यह समझौता उत्पादन और अंतरराष्ट्रीय बाजार की कीमतों के आधार पर सालाना

एक मिलियन मीट्रिक टन तक एनबीडब्ल्यूआर के व्यापार की अनुमति देता है।

निर्णयों के लाभ:

- **उर्वरकों की लागत का प्रबंधन:** विशेष डीएपी सब्सिडी से किसानों को इनपुट, विशेष रूप से उर्वरकों की बढ़ती लागत को प्रबंधित करने में मदद मिलेगी, जिससे कृषि उत्पादन आर्थिक रूप से व्यवहार्य बना रहेगा। इससे फसल की पैदावार में सुधार होगा, जिससे किसानों और समग्र रूप से कृषि अर्थव्यवस्था दोनों को लाभ होगा।
- **प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध वित्तीय सुरक्षा:** पीएमएफबीवाई और आरडब्ल्यूबीसीआईएस योजनाओं को जारी रखते हुए सरकार किसानों को प्राकृतिक आपदाओं के मामले में वित्तीय सुरक्षा प्रदान कर रही है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि किसानों को भारी नुकसान का सामना न करना पड़े और वे अपनी फसलों को हुए नुकसान से उबर सकें, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा मिलता है।
- **बीमा में तकनीकी प्रगति:** FIAT के निर्माण और WINDS के कार्यान्वयन से कृषि बीमा के तकनीकी ढांचे में वृद्धि होगी, जिससे मौसम की अधिक सटीक भविष्यवाणी और बीमा दावों की प्रक्रिया में आसानी होगी। इससे यह सुनिश्चित होता है कि किसान अप्रत्याशित मौसम से जुड़े जोखिमों से निपटने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हैं।
- **आर्थिक विकास और वैश्विक व्यापार:** समझौता ज्ञापन से भारतीय चावल निर्यातकों के लिए नए बाजार खुलेंगे, व्यापार के अवसर बढ़ेंगे और भारत के कृषि निर्यात में वृद्धि में योगदान मिलेगा। यह वैश्विक कृषि बाजारों में भारत की स्थिति को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की दिसंबर 2024 की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (FSR) ने भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार की ओर इशारा किया है। रिपोर्ट के अनुसार, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCBs) की परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ है, विशेष रूप से गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (NPAs) में कमी आई है। यह रिपोर्ट भारतीय वित्तीय प्रणाली की मजबूती और लचीलेपन को दर्शाती है।

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट की मुख्य बिंदु:

- **सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (जीएनपीए) अनुपात में गिरावट:** सबसे उल्लेखनीय विकास सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (जीएनपीए) में कमी है, जोकि सितंबर 2024 तक घटकर 2.6% हो गई है। यह पिछले 12 वर्षों का सबसे निम्न स्तर है। यह बैंकों द्वारा खराब ऋणों के प्रबंधन में हुए उल्लेखनीय सुधार को दर्शाता है, जो भारतीय बैंकिंग प्रणाली की मजबूती का प्रमाण है।
- **शुद्ध गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनएनपीए) अनुपात:** शुद्ध एनपीए (एनएनपीए) अनुपात 0.6% पर स्थिर रहा, जोकि पर्याप्त प्रावधान करके खराब ऋणों के प्रभावी प्रबंधन का संकेत देता है। इससे पता चलता है कि एससीबी गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों से संभावित नुकसान को संभालने में मजबूत स्थिति बनाए हुए हैं।
- **स्लिपेज अनुपात और प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर):** स्लिपेज अनुपात, जोकि मानक अग्रिमों के हिस्से के रूप में नए एनपीए को मापता है, बढ़कर 0.7% हो गया, लेकिन अभी भी प्रबंधनीय बना हुआ है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) द्वारा सक्रिय प्रावधान के कारण प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर) में सुधार होकर 77% हो गया।
- **विभिन्न बैंक श्रेणियों में राइट-ऑफ की प्रवृत्ति:** रिपोर्ट में कहा गया है कि विदेशी बैंकों के लिए जीएनपीए अनुपात में राइट-ऑफ बढ़ा है, जबकि निजी क्षेत्र के बैंकों (पीवीबी) और पीएसबी के लिए इसमें थोड़ी गिरावट आई है। राइट-ऑफ जीएनपीए अनुपात को कम करने में मदद करता है और डेटा से पता चलता है कि बैंक सक्रिय रूप से अपने बहीखातों से खराब ऋणों को कम कर रहे हैं।

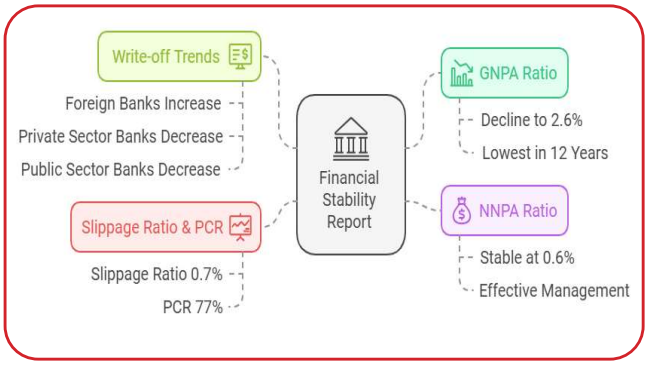

अन्य प्रमुख निष्कर्ष:

- भारतीय बैंकों ने मजबूत पूंजी भंडार बनाए रखा है, जिससे वित्तीय प्रणाली की स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान मिला है।
- आरबीआई के मैक्रो स्ट्रेस टेस्ट से पता चलता है कि अधिकांश अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (एससीबी) अच्छी तरह से पूंजीकृत हैं और प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों में भी झटके झेलने में सक्षम हैं।
- गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियां (एनबीएफसी) और बीमा क्षेत्र भी स्वस्थ बने हुए हैं, जिससे वित्तीय प्रणाली की स्थिरता को और बल मिला है।
- रिपोर्ट में बैंकों की जमा प्रोफाइल में बदलाव की प्रवृत्ति दिखाई देती है, जिसमें सावधि जमा के पक्ष में कम लागत वाली चालू खाता बचत खाता (CASA) जमा में गिरावट आई है।

- ब्याज दर की ओर बदलाव से शुद्ध ब्याज मार्जिन (एनआईएम) प्रभावित हो सकता है, जोकि उच्च ब्याज दरों के कारण ग्राहक व्यवहार में बदलाव को दर्शाता है।
- परिसंपत्तियों पर प्रतिफल (Return on Assets) तथा प्रावधानों एवं करों से पूर्व आय में सुधार के बावजूद, एनआईएम में गिरावट के कारण लाभप्रदता मोटे तौर पर अपरिवर्तित बनी हुई है।
- भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक विकास और मुद्रास्फीति में उतार- चढ़ाव जैसी वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद, भारतीय वित्तीय प्रणाली लचीली बनी हुई है। RBI के प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (नवंबर 2024) ने भारत की वित्तीय प्रणाली में विश्वास दिखाया, जिसमें भू-राजनीतिक संघर्ष, वैश्विक आर्थिक विकास और पूंजी बहिर्वाह और रुपये के मूल्यह्रास पर चिंताओं के रूप में पहचाने गए प्रमुख जोखिम शामिल हैं।
- जून 2024 तक भारत का घरेलू ऋण अन्य उभरते बाजारों की तुलना में अपेक्षाकृत कम यानी सकल घरेलू उत्पाद का 42.9% बना रहेगा।
- पिछले तीन वर्षों में घरेलू ऋण में वृद्धि हुई है, जिसका मुख्य कारण औसत ऋणग्रस्तता में वृद्धि के बजाय उधारकर्ताओं की संख्या में वृद्धि है।
- घरेलू ऋण में वृद्धि व्यापक वित्तीय समावेशन अभियान का संकेत देती है, जिसमें ऋण का उपयोग उपभोग, परिसंपत्ति सृजन (गृह और वाहन ऋण) और उत्पादक उद्देश्यों (व्यवसाय और शिक्षा ऋण) के लिए किया जा रहा है।

एमएसएमई के लिए क्रेडिट गारंटी योजना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत सरकार ने एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों) के लिए म्यूचुअल क्रेडिट गारंटी स्कीम (MCGS-MSME) शुरू की है, जिसका उद्देश्य इन उद्योगों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। यह योजना 2024-25 के संघीय बजट में घोषित की गई थी और इसका मुख्य उद्देश्य एमएसएमई को बिना गारंटी के ऋण प्राप्त करने में मदद करना है, ताकि वे अपनी कार्यक्षमता बढ़ा सकें, विशेषकर उपकरण और मशीनरी खरीदने में।

योजना की मुख्य विशेषताएँ:

- इस योजना का प्रमुख उद्देश्य एमएसएमई के लिए क्रेडिट की उपलब्धता बढ़ाना है, ताकि वे अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ा सकें और मेक इन इंडिया अभियान में योगदान दे सकें। गारंटी के बिना ऋण उपलब्ध कराकर, यह योजना एमएसएमई को ऋण पूंजी तक आसान पहुँच देने का लक्ष्य रखती है।
- **योग्यता:** एमएसएमई को योजना के लिए उद्यम पंजीकरण संख्या का होना आवश्यक है।
- **ऋण राशि:** योजना के तहत ऋण की गारंटी 100 करोड़ तक होगी (परियोजना की लागत इससे अधिक हो सकती है)।
- **उपकरण/मशीनरी लागत:** परियोजना लागत का कम से कम 75% उपकरण और मशीनरी पर खर्च किया जाना चाहिए।
- **ऋण पुनर्भुगतान अवधि:**
  - » **50 करोड़ तक के ऋण:** जिसमें 2 साल तक मुख्य किस्तों का भुगतान नहीं करना होगा।
  - » **50 करोड़ से अधिक के ऋण:** पुनर्भुगतान अवधि और मोरेटोरियम (किस्तों का भुगतान स्थगित रखने) की अवधि लंबी हो सकती है।
- **अग्रिम में योगदान (Upfront Contribution):** ऋण आवेदन पर 5% की राशि उधारीकर्ता को जमा करनी होगी।
- **वार्षिक गारंटी शुल्क:**
  - » पहले साल में शुल्क शून्य होगा।
  - » अगले 3 वर्षों के लिए 1.5% प्रति वर्ष (पिछले वर्ष के 31 मार्च तक के ऋण पर)।
  - » इसके बाद, 1% प्रति वर्ष।
- **योजना की अवधि:** यह योजना उन सभी ऋणों पर लागू होगी जो MCGS-MSME के तहत 4 वर्षों तक मंजूर किए जाएंगे, या जब तक कुल गारंटी 7 लाख करोड़ तक नहीं पहुँच जाती।

अपेक्षित लाभ:

- एमएसएमई के लिए क्रेडिट तक पहुँच में सुधार होगा, जिससे विस्तार के लिए वित्तीय बाधा को कम किया जा सकेगा।
- उपकरण और मशीनरी में निवेश बढ़ेगा, जिससे उत्पादन क्षमता सुदृढ़ होगी।
- भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला केंद्र के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी, जिससे उत्पादन क्षमता में सुधार होगा।
- आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि यह उद्यमिता और रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करेगा।

निष्कर्ष:

एमएसएमई के लिए म्यूचुअल क्रेडिट गारंटी योजना एक रणनीतिक पहल है, जिसका उद्देश्य एमएसएमई क्षेत्र को मजबूत करना है। यह योजना गारंटी मुक्त क्रेडिट पहुंच को सक्षम करके उद्योग विस्तार, निर्माण को बढ़ावा देने और वैश्विक बाजार में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने में मदद करेगी।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में महाद्वीपीय और समुद्री सुरक्षा हितों को संतुलित करने में भारत की रणनीतिक चुनौतियां

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम में तीन अग्रणी नौसैनिक प्लेटफार्मों 'आईएनएस सूरत (एक विध्वंसक), आईएनएस नीलगिरी (एक फ्रिगेट) और आईएनएस वागशीर (एक पनडुब्बी)' को समर्पित किया। यह घटना भारत की बढ़ती समुद्री क्षमताओं को दर्शाती है। मझगाँव डॉक में स्वदेशी रूप से निर्मित ये प्लेटफॉर्म, रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' की ओर देश के अग्रसर होने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इन प्लेटफॉर्म्स की ट्रिपल कमीशनिंग भारत की समुद्री शक्ति को सशक्त करने और विशेष रूप से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में क्षेत्रीय सुरक्षा के प्रति भारत की बढ़ती भूमिका को दर्शाती है।

हालांकि, इन प्रगति के बावजूद, भारत को अपनी समुद्री आकांक्षाओं और महाद्वीपीय सुरक्षा की आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। भारत का भौगोलिक स्थिति और रणनीतिक संदर्भ, साथ ही सीमित रक्षा बजट, इसके समुद्री लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण बाधाएँ उत्पन्न करते हैं। इन तत्वों के बीच सामंजस्य स्थापित करना भारत के लिए मुख्य चुनौती है।

महाद्वीपीय सुरक्षा प्राथमिकता:

- भारत की भूमि सुरक्षा आवश्यकताओं को अक्सर उसकी समुद्री रुचियों पर प्राथमिकता दी जाती है। देश विशेष रूप से हिमालय क्षेत्र में विवादित भूमि सीमाओं से घिरा हुआ है, जिसके कारण इसके रक्षा संसाधनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा इन क्षेत्रों में तैनात किया जाता है।
- भारत अपनी सैन्य ताकत का लगभग 85% हिस्सा भूमि सुरक्षा के लिए आवंटित करता है, जोकि लद्दाख क्षेत्र में चीन के साथ चल रहे गतिरोधों से प्रेरित है। भूमि-आधारित रक्षा के लिए यह प्रतिबद्धता, नौसेना के विस्तार और आधुनिकीकरण के लिए उपलब्ध संसाधनों को गंभीर रूप से सीमित करती है।

चीन का दोहरा खतराः एक समुद्री और महाद्वीपीय चुनौती

- भारत को चीन से दोहरा खतरा है। जबकि हिंद महासागर में चीन की बढ़ती उपस्थिति भारत के समुद्री हितों के लिए एक प्रत्यक्ष खतरा है, हिमालय में भारत की भूमि सीमाओं पर इसकी बढ़ती आक्रामकता भारत का ध्यान आकर्षित करती है।
- चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) और हिंद महासागर में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी (पीएलएएन) की बढ़ती उपस्थिति इस चुनौती को और बढ़ा देती है।
- चीन नौसेना के विस्तार और ग्वादर, पाकिस्तान जैसे क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास में भारी निवेश कर रहा है, जो भारत की दोनों मोर्चों पर एक साथ ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को और अधिक सीमित करता है।

इंडो-पैसिफिक प्रतिद्वंद्विता और रणनीतिक गठबंधनः

- इंडो-पैसिफिक में भारत की भूमिका भी विभिन्न रणनीतिक साझेदारियों, विशेष रूप से अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (क्वाड) में उसकी भागीदारी से जटिल है।
- क्वाड अभ्यासों, जैसे कि मालाबार नौसैनिक अभ्यास में भारत की भागीदारी, इसकी समुद्री क्षमताओं को मजबूत करती है, यह चीन के साथ तनाव को भी बढ़ा सकती है, जो इन गठबंधनों को अपने क्षेत्रीय वर्चस्व के लिए एक सीधी चुनौती मानता है।
- ऑस्ट्रेलिया-यूके-यूएस (एयूकस) समझौते का पूरी तरह से समर्थन करने से परहेज करते हुए, इन गठबंधनों में अत्यधिक प्रतिबद्धता से बचने के लिए भारत का सावधान दृष्टिकोण, क्षेत्रीय सुरक्षा गतिकी और इसकी रणनीतिक स्वायत्तता के बीच संतुलन बनाए रखने की इसकी आवश्यकता को दर्शाता है।
- इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के व्यापक भू-राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य पर विचार किए बिना भारत की समुद्री आकांक्षाओं को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है।

बजट बाधाएं और आर्थिक वास्तविकताएंः

- 2023 में भारत का रक्षा बजट लगभग 84 बिलियन डॉलर था,

जोकि अमेरिका और चीन जैसी प्रमुख शक्तियों की तुलना में सीमित है। अमेरिका और चीन दोनों अपनी रक्षा बजट का एक महत्वपूर्ण हिस्सा 'लगभग 25%' अपनी संबंधित नौसेनाओं को आवंटित करते हैं।

- भारत अपनी रक्षा बजट का केवल 17-18% हिस्सा अपनी नौसेना को आवंटित करता है। फंडिंग में यह असमानता भारत की नौसेना बलों को आधुनिक बनाने और विस्तारित करने की क्षमता को गंभीर रूप से सीमित करती है, जिससे चीन की बढ़ती समुद्री क्षमताओं का मुकाबला करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- नौसेना खर्च पर सीमित बजट ने भारत के लिए अपनी नौसेना बल और तकनीकी क्षमताओं को बढ़ाने में कठिनाई उत्पन्न की है। हालांकि, 75% स्वदेशी सामग्री वाले च15ठ गाइडेड मिसाइल विध्वंसक, आईएनएस सूरत की कमीशनिंग एक प्रभावशाली कदम है, जोकि रक्षा में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए चल रहे प्रयासों का हिस्सा है।
- नौसेना क्षमताओं में पर्याप्त और निरंतर निवेश, विशेष रूप से स्वदेशी जहाज निर्माण और पनडुब्बी उत्पादन में, भारत के समुद्री लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक है।

समुद्री क्षमता वृद्धि के लिए रोडमैप

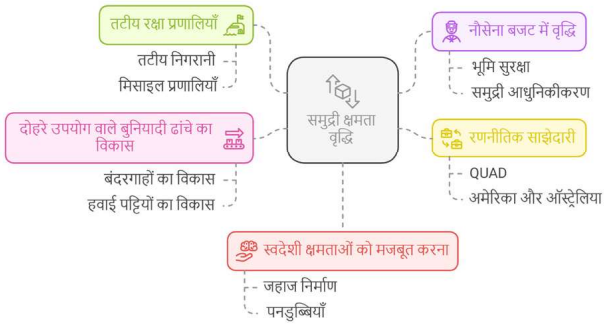

भौगोलिक बाधाएं और संसाधन आवंटन:

- भारत की भौगोलिक स्थिति इसकी समुद्री आकांक्षाओं को और अधिक जटिल बनाती है। हिमालयी क्षेत्र सहित लंबी भूमि सीमाओं के साथ, भारत के रक्षा संसाधनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भूमि सुरक्षा के लिए समर्पित होना चाहिए।
- इसके अतिरिक्त, हिंद महासागर में अपने प्रभाव को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण अंडमान और निकोबार द्वीप समूह जैसी द्वीपीय क्षेत्रों की सुरक्षा पर भारत का ध्यान केंद्रित है, जिसके लिए तटीय और बंदरगाह रक्षा में पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होती है।
- ऊर्जा आयात के लिए मलक्का जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण संकुल बिंदुओं पर भारत की निर्भरता, समुद्री सुरक्षा के महत्व को उजागर करती है। इन समुद्री मार्गों को सुरक्षित करना भारत की आर्थिक स्थिरता के लिए आवश्यक है, जिससे सक्षम ब्लू-वाटर नौसेना की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।
- हालांकि, सीमित परिचालन क्षमता और बुनियादी ढांचे की समस्याएं, जैसे कि पुराने जहाज निर्माण शिपयार्ड और बंदरगाह सुविधाएं, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर में भारत की नौसेना की पहुंच को बढ़ाने में बाधा डालती हैं।

समुद्री सुरक्षा में स्वदेशी क्षमताओं की भूमिका:

- भारत की समुद्री महत्वाकांक्षाओं के लिए एक प्रमुख चुनौती विदेशी प्रौद्योगिकी और प्लेटफार्मों पर इसकी निर्भरता है। आईएनएस सूरत जैसे स्वदेशी जहाज निर्माण की सफलता के बावजूद, भारत कई महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों, विशेष रूप से आयुध और हथियार प्रणालियों के लिए विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भर है।
- भारत की ब्रह्मोस मिसाइल की सफलता एक उल्लेखनीय उपलब्धि है, लेकिन देश को सच्ची आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए सैन्य क्षमता के मुख्य क्षेत्रों में स्वदेशी अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) को और अधिक बढ़ाना होगा।
- उन्नत युद्धपोतों और पनडुब्बियों के विकास में स्वदेशी अनुसंधान एवं विकास प्रयासों में धीमी प्रगति हुई है। 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत परमाणु-संचालित पनडुब्बियों जैसे आईएनएस अरिहंत के निर्माण के प्रयास आशा प्रदान करते हैं, लेकिन समुद्री क्षेत्र में निरंतर तकनीकी स्वतंत्रता की दिशा में प्रगति की आवश्यकता है।

समुद्री क्षमता वृद्धि के लिए एक रोडमैप:

- **तटीय रक्षा प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करना:** तटीय निगरानी और मिसाइल प्रणालियों को मजबूत करने के साथ-साथ नौसैनिक हवाई अड्डों का विस्तार करने से भारत अपनी निकट-समुद्री वर्चस्व को अधिक प्रभावी रूप से सुनिश्चित कर सकता है। सागर प्रहरी बल जैसे तटीय और बंदरगाह सुरक्षा बढ़ाने के लिए तैनात किए गए बल इस क्षेत्र में भारत के प्रयासों का महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।
- **नौसेना बजट में क्रमिक वृद्धि:** भूमि सुरक्षा की प्राथमिकता बनी हुई है किन्तु भारत को नौसेना के आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए सेना से संसाधनों को धीरे-धीरे पुन: आवंटित करने पर विचार करना चाहिए। इस कदम से नौसेना अपनी क्षमताओं का विस्तार कर सकेगी, जबकि भूमि रक्षा प्राथमिकताओं से कोई समझौता नहीं होगा।
- **रणनीतिक साझेदारी:** अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ क्वाड और रसद समझौतों जैसी साझेदारियों का लाभ उठाने से समुद्री संचालन और क्षमता निर्माण की लागत में कमी लायी जा सकती है। ये साझेदारियां संयुक्त अभ्यासों और सहयोगात्मक तकनीकी प्रगति के माध्यम से भारत की समुद्री सुरक्षा को मजबूत करेंगी।

- **द्वैत उपयोग वाली बुनियादी ढांचा विकास:** भारत को बंदरगाहों और हवाई पट्टियों के विकास को वाणिज्यिक और सैन्य दोनों उपयोगों के लिए प्राथमिकता देनी चाहिए, ताकि समुद्री संचालन का लागत-प्रभावी विस्तार सुनिश्चित किया जा सके। ईरान में चाबहार बंदरगाह, जो आर्थिक और रणनीतिक दोनों उद्देश्यों को पूरा करता है, इस दृष्टिकोण का एक बेहतरीन उदाहरण है।
- **स्वदेशी क्षमताओं को मजबूत करना:** स्वदेशी जहाज निर्माण, पनडुब्बियों और रक्षा प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। उदाहरण के तौर पर, आईएनएस अरिहंत की सफलता यह दर्शाती है कि स्वदेशी रक्षा प्रणालियों में निवेश कितना महत्वपूर्ण है। सरकार को घरेलू रक्षा उद्योग का समर्थन करना चाहिए ताकि विदेशी आयात पर निर्भरता कम की जा सके और स्वदेशी क्षमताओं को मजबूत किया जा सके।

निष्कर्ष:

भारत की इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक प्रमुख समुद्री शक्ति बनने की महत्वाकांक्षाएं न केवल महत्वाकांक्षी हैं, बल्कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारत की बढ़ती शक्ति को देखते हुए प्राप्त करने योग्य भी हैं। आईएनएस सूरत, आईएनएस नीलगिरी और आईएनएस वागशीर का कमीशनिंग भारत की बढ़ती समुद्री क्षमताओं को स्पष्ट रूप से दर्शाता है, लेकिन इसके बावजूद कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी हुई हैं। क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए, भारत को महाद्वीपीय रक्षा प्राथमिकताओं और समुद्री आकांक्षाओं के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है। इसके लिए सावधानीपूर्वक संसाधन आवंटन और नौसेना आधुनिकीकरण में निरंतर निवेश जरूरी है। स्वदेशी अनुसंधान एवं विकास पर ध्यान केंद्रित करना, तटीय रक्षा प्रणालियों को मजबूत करना और अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों का लाभ उठाना, भारत को अपनी भूमि सुरक्षा प्रतिबद्धताओं से समझौता किए बिना अपने समुद्री लक्ष्यों को साकार करने में मदद करेगा। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक प्रमुख समुद्री शक्ति बनने की दिशा में भारत की यात्रा लंबी है, लेकिन अब तक उठाए गए कदम भविष्य में एक मजबूत और आत्मनिर्भर भारतीय नौसेना के निर्माण का वादा दिखाते हैं।

संक्षिप्त मुद्दे

भारतपोल पोर्टल

सन्दर्भ:

हाल ही में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली में भारतपोल पोर्टल लॉन्च किया। यह पहल कानून प्रवर्तन एजेंसियों को विदेश भागे हुए फरार अपराधियों को ट्रैक करने के लिए एक मजबूत तंत्र प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह पोर्टल भारत के कानूनी और कानून प्रवर्तन ढांचे को मजबूत करने के व्यापक प्रयास का हिस्सा है, जिसमें तीन नए आपराधिक कानून भी शामिल हैं।

प्लेटफॉर्म के विषय में:

- भारतपोल पोर्टल केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा विकसित एक तकनीकी मंच है। इसका प्राथमिक उद्देश्य भारतीय कानून प्रवर्तन एजेंसियों को इंटरपोल से जोड़ना है, जिससे वास्तविक समय में डेटा साझा करना, रेड कॉर्नर नोटिस जारी करना और वैश्विक कानून प्रवर्तन निकायों के साथ संचार बढ़ाना संभव हो सके।
- पोर्टल का उद्देश्य अपराध नियंत्रण उपायों में सुधार करना और न्याय से बचने के लिए भारत से भागे अपराधियों को ट्रैक करने में सहायता करना है। प्लेटफॉर्म पांच प्रमुख मॉड्यूल को एकीकृत करता है:
- **कनेक्ट:** यह मॉड्यूल भारतीय कानून प्रवर्तन एजेंसियों को इंटरपोल के साथ सीधे जोड़ता है, जिससे वैश्विक स्तर पर अपराधियों को पकड़ने में आसानी होती है।
- **इंटरपोल नोटिस:** इस मॉड्यूल के माध्यम से, भारत सरकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फरार अपराधियों के लिए रेड कॉर्नर नोटिस जारी कर सकती है, जिससे उन्हें दुनिया के किसी भी कोने में ढूंढना आसान हो जाता है।
- **संदर्भ (Refrence):** यह मॉड्यूल एक ऐसा मंच है जहां सभी देशों की पुलिस एक-दूसरे से अपराधियों के बारे में जानकारी साझा कर सकते हैं।
- **प्रसारण (Broadcast):** यह मॉड्यूल किसी भी देश से आए हुए अपराध से संबंधित सूचनाओं का तुरंत आदान-प्रदान सुनिश्चित करता है।
- **संसाधन (Resource):** यह मॉड्यूल दस्तावेजों और प्रशिक्षण सामग्री के आदान-प्रदान का समर्थन करता है, जिससे कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए क्षमता निर्माण पहलों को बढ़ावा मिलेगा।

भारतपोल और नए आपराधिक कानूनों के लाभ:

- **तेज जांच:** भारतीय एजेंसियों को एक वैश्विक नेटवर्क से जोड़कर, पोर्टल डेटा अनुरोधों के त्वरित प्रतिक्रियाओं की सुविधा प्रदान करता है।
- **कुशल अपराधी ट्रैकिंग:** पोर्टल भारत से भागे हुए और न्याय से बचने वाले फरार अपराधियों को ट्रैक करने में सहायता करता

है, जिससे जवाबदेही सुनिश्चित होती है।

- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** यह भारतीय और वैश्विक कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच अधिक सहयोग को बढ़ावा देता है, जिससे आपराधिक जांच में समय पर सहायता सुनिश्चित होती है।
- **अपराध रोकथाम:** 19 विभिन्न इंटरपोल डेटाबेस तक पोर्टल की पहुंच अधिकारियों को अपराध पैटर्न का विश्लेषण करने में मदद करती है, जिससे अधिक प्रभावी अपराध रोकथाम रणनीतियों के विकास की ओर ले जाती है।

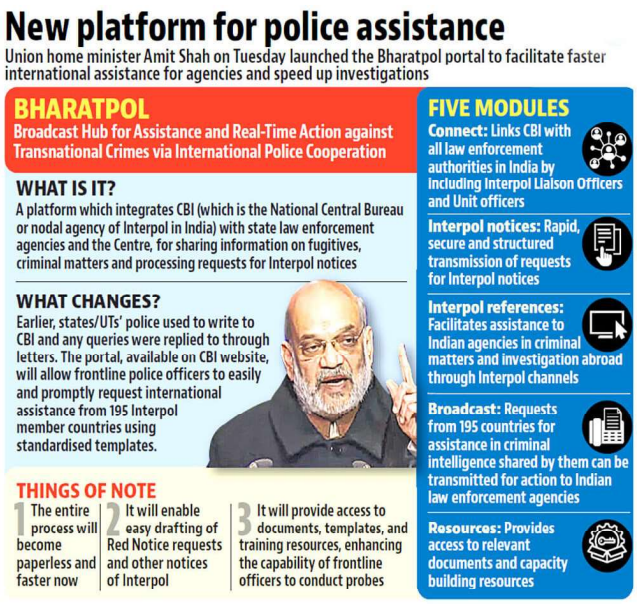

फरार आर्थिक अपराधी (एफईओ) के बारे में :

- फरार आर्थिक अपराधी (एफईओ) एक ऐसा व्यक्ति है जो फरार आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 में उल्लिखित निम्नलिखित मानदंडों को पूरा करता है:
  - » **अनुसूचित अपराध:** व्यक्ति ने 100 करोड़ रुपये या उससे अधिक की आर्थिक अपराध किया होना चाहिए। इन अपराधों में आमतौर पर वित्तीय धोखाधड़ी, धन शोधन या अन्य गंभीर आर्थिक अपराध शामिल हैं।
  - » **देश से भाग गया या लौटने से इनकार किया:** व्यक्ति कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए भारत से भाग गया है या आपराधिक आरोपों का सामना करने के लिए वापस लौटने से इनकार कर दिया है। यह भारत के बाहर रहकर अभियोजन से बचने का प्रयास दर्शाता है।

फरार आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 के बारे में:

- फरार आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 विशेष रूप से उन आर्थिक अपराधों को संबोधित करने के लिए डिजाइन किया गया है जिनमें ऐसे व्यक्ति शामिल हैं जो अभियोजन से बचने के लिए भारत से भाग गए हैं।
- यह कानून 100 करोड़ रुपये से अधिक के आर्थिक अपराधों में शामिल व्यक्तियों की संपत्ति को जब्त करने के लिए अधिकारियों को सशक्त बनाता है जोकि वापस लौटने से इनकार करते हैं या देश से भाग गए हैं।
- इस अधिनियम का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के बावजूद भारतीय कानून के शासन को प्रभावी बनाना है, ताकि कोई भी अपराधी न्याय से बच न सके।

रक्षा उत्पादन में वृद्धि

सन्दर्भ:

हाल ही में जारी केयरएज रेटिंग्स की रिपोर्ट के अनुसार, भारत के रक्षा क्षेत्र का अगले पांच वर्षों में लगभग 20% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़ने की सम्भावना है। यह वृद्धि सरकार के सुधारों, निजी क्षेत्र की भागीदारी और तकनीकी प्रगति से संचालित होगी।

विकास के प्रमुख चालक:

- भारत सरकार ने घरेलू रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने और विदेशी निर्भरता कम करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। 'मेक इन इंडिया' जैसी नीतियों और उदार एफडीआई मानदंडों ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया है। इन सुधारों ने न केवल तकनीकी प्रगति को बढ़ावा दिया है बल्कि अंतरराष्ट्रीय निवेश को भी आकर्षित किया है और घरेलू विनिर्माण को मजबूत किया है।
- रिपोर्ट में सरकार और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। घरेलू और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ मिलकर रक्षा आधुनिकीकरण को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, विशेषकर हथियार, गोला-बारूद, एयरोस्पेस, इलेक्ट्रॉनिक्स और नौसेना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में।

सरकारी बजट और व्यय:

- हाल के वर्षों में देश का रक्षा बजट सकल घरेलू उत्पाद का 1.90% से 2.8% तक रहा है। वित्त वर्ष 2024-25 में इस बजट को बढ़ाकर 6.22 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया है। इस वृद्धि का मुख्य उद्देश्य सशस्त्र बलों का आधुनिकीकरण और स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देना है।
- सरकार ने वार्षिक रक्षा उत्पादन को 1.75 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है, जो कि 20% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़कर वित्त वर्ष 2029 तक 3 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है। यह लक्ष्य भारत को एक आत्मनिर्भर रक्षा महाशक्ति बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा:

- भारत स्वदेशी विनिर्माण और प्रौद्योगिकी विकास के माध्यम से रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा

है। देश लड़ाकू विमान, हेलीकॉप्टर, टैंक और मिसाइल प्रणालियों जैसे महत्वपूर्ण रक्षा उपकरणों के घरेलू उत्पादन पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। रणनीतिक निवेश और नीतिगत पहल इस बदलाव को मजबूत कर रही हैं।

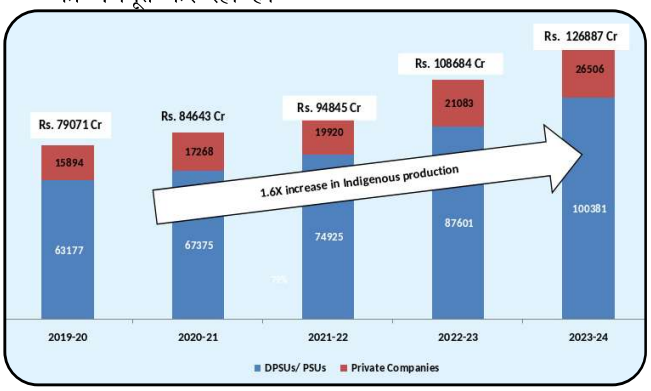

रक्षा निर्यात में वृद्धि:

- पिछले छह वर्षों में भारत का रक्षा निर्यात लगभग 28% की स्वस्थ CAGR से बढ़ा है। रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2024 से 2029 तक लगभग 19% की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने का अनुमान है।
- इन निर्यातों में विमान, नौसेना प्रणाली, मिसाइल प्रौद्योगिकी और सैन्य हार्डवेयर जैसे उत्पाद शामिल हैं। यह वृद्धि घरेलू उत्पादन की बढ़ती गुणवत्ता और भारत में निर्मित रक्षा उत्पादों की वैश्विक स्तर पर बढ़ती मांग को दर्शाती है।

चुनौतियाँ और आगे की राह:

- प्रौद्योगिकी विकास, बुनियादी ढांचे और विनियामक ढांचे जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। खरीद प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना और सार्वजनिक-निजी क्षेत्र के सहयोग को मजबूत करना विकास की गति को बनाए रखने के लिए आवश्यक होगा। इसके अतिरिक्त, भारत को इन चुनौतियों से पार पाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय रक्षा निवेशों को आकर्षित करना चाहिए और प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में अपनी स्थिति का लाभ उठाना चाहिए।

2024 में इंटरनेट शटडाउन में कमी

सन्दर्भ:

वर्ष 2024 में भारत में मोबाइल इंटरनेट सेवाओं को निलंबित करने की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी देखी गई है। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष 60 मामले सामने आए हैं, जोकि पिछले आठ वर्षों का न्यूनतम आंकड़ा है। यह कमी संभवत: नागरिक अशांति या सुरक्षा संबंधी चुनौतियों के समय इंटरनेट सेवाओं को नियंत्रित करने के राज्य के दृष्टिकोण में बदलाव को दर्शाती है।

2024 में शटडाउन में कमी के पीछे का कारण:

- जम्मू-कश्मीर और मणिपुर जैसे राज्यों में ऐतिहासिक रूप से रही अशांति के कारण इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में शटडाउन देखे गए हैं। 2024 में इन क्षेत्रों में शटडाउन में उल्लेखनीय कमी आई है, जो इस कमी का एक प्रमुख कारण हो सकता है।
- हालांकि, हरियाणा के अंबाला में किसान आंदोलन और मणिपुर के कुछ हिस्सों में अस्थायी शटडाउन अभी भी हुए, जोकि दर्शाता है कि कानून-व्यवस्था के मुद्दे अभी भी इंटरनेट सेवाओं को निलंबित करने का एक कारण बने हुए हैं।

भारत में सबसे ज्यादा बार इंटरनेट शटडाउन कब हुआ?

- 2020 में अनुच्छेद 370 के निरस्तीकरण के बाद जम्मू-कश्मीर में व्यापक अशांति के कारण 132 बार इंटरनेट शटडाउन हुआ था, जोकि अब तक का उच्चतम आंकड़ा है। यह दर्शाता है कि राजनीतिक अस्थिरता और सुरक्षा चिंताएं इंटरनेट सेवाओं को निलंबित करने का एक प्रमुख कारण हो सकती हैं।

भारत में इंटरनेट शटडाउन के प्रावधान:

- भारत में दूरसंचार सेवाओं, विशेषकर इंटरनेट सेवाओं के निलंबन की शक्ति भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम, 1885 में निहित है। यह अधिनियम केंद्र सरकार को दूरसंचार सेवाओं को विनियमित करने और लाइसेंस जारी करने का अधिकार प्रदान करता है।
- दूरसंचार सेवाओं का अस्थायी निलंबन (सार्वजनिक आपातकाल या सार्वजनिक सुरक्षा) नियम, 2017 इस अधिनियम के तहत बनाया गया एक महत्वपूर्ण नियम है जो विशेष रूप से सार्वजनिक आपातकाल या सुरक्षा चिंताओं के दौरान इंटरनेट सेवाओं के निलंबन को नियंत्रित करता है। ये नियम निम्नलिखित प्रमुख प्रावधान निर्धारित करते हैं:
  - » **निलंबन की अवधि:** इंटरनेट सेवाओं को एक बार में अधिकतम 15 दिनों के लिए निलंबित किया जा सकता है।
  - » **आदेश जारी करने का अधिकार:** केवल संघ या राज्य के गृह सचिव ही निलंबन के आदेश जारी कर सकते हैं।
  - » **समीक्षा तंत्र:** एक स्वतंत्र समीक्षा समिति आदेशों की समीक्षा करती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे आवश्यक और आनुपातिक हैं।

अनुराधा मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला भसीन बनाम भारत संघ (2020)

- अनुराधा भसीन बनाम भारत संघ (2020) मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने इंटरनेट शटडाउन पर महत्वपूर्ण निर्णय दिया। अदालत ने स्पष्ट किया कि इंटरनेट तक पहुंच का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) के तहत भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का एक अभिन्न अंग है। न्यायालय ने फैसला सुनाया कि:
  - » **केवल अस्थायी निलंबन:** इंटरनेट शटडाउन अस्थायी होना चाहिए और आनुपातिकता के सिद्धांत का पालन करना चाहिए।

» **न्यायिक समीक्षा:** शटडाउन आदेश न्यायिक समीक्षा के अधीन हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे अत्यधिक या असंगत नहीं हैं।

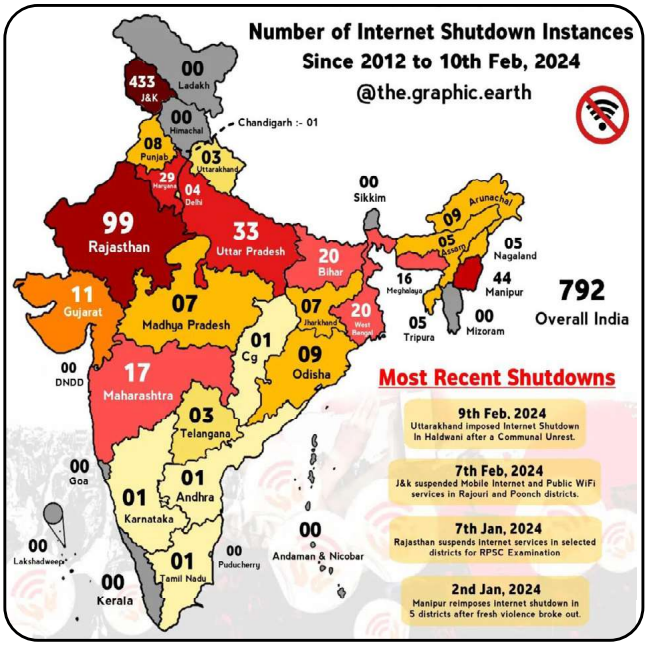

इंटरनेट शटडाउन का प्रभाव:

- शटडाउन से महत्वपूर्ण आर्थिक नुकसान होता है, जिसमें जनवरी और जून 2023 के बीच 118 मिलियन डॉलर के विदेशी निवेश का नुकसान शामिल है। एक दिन के शटडाउन से भी नौकरी का नुकसान हो सकता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जो डिजिटल प्लेटफॉर्म पर निर्भर हैं।
- इंटरनेट शटडाउन से सूचना और संचार तक पहुंच प्रतिबंधित हो जाती है, जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 के अनुसार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का उल्लंघन है।
- शटडाउन से ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन जैसी आवश्यक सेवाएं बाधित होती हैं, जिससे छात्र, शिक्षक और मरीज गंभीर रूप से प्रभावित होते हैं, विशेष रूप से शटडाउन से प्रभावित क्षेत्रों में।

आईएनएस सूरत, नीलगिरी और वाघशीर को किया गया शामिल

सन्दर्भ:

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुंबई के नौसेना डॉकयार्ड में आयोजित एक समारोह में तीन उन्नत नौसेना लड़ाकू जहाजों- आईएनएस सूरत, आईएनएस नीलगिरी और आईएनएस वाघशीर को शामिल किया। इसे भारतीय नौसेना को मजबूत करने और रक्षा क्षमताओं में आत्मनिर्भरता हासिल करने की दिशा में एक 'बड़ी छलांग' के रूप में देखा जा रहा हैं।

कमीशन किये गए जहाजों के बारे में:

- **आईएनएस नीलगिरि:**
  - » आईएनएस नीलगिरि, भारतीय नौसेना के लिए बनाए गए सबसे आधुनिक युद्धपोतों में से एक है। इसे 'प्रोजेक्ट 17ए' के तहत डिजाइन किया गया है और यह शिवालिक श्रेणी के फ्रिगेटों से भी अधिक उन्नत है।
  - » इस युद्धपोत को मुंबई के मझगांव डॉक में बनाया गया है और इसका डिजाइन भारतीय नौसेना के अपने डिजाइन ब्यूरो ने तैयार किया है।
  - » इसमें रडार सिग्नेचर को कम करने के लिए उन्नत स्टील्थ तकनीक शामिल है। यह युद्धपोत आधुनिक विमानन सुविधाओं से लैस है और एमएच-60आर सहित विभिन्न प्रकार के हेलीकॉप्टरों को संचालित कर सकता है, जिससे इसकी परिचालन क्षमता में वृद्धि हुई है।
- **आईएनएस सूरत:**
  - » आईएनएस सूरत कोलकाता श्रेणी के विध्वंसक के बाद प्रोजेक्ट 15बी स्टील्थ विध्वंसक (Destroyer) श्रेणी का चौथा और अंतिम पोत है। इस युद्धपोत को मुंबई के मझगांव डॉक में बनाया गया है और इसका डिजाइन भारतीय नौसेना के अपने डिजाइन ब्यूरो ने तैयार किया है।
  - » आईएनएस सूरत में अपने पहले संस्करण की तुलना में कई उन्नत तकनीकें और क्षमताएं हैं। यह युद्धपोत दुश्मन के हमलों से खुद को बचाने में सक्षम है और यह दुश्मन के जहाजों और विमानों को मार गिरा सकता है।
- **आईएनएस वाघशीर:**
  - » आईएनएस वाघशीर भारत की नौसेना के लिए बनाई गई स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बियों में से आखिरी है। इसे प्रोजेक्ट 75 के तहत बनाया गया है।
  - » इसे विभिन्न भूमिकाओं के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें सतह-रोधी युद्ध, पनडुब्बी-रोधी युद्ध और खुफिया जानकारी एकत्र करना शामिल है। इसका निर्माण मॉड्यूलर तरीके से किया गया है, जो भविष्य में वायु-स्वतंत्र प्रणोदन प्रौद्योगिकी के एकीकरण की अनुमति देता है।

महत्व:

- इन जहाजों का चालू होना भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता और स्वदेशी जहाज निर्माण क्षमताओं में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। आईएनएस सूरत, आईएनएस नीलगिरी और आईएनएस वाघशीर, तीनों ही प्लेटफॉर्म, पूरी तरह से भारत में डिजाइन और निर्मित किए गए हैं।
- इन जहाजों की अत्याधुनिक हथियार प्रणालियां और स्टील्थ तकनीक उन्हें दुनिया के सबसे उन्नत युद्धपोतों में से एक बनाती हैं। यह उपलब्धि सरकार के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को मूर्त रूप देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पावर पैक्ड न्यूज

शुभांशु शुक्ला अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री

- ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला नासा के एक्सिओम मिशन 4 के पायलट होंगे और अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) की यात्रा करने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री बनेंगे। 30 जनवरी, 2025 को नासा ने उनके मिशन के लिए चालक दल को मंजूरी दी।
- यह मिशन 2025 में फ्लोरिडा के कैनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च होगा, जिसमें चालक दल 14 दिनों तक अंतरिक्ष में विभिन्न प्रयोग करेगा। ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला गगनयान मिशन के लिए भी चुने गए चार अंतरिक्ष यात्रियों में शामिल हैं।
- भारतीय वायुसेना के अनुभवी फाइटर पायलट, उन्होंने 2,000 से अधिक घंटे की उड़ान भरी है और कई विमानों का संचालन किया है।

सेबी का iSPOT पोर्टल

- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) ने स्टॉक एक्सचेंजों और अन्य बाजार संस्थानों में तकनीकी समस्याओं की रिपोर्टिंग के लिए iSPOT पोर्टल लॉन्च किया। इससे प्रारंभिक और अंतिम मूल कारण विश्लेषण (RCA) रिपोर्ट प्रस्तुत करने की प्रक्रिया को आसान बनाया जाएगा।
- पहले, ये रिपोर्ट ईमेल के जरिए भेजी जाती थीं, लेकिन अब एक संरचित वेब-आधारित प्रणाली लागू की गई है। SEBI का लक्ष्य इस पोर्टल के माध्यम से बाजार में तकनीकी समस्याओं की निगरानी में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाना है।

खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025

- लद्दाख ने खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 में चार स्वर्ण सहित सात पदक जीतकर शीर्ष स्थान हासिल किया।
- खेलों का पहला चरण 27 जनवरी को लेह में समाप्त हुआ। लद्दाख की महिला आइस हॉकी टीम ने आईटीबीपी को 4-0 से हराकर स्वर्ण जीता, जबकि भारतीय सेना ने पुरुष आइस हॉकी में अपना खिताब बरकरार रखा।
- तमिलनाडु ने तीन स्वर्ण सहित पांच पदकों के साथ दूसरा स्थान पाया, जबकि महाराष्ट्र 10 पदकों के साथ तीसरे स्थान पर रहा। खेलों का दूसरा चरण 22-25 फरवरी को जम्मू-कश्मीर के गुलमर्ग में आयोजित होगा।

WHO ने जॉर्जिया को मलेरिया मुक्त घोषित किया

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने जॉर्जिया को मलेरिया मुक्त देश घोषित किया, जिससे यूरोप दुनिया का पहला मलेरिया मुक्त क्षेत्र बनने के करीब आ गया।
- जॉर्जिया में 20वीं सदी में मलेरिया एक बड़ी समस्या थी, लेकिन दशकों के प्रयासों से यह बीमारी पूरी तरह खत्म हो गई।
- WHO के अनुसार, किसी देश को मलेरिया मुक्त प्रमाणन प्राप्त करने के लिए कम से कम तीन वर्षों तक स्वदेशी मलेरिया संचरण के बिना रहना आवश्यक होता है।

टाइम्स हायर एजुकेशन विश्व रैंकिंग

- टाइम्स हायर एजुकेशन (THE) ने 2025 की विषयवार विश्व विश्वविद्यालय रैंकिंग जारी की है, जिसमें भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc), बेंगलुरु को कंप्यूटर विज्ञान में शीर्ष 100 में स्थान मिला है। यह पहली बार है जब किसी भारतीय संस्थान ने इस श्रेणी में 99वां स्थान हासिल किया है, जबकि पिछले वर्ष इसका स्थान 251-300 के बीच था।
- रैंकिंग के अनुसार, 2024 में 47 भारतीय विश्वविद्यालयों की तुलना में अब 53 विश्वविद्यालय कंप्यूटर विज्ञान के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में शामिल हैं। IISc को इस क्षेत्र में 96वां स्थान मिला है। इसी तरह, व्यवसाय और अर्थशास्त्र की सूची में भारत के 24 विश्वविद्यालय शामिल किए गए हैं, जो 2024 में 15 थे।

- कला और मानविकी में, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) और दिल्ली विश्वविद्यालय (DU) ने 501-600 से सुधार कर 401-500 रैंकिंग रेंज में प्रवेश किया। सामाजिक विज्ञान में भी 14 भारतीय विश्वविद्यालयों को श्रेष्ठ संस्थानों में स्थान मिला।
- वैश्विक स्तर पर, शीर्ष तीन स्थान मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MIT), स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पास हैं। रैंकिंग में 11 विषय शामिल हैं, जिनमें इंजीनियरिंग, चिकित्सा, भौतिकी, कानून, शिक्षा और मनोविज्ञान जैसे क्षेत्र प्रमुख हैं।

नीति आयोग का वित्तीय स्वास्थ्य सूचकांक

- नीति आयोग ने 24 जनवरी 2025 को अपनी पहली वित्तीय स्वास्थ्य सूचकांक (FHI) रिपोर्ट जारी की, जिसमें ओडिशा, छत्तीसगढ़, गोवा और झारखंड को शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्यों ('अचीवर्स') के रूप में सूचीबद्ध किया गया। यह रिपोर्ट 2022-23 के दौरान राज्यों की वित्तीय स्थिरता, राजस्व प्रबंधन, व्यय की गुणवत्ता और ऋण प्रबंधन के आधार पर तैयार की गई थी।
- रिपोर्ट में 18 प्रमुख राज्यों को शामिल किया गया, जो भारत की जीडीपी, जनसंख्या, सार्वजनिक व्यय और राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, मध्य प्रदेश और कर्नाटक को 'फ्रंट रनर' श्रेणी में रखा गया, जबकि तमिलनाडु, बिहार, राजस्थान और हरियाणा 'परफॉर्मर्स' सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर, पंजाब, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और केरल सबसे कमजोर प्रदर्शन करने वाले राज्य रहे और इन्हें 'एस्पिरेशनल' श्रेणी में रखा गया।
- रिपोर्ट के अनुसार, ओडिशा ने 67.8 के उच्चतम समग्र स्कोर के साथ वित्तीय स्वास्थ्य में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। नीति आयोग ने राज्यों का मूल्यांकन पांच प्रमुख उप-सूचकांकों 'व्यय की गुणवत्ता, राजस्व जुटाना, वित्तीय विवेक, ऋण सूचकांक और ऋण स्थिरता' के आधार पर किया। इस रिपोर्ट का उद्देश्य राज्यों की वित्तीय नीति को अधिक कुशल और पारदर्शी बनाना है, जिससे भारत की समग्र आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा मिल सके।

मुख्यमंत्री मोबाइल ऑपरेशन थियेटर का शुभारंभ

- 26 जनवरी 2025 को नागालैंड के राज्यपाल ला गणेशन ने कोहिमा में 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री मोबाइल ऑपरेशन थियेटर की शुरुआत की। यह पहल ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाने के लिए की गई है।
- यह मोबाइल यूनिट उन्नत सर्जरी और चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए डिजाइन की गई है, खासकर उन समुदायों के लिए जिनके पास सीमित स्वास्थ्य सुविधाएं हैं। यह यूनिट अत्याधुनिक तकनीक से लैस है और कीहोल सर्जरी जैसे जटिल ऑपरेशन कर सकती है। इसमें पोर्टेबल डायग्नोस्टिक उपकरण जैसे अल्ट्रासाउंड, एक्स-रे, एंडोस्कोपी और रक्त परीक्षण की सुविधा है।
- कोहिमास अस्पताल की एक समर्पित चिकित्सा टीम, जो निजी और सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों द्वारा समर्थित है, इन सेवाओं को लोगों के दरवाजे तक पहुंचाने का काम करेगी। इस प्रयास का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य सेवाओं में असमानता को दूर करना और नागालैंड के वंचित क्षेत्रों में स्वास्थ्य समानता को बढ़ावा देना है।

इंदौर और उदयपुर को आर्द्रभूमि शहर का दर्जा

- इंदौर और उदयपुर रामसर कन्वेंशन के तहत मान्यता प्राप्त आर्द्रभूमि शहरों की सूची में शामिल होने वाले पहले भारतीय शहर बन गए हैं। यह घोषणा 24 जनवरी 2025 को हुई, जो 2 फरवरी को मनाए जाने वाले विश्व वेटलैंड्स दिवस से पहले की गई।
- रामसर कन्वेंशन एक अंतर-सरकारी संधि है, जो आर्द्रभूमि और उनके संसाधनों के संरक्षण और बुद्धिमानी से उपयोग के लिए रूपरेखा प्रदान करती है। इस मान्यता के लिए शहरों को आर्द्रभूमि और उनकी पारिस्थितिक सेवाओं के संरक्षण से संबंधित छह अंतरराष्ट्रीय मानदंडों को पूरा करना होता है।
- इंदौर (मध्य प्रदेश) और उदयपुर (राजस्थान) ने अपनी प्राकृतिक और मानव निर्मित आर्द्रभूमियों को संरक्षित करने के प्रयास किए हैं। इस सूची में अब तक 74 शहर शामिल हो चुके हैं, जिनमें चीन के 22 और फ्रांस के 9 शहर शामिल हैं।
- भारत ने 1982 में रामसर कन्वेंशन पर हस्ताक्षर किए थे। वर्तमान में, भारत में 85 आर्द्रभूमि स्थल संरक्षित हैं। यह मान्यता इन शहरों के संरक्षण प्रयासों की वैश्विक पहचान है और यह आर्द्रभूमि के महत्व को उजागर करती है।

कश्मीर में चिनार पेड़ों की जियो-टैगिंग

- जम्मू और कश्मीर सरकार ने 23 जनवरी 2025 को कश्मीर में चिनार के विरासत पेड़ों की सुरक्षा के लिए जियो-टैगिंग प्रक्रिया शुरू की।

चिनार के पेड़ न केवल पर्यावरणीय महत्व रखते हैं बल्कि सांस्कृतिक धरोहर भी हैं।

- सरकार ने तकनीकी प्रगति का लाभ उठाते हुए इन पेड़ों की निगरानी और संरक्षण के लिए डिजिटल आधार तैयार किया है। प्रत्येक चिनार पेड़ को स्कैन करने योग्य क्यूआर कोड दिया गया है, जिसमें उसकी लोकेशन और अन्य जानकारी शामिल है। अब तक 28,560 चिनार पेड़ों को जियो-टैग किया जा चुका है।
- इस पहल का उद्देश्य इन पेड़ों को संरक्षित करना और भविष्य में उनकी देखभाल के लिए एक व्यवस्थित व्यवस्था बनाना है। क्यूआर कोड के जरिए कोई भी व्यक्ति पेड़ों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है।
- यह कदम पर्यावरण संरक्षण और कश्मीर की सांस्कृतिक धरोहर को बचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

रक्षा मंत्री ने युद्धक्षेत्र निगरानी प्रणाली 'संजय' लॉन्च की

- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 2025 में अत्याधुनिक युद्धक्षेत्र निगरानी प्रणाली 'संजय' को लॉन्च किया। यह प्रणाली भारतीय सेना की सीमाओं की निगरानी को मजबूत करेगी।
- 'संजय' को भारतीय सेना और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड ने मिलकर 2,402 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया है। यह प्रणाली अत्याधुनिक सेंसर और एनालिटिक्स से लैस है, जो पारंपरिक और उप-पारंपरिक दोनों तरह के ऑपरेशनों में मदद करेगी।
- 'संजय' तीन चरणों में मार्च 2025 से सेना में शामिल की जाएगी। यह प्रणाली कमांडरों को सटीक जानकारी देने के साथ घुसपैठ रोकने और स्थितियों का आकलन करने में मदद करेगी।
- यह तकनीक भारतीय सेना को भविष्य के युद्धक्षेत्र में पारदर्शिता और सटीकता के साथ काम करने में सक्षम बनाएगी। 'संजय' का विकास भारत की रक्षा क्षमता को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उषा वेंस बनीं पहली भारतीय-अमेरिकी सेकंड महिला

- उषा वेंस ने इतिहास रचते हुए पहली भारतीय-अमेरिकी सेकंड महिला बनने का गौरव हासिल किया। उनके पति जे.डी. वेंस ने 20 जनवरी 2025 को अमेरिका के 50वें उपराष्ट्रपति के रूप में शपथ ली।
- उषा वेंस एक कुशल वकील हैं और उन्होंने अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के जजों कवानौघ और जॉन रॉबर्ट्स के लिए क्लर्क के रूप में भी काम किया है। वे सबसे कम उम्र की सेकंड महिला के रूप में भी जानी जाएंगी।
- उनकी इस उपलब्धि ने भारतीय-अमेरिकी समुदाय में गर्व की भावना जगाई है। यह मील का पत्थर वैश्विक राजनीति में भारतीय प्रवासियों की बढ़ती भागीदारी का प्रतीक है।

यूपी सरकार की एयरोस्पेस और रक्षा नीति को मंजूरी

- उत्तर प्रदेश सरकार ने नई एयरोस्पेस और रक्षा इकाई नीति 2024 को मंजूरी दे दी है। इस नीति का उद्देश्य राज्य को एयरोस्पेस और रक्षा क्षेत्र में अग्रणी बनाना है। यह नीति 1 लाख से अधिक नौकरियां उत्पन्न करेगी और लगभग 50,000 करोड़ रुपये का निवेश आकर्षित करेगी।
- राज्य सरकार ने विदेशी निवेश (एफडीआई) को प्रोत्साहित करने के लिए नई नीति भी लागू की है। इसके तहत, विदेशी कंपनियों को जमीन पर 80% तक सब्सिडी दी जाएगी। यह कदम उत्तर प्रदेश में औद्योगिक विकास को गति देगा और राज्य को निवेश के लिए एक आकर्षक गंतव्य बनाएगा।
- एयरोस्पेस और रक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी क्षमताओं को मजबूत करना, नवाचार को बढ़ावा देना और वैश्विक भागीदारी को प्रोत्साहित करना है। सरकार का लक्ष्य इस क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देकर उत्तर प्रदेश को भारत का प्रमुख रक्षा और एयरोस्पेस केंद्र बनाना है।

इंडिया ओपन 2025

- डेनमार्क के विक्टर एक्सेलसन और कोरिया की एन से-यंग ने क्रमशः पुरुष और महिला इंडिया ओपन 2025 बैडमिंटन खिताब जीते। एक्सेलसन ने पुरुषों के फाइनल में ली चेउक यिउ को हराकर खिताब पर कब्जा किया।
- महिलाओं के फाइनल में एन से-यंग ने थाईलैंड की पी. चोचुवोंग को हराया। पुरुषों के डबल्स में सेज फी गोह और नूर इज्जुद्दीन ने वोन हो किम और सेउंग जे सेओ पर जीत दर्ज की।

- महिला डबल्स में जापान की अरिसा इगाराशी और अयाको सकुरामोटो ने हये जियोंग किम और ही योंग कोंग को हराया। मिश्रित डबल्स में चीन के झेंग बैंग जियांग और या शिन वेई ने फ्रांस के थॉम गिक्वेल और डेल्फिन डेलरू को हराया। यह वार्षिक टूर्नामेंट 14 से 19 जनवरी 2025 तक नई दिल्ली के के.डी. जाधव इंडोर स्टेडियम में आयोजित हुआ।

न्यायमूर्ति देवेन्द्र कुमार उपाध्याय बने दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश

- न्यायमूर्ति देवेन्द्र कुमार उपाध्याय ने दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली। उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने उन्हें शपथ दिलाई। इससे पहले, वह बॉम्बे उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश थे।
- सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने 7 जनवरी 2025 को उनके स्थानांतरण की सिफारिश की थी। उत्तर प्रदेश से आने वाले न्यायमूर्ति उपाध्याय ने 21 नवंबर 2011 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में कार्यभार संभाला था।
- उनके स्थानांतरण के बाद, न्यायमूर्ति विभु बाखरू कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश थे। यह नियुक्ति न्यायमूर्ति मनमोहन के सुप्रीम कोर्ट में पदोन्नति के बाद हुई।

नाइजीरिया बना ब्रिक्स का नया भागीदार देश

- नाइजीरिया अब बेलारूस, बोलीविया, क्यूबा, कजाकिस्तान, मलेशिया, थाईलैंड, युगांडा और उज्बेकिस्तान के साथ ब्रिक्स का नौवां भागीदार देश बन गया है। ब्रिक्स समूह की स्थापना 2009 में ब्राजील, रूस, भारत और चीन ने की थी, और दक्षिण अफ्रीका 2010 में इसमें शामिल हुआ।
- यह समूह जी-7 देशों के प्रभाव को संतुलित करने के लिए बनाया गया था। ब्रिक्स ने 2023 में ईरान, मिस्र, इथियोपिया और यूएई को भी जोड़ा है। सऊदी अरब और अन्य देश इसमें शामिल होने के लिए इच्छुक हैं।
- नाइजीरिया अफ्रीका का सबसे अधिक आबादी वाला देश और विश्व का छठा सबसे बड़ा देश है। पिछले साल, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने ब्रिक्स देशों पर अमेरिकी डॉलर को कमजोर करने के किसी भी प्रयास पर टैरिफ लगाने की धमकी दी थी।

एंटिटी लॉकरः संगठनात्मक दस्तावेजों के लिए नया मंच

- डिजिलॉकर की सफलता के बाद भारत सरकार ने 'एंटिटी लॉकर' लॉन्च किया है। यह डिजिटल प्लेटफॉर्म व्यावसायिक और संगठनात्मक दस्तावेजों के प्रबंधन और सत्यापन के लिए बनाया गया है। इसे इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय ई-गवर्नमेंट डिवीजन ने विकसित किया है।
- यह प्लेटफॉर्म सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों (एमएसएमई), स्टार्टअप्स और ट्रस्ट्स को क्लाउड-आधारित सेवा प्रदान करता है। इसमें आधार-प्रमाणित भूमिका आधारित पहुंच, सहमति-आधारित सूचना साझा करना और डिजिटल हस्ताक्षर की सुविधा है।
- उपयोगकर्ताओं को सुरक्षित 10 जीबी स्टोरेज भी मिलता है। यह तकनीक कंपनियों के लिए वार्षिक फाइलिंग को आसान बनाती है, जिससे डिजिटल दस्तावेज प्रबंधन अधिक प्रभावी होता है।

कर्नाटक ने विजय हजारे ट्रॉफी जीती

- कर्नाटक ने विदर्भ को 36 रनों से हराकर विजय हजारे ट्रॉफी 2025 का खिताब जीता। फाइनल मुकाबला वडोदरा के कोटाम्बी स्टेडियम में हुआ। ग्रुप चरण में कर्नाटक ने सात मैचों में केवल एक हार के साथ प्रदर्शन किया। नॉकआउट दौर में उसने बड़ौदा और हरियाणा को हराया।
- कर्नाटक ने पहली बार 2013-14 में यह टूर्नामेंट जीता था। तमिलनाडु, मुंबई और सौराष्ट्र अन्य विजेता टीमों में शामिल हैं। विजय हजारे ट्रॉफी, जिसे रणजी वन-डे ट्रॉफी के रूप में भी जाना जाता है, प्रसिद्ध क्रिकेटर विजय हजारे के सम्मान में शुरू की गई थी। इस जीत से कर्नाटक ने पांचवीं बार इस प्रतिष्ठित खिताब पर कब्जा किया है।

भारतीय नौसेना ने ला पेरोस अभ्यास में भाग लिया

- फ्रांस की मेजबानी में आयोजित ला पेरोस बहुपक्षीय नौसैनिक अभ्यास में भारतीय नौसेना ने हिस्सा लिया। इस अभ्यास में नौ इंडो-पैसिफिक देशों की नौसेनाओं ने मलक्का, सुंडा और लोम्बोक जलडमरूमध्य में हिस्सा लिया। भारतीय नौसेना ने आईएनएस मुंबई को इस अभ्यास के लिए तैनात किया।
- फ्रांसीसी कैरियर स्ट्राइक ग्रुप ने वाहक चार्ल्स डी गॉल के नेतृत्व में अभ्यास का संचालन किया। इसमें ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, यू.के. और यू.एस. ने भाग लिया।
- इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य नौसेनाओं के बीच अंतरसंचालनीयता को मजबूत करना और सामरिक युद्धाभ्यास में प्रशिक्षित करना था। इसमें सतही युद्ध, वायुरोधी युद्ध और क्रॉस-डेक लैंडिंग जैसी गतिविधियां शामिल थीं।

हैदराबाद की मूसी नदी पर डब्ल्यूएमएफ की निगरानी

- विश्व स्मारक कोष (डब्ल्यूएमएफ) ने मूसी नदी के किनारे स्थित हैदराबाद की ऐतिहासिक इमारतों को 2025 की विश्व स्मारक निगरानी सूची में शामिल किया है।
- सूची में भुज की जल प्रणाली भी है। मूसी नदी के किनारे ब्रिटिश रेजीडेंसी, उस्मानिया जनरल अस्पताल, तेलंगाना उच्च न्यायालय और राज्य केंद्रीय पुस्तकालय जैसे महत्वपूर्ण स्मारक हैं।
- जलवायु परिवर्तन और जल संकट इन संरचनाओं के लिए खतरा हैं।

ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह बने सीआरपीएफ के महानिदेशक

- ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह को सीआरपीएफ का महानिदेशक नियुक्त किया गया है। वह 1991 बैच के असम-मेघालय कैडर के आईपीएस अधिकारी हैं। उन्हें 30 नवंबर, 2027 तक इस पद पर नियुक्त किया गया है।
- उन्होंने असम पुलिस, एसपीजी और एनआईए में भी सेवाएं दी हैं।
- सीआरपीएफ देश का सबसे बड़ा केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल है।

भारत का हाइड्रोजन ट्रेन इंजन

- भारत ने दुनिया का सबसे शक्तिशाली हाइड्रोजन ट्रेन इंजन विकसित किया है, जिसे भारतीय रेलवे ने तैयार किया है। इसका आउटपुट 1,200 हॉर्स पावर है, जो इसे अपनी श्रेणी में सबसे आगे रखता है।
- इस इंजन का पहला परीक्षण हरियाणा में जींद-सोनीपत मार्ग पर होगा। दुनिया में केवल चार देशों के पास हाइड्रोजन ईंधन से चलने वाली ट्रेनें हैं, जिनका आउटपुट 500 से 600 हॉर्स पावर के बीच होता है।
- भारत में विकसित यह तकनीक ट्रकों, टगबोट्स और अन्य अनुप्रयोगों के लिए नई पावर ट्रेनों के निर्माण की दिशा में भी मार्गदर्शन करेगी। भारत की पहली हाइड्रोजन-संचालित ट्रेन तमिलनाडु में इंटीग्रल कोच फैक्ट्री द्वारा बनाई गई है, जो देश के स्वदेशी नवाचार की एक बड़ी उपलब्धि है।

खो-खो विश्व कप में भारत की जीत

- भारत की महिला टीम ने पहला खो-खो विश्व कप 2025 जीतकर इतिहास रच दिया। 19 जनवरी को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में खेले

गए फाइनल में भारतीय टीम ने नेपाल को 78-40 से हराया। उसी दिन पुरुष टीम ने भी नेपाल को 54-36 से मात देकर विश्व कप जीता।

- टीम इंडिया की अंशु कुमारी को सर्वश्रेष्ठ अटैकर और चैत्रा बी को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया, जबकि नेपाल की मनमती धानी को सर्वश्रेष्ठ डिफेंडर का पुरस्कार मिला।

डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति बने

- डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने भी पद की शपथ ली।
- वाशिंगटन डीसी में हुए इस समारोह में मुख्य न्यायाधीश जॉन रॉबर्ट्स ने शपथ दिलाई।
- भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर, टेस्ला के एलन मस्क, अमेजन के जेफ बेजोस, मेटा के मार्क जुकरबर्ग, एप्पल के टिम कुक और ओपनएआई के सैम ऑल्टमैन इस समारोह में शामिल हुए।

'भारत रणभूमि दर्शन' ऐप

- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने युद्धक्षेत्र पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'भारत रणभूमि दर्शन' ऐप लॉन्च किया। यह रक्षा और पर्यटन मंत्रालय तथा सेना की संयुक्त पहल है।
- अब पर्यटक 1962, 1971 और 1999 के युद्धस्थलों सहित सियाचिन बेस कैंप और गलवान घाटी की यात्रा कर सकते हैं। इस ऐप के जरिए डोकलाम में भारत-चीन गतिरोध और कारगिल के ऐतिहासिक युद्धक्षेत्रों की जानकारी भी उपलब्ध होगी। यह पहल सीमावर्ती क्षेत्रों में पर्यटन और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करेगी।
- भारतीय सेना सीमावर्ती इलाकों को पर्यटन स्थलों में बदलने का कार्य कर रही है, जिससे स्थानीय समुदायों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। इस प्रकार की योजनाएं भारत के सामरिक इतिहास को संरक्षित करने और राष्ट्रवाद की भावना को प्रोत्साहित करने में सहायक होंगी।

पंजाब ने शी कॉहोर्ट 3.0 लॉन्च किया

- पंजाब सरकार ने महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने के लिए मोहाली में शी कॉहोर्ट 3.0 लॉन्च किया। यह कार्यक्रम महिलाओं को प्रौद्योगिकी आधारित स्टार्टअप स्थापित करने और विस्तार करने में मदद करेगा। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण सचिव प्रियांक भारती ने इसे उद्घाटित किया।
- 250 से अधिक स्टार्टअप और छात्रों की उपस्थिति में राज्य के स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने पर चर्चा हुई। इस पहल का उद्देश्य हाशिए पर रहने वाली महिलाओं को विज्ञान और तकनीक का उपयोग कर आत्मनिर्भर बनाना है

क्यूएस वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स

- क्यूएस वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स 2025 में भारत को डिजिटल कौशल के लिए दूसरा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व ग्रीन स्किल्स के लिए चौथा स्थान मिला है।
- भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद, डिजिटल कौशल में दुनिया में सबसे आगे है। हालांकि, भविष्य-उन्मुख नवाचार और स्थिरता में भारत का प्रदर्शन औसत रहा है।
- सूचकांक में कौशल फिट, शैक्षणिक तत्परता, काम का भविष्य और आर्थिक परिवर्तन जैसे चार कारकों पर देशों की तैयारी का मूल्यांकन किया गया है।

QS World Future Skills Index 2025
Transforming Higher Education for the Skills Economy

INDIA

Indicator	Skills Fit	Academic Readiness	Future of Work	Economic Transformation	Overall
Score	59.1	89.9	99.1	58.3	76.6
Global position	37th	26th	2nd	40th	25th

- कौशल फिट में भारत को 59.1 अंक के साथ 30 शीर्ष देशों में सबसे कम स्थान मिला। रिपोर्ट ने भारत को 'भविष्य के कौशल के दावेदार' के रूप में वर्गीकृत किया है, जबकि यूएसए, यूके, जर्मनी और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों को 'भविष्य के कौशल अग्रदूत' माना गया है। यह सूचकांक दर्शाता है कि भारत को उभरते कौशल के लिए सुधार के अवसरों पर ध्यान देना होगा

खेल पुरस्कार

- गुकेश डी (शतरंज), हरमनप्रीत सिंह (हॉकी), मनु भाकर (निशानेबाजी) और प्रवीण कुमार (पैरालंपिक ऊंची कूद) को मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार उन खिलाड़ियों को दिया जाता है जिन्होंने पिछले चार साल अंतर्गत खेलों में शानदार प्रदर्शन किया हो।
- गुकेश डी ने डिंग लिरेन को हराकर सबसे कम उम्र के विश्व शतरंज चैंपियन बनने का रिकॉर्ड बनाया। मनु भाकर ने पेरिस में 10 मीटर एयर पिस्टल और मिश्रित टीम स्पर्धाओं में कांस्य पदक जीतकर एक ही खेलों में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बनकर इतिहास रचा। हरमनप्रीत सिंह ने भारतीय हॉकी टीम को लगातार दूसरा ओलंपिक कांस्य दिलाया। प्रवीण कुमार ने पैरालंपिक में ऊंची कूद टी64 में स्वर्ण पदक जीता।
- इस बार अर्जुन पुरस्कार 32 खिलाड़ियों को मिला, जिनमें 17 पैरा-एथलीट शामिल हैं। यह पुरस्कार भी खेलों में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए दिया जाता है। सुच्चा सिंह (साइकिलिंग) और मुरलीकांत पेटकर (पैरा-तैराकी) को जीवनभर की उपलब्धियों के लिए अर्जुन पुरस्कार मिला। मुरलीकांत पेटकर भारत के पहले पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता हैं।
- द्रोणाचार्य पुरस्कार दीपाली देशपांडे (निशानेबाजी), संदीप सांगवान (हॉकी) और सुभाष राणा (पैरा-शूटिंग) को दिया गया। आर्मंडो कोलाको (फुटबॉल) और एस मुरलीधरन (बैडमिंटन) को जीवनभर के योगदान के लिए यह पुरस्कार मिला। फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया को राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार मिला।
- चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी और गुरु नानक देव विश्वविद्यालय को खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने के लिए मौलाना अबुल कलाम आजाद ट्रॉफी दी गई।

क्रोएशिया के राष्ट्रपति जोरान मिलनोविक का पुनः चयन

- क्रोएशिया के राष्ट्रपति जोरान मिलनोविक ने पांच साल के लिए दूसरा कार्यकाल जीत लिया है। उन्होंने सत्तारूढ़ रूढ़िवादी पार्टी के उम्मीदवार को हराकर 74% से अधिक वोट हासिल किए।
- यूरोपीय संघ और नाटो के आलोचक मिलनोविक ने ड्रैगन प्रिमोरैक को हराया, जिन्हें केवल 26% वोट मिले।
- मिलनोविक ने पश्चिमी सैन्य समर्थन के खिलाफ यूक्रेन में चल रहे युद्ध में अपनी असहमति व्यक्त की है। क्रोएशिया एड्रियाटिक सागर के तट पर स्थित दक्षिण-पूर्वी यूरोप का एक देश है, जिसकी राजधानी जाग्रेब है।

सीआईएसएफ के विस्तार के लिए नई बटालियन

- गृह मंत्रालय ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) को मजबूत करने के लिए दो नई बटालियनों को मंजूरी दी है।
- दो नई बटालियनों की मंजूरी से सीआईएसएफ की कुल बटालियन संख्या 13 से 15 हो जाएगी।
- हर नई बटालियन में 1,025 कर्मी होंगे और एक वरिष्ठ कमांडेंट अधिकारी इसका नेतृत्व करेंगे। इस विस्तार में महिला बटालियन भी शामिल है।
- सीआईएसएफ महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचों जैसे परमाणु संयंत्रों, हवाई अड्डों और बंदरगाहों की सुरक्षा करता है। इसकी स्थापना 10 मार्च 1969 को हुई थी और इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।

राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड का गठन

- केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड का उद्घाटन किया। इसका मुख्यालय निजामाबाद में होगा। पल्ले गंगा रेड्डी को बोर्ड का पहला अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।
- हल्दी को 'गोल्डन स्पाइस' कहा जाता है, जिसे भारत के 20 राज्यों में उगाया जाता है। बोर्ड का उद्देश्य हल्दी उत्पादकों की आय बढ़ाना, अनुसंधान को प्रोत्साहित करना और हल्दी से संबंधित उत्पादों के अंतरराष्ट्रीय विपणन को बढ़ावा देना है।
- 2023-24 में हल्दी का कुल उत्पादन 10.74 लाख टन रहा, जिसमें भारत का वैश्विक योगदान 70% है

भारत 2026 में सीएसपीओसी सम्मेलन की मेजबानी करेगा

- भारत 2026 में राष्ट्रमंडल देशों की संसदों के अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों के 28वें सम्मेलन (सीएसपीओसी) की मेजबानी करेगा। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने ग्वेर्नसे में सीएसपीओसी की स्थायी समिति की बैठक में इस आयोजन की घोषणा की।
- 28वें सीएसपीओसी का मुख्य विषय संसदीय प्रक्रियाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सोशल मीडिया के उपयोग पर केंद्रित होगा। सीएसपीओसी मंच का उद्देश्य सदस्य देशों के बीच संसदीय प्रथाओं और सहयोग का आदान-प्रदान करना है।
- भारत की मेजबानी उसकी समृद्ध परंपराओं को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करेगी। भारत इससे पहले 1970-71, 1986 और 2010 में इस आयोजन की मेजबानी कर चुका है।

प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार 2025

- डॉ. सैयद अनवर खुर्शीद को 2025 का प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार मिला। यह सम्मान उन्हें स्वास्थ्य सेवा, सामुदायिक कल्याण, और भारत तथा सऊदी अरब के संबंधों को मजबूत बनाने में उनके योगदान के लिए दिया गया।
- डॉ. खुर्शीद ने किंग फैसल अस्पताल में तीन दशक और नेशनल गार्ड अस्पताल में एक दशक तक रॉयल प्रोटोकॉल फिजिशियन के रूप में सेवा दी है। उन्होंने भारतीय प्रवासियों के लिए स्वास्थ्य सेवा, वैक्सीन वकालत, और 24 घंटे परामर्श जैसी सुविधाएं प्रदान कीं।
- ताइफ (सउदी अरब के मक्का प्रान्त में स्थित एक शहर) में उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय भारतीय स्कूल की स्थापना की, जो प्रवासी भारतीय समुदाय में शैक्षिक उत्कृष्टता और सांस्कृतिक समावेशन को बढ़ावा देता है। वे सऊदी-भारतीय हेल्थकेयर फोरम के उपाध्यक्ष भी हैं।
- यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा प्रवासी भारतीयों को दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है।

हेनले पासपोर्ट सूचकांक 2025

- हेनले पासपोर्ट सूचकांक 2025 में भारत की रैंकिंग गिरकर 85वीं हो गई है, जबकि 2024 में यह 80वीं थी। सिंगापुर ने लगातार दूसरे वर्ष शीर्ष स्थान प्राप्त किया।
- हेनले एंड पार्टनर्स द्वारा जारी यह सूचकांक अंतरराष्ट्रीय वायु परिवहन प्राधिकरण (आईएटीए) के आंकड़ों पर आधारित है और इसमें 199 पासपोर्ट तथा 227 यात्रा गंतव्यों को शामिल किया गया है। सूचकांक के अनुसार, भारत के पासपोर्ट धारकों को 57 गंतव्यों तक वीजा-मुक्त यात्रा की सुविधा है।
- पाकिस्तान की रैंकिंग 103वीं और बांग्लादेश की 100वीं है।
- शीर्ष पांच देशों में सिंगापुर, जापान और विभिन्न यूरोपीय देश शामिल हैं। यह सूचकांक पासपोर्ट की वैश्विक ताकत का आकलन करता है और 19 वर्षों के ऐतिहासिक डेटा पर आधारित है।

जोसेफ औन बने लेबनान के राष्ट्रपति

- लेबनान की संसद ने सेना कमांडर जोसेफ औन को देश के राष्ट्रपति के रूप में चुना। वह राष्ट्रपति बनने वाले पांचवें पूर्व सेना कमांडर हैं।
- मार्च 2017 में उन्हें सेना प्रमुख नियुक्त किया गया था और इजराइल-हिजबुल्लाह संघर्ष के दौरान उनका कार्यकाल दो बार बढ़ाया गया। लेबनान में राष्ट्रपति को पहले दौर में दो-तिहाई बहुमत या अगले दौर में साधारण बहुमत से चुना जाता है।
- दो साल के अंतराल के बाद यह चुनाव संपन्न हुआ। औन का कार्यकाल क्षेत्रीय स्थिरता और राष्ट्रीय सुरक्षा में योगदान पर केंद्रित होगा।

मध्य प्रदेश सरकार की पार्थ योजना

- मध्य प्रदेश सरकार ने युवाओं को सेना, पुलिस और अर्धसैनिक बलों में भर्ती से पहले मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार करने के लिए पार्थ योजना शुरू की है।

- पार्थ योजना का पूरा नाम 'पुलिस सेना भर्ती प्रशिक्षण और हुनर' है।
- मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने राज्य स्तरीय युवा महोत्सव के समापन समारोह में इसका शुभारंभ किया। इस योजना के अंतर्गत युवाओं को शारीरिक फिटनेस और लिखित परीक्षा की तैयारी के लिए पूर्व प्रशिक्षण मिलेगा। उन्हें खेल विभाग की अधोसंरचना में प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- सरकार एक युवा पोर्टल बनाएगी, जहां इच्छुक युवा अपना पंजीकरण करा सकेंगे।
- पोर्टल पर प्रशिक्षण केंद्रों की सूची भी उपलब्ध होगी। इस योजना का उद्देश्य युवाओं को बेहतर भविष्य के लिए तैयार करना है।

बीमा सखी योजनाः गोवा की नई पहल

- गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने 'बीमा सखी योजना' शुरू की, जिसका उद्देश्य सभी के लिए बीमा सेवाएं सुलभ बनाना है।
- यह योजना भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) के साथ मिलकर शुरू की गई है और मुख्य रूप से 18 से 70 वर्ष की महिलाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित है।
- इस योजना के तहत, दसवीं कक्षा उत्तीर्ण महिलाएं वित्तीय साक्षरता और बीमा जागरूकता में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करेंगी। पहले तीन वर्षों तक उन्हें वजीफा भी दिया जाएगा।
- प्रशिक्षित महिलाएं बीमा एजेंट के रूप में कार्य कर सकेंगी और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली बीमा सखियों को एलआईसी में विकास अधिकारी बनने का अवसर मिलेगा।
- इस पहल का उद्देश्य महिलाओं के रोजगार और आय के स्रोतों में वृद्धि करना है। हरियाणा के बाद गोवा ऐसा दूसरा राज्य है जिसने यह योजना लागू की है।

मराठी भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा

- 8 जनवरी 2025 को जारी सरकारी आदेश के बाद मराठी भाषा को औपचारिक रूप से शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।
- केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने महाराष्ट्र के मराठी भाषा मंत्री उदय सामंत को यह आदेश सौंपा। हालांकि 3 अक्टूबर 2024 को मराठी को अन्य भाषाओं के साथ यह दर्जा देने का निर्णय लिया गया था, लेकिन इसकी आधिकारिक अधिसूचना अब जारी हुई।
- महाराष्ट्र सरकार द्वारा केंद्र को मराठी भाषा के शास्त्रीय भाषाओं के लाभ सुनिश्चित करने संबंधी प्रस्ताव भेजा जाएगा।
- तमिल 2004 में पहली शास्त्रीय भाषा बनी थी, संस्कृत को 2005 में यह दर्जा मिला था।

पी. जयचंद्रन का निधन

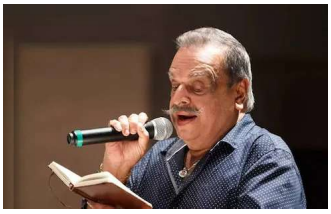

- दक्षिण भारतीय फिल्म संगीत के प्रसिद्ध गायक पी. जयचंद्रन का 9 जनवरी 2025 को त्रिस्सूर, केरल में निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे।
- उन्होंने मलयालम, तमिल, तेलुगु, हिंदी, और कन्नड़ सहित कई भाषाओं में 16,000 से अधिक गाने गाए। उन्हें भाव गायकन के नाम से भी जाना जाता था।
- जयचंद्रन को सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, केरल राज्य फिल्म पुरस्कार, तमिलनाडु सरकार का कलैमामणि पुरस्कार और जे. सी. डैनियल पुरस्कार सहित कई सम्मान प्राप्त हुए।

जॉन महामा बने घाना के राष्ट्रपति

- जॉन महामा ने तीसरी बार घाना के राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली।
- वह वर्तमान राष्ट्रपति नाना अकुफो-एडो की जगह लेंगे। महामा ने पहली बार जुलाई 2012 में राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी।
- जॉन महामा ने भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और आर्थिक संकट से निपटने का वादा किया।
- 2012 से 2017 तक राष्ट्रपति रह चुके हैं। उनकी प्राथमिकता आर्थिक स्थिरता और सुशासन होगी।

कर्नाटक में 'गरुड़क्षी' एफआईआर प्रणाली की शुरुआत

- कर्नाटक वन विभाग ने वन अपराधों की रोकथाम के लिए 'गरुड़क्षी' ऑनलाइन एफआईआर प्रणाली शुरू की है।
- यह वन संरक्षण अधिनियमों के तहत मामलों को ऑनलाइन निपटाने में सक्षम बनाएगी।
- वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया के सहयोग से विकसित इस प्रणाली को पांच वन प्रभागों में लागू किया गया है।
- गरुदाक्षी सॉफ्टवेयर को धीरे-धीरे सभी प्रभागों में लागू किया जाएगा।
- यह उन्नत अलर्ट प्रणाली वन क्षेत्र में परिवर्तन को ट्रैक करके पेड़ों की कटाई सहित अवैध गतिविधियों की निगरानी करने में अधिकारियों की मदद करेगी।
- उनकी आवाज मलयालम फिल्म उद्योग में सबसे अधिक पहचानी जाने वाली आवाजों में से एक थी।

त्रिपुरा में बैंडेड रॉयल तितली की खोज

- त्रिपुरा के सिपाहीजला वन्यजीव अभयारण्य में बैंडेड रॉयल तितली (रचना जलिन्द्र इंद्र) की खोज की गई है।
- इसे 5 मई, 2021 को पहली बार देखा गया था।
- यह भारतीय वन्यजीव अधिनियम, 1972 की अनुसूची II के तहत संरक्षित है।
- भारत में इसकी तीन उपप्रजातियां पाई जाती हैं।

मार्टिन गुप्टिल का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास

- न्यूजीलैंड के क्रिकेटर मार्टिन गुप्टिल ने 14 वर्षों के करियर के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लिया। उन्होंने 367 मैचों में 23 शतक और 14,000 से अधिक रन बनाए।
- गुप्टिल ने 47 टेस्ट, 198 वनडे और 122 टी20 मैच खेले। 2015 विश्व कप में नाबाद 237 रन की रिकॉर्ड पारी उनके नाम है।
- टी20 में 3531 रन के साथ वह न्यूजीलैंड के शीर्ष स्कोरर हैं। वनडे में 7,346 रन बनाकर वह स्टीफन फ्लेमिंग और रॉस टेलर के बाद तीसरे स्थान पर हैं।
- गुप्टिल टी20 फ्रेंचाइज क्रिकेट में खेलते रहेंगे।

वी नारायणन इसरो के नए अध्यक्ष

- वी नारायणन को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का अध्यक्ष और अंतरिक्ष विभाग का सचिव नियुक्त किया गया है। वी नारायणन 14 जनवरी को पदभार ग्रहण करेंगे जो वर्तमान अध्यक्ष एस सोमनाथ का स्थान लेंगे।
- वर्तमान में, वे केरल के वलियामाला में इसरो के लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम्स सेंटर (एलपीएससी) के निदेशक हैं।
- वे रॉकेट और अंतरिक्ष यान प्रणोदन विशेषज्ञ हैं और 1984 में इसरो में शामिल हुए थे।
- एस सोमनाथ इसरो के दसवें अध्यक्ष हैं और 14 जनवरी 2022 से इस पद पर हैं।

भारत की जीडीपी वृद्धि दर 2024-25 में 6.4 प्रतिशत का अनुमान

- सांख्यिकी मंत्रालय के अनुसार, वित्त वर्ष 2024-25 में भारत की जीडीपी वृद्धि दर 6.4% रहने का अनुमान है, जो 2023-24 में 8.2% थी।
- नॉमिनल जीडीपी में 9.7% की वृद्धि दर्ज की गई है।
- कृषि और संबद्ध क्षेत्र में 3.8% की वृद्धि होने की संभावना है, जबकि निर्माण क्षेत्र के लिए यह दर 8.6% है।
- वित्तीय, रियल एस्टेट, और पेशेवर सेवाओं में 7.3% की वृद्धि का अनुमान है।
- स्थिर कीमतों पर निजी अंतिम उपभोग व्यय (पीएफसीई) में भी 7.3% वृद्धि देखी गई है।

बहादुर सिंह सागू एएफआई के नए अध्यक्ष

- एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता बहादुर सिंह सागू भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) के अध्यक्ष चुने गए हैं।
- उन्होंने चंडीगढ़ में आयोजित वार्षिक आम सभा में आदिले सुमरिवाला का स्थान लिया, जो 2012 से अध्यक्ष पद पर थे।
- संदीप मेहता महासंघ के नए सचिव बने हैं।
- एएफआई के नेतृत्व में कांस्य स्तर का कॉन्टिनेंटल टूर एथलेटिक्स कार्यक्रम भुवनेश्वर में आयोजित किया जाएगा।

कैशलेस उपचार योजना

- सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस उपचार योजना की घोषणा की है। इस योजना के तहत दुर्घटना के तुरंत बाद सात दिनों तक या अधिकतम 1.5 लाख रुपये तक के चिकित्सा व्यय को कवर किया जाएगा।
- यह योजना देशभर में लागू की जाएगी और प्रारंभ में चुनिंदा राज्यों में शुरू की गई थी। दुर्घटना की सूचना 24 घंटे के भीतर पुलिस को देना अनिवार्य होगा।
- हिट-एंड-रन मामलों में पीड़ित के परिवार को अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान की गई है। मृत्यु की स्थिति में मृतक के परिवार को 2 लाख रुपये का मुआवजा दिया जाएगा।
- सड़क परिवहन मंत्री गडकरी ने सड़क सुरक्षा की खराब स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए बताया कि 2024 में, भारत में 1.8 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे गए। इनमें से 30,000 लोग हेलमेट न पहनने के कारण मरे। घातक दुर्घटनाओं के 66% पीड़ित 18 से 34 वर्ष के थे।
- गडकरी ने ड्राइविंग प्रशिक्षण की कमी को भी एक प्रमुख कारण बताया और कहा कि देश में लगभग 22 लाख प्रशिक्षित ड्राइवरों की कमी है। इस समस्या को हल करने के लिए सरकार ने नई नीति के तहत अधिक ड्राइविंग प्रशिक्षण केंद्र खोलने का निर्णय लिया है।
- स्कूलों और कॉलेजों के पास दोषपूर्ण प्रवेश और निकास बिंदुओं को सुधारने के भी प्रयास किए जाएंगे।
- उन्होंने दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए सड़क डिजाइन और ट्रैफिक मैनेजमेंट सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया।

इंडोनेशिया ब्रिक्स का नया सदस्य

- ब्रिक्स के अध्यक्ष देश ब्राजील ने इंडोनेशिया को इस वैश्विक संगठन का पूर्ण सदस्य घोषित किया है।
- इंडोनेशिया, जिसकी आबादी विश्व में चौथे स्थान पर है, ने अपनी नई सरकार के गठन के तुरंत बाद ब्रिक्स में अपनी रुचि व्यक्त की थी।
- ब्रिक्स का गठन 2009 में ब्राजील, रूस, भारत, और चीन ने किया था। रूस के येकातेरिनबर्ग में 2009 में पहला ब्रिक्स शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ। 2024 में इस समूह का विस्तार करते हुए ईरान, मिस्र, इथियोपिया, और संयुक्त अरब अमीरात को भी सदस्य बनाया गया।

- तुर्की, अजरबैजान, और मलेशिया ने सदस्यता के लिए आवेदन किया है।
- 2024 में 16वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन रूस के कजान में हुआ।
- इंडोनेशिया की सदस्यता से इस संगठन की वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव क्षमता और मजबूत होगी।

ई-नीलामी पोर्टल 'बैंकनेट'

- सरकार ने 3 जनवरी को 'बैंकनेट' नामक संशोधित पोर्टल लॉन्च किया, जो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) के लिए संपत्तियों की ई-नीलामी को सरल और पारदर्शी बनाएगा। यह पोर्टल खरीदारों और निवेशकों को विभिन्न संपत्तियों में भाग लेने और अवसरों का लाभ उठाने में मदद करेगा। वर्तमान में, 1,22,000 से अधिक संपत्तियों की लिस्टिंग पोर्टल पर की गई है। इसमें आवासीय संपत्तियां, वाणिज्यिक और औद्योगिक भूमि, वाहन, संयंत्र और मशीनरी शामिल हैं।
- यह पहल पीएसबी की बैलेंस शीट में सुधार करेगी और व्यवसायों व व्यक्तियों के लिए ऋण की उपलब्धता बढ़ाएगी। यह पोर्टल सुधार प्रक्रिया को गति देगा, जिससे बैंकों की गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) में कमी आएगी। 'बैंकनेट' से डिजिटल लेनदेन और वित्तीय पारदर्शिता को बढ़ावा मिलने की भी उम्मीद है।

भारत के पहले 'जेनरेशन बीटा' बच्चे का जन्म

- भारत में पहले 'जेनरेशन बीटा' बच्चे का जन्म मिजोरम के आइजोल में 1 जनवरी को सिनॉड अस्पताल में हुआ। इस बच्चे का नाम फ्रेंकी रेम्रुअटडिका जेडेंग रखा गया है। भविष्यवादी मार्क मैकक्रिंडल के अनुसार, 2025 से 2039 के बीच जन्म लेने वाले बच्चों को 'जेन बीटा' कहा जाएगा।
- यह पीढ़ी मिलेनियल्स (Gen Y) और पुरानी Gen Z की संतानें होंगी और डिजिटल तथा भौतिक दुनिया के सहज एकीकरण का अनुभव करेगी।
- अनुमान है कि 2025 तक यह पीढ़ी वैश्विक आबादी का 16% होगी। तकनीकी प्रगति और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इस पीढ़ी के जीवन को गहराई से प्रभावित करेंगे।

गोल्डन ग्लोब्स 2025 के विजेता

- 5 जनवरी को लॉस एंजिल्स में आयोजित 82वें गोल्डन ग्लोब्स समारोह में कई उल्लेखनीय फिल्मों और कलाकारों को सम्मानित किया गया। 'शोगुन' ने चार पुरस्कार जीते, जिसमें सर्वश्रेष्ठ ड्रामा सीरीज और प्रमुख अभिनेता व अभिनेत्री शामिल हैं।
- 'द ब्रूटलिस्ट' फिल्म को सात नामांकन मिले और एड्रियन ब्रॉडी ने इस फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (ड्रामा) का पुरस्कार जीता। पामेला एंडरसन को 'द लास्ट शोगर्ल' में उनके प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला।
- 'फ्लो' ने एनिमेटेड मोशन पिक्चर श्रेणी में पुरस्कार जीता, जबकि 'एल माल' को सर्वश्रेष्ठ मूल गीत का सम्मान मिला।

पश्चिम बंगाल ने जीती 33वीं संतोष ट्रॉफी

- पश्चिम बंगाल ने 1 जनवरी 2025 को फाइनल में केरल को हराकर 33वीं बार संतोष ट्रॉफी जीती। मैच का एकमात्र निर्णायक गोल अतिरिक्त समय में रोबी हंसदा ने किया।
- हंसदा इस टूर्नामेंट के शीर्ष स्कोरर भी बने। यह जीत पश्चिम बंगाल की फुटबॉल में ऐतिहासिक श्रेष्ठता को दर्शाती है।
- संतोष ट्रॉफी, जो राज्य स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता है, अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ के तहत आयोजित होती है। यह जीत पश्चिम बंगाल के फुटबॉल इतिहास में एक और महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ती है।

भारत का पहला कांच का पुल

- कन्याकुमारी में समुद्र पर बने भारत के पहले कांच के पुल का उद्घाटन 1 जनवरी 2025 को किया गया। यह पुल तिरुवल्लुवर प्रतिमा और विवेकानंद रॉक मेमोरियल को जोड़ता है।
- 37 करोड़ रुपये की लागत से बने इस पुल की लंबाई 77 मीटर और चौड़ाई 10 मीटर है। इसे समुद्री हवा और उच्च आर्द्रता को झेलने के लिए डिजाइन किया गया है।
- यह पुल पर्यटकों को समुद्र के दृश्य का आनंद लेते हुए सुरक्षित रूप से दोनों स्थलों के बीच चलने की सुविधा प्रदान करता है। यह परियोजना कन्याकुमारी को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के प्रयासों का हिस्सा है।

राजगोपाला चिदंबरम

- भारत के परमाणु कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रख्यात भौतिक विज्ञानी राजगोपाला चिदंबरम का, 4 जनवरी को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया।
- परमाणु शक्ति के रूप में भारत की यात्रा में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका 1974 के 'स्माइलिंग बुद्धा' परमाणु परीक्षण में उनकी भागीदारी के साथ शुरू हुई और 1998 के पोखरण- II परीक्षणों के दौरान उनके नेतृत्व के साथ जारी रही, जिसने वैश्विक मंच पर भारत की परमाणु शक्ति के रूप में स्थिति स्थापित की।
- 1936 में तमिलनाडु में जन्मे चिदंबरम चेन्नई के प्रेसीडेंसी कॉलेज और बेंगलुरु के भारतीय विज्ञान संस्थान के पूर्व छात्र थे। अपने शानदार

करियर के दौरान, उन्होंने भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) के निदेशक सहित कई प्रमुख पदों पर कार्य किया।

- उन्होंने परमाणु ऊर्जा आयोग की अध्यक्षता भी की और अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। परमाणु उन्नति से परे, चिदंबरम ने उच्च दाब भौतिकी, क्रिस्टलोग्राफी और पदार्थ विज्ञान में अभूतपूर्व योगदान दिया, जिसने भारत में आधुनिक पदार्थ अनुसंधान की नींव रखी।
- पद्म विभूषण और पद्म श्री से सम्मानित, चिदंबरम की विरासत भारत और उसके बाहर की पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती है।

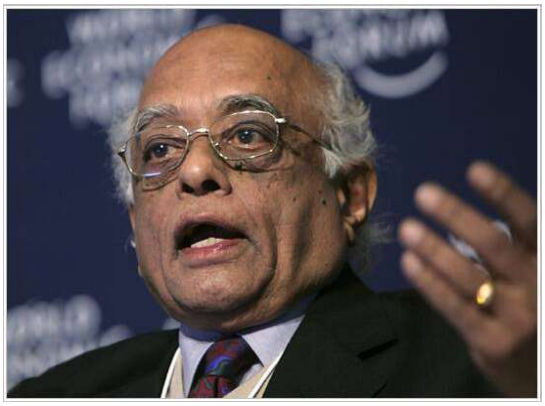

रूस में पर्यटक कर लागू

- रूस ने 1 जनवरी 2025 से पर्यटक कर लागू किया है, जो क्षेत्रीय पर्यटन बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस कर के तहत, होटल और अन्य आवास में ठहरने वाले पर्यटकों को ठहरने की लागत का अतिरिक्त 1% देना होगा। यह दर 2027 तक बढ़ाकर 3% की जाएगी।
- यह कर पहले लागू रिसॉर्ट शुल्क की जगह लेगा। इस पहल को जुलाई 2024 में रूसी कर संहिता में संशोधन के तहत पेश किया गया था। कई पर्यटन-प्रधान क्षेत्रों ने इसे पहले ही अपना लिया है।
- साथ ही, रूस ने एन्थ्रेसाइट, कोकिंग कोल और थर्मल कोल पर निर्यात शुल्क को हटा दिया है। यह कदम कोयला निर्यात को बढ़ावा देने और उद्योग को प्रतिस्पर्धात्मक बनाने के लिए उठाया गया है।
- पर्यटक कर लागू करना और कोयला शुल्क हटाना, दोनों ही कदम रूस की अर्थव्यवस्था को विविध और मजबूत बनाने की योजना का हिस्सा हैं।

छत्तीसगढ़ की हरित जीडीपी योजना

- छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य बन गया है जिसने वनों की पारिस्थितिकी सेवाओं को हरित सकल घरेलू उत्पाद (Green GDP) से जोड़ा है। इस योजना का उद्देश्य वनों के पर्यावरणीय योगदान जैसे स्वच्छ वायु, जल संरक्षण, जैव विविधता और कार्बन अवशोषण को आर्थिक प्रगति से जोड़ना है।
- राज्य की 44% भूमि वनों से आच्छादित है, जो लाखों लोगों की आजीविका का आधार हैं। वनों से प्राप्त तेंदू पत्ते, शहद, औषधीय पौधे और अन्य उत्पाद ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
- यह पहल वन पारिस्थितिकी सेवाओं का मूल्यांकन और उन्हें राज्य की औपचारिक आर्थिक योजनाओं में शामिल करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य आर्थिक विकास और पारिस्थितिक स्थिरता के बीच संतुलन स्थापित करना है।
- हरित जीडीपी का विचार छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर उपयोग और उनकी स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए एक अभिनव दृष्टिकोण है।

भुवनेश कुमार बने UIDAI के सीईओ

- हाल ही में 1 जनवरी 2025 को भुवनेश कुमार ने भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) के सीईओ का पदभार ग्रहण किया। वह इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव के रूप में भी कार्यरत हैं।
- UIDAI, जो आधार का संचालन करता है, भारत की एक महत्वपूर्ण संस्था है। अब तक 1.41 बिलियन नागरिक आधार में पंजीकृत हो चुके हैं। 1.07 बिलियन से अधिक अपडेट और सुधार किए जा चुके हैं।
- आधार का उपयोग 127 बिलियन से अधिक नियमित प्रमाणीकरण और 21.8 बिलियन से अधिक ई-केवाईसी प्रक्रियाओं में हुआ है।

- भुवनेश कुमार ने अमित अग्रवाल का स्थान लिया, जो अब फार्मास्युटिकल विभाग के सचिव हैं। आधार के उपयोग से सरकारी योजनाओं में पारदर्शिता और कुशलता आई है। भुवनेश कुमार की नियुक्ति के साथ, आधार से जुड़े प्रबंधकीय और तकनीकी कार्यों में और सुधार की उम्मीद है।

रोमानिया और बुल्गारिया शेंगेन क्षेत्र में शामिल

- 1 जनवरी 2025 को रोमानिया और बुल्गारिया ने यूरोपीय संघ के शेंगेन क्षेत्र में पूर्ण सदस्यता प्राप्त की। इसके साथ ही इन देशों में भूमि सीमा नियंत्रण हटा दिया गया है। यह कदम 425 मिलियन से अधिक यूरोपीय नागरिकों के लिए मुक्त आवाजाही को सक्षम करेगा।
- शेंगेन क्षेत्र दुनिया का सबसे बड़ा मुक्त आवाजाही क्षेत्र है। इसमें अब यूरोपीय संघ के 27 में से 25 सदस्य देश शामिल हैं, साइप्रस और आयरलैंड को छोड़कर। रोमानिया और बुल्गारिया मार्च 2024 में आंशिक रूप से इस क्षेत्र में शामिल हुए थे, लेकिन तब यह सुविधा केवल हवाई और समुद्री यात्रा तक सीमित थी। अब यह भूमि मार्ग के लिए भी उपलब्ध है।
- इस पहल से न केवल इन देशों के आर्थिक और सामाजिक संबंधों को बल मिलेगा, बल्कि यूरोपीय संघ की आंतरिक एकता भी मजबूत होगी।

भारत की पहली तटीय–जलचर पक्षी जनगणना

- गुजरात के जामनगर में 3 से 5 जनवरी 2025 तक भारत की पहली तटीय–जलचर पक्षी जनगणना आयोजित की गई। यह आयोजन वन विभाग और गुजरात पक्षी संरक्षण सोसायटी (BCSG) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।
- जामनगर स्थित समुद्री राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य में स्थानीय और प्रवासी पक्षियों की 300 से अधिक प्रजातियाँ हैं, जिनमें 50 से अधिक जलचर पक्षी शामिल हैं।
- इस जनगणना में विशेषज्ञ वार्ता, पक्षी गणना गतिविधियाँ और ज्ञान–साझाकरण सत्र आयोजित किए गए। यह पहल समुद्री जैव विविधता और संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कच्छ की खाड़ी में स्थित यह संरक्षित क्षेत्र भारत का पहला समुद्री राष्ट्रीय उद्यान है, जो मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वितुल कुमारः सीआरपीएफ के महानिदेशक

- आईपीएस अधिकारी वितुल कुमार ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के महानिदेशक का पदभार संभाला। इससे पहले, वे सीआरपीएफ के विशेष महानिदेशक के रूप में सेवा दे रहे थे। गृह मंत्रालय ने उन्हें मौजूदा प्रमुख अनीश दयाल सिंह की सेवानिवृत्ति के बाद नियुक्त किया।
- वितुल कुमार को उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक (पीपीएम) और पुलिस पदक (पीएम) सहित कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। 2016 में उन्हें महानिदेशक की रजत प्रशस्ति डिस्क से भी नवाजा गया था।
- उनका कार्यकाल बल की प्रभावशीलता बढ़ाने और नई चुनौतियों के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण होगा। जब तक स्थायी नियुक्ति नहीं होती, वे कार्यवाहक महानिदेशक के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाएंगे। उनके नेतृत्व में सीआरपीएफ अपने अभियान और प्रशिक्षण में नए आयाम स्थापित कर सकता है।

एक राष्ट्र, एक सदस्यता (ओएनओएस) योजना

- सरकार ने 1 जनवरी, 2025 से 'एक राष्ट्र, एक सदस्यता' (ओएनओएस) योजना शुरू की है। इसका उद्देश्य छात्रों, शोधकर्ताओं और शैक्षणिक संस्थानों को शोध पत्रों और डिजिटल संसाधनों तक निर्बाध पहुंच प्रदान करना है।
- योजना के तहत 13,400 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाएँ विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, सामाजिक विज्ञान और मानविकी जैसे विषयों में उपलब्ध होंगी। इसके लिए तीन वर्षों में 6,000 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है।

- इस पहल के तहत 1.8 करोड़ छात्रों को लाभ मिलेगा, जिससे ज्ञान की समान उपलब्धता सुनिश्चित होगी। इसके अतिरिक्त, अच्छी गुणवत्ता वाली ओपन एक्सेस पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए लाभार्थी लेखकों को सालाना 150 करोड़ रुपये की सहायता दी जाएगी।
- ओएनओएस भारत को डिजिटल शिक्षा में एक अग्रणी स्थान दिलाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

विश्व मुक्केबाजी ने नई एशियाई संस्था बनाई

- विश्व मुक्केबाजी ने नई एशियाई संस्था का गठन किया, जिसमें एशियाई मुक्केबाजी के विकास और विस्तार के लिए भारतीय मुक्केबाजी महासंघ (बीएफआई) के सात प्रमुख पद होंगे। अजय सिंह को बोर्ड सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया है। बीएफआई के महासचिव सहित प्रमुख आयोगों में भारतीय अधिकारियों का प्रतिनिधित्व होगा।
- लवलीना बोरगोहेन एथलीट आयोग का हिस्सा होंगी और नरेंद्र कुमार निरवान संविधान आयोग में कार्य करेंगे। डी पी भट्ट नवगठित खेल और प्रतिस्पर्धा आयोग का हिस्सा होंगे। यह नई संस्था एशियाई मुक्केबाजी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

बोस्निया के 'बाल्कन ब्लूज' को यूनेस्को द्वारा मान्यता दी गई

- बोस्निया और हर्जेगोविना के पारंपरिक प्रेम गीत सेवडालिंका को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की राष्ट्रीय सूची में शामिल किया गया है।
- इसे अक्सर 'बाल्कन ब्लूज' कहा जाता है। यह 16वीं शताब्दी का एक उदास शहरी प्रेम गीत है जिसमें दक्षिण स्लाव लोगों की मौखिक कविता और ओटोमन संगीत का संयोजन होता है।
- सेवडालिंका प्रदर्शनों में पारंपरिक वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है और इसे पीढ़ी दर पीढ़ी प्रदर्शनों के माध्यम से साझा किया गया है।
- इमामोविच की सेवडाहलैब पहल ने इसे यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल करने के लिए समर्थन जुटाया है।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर का निधन

- पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर का 29 दिसंबर 2024 को 100 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्हें उनके मानवीय कार्यों के लिए 2002 का नोबेल शांति पुरस्कार मिला था।
- वे जॉर्जिया के मूंगफली किसान से राष्ट्रपति बने थे और 1977 में अमेरिका के 39वें राष्ट्रपति बने।
- उन्होंने मौजूदा रिपब्लिकन राष्ट्रपति गेराल्ड फोर्ड को 1976 के चुनाव में हराया था।
- उनकी पुस्तक 'फिलिस्तीन: पीस नॉट अपारथाइड' 2007 में और 'फेथ: ए जर्नी फॉर ऑल' 2018 में प्रकाशित हुई थी।

जसप्रीत बुमराह: सबसे तेज 200 टेस्ट विकेट लेने वाले भारतीय

- भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने क्रिकेट इतिहास में नया अध्याय लिखा है। उन्होंने 200 टेस्ट विकेट लेने वाले सबसे तेज भारतीय गेंदबाज बनने का गौरव प्राप्त किया। यह उपलब्धि उन्होंने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में चल रही बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के दौरान हासिल की।
- बुमराह ने 8484वीं वैध गेंद पर यह मुकाम हासिल कर मोहम्मद शमी का रिकॉर्ड तोड़ा, जिन्होंने 9896 गेंदों में यह उपलब्धि पाई थी।
- विश्व स्तर पर, बुमराह चौथे सबसे तेज गेंदबाज हैं, जिनसे पहले वकार यूनिस (7725 गेंद), डेल स्टेन (7848 गेंद) और कैगिसो रबाडा (8154 गेंद) का स्थान है। उनके इस अद्वितीय प्रदर्शन ने भारत के तेज गेंदबाजी आक्रमण को नई ऊंचाईयों पर पहुंचाया है।
- बुमराह की काबिलियत और उनके अनूठे गेंदबाजी एक्शन ने उन्हें क्रिकेट जगत में खास पहचान दिलाई है।

डॉ. संदीप शाह: एनएबीएल के नए अध्यक्ष

- डॉ. संदीप शाह को राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। न्यूबर्ग डायग्नोस्टिक्स के संयुक्त प्रबंध निदेशक के रूप में विख्यात डॉ. शाह इससे पहले मेडिकल लैब्स प्रत्यायन सुधार समिति (एमएलएआईसी) के अध्यक्ष थे।

- एनएबीएल, जिसे 1988 में स्थापित किया गया था, भारत में प्रयोगशालाओं और अनुरूपता निकायों को मान्यता प्रदान करता है। इसका मुख्यालय गुरुग्राम में है और यह भारतीय गुणवत्ता परिषद (क्यूसीआई) के अंतर्गत कार्य करता है। क्यूसीआई, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत स्थापित एक स्वायत्त निकाय है।
- डॉ. शाह की नई भूमिका में, उनकी प्राथमिकता प्रयोगशालाओं की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में सुधार करना होगी। एनएबीएल हर वर्ष 9 जून को विश्व प्रत्यायन दिवस मनाता है, जो डॉ. शाह के नेतृत्व में और अधिक प्रभावशाली हो सकता है।

आईआईटी बॉम्बे की सुई रहित शॉक सिरिंज

- आईआईटी बॉम्बे ने दर्द रहित टीकाकरण के लिए एक सुई रहित शॉक सिरिंज विकसित की है। यह नई तकनीक चूहों पर परीक्षण के दौरान पारंपरिक सुइयों से अधिक प्रभावी पाई गई। यह शॉकवेव-आधारित सिरिंज त्वचा को बिना छेदे तरल दवाओं का माइक्रोजेट त्वचा में प्रविष्ट कराती है।
- सिरिंज में उच्च-ऊर्जा शॉकवेव का उपयोग किया जाता है, जो दवा को माइक्रोजेट के रूप में त्वचा में प्रवेश कराता है। इस प्रक्रिया की गति एक वाणिज्यिक हवाई जहाज की टेकऑफ गति से भी दोगुनी है। यह तकनीक न केवल दर्द रहित है, बल्कि संक्रमण के जोखिम को भी कम करती है।
- इस अभिनव उपकरण से टीकाकरण अभियानों में क्रांति आने की उम्मीद है। यह तकनीक सुई से जुड़ी चिंताओं और डर को खत्म करते हुए टीकाकरण को और सुलभ बना सकती है।

समसामयिकी घटनाएं एक नजर में

1.	हाल ही में, त्रिपुरा सरकार ने शासन में क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए MeitY के तहत डिजिटल इंडिया भाषिणी प्रभाग (DIBD) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। डिजिटल इंडिया पहल का हिस्सा भाषिणी 22 भारतीय भाषाओं में वास्तविक समय में अनुवाद, भाषण से पाठ और आवाज से आवाज संचार को सक्षम बनाता है।
2.	पंजाब नेशनल बैंक (PNB) Clari5 के राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (NCRP) समाधान को एकीकृत करने वाला पहला भारतीय बैंक बन गया है। साइबर अपराध शिकायत प्रसंस्करण को स्वचालित करने के लिए भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) के साथ समाधान विकसित किया गया था।
3.	सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME) ने छोटे व्यवसायों को डिजिटल वाणिज्य अपनाने में मदद करने के लिए MSME व्यापार सक्षमता और विपणन (TEAM) पहल शुरू की है। इसका तीन साल के लिए 277.35 करोड़ का बजट है और इसका लक्ष्य 5 लाख MSME को ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC) पर लाना है।
4.	चीन ने दुनिया की सबसे तेज हाई-स्पीड ट्रेन CR450 का अनावरण किया, जिसकी परीक्षण गति 450 किमी/घंटा और व्यावसायिक गति 400 किमी/घंटा है। यह CR400 फुक्सिंग ट्रेनों (350 किमी/घंटा) से आगे निकल गई जो गति, ऊर्जा दक्षता, सुरक्षा और सुविधा में सफलता को दर्शाती है। इसे 200,000 किमी के परीक्षण, 3,000 सिमुलेशन और 2,000 प्लेटफॉर्म परीक्षणों के माध्यम से विकसित किया गया है।
5.	केरल ने चंडीगढ़ पर 34-31 की जीत के साथ अपना पहला सीनियर नेशनल मेन्स हैंडबॉल चैंपियनशिप खिताब जीता। केरल के देवेंद्र को 'चैंपियनशिप का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी' चुना गया, राहुल ने 'सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर' जीता और सुजीत को सर्वश्रेष्ठ लेफ्ट विंग खिलाड़ी के रूप में सम्मानित किया गया। टूर्नामेंट में सर्विसेज और इंडियन रेलवे ने तीसरा स्थान साझा किया।
6.	पश्चिम बंगाल ने 78वें संस्करण के फाइनल में केरल को हराकर संतोष ट्रॉफी राष्ट्रीय फुटबॉल चैंपियनशिप जीती। फाइनल मैच 31 दिसंबर 2024 को हैदराबाद, तेलंगाना के जीएमसी बालयोगी स्टेडियम में आयोजित किया गया था। संतोष ट्रॉफी भारत में पुरुषों के लिए एक प्रमुख राज्य स्तरीय फुटबॉल टूर्नामेंट है, जिसका आयोजन अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ द्वारा किया जाता है।
7.	गुजरात सरकार और बर्ड कंजर्वेशन सोसाइटी ऑफ गुजरात (BCSG) ने 3 से 5 जनवरी, 2025 तक जामनगर के मरीन नेशनल पार्क और मरीन अभयारण्य में भारत की पहली तटीय और वेडर पक्षी जनगणना की।
8.	मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 3 से 6 जनवरी, 2025 तक भोपाल में आयोजित 31वें राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन किया।
9.	केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (GEAC) के लिए विशेषज्ञों के चयन के नियमों में संशोधन किया है। GEAC पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के तहत खतरनाक और आनुवंशिक रूप से इंजीनियर जीवों के लिए 1989 के नियमों के तहत एक वैधानिक समिति है।
10.	IIT बॉम्बे के शोधकर्ताओं ने बैक्टीरिया का उपयोग करके मिट्टी के प्रदूषण से निपटने के लिए एक समाधान विकसित किया है जो जहरीले प्रदूषकों को खा जाते हैं और आवश्यक पोषक तत्व पैदा करते हैं।
11.	भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने विटामिन बी12 के सक्रिय रूप मिथाइलकोबालामिन (MeCbl) के उपयोग को स्पष्ट किया। मिथाइलकोबालामिन, संरचनात्मक रूप से अन्य विटामिन बी12 रूपों से अलग है, इसमें कोबाल्ट परमाणु से बंधा एक मिथाइल समूह होता है।
12.	प्रवासी भारतीय दिवस (PBD) सम्मेलन 8 से 10 जनवरी, 2025 तक भुवनेश्वर में हुआ। इसका विषय 'विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान' है, जो भारत के विकास में प्रवासी भारतीयों की भूमिका का जश्न मनाता है।
13.	लोकसभा अध्यक्ष ने संविधान सदन के सेंट्रल हॉल में 'पंचायत से संसद 2.0' का उद्घाटन किया। इसका आयोजन राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW) ने लोकसभा सचिवालय और जनजातीय मामलों के मंत्रालय के साथ मिलकर किया था।

14.	केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने दिल्ली विश्वविद्यालय के समर्पण समारोह में सशक्त बेटी और ई-दृष्टि परियोजनाओं का शुभारंभ किया। प्रोजेक्ट सशक्त बेटी अनाथ और एकल अभिभावक वाली छात्राओं को लैपटॉप प्रदान करके सशक्त बनाती है, जिनके परिवार की आय 4 लाख से कम है। प्रोजेक्ट ई-दृष्टि दृष्टिबाधित छात्राओं को उनकी सीखने और शोध क्षमताओं को बेहतर बनाने के लिए टैबलेट प्रदान करके उनका समर्थन करती है।
15.	झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन ने 6 जनवरी, 2024 को मैया सम्मान योजना के तहत 56.61 लाख महिलाओं को 1,415.44 करोड़ हस्तांतरित किए। मुख्यमंत्री मैया सम्मान योजना अगस्त 2024 में शुरू की गई थी।
16.	लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम्स सेंटर (एलपीएससी) के निदेशक डॉ. वी. नारायणन को इसरो का नया अध्यक्ष और अंतरिक्ष सचिव नियुक्त किया गया है। उन्होंने 14 जनवरी, 2025 को दो साल के कार्यकाल या अगले आदेश तक एस. सोमनाथ का स्थान लिया।
17.	शोधकर्ताओं ने हाल ही में नेचर स्टडी में टाइम-स्ट्रेटिफाइड वंशावली विश्लेषण के लिए एक उपकरण ट्विगस्टेट्स पेश किया है। ट्विगस्टेट्स सांख्यिकीय शक्ति को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाता है और वंशावली अध्ययनों में त्रुटियों को कम करता है।
18.	वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (WEF) की फ्यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट 2025 में AI, बिग डेटा और सुरक्षा प्रबंधन विशेषज्ञों को सबसे तेजी से बढ़ने वाली नौकरियों के रूप में भविष्यवाणी की गई है।
19.	कॉर्नेल यूनिवर्सिटी द्वारा विकसित एनीमियाफोन अब भारत में एनीमिया, महिला स्वास्थ्य और मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) के कार्यक्रमों का हिस्सा है।
20.	भारत ने भारतीय जैविक डेटा केंद्र (IBDC) पोर्टल लॉन्च किया, जिससे वैश्विक स्तर पर 10,000 पूरे जीनोम के नमूने उपलब्ध हो गए। डेटा सेट जीनोमिक्स, व्यक्तिगत स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा में प्रगति को सक्षम बनाता है।
21.	मध्य प्रदेश ने सेना, पुलिस और अर्धसैनिक बलों में करियर के लिए युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए PARTH योजना (पुलिस सेना भर्ती प्रशिक्षण और हुनर) शुरू की। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने राज्य स्तरीय युवा महोत्सव में इस योजना का अनावरण किया।
22.	संयुक्त राष्ट्र द्वारा हाल ही में विश्व आर्थिक स्थिति और संभावनाएँ 2025 रिपोर्ट जारी की गई। इस रिपोर्ट के अनुसार, निजी खपत और निवेश द्वारा समर्थित भारतीय अर्थव्यवस्था 2025 में 6.6% और 2026 में 6.7% बढ़ने का अनुमान है।
23.	भारत 2026 में राष्ट्रमंडल देशों के संसदों के अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों (सीएसपीओसी) के 28वें सम्मेलन की मेजबानी करेगा।
24.	भारत ने हाल ही में 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया, जिसमें युवा सशक्तिकरण की स्वामी विवेकानंद की विरासत का सम्मान किया गया। भारत मंडपम में 10-12 जनवरी को आयोजित राष्ट्रीय युवा महोत्सव (एनवाईएफ) 2024 को विकसित भारत युवा नेता संवाद के रूप में फिर से तैयार किया गया है।
25.	जोरान मिलनोविक को पांच साल के कार्यकाल के लिए क्रोएशिया के राष्ट्रपति के रूप में फिर से चुना गया, उन्होंने रन-ऑफ वोट का 74% हासिल किया।
26.	लार्सन एंड टुब्रो ने चेन्नई के पास कट्टुपल्ली शिपयार्ड में भारतीय नौसेना के लिए दूसरा बहुउद्देश्यीय पोत, INS उत्कर्ष लॉन्च किया। INS उत्कर्ष, जिसका अर्थ है 'आचरण में श्रेष्ठ', L-T शिपबिल्डिंग लिमिटेड द्वारा बनाया गया है।
27.	प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में 17 जनवरी 2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में दूसरे भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2025 का उद्घाटन किया
28.	विश्व आर्थिक मंच ने हाल ही में वैश्विक जोखिम रिपोर्ट जारी की है, जिसे पहली बार 2006 में प्रकाशित किया गया था, जिसमें चरम मौसम को 'पर्यावरणीय जोखिम' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

29.	भारत और फ्रांस द्वारा विकसित ट्राजन 155 मिमी टोड आर्टिलरी गन सिस्टम ने हाल ही में आर्मेनिया से निर्यात ऑर्डर प्राप्त किया है। यह 155 मिमी, 52-कैलिबर की टोड गन प्रणाली है, जिसे लार्सन एंड टुब्रो (एल एंड टी) और केएनडीएस फ्रांस द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है और भारत में निर्मित किया गया है।
30.	असम पुलिस प्रमुख ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) का महानिदेशक नियुक्त किया गया है। गृह मंत्रालय के तहत भारत का प्रमुख केंद्रीय पुलिस बल सीआरपीएफ आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करता है। इसकी स्थापना 1939 में रियासतों में राजनीतिक अशांति के दौरान क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के रूप में की गई थी।
31.	इंडिया ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट नई दिल्ली में शानदार प्रदर्शन के साथ संपन्न हुआ। डेनमार्क के विक्टर एक्सेलसन ने हांगकांग चीन के ली चेउक यिउ को 21-16, 21-8 से हराकर अपना तीसरा इंडिया ओपन पुरुष एकल खिताब जीता।
32.	भारत 2036 ओलंपिक की मेजबानी की तैयारी कर रहा है, जिसमें टिकाऊ खेल बुनियादी ढांचे पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। पहला अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक अनुसंधान सम्मेलन 27-30 जनवरी, 2025 तक राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात में आयोजित किया गया।
33.	भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS), हैदराबाद को संस्थागत श्रेणी में 2025 के लिए प्रतिष्ठित सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
34.	ग्लोबल फायरपावर इंडेक्स 2025 के अनुसार भारत को दुनिया की चौथी सबसे शक्तिशाली सेना का दर्जा दिया गया है। शीर्ष 3 देश संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन हैं। भूटान सबसे निचले स्थान पर 145वें स्थान पर रहा, जबकि पाकिस्तान 9वें स्थान से गिरकर 12वें स्थान पर आ गया।
35.	संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) ने शांति और विकास में शिक्षा की भूमिका को उजागर करने के लिए 24 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया। इसे 3 दिसंबर, 2018 को संकल्प 73/25 के माध्यम से घोषित किया गया था
36.	भारत ने 21 जनवरी 2025 को नई दिल्ली में साइबर सुरक्षा सहयोग पर दूसरी BIMSTEC विशेषज्ञ समूह बैठक की मेजबानी की। बैठक का उद्देश्य बिम्सटेक सदस्य राज्यों के बीच साइबर सुरक्षा को मजबूत करने के लिए 5 साल की कार्य योजना को अंतिम रूप देना था।
37.	नीति आयोग ने राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (एफएचआई) 2025 प्रकाशित किया। यह पांच उप-सूचकांकों का उपयोग करके 18 प्रमुख भारतीय राज्यों में राजकोषीय स्वास्थ्य का आकलन करता है: व्यय की गुणवत्ता, राजस्व जुटाना, राजकोषीय विवेक, ऋण सूचकांक और ऋण स्थिरता। ओडिशा 67.8 स्कोर के साथ पहले स्थान पर रहा, उसके बाद छत्तीसगढ़ (55.2) और गोवा (53.6) का स्थान रहा।
38.	इंदौर (मध्य प्रदेश) और उदयपुर (राजस्थान) रामसर कन्वेंशन के तहत वेटलैंड शहरों के रूप में मान्यता प्राप्त पहले भारतीय शहर हैं। रामसर कन्वेंशन 172 सदस्य देशों में वैश्विक स्तर पर वेटलैंड्स के संरक्षण और बुद्धिमानी से उपयोग को बढ़ावा देता है भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण अधिनियम (1985) के तहत स्थापित IWAI राष्ट्रीय जलमार्गों पर अंतर्देशीय जल परिवहन अवसंरचना के विकास और रखरखाव पर ध्यान केंद्रित करता है।
39.	उत्तर प्रदेश की महाकुंभ झांकी ने हाल ही में 76वें गणतंत्र दिवस समारोह में सर्वश्रेष्ठ झांकी का पुरस्कार जीता। खर्ची पूजा पर त्रिपुरा की झांकी ने दूसरा स्थान प्राप्त किया, उसके बाद आंध्र प्रदेश की एटिकोपका बोम्मालु लकड़ी के खिलौनों पर झांकी ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।
40.	राष्ट्रीय नदी यातायात और नेविगेशन प्रणाली (NRT-NS) 11 जनवरी, 2025 को केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री द्वारा लॉन्च की गई थी। इसका उद्देश्य अंतर्देशीय जहाजों का सुरक्षित और कुशल संचालन सुनिश्चित करना है।

समसामयिकी आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस उपचार योजना के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह योजना प्रति घटना 1.5 लाख रूपये तक के उपचार लागत को कवर करती है और मोटर वाहनों से जुड़ी सभी सड़क दुर्घटनाओं पर लागू होती है।
2. पीड़ित दुर्घटना के बाद 30 दिनों तक की अवधि के लिए योजना के तहत उपचार प्राप्त कर सकते हैं।
3. योजना के तहत उपचार के लिए दुर्घटना के 24 घंटे के भीतर पुलिस रिपोर्ट करनी होगी।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1
B: केवल 1 और 3
C: उपरोक्त सभी
D: इनमें से कोई नहीं

2. भारत में समलैंगिक विवाह के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 17 अक्टूबर, 2023 के अपने फैसले में समलैंगिक विवाहों की कानूनी मान्यता को खारिज कर दिया।
2. 2023 में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले ने समलैंगिक जोड़ों को संविधान के तहत मौलिक अधिकार के रूप में विवाह का अधि कार प्रदान किया।
3. 2018 में, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता की धारा 377 के कुछ हिस्सों को हटाकर समलैंगिकता को अपराध से मुक्त कर दिया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A: केवल 1 और 3
B: केवल 2 और 3
C: 1, 2 और 3
D: इनमें से कोई नहीं

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. जनगणना 2011 के अनुसार, भारत में लगभग 2.68 करोड़ विकलांग व्यक्ति हैं, जो कुल जनसंख्या का 2.21% है।
2. RPwD अधिनियम, 2016 केवल सार्वजनिक संस्थानों में दिव्यांगजनों के लिए पहुँच मानकों को अनिवार्य करता है।
3. राजीव रतूड़ी में सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने सार्वजनिक संस्थान में केवल दिव्यांगजनों के लिए अनिवार्य, समान पहुँच मानकों की आवश्यकता पर बल दिया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

A: केवल 1 और 3
B: केवल 1
C: 1, 2 और 3
D: इनमें से कोई नहीं

4. एनीमियाफोन क्या है?

A: एक ऐसा उपकरण जो आयरन सप्लीमेंट देकर एनीमिया का इलाज करता है
B: आयरन की कमी और एनीमिया का तुरंत पता लगाने के लिए विकसित एक पोर्टेबल डिवाइस
C: एक मोबाइल एप्लिकेशन जो एनीमिया के लक्षणों को ट्रैक करता है
D: गंभीर एनीमिया के इलाज के लिए एक रक्त आधान उपकरण

5. अभिकथन (A): इंडोनेशिया अपने वैश्विक प्रभाव को मजबूत करने और समूह के भीतर विस्तारित आर्थिक सहयोग से लाभ उठाने के लिए ब्रिक्स समूह में शामिल हुआ है।

कारण (R): ब्रिक्स इंडोनेशिया को व्यापार के अवसर, बाजारों तक पहुंच और बुनियादी ढांचे के विकास की पेशकश करता है, साथ ही डी-डॉलरीकरण प्रयासों के माध्यम से अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने में भी मदद करता है।

सही विकल्प चुनें:

A: अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, और कारण (R), अभिकथन (A) का सही स्पष्टीकरण है।
B: अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R), अभिकथन (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C: अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
D: अभिकथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

6. ध्रुवीय भंवर के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह उच्च दबाव और ठण्ड हवा का एक बड़ा क्षेत्र है जो पृथ्वी के दोनों ध्रुवीय क्षेत्रों के चारों ओर एक चक्र की तरह घूमता है।
2. क्षोभमंडलीय ध्रुवीय भंवर गर्मियों के दौरान गायब हो जाता है

और शरद ऋतु के दौरान सबसे मजबूत होता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

A: केवल 1
B: केवल 2
C: 1 और 2 दोनों
D: न तो 1 और न ही 2

7. **अभिकथन (A):** 6 जनवरी, 2025 का बीजापुर माओवादी हमला सुरक्षा बलों द्वारा अपनाई जाने वाली मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) में गंभीर चूक का संकेत देता है।
कारण (R): माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में काम करने वाले सुरक्षा बल सख्त एसओपी का पालन करते हैं।

सही विकल्प चुनें:

A: अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण है।
B: अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C: अभिकथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
D: अभिकथन गलत है, लेकिन कारण सही है।

8. सोपस्टोन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सोपस्टोन एक अवसादी चट्टान प्रणाली है।
2. सोपस्टोन मुख्य रूप से राजस्थान राज्यों में पाया जाता है।
3. सोपस्टोन की नरम बनावट इसे काउंटरटॉप्स, मूर्तियों और विभिन्न औद्योगिक उपयोगों जैसे सौंदर्य प्रसाधन और फार्मास्यूटिकल्स के लिए एक आदर्श सामग्री बनाती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1 और 3
B: केवल 2, और 3
C: केवल 2 और 3
D: उपरोक्त सभी

9. भारत और अफगानिस्तान के बीच पहली उच्च स्तरीय कूटनीतिक वार्ता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत और तालिबान सरकार के बीच पहली उच्च स्तरीय कूटनीतिक वार्ता 8 जनवरी, 2025 को दुबई में हुई।
2. चर्चा मुख्य रूप से सुरक्षा चिंताओं, मानवीय सहायता और ईरान के चाबहार बंदरगाह के माध्यम से व्यापार पर केंद्रित थी।
3. तालिबान ने 2022 में अफगानिस्तान में 'अंतरिम सरकार' की घोषणा की।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A: केवल 1 और 2
B: केवल 2 और 3
C: उपरोक्त सभी
D: केवल 1

10. निम्नलिखित में से कौन सा प्रोटोकॉल भारत के जीनोमिक डेटा के पारदर्शी और निष्पक्ष आदान-प्रदान को सुनिश्चित करता है?

A: FeED प्रोटोकॉल
B: बायोटेक दिशानिर्देश
C: बायोइकोनॉमी दिशानिर्देश
D: डेटा संरक्षण विधेयक

11. भारत में जाति जनगणना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. जाति जनगणना की प्रथा औपनिवेशिक काल के दौरान शुरू हुई, जिसमें ब्रिटिश प्रशासन शासन के लिए जाति के आंकड़ों का उपयोग करते थे।
2. 1931 की जनगणना भारत में आयोजित पहली व्यापक जाति जनगणना थी, जिसमें 4,147 जातियों को दर्ज किया गया था।
3. स्वतंत्रता के बाद, भारत में जाति जनगणना पूरी तरह से बंद कर दी गई थी।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A: केवल 1
B: केवल 1, और 3
C: उपरोक्त सभी
D: इनमें से कोई नहीं

12. नाइट्रोजन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. हाल ही में, शोधकर्ताओं ने पौधों में नाइट्रोजन उपयोग दक्षता (NUE) में सुधार के लिए एक नई विधि शुरू की है
2. शोधकर्ता ने पाया कि पौधों में नाइट्रिक ऑक्साइड (NO) के स्तर में हेरफेर करने से नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में काफी सुधार हो सकता है।
3. नाइट्रोजन पौधों की वृद्धि और फसल की पैदावार के लिए एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A: केवल 1
B: केवल 1, और 3
C: उपरोक्त सभी
D: इनमें से कोई नहीं

13. भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार, 'अन्य' (ट्रांसजेंडर सहित) की कुल जनसंख्या 4.87 लाख है।
2. सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग द्वारा कार्यान्वित SMILE योजना, ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए पूरी तरह से आर्थिक विकास पर केंद्रित है।
3. ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए गरिमा गृह, बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने और कौशल विकास का समर्थन करने के लिए 15 राज्यों में 18 स्थानों पर स्थापित किए गए हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

A: केवल 1
B: केवल 1, और 2
C: केवल 1 और 3
D: उपरोक्त सभी

14. भारत में बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (BESS) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत की पहली बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (BESS) मार्च 2025 में दक्षिण दिल्ली के किलोकरी में चालू की जाएगी।
2. इस परियोजना की क्षमता 20 मेगावाट/40 मेगावाट घंटा होगी और यह प्रतिदिन 8 घंटे तक बिजली की आपूर्ति करेगी।
3. यह परियोजना बीएसईएस राजधानी की मदद से स्थापित की गई है और इसे ग्लोबल एनर्जी अलायंस फॉर पीपल एंड प्लैनेट (GEAPP) द्वारा वित्त पोषित किया गया है।
4. भारत का लक्ष्य 2032 तक 47 गीगावाट की बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (BESS) स्थापित करना है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1, 3 और 4
B: केवल 1 और 4
C: केवल 1, 3 और 2
D: उपरोक्त सभी

15. जॉन महामा ने किस देश के राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली है?

A: नाइजीरिया
B: घाना
C: दक्षिण अफ्रीका
D: केन्या

16. अभिकथन: भगोड़ा आर्थिक अपराधी (FEO) वह व्यक्ति होता है जिसने 100 करोड़ रूपये या उससे अधिक का आर्थिक अपराध किया हो और कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए देश छोड़कर भाग गया हो।

कारण: भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 अधिकारियों को 100 करोड़ रूपये से अधिक के आर्थिक अपराधों में शामिल व्यक्तियों की संपत्ति जब्त करने का अधिकार देता है।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सबसे उपयुक्त है?

A: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, और कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण है।
B: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, लेकिन कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C: अभिकथन सत्य है, लेकिन कारण असत्य है।
D: अभिकथन असत्य है, लेकिन कारण सत्य है।

17. स्थिरता के लिए जलवायु न्याय दृष्टिकोण का प्राथमिक लक्ष्य क्या है?

A: वैश्विक स्तर पर कार्बन उत्सर्जन को कम करने पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करना
B: सामाजिक इक्विटी के साथ पर्यावरणीय स्थिरता को संतुलित करना
C: विकसित देशों के लिए अनुकूलन रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करना
D: औद्योगिक देशों की तकनीकी जरूरतों को संबोधित करना

18. वित्त वर्ष 25 के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि के पूर्वानुमान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वित्त वर्ष 25 के लिए भारत की नाममात्र जीडीपी 324 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है, जो वित्त वर्ष 24 की तुलना में 9.7% की वृद्धि को दर्शाता है।
2. निजी खपत (PFCE) से भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 60% योगदान मिलने की उम्मीद है, लेकिन वित्त वर्ष 20 से इसकी वृद्धि दर 7% के ऐतिहासिक औसत से अधिक रही है।
3. सरकार के अंतिम उपभोग व्यय (GFCE) में वित्त वर्ष 25 में 4.2% की वृद्धि होने की उम्मीद है।
4. शुद्ध निर्यात (NX) ने ऐतिहासिक रूप से भारत की जीडीपी वृद्धि में सकारात्मक योगदान दिया है, हाल के वर्षों में आयात और निर्यात के बीच का अंतर लगातार बढ़ रहा है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1 और 3
B: केवल 1, 3 और 4
C: केवल 2 और 4
D: केवल 1 और 2

19. भारत-मलेशिया संबंधों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत और मलेशिया के बीच राजनयिक संबंध 1957 में स्थापित किए गए थे।
2. मलेशिया भारत का 16वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जिसका द्विपक्षीय व्यापार वित्त वर्ष 2023-24 में 20.01 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है।
3. मलेशिया-भारत व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (एमआईसीईसीए) ने दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों पर न्यूनतम प्रभाव डाला है।
4. मलेशिया भारत के पाम ऑयल आयात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आपूर्ति करता है, जो सालाना तीन मिलियन मीट्रिक टन है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1, 2 और 4
B: केवल 1, 3 और 4
C: केवल 2, 3 और 4
D: 1, 2, 3 और 4

20. 2024 ग्लोबल वाटर मॉनिटर रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक जल चक्र पर जलवायु परिवर्तन का सबसे संभावित परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?

A: पहले से ही वेट क्षेत्रों में वर्षा में कमी
B: चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि
C: जल-संबंधी आपदाओं में कमी
D: वैश्विक जल भंडारण में कमी

21. ग्रामीण गरीबी पर हाल ही में एसबीआई द्वारा किए गए शोध के अनुसार, वित्त वर्ष 24 में भारत में गरीबी के स्तर में गिरावट के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

A: ग्रामीण गरीबी 2023-24 में घटकर 4.86% हो गई है, जो 2011-12 में 25.7% से उल्लेखनीय कमी है, जिसका मुख्य कारण खाद्य कीमतों में सुधार है।
B: शहरी गरीबी 2011-12 में 13.7% से घटकर 2023-24 में 4.09% हो गई है, जिसमें प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण जैसे सरकारी कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका है।
C: पिछले वर्ष की तुलना में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में उपभोग असमानता खराब हुई है, जो असमानताओं में वृद्धि दर्शाती है।
D: खाद्य मुद्रास्फीति का ग्रामीण क्षेत्रों पर बहुत कम प्रभाव पड़ा है क्योंकि उनका अधिकांश व्यय भोजन पर नहीं होता है।

22. गरीबी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. निरपेक्ष गरीबी (absolute poverty) से तात्पर्य भोजन, आश्रय और आवास जैसे बुनियादी जीवन स्तर को पूरा करने के लिए आवश्यक आय की कमी से है।
2. विश्व बैंक ने निरपेक्ष गरीबी को मापने के लिए 2022 में गरीबी रेखा को $2.15 प्रतिदिन निर्धारित किया है।
3. सापेक्ष गरीबी किसी व्यक्ति या परिवार की आय की वैश्विक गरीबी रेखा से तुलना करने से संबंधित है।
4. सापेक्ष गरीबी इस आधार पर अभाव को मापती है कि व्यक्ति या परिवार आसपास की आबादी के जीवन स्तर की तुलना कैसे करते हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है/हैं?

A: केवल 1, 2 और 4
B: केवल 1 और 2
C: केवल 3 और 4
D: केवल 1 और 4

23. अभिकथन (A): यूनिवर्सल बेसिक इनकम (UBI) का उद्देश्य सभी नागरिकों को बिना शर्त वित्तीय सहायता प्रदान करके गरीबी और असमानता को कम करना है।

कारण (R): यूबीआई सुनिश्चित करता है कि लोगों को आर्थिक स्वतंत्रता मिले और भ्रष्टाचार कम हो।

निम्नलिखित में से कौन सा सबसे उपयुक्त विकल्प है?

A: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, और कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण है।
B: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, लेकिन कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C: अभिकथन सत्य है, लेकिन कारण असत्य है।
D: अभिकथन असत्य है, लेकिन कारण सत्य है।

24. भारतीय संस्थाओं को अपनी 'प्रतिबंधित सूचियों' से हटाने के हाल के अमेरिकी निर्णय के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. प्रतिबंधित सूचियों से भारतीय संस्थाओं को हटाने से परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अन्वेषण और तकनीकी नवाचार के क्षेत्रों में अमेरिका-भारत सहयोग बढ़ने की उम्मीद है।
2. यह नीतिगत बदलाव मुख्य रूप से अमेरिकी रक्षा प्रौद्योगिकियों और रणनीतिक संसाधनों तक अधिक पहुँच की अनुमति देकर भारत के रक्षा क्षेत्र को लाभान्वित करेगा।
3. इस कदम का अमेरिका-भारत आर्थिक और व्यापार संबंधों पर सीमित प्रभाव पड़ने की संभावना है क्योंकि यह केवल वैज्ञानिक और परमाणु क्षेत्रों तक ही सीमित है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1 और 2
B: केवल 1 और 3
C: केवल 2 और 3
D: केवल 1

25. इसरो के स्पैडेक्स मिशन के बारे में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. स्पैडेक्स भारत का पहला मिशन है जो अंतरिक्ष में डॉकिंग तकनीक का प्रदर्शन करेगा।
2. स्पैडेक्स मुख्य रूप से अंतरिक्ष में पौधे उगाने और लंबे मिशनों पर अंतरिक्ष यात्रियों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने पर केंद्रित है।
3. इसमें दो उपग्रह, SDX01 (चेजर) और SDX02 (टारगेट) शामिल हैं।
4. स्पैडेक्स की सफलता भारत को अमेरिका, रूस और चीन जैसे देशों की श्रेणी में ला खड़ा करेगी, जो अंतरिक्ष में डॉकिंग करने में सक्षम हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1, 2 और 3
B: केवल 1, 3 और 4
C: केवल 2 और 4
D: 1, 2, 3 और 4

26. iCET के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. iCET को मई 2022 में लॉन्च किया गया था।
2. iCET का उद्देश्य AI, अर्धचालक और अंतरिक्ष अन्वेषण जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देना है।
3. iCET रक्षा और अंतरिक्ष सहयोग को छोड़कर विशेष रूप से नागरिक प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित है।
4. यह पहल भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों (NSC) द्वारा संचालित की जाती है।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है/हैं?

A: केवल 1 और 2
B: केवल 2 और 4
C: केवल 1, 2 और 4
D: केवल 3 और 4

27. अभिकथन: त्सांगपो बांध का निर्माण जल सुरक्षा, पारिस्थितिकी और क्षेत्रीय स्थिरता पर इसके संभावित प्रभाव के कारण भारत के लिए महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।

कारण: निचले तटवर्ती राज्य के रूप में, भारत अपनी कृषि, पेयजल और पारिस्थितिक संतुलन के लिए त्सांगपो नदी से पानी के निरंतर प्रवाह पर निर्भर करता है।

सही विकल्प चुनें:

A: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, और कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण है।
B: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, लेकिन कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C: अभिकथन सत्य है, लेकिन कारण असत्य है।
D: अभिकथन असत्य है, लेकिन कारण सत्य है।

28. त्सांगपो बांध के निर्माण और भारत के लिए इसके निहितार्थ के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. त्सांगपो बांध के निर्माण से भारत की कृषि उत्पादकता कम हो सकती है।
2. यह बाँध भारत की जैव विविधता को खतरे में डाल सकता है।
3. चीन के साथ मजबूत सहयोग तंत्र के माध्यम से भारत की जल सुरक्षा चिंताओं को आसानी से कम किया जा सकता है।
4. भारत और चीन के बीच भू-राजनीतिक तनाव बढ़ सकता है।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है/हैं?

A: केवल 1, 2 और 4
B: केवल 1 और 3
C: केवल 2 और 4
D: केवल 1 और 2

29. अभिकथन (A): भारत ने अफगानिस्तान पर पाकिस्तान के हालिया हवाई हमलों की निंदा की है।

कारण (R): पाकिस्तान के हवाई हमलों का उद्देश्य अफगान धरती से पकिस्तान विरोधी सक्रिय विद्रोही समूहों को खत्म करना था।

अभिकथन और कारण के बीच संबंध के लिए निम्नलिखित में से कौन सा सबसे उपयुक्त स्पष्टीकरण है?

A: अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण है।
B: अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण अभिकथन की व्याख्या नहीं करता है।
C: अभिकथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
D: अभिकथन गलत है, लेकिन कारण सही है।

30. अकेलेपन के परिणामस्वरूप उच्च स्तर पर उत्पादित कौन सा प्रोटीन तनाव का जवाब देने और ऑक्सीटोसिन जैसे सामाजिक हार्मोन को विनियमित करने में भूमिका निभाता है?

A: कोर्टिसोल

B: एड्रेनोमेडुलिन (ADM)
C: इंसुलिन
D: डोपामाइन

31. जीन और डीएनए के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. जीन डीएनए का एक खंड है जो किसी जीव के शारीरिक लक्षणों और स्वास्थ्य प्रोफाइल को निर्धारित करता है।
2. डीएनए चार न्यूक्लियोटाइड से बना एक एकल-स्ट्रैंडेड संरचना है।
3. जीन प्रत्येक माता-पिता से दो प्रतियों के माध्यम से विरासत में मिलते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A: केवल 1 और 2
B: केवल 1 और 3
C: केवल 2 और 3
D: ये सभी

32. महाकुंभ मेला 2025 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. महाकुंभ मेला 2025 13 जनवरी, 2025 को शुरू हुआ और 45 दिनों तक चलेगा।
2. कुंभ मेला हर 12 साल में चार पवित्र स्थानों- हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक में मनाया जाता है।
3. कुंभ मेला आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि मान्यता है कि प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर स्नान करने से मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति) मिलती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1 और 3
B: केवल 1 और 2
C: केवल 2 और 3
D: ये सभी

33. गुलाबी अग्निरोधी (फॉस-चेक) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. फॉस-चेक जैसे गुलाबी अग्निरोधी मुख्य रूप से जंगल की आग को दबाने के लिए उपयोग किए जाते हैं।
2. फॉस-चेक के मुख्य घटकों में पानी, डायमोनियम फॉस्फेट जैसे अमोनियम लवण और एक रंग शामिल होता हैं।
3. फॉस-चेक में इस्तेमाल किया जाने वाला रंग हरा होता है।
4. फॉस-चेक को पानी के अपेक्षा जल्दी से वाष्पित होने के लिए डिजाइन किया गया है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A: केवल 1 और 2
B: केवल 2 और 3
C: केवल 1, 2 और 4
D: केवल 1 और 4

34. भारत-नेपाल व्यापार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जो नेपाल के कुल व्यापार का 64.1% हिस्सा है।
2. वित्तीय वर्ष 2022-2023 में, नेपाल का भारत को निर्यात 8.85 बिलियन अमरीकी डॉलर था, जबकि भारत से आयात 839.62 मिलियन अमरीकी डॉलर था।
3. नेपाल के भारत को मुख्य निर्यात में खाद्य तेल, कॉफी, चाय और जूट शामिल हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A: केवल 1 और 3
B: केवल 1 और 2
C: केवल 2 और 3
D: ये सभी

35. जनवरी 2025 में काठमांडू में आयोजित भारत-नेपाल अंतर-सरकारी समिति (आईजीसी) की बैठक के दौरान भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किसने किया?

A: श्री गोबिंद बहादुर कार्की
B: श्री सुनील बर्थवाल
C: श्री राजेश कुमार
D: श्री रमेश चंद्र

36. वन अधिकार अधिनियम (FRA) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. 2006 का वन अधिकार अधिनियम (FRA) आदिवासी समुदायों और वनवासियों को अधिकारों के ऐतिहासिक हनन को संबोधित करने के लिए पेश किया गया था।
2. NTA की सिफारिश पर FRA के तहत बाघ अभयारण्यों से आदिवासी समुदायों को जबरन बेदखल करने की अनुमति है।
3. FRA आदिवासी समुदायों के लिए तीन प्रकार के अधिकारों को मान्यता देता है: व्यक्तिगत अधिकार, सामुदायिक अधिकार और सामुदायिक वन संसाधन (CFR) अधिकार।
4. ग्राम सभाएँ FRA के तहत आदिवासी समुदायों के अधिकारों की पहचान, मान्यता और सिफारिश करने के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन अंतिम स्वीकृति केवल वन विभाग द्वारा दी जाती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1, 3 और 4
B: केवल 1 और 3
C: केवल 2 और 4
D: ये सभी

37. डेक्कन ट्रैप के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. डेक्कन ट्रैप पश्चिम-मध्य भारत में स्थित हैं और 500,000 वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैले हुए हैं।
2. डेक्कन ट्रैप बनाने वाली ज्वालामुखी गतिविधि लगभग 100 मिलियन वर्ष पहले जुरासिक काल के दौरान हुई थी।
3. डेक्कन ट्रैप का निर्माण भारतीय प्लेट के रीयूनियन द्वीप के नीचे एक हॉटस्पॉट पर बढ़ने के कारण हुए ज्वालामुखी विस्फोटों से हुआ था।
4. डेक्कन ट्रैप के परिदृश्य की विशेषता स्तरित बेसाल्टिक चट्टान संरचनाएं हैं, जो इस क्षेत्र की चरणबद्ध उपस्थिति के लिए जिम्मेदार हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1 और 3
B: केवल 1, 3 और 4
C: केवल 2 और 4
D: ये सभी

38. अभिकथन (A): त्वचा विशेषज्ञ फंगल रोगजनक ट्राइकोफाइटन इंडोटिनी का नाम बदलने की मांग कर रहे हैं।

कारण (R): रोगजनक का नाम मूल रूप से भारत के नाम पर रखा गया था क्योंकि इसे पहली बार इस क्षेत्र में पहचाना गया था, लेकिन इसका वैश्विक प्रसार इस विचार को चुनौती देता है कि भारत इसका वास्तविक उद्गम स्थल है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही उत्तर है?

A: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, और कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण है।
B: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, लेकिन कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C: अभिकथन सत्य है, लेकिन कारण असत्य है।
D: अभिकथन असत्य है, लेकिन कारण सत्य है।

39. अभिकथन (A): जेड-मोड़ सुरंग से सोनमर्ग क्षेत्र में पर्यटन और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

कारण (R): सुरंग, जो हिमस्खलन-प्रवण क्षेत्रों को बायपास करती है, रक्षा रसद और नागरिक परिवहन दोनों के लिए निर्बाध पहुंच सुनिश्चित करेगी।

निम्नलिखित में से कौन सा सही उत्तर है?

A: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, और कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण है।
B: अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, लेकिन कारण अभिकथन के लिए सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C: अभिकथन सत्य है, लेकिन कारण असत्य है।
D: अभिकथन असत्य है, लेकिन कारण सत्य है।

40. तिरुवल्लुवर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. तिरुवल्लुवर ने 'तिरुक्कुरल' की रचना की, जो 1,330 दोहों का संग्रह है, जिसे तीन मुख्य खंडों में विभाजित किया गया है।
2. तिरुवल्लुवर की रचनाये मुख्य रूप से धार्मिक शिक्षाओं और प्रथाओं पर केंद्रित है।
3. 'तिरुक्कुरल' का न केवल तमिल साहित्य में बल्कि विभिन्न वैश्विक संस्कृतियों और दार्शनिक परंपराओं पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

A: केवल 1 और 3
B: केवल 2 और 3
C: इनमें से सभी
D: इनमें से कोई नहीं

41. मिशन मौसम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. मिशन मौसम का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 14 जनवरी, 2024 को भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के 150वें स्थापना दिवस समारोह के दौरान किया।
2. यह मिशन केवल कृषि और पर्यटन क्षेत्रों के लिए मौसम निगरानी और पूर्वानुमान पर ध्यान केंद्रित करेगा।
3. मिशन के तहत पुणे में भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (IITM) में पहला क्लाउड चौंबर स्थापित कियागया।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

A: केवल 1
B: केवल 2
C: सभी तीन
D: कोई नहीं

42. INS राजाली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. INS राजाली चेन्नई, तमिलनाडु से 80 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है और 2,200 एकड़ में फैला है।
2. यह दक्षिणी भारत में स्थित भारतीय नौसेना का सबसे बड़ा और सबसे आधुनिक नौसेना एयर स्टेशन है।
3. INS राजाली को 11 मार्च, 1995 को कमीशन किया गया था और इसका नाम फाल्कन परिवार के एक पक्षी के नाम पर रखा गया है।
4. यह स्टेशन संचालन और प्रशिक्षण दोनों में दोहरी भूमिका निभाता है, जो भारत की समुद्री सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

A: केवल 1
B: केवल 2
C: केवल 3
D: सभी चार

43. 1966 में पहले सफल अंतरिक्ष डॉकिंग मिशन, जेमिनी VIII का हिस्सा कौन था?

A: बज एल्ड्रिन
B: जॉन ग्लेन
C: नील आर्मस्ट्रांग
D: एलन शेपर्ड

44. विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. WMO मौसम विज्ञान, जलवायु, जल विज्ञान और संबंधित भूभौतिकीय विज्ञानों के लिए जिम्मेदार संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी है।
2. विश्व मौसम विज्ञान संगठन की स्थापना 1950 में हुई थी।
3. WMO का संचालन विश्व मौसम विज्ञान कांग्रेस द्वारा किया जाता है, जो नीतियां निर्धारित करने और नियमों को अपनाने के लिए सालाना बैठक करती है।
4. WMO का मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में स्थित है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

A: केवल 1
B: केवल 2
C: केवल 3
D: सभी चार

45. जहाजों का उनके संबंधित विवरण से मिलान करें।

शिप

1. आईएनएस नीलगिरि
2. आईएनएस सूरत
3. आईएनएस वाघशीर

विवरण:

A: प्रोजेक्ट 17ए स्टील्थ फ्रिगेट क्लास का प्रमुख जहाज, जिसमें कई हेलीकॉप्टर संचालन के लिए उन्नत स्टील्थ तकनीक और विमानन सुविधाएं शामिल हैं, जिसमें हाल ही में शामिल एमएच-60आर भी शामिल है।
B: प्रोजेक्ट 15बी स्टील्थ विध्वंसक वर्ग का चौथा जहाज, जो उन्नत डिजाइन सुधारों के साथ भारतीय नौसेना की समुद्री रक्षा क्षमताओं को बढ़ाता है।
C: स्कॉर्पीन-क्लास प्रोजेक्ट 75 ए के तहत छठी और अंतिम पनडुब्बी, जिसे सतह-रोधी और पनडुब्बी-रोधी युद्ध के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें मॉड्यूलर निर्माण और वायु-स्वतंत्र प्रणोदन तकनीक जैसी विशेषताएं हैं।

A: 1 – A, 2 – B, 3 – C
B: 1 – B, 2 – C, 3 – A
C: 1 – C, 2 – A, 3 – B
D: 1 – A, 2 – C, 3 – B

46. 8वें वेतन आयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. पेंशनभोगियों सहित सरकारी कर्मचारियों के वेतनमान और भत्ते को संशोधित करने के लिए केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 8वें वेतन आयोग को मंजूरी दी।
2. वेतन संशोधन में सभी स्तरों के सरकारी कर्मचारियों के मूल वेतन में एक समान 10% की वृद्धि शामिल होगी।
3. आयोग की सिफारिशों से लगभग 67 लाख पेंशनभोगियों और 49 लाख केंद्र सरकार के कर्मचारियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

A: केवल 1
B: केवल 2
C: सभी तीन
D: कोई नहीं

47. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. तीसरा वेतन आयोग 1986 में जे.एम.एम. सिन्हा की अध्यक्षता में गठित किया गया था।
2. न्यायमूर्ति एस. रत्नावेल पांडियन की अध्यक्षता में पांचवें वेतन आयोग ने वेतनमान को 51 से घटाकर 34 कर दिया।
3. आठवें वेतन आयोग को जनवरी 2026 तक लागू किया जायेगा

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

A: केवल 1

B: केवल 2
C: सभी तीन
D: कोई नहीं

48. भारत सरकार द्वारा थारू जनजाति को आधिकारिक तौर पर अनुसूचित जनजाति के रूप में किस वर्ष मान्यता दी गई थी?

A: 1950
B: 1967
C: 1980
D: 1995

49. ट्राई के ड्राफ्ट दूरसंचार शुल्क (71वां संशोधन) आदेश, 2025 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. संशोधन का प्राथमिक उद्देश्य पीएम-वाणी योजना के तहत सार्वजनिक डेटा कार्यालयों (पीडीओ) के लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी की लागत को कम करना है।
2. संशोधित प्रस्ताव में सुझाव दिया गया है कि पीएम-वाणी के तहत पीडीओ के लिए ब्रॉडबैंड टैरिफ खुदरा ब्रॉडबैंड सेवाओं के लिए लागू टैरिफ से पांच गुना अधिक नहीं होना चाहिए।
3. ट्राई का प्रस्तावित टैरिफ युक्तिकरण राष्ट्रीय डिजिटल संचार नीति, 2018 और भारत 6जी विजन के अनुरूप है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

A: केवल 1
B: केवल 2
C: सभी तीन
D: कोई नहीं

50. अंतरिक्ष डॉकिंग में भारत की उपलब्धि के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. 17 जनवरी 2025 को भारत अंतरिक्ष डॉकिंग हासिल करने वाला चौथा देश बन जाएगा।
2. स्पाडेक्स मिशन ने डॉकिंग प्रक्रिया के लिए दो बड़े अंतरिक्ष यान, SDX01 (चेजर) और SDX02 (टारगेट) का उपयोग किया।
3. स्पेस डॉकिंग एक ऐसी तकनीक है जो दो तेज गति से चलने वाले उपग्रहों को अंतरिक्ष में सटीक रूप से जुड़ने की अनुमति देती है।
4. स्पाडेक्स मिशन को पीएसएलवी-सी60 रॉकेट का उपयोग करके प्रक्षेपित किया गया और इसका उद्देश्य स्वायत्त मिलन और डॉकिंग प्रौद्योगिकी विकसित करना था।
5. यह मिशन भविष्य के मिशनों में संसाधन निगरानी, जीवन विस्तार और उपग्रह मरम्मत की क्षमताओं को भी बढ़ाता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सत्य हैं?

A: केवल 1
B: केवल 2
C: केवल 3
D: सभी पाँच

उत्तर

1	B	11	A	21	B	31	B	41	A
2	A	12	C	22	A	32	D	42	C
3	B	13	C	23	B	33	A	43	C
4	B	14	A	24	D	34	A	44	C
5	A	15	B	25	B	35	B	45	A
6	D	16	B	26	B	36	B	46	B
7	B	17	B	27	A	37	B	47	B
8	B	18	A	28	A	38	A	48	B
9	A	19	A	29	B	39	A	49	B
10	A	20	B	30	B	40	A	50	D

आरण्यक

Centre for Excellence

Powered by ध्येय IAS most trusted since 2003

अभिव्यक्ति

BPSC MAINS MENTORSHIP- 2024

16 FEB | **01 PM**

FEATURES

- 4 Sectional + 4 Full Length Test
- Comprehensive Test on 2 Essay Paper
- Hindi qualifying 2 Test paper
- One to One Discussion & Mentorship

Fee Structure
7000 + GST

Offline | Online

LUCKNOW

A-12, SECTOR-J, ALIGANJ
☎ 9506256789,9369888074

GOMTINAGAR
☎ 7570009003